A TRAVEL MEMOIR ACROSS INDIA

TEN DAYS, ELEVEN CITIES

दस दिन, ग्यारह शहर

From Delhi to Jalgaon - through railways, faith, food, strangers, memory and the road home.

THE ROUTE

DELHI · MATHURA · VRINDAVAN · VARANASI · AYODHYA · LUCKNOW · PRAYAGRAJ · JAIPUR · JAISALMER · AHMEDABAD · JALGAON

WRITTEN BY

Bhushan Hiralal Bhole

TRAVEL · CULTURE · MEMORY

दस दिन,
ग्यारह शहर

TEN DAYS, ELEVEN CITIES

एक भारतीय यात्रा-वृत्तांत

दस दिन, ग्यारह शहर

TEN DAYS, ELEVEN CITIES

* * *

रेल, सड़क, देव-दर्शन और अनजान चेहरे

RAILS, ROADS, TEMPLES & STRANGERS

भूषण हिरालाल भोले

BHUSHAN HIRALAL BHOLE

भारत के रास्तों पर एक सफ़र

A TRAVEL ADVENTURE ACROSS INDIA

प्रकाशन एवं अधिकार संबंधी टिप्पणी

Copyright © 2026 Bhushan Hiralal Bhole
Author: Bhushan Hiralal Bhole

यह पुस्तक एक साहित्यिक यात्रा-वृत्तांत है। स्थल, शहर, सार्वजनिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ वास्तविक हो सकते हैं; संवाद, निजी प्रसंग, कुछ पात्र और रहस्य-कथानक साहित्यिक रूपांतरण के साथ प्रस्तुत किए गए हैं।

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक के किसी भी भाग को लेखक/अधिकारधारी की अनुमति के बिना पुनर्प्रकाशित, संग्रहित या प्रसारित न किया जाए, सिवाय संक्षिप्त समीक्षा-उद्धरण के।

Freemasonry, गुप्त-संघों और ऐतिहासिक षडयंत्रों से जुड़े काल्पनिक प्रसंगों को वास्तविक संस्थाओं, अनुष्ठानों या ऐतिहासिक तथ्यों का प्रमाण न माना जाए। जहाँ वास्तविक स्थानों का उल्लेख है, वहाँ कथा का उद्देश्य यात्रा, वातावरण और मानवीय अनुभव को दर्ज करना है।

TEN DAYS, ELEVEN CITIES
Private book edition - classic black-and-white interior

समर्पण

* * *

यह पुस्तक मेरे माता-पिता के चरणों में समर्पित है

हिरालाल शंकर भोले

और

सुषमा भोले

जिनसे घर मिला, संस्कार मिले, रास्तों पर निकलने का साहस मिला - और हर लंबी यात्रा के बाद लौट आने की एक वजह भी।

और मेरी छोटी बहन **निशा** - हमारी **"निसुडी"** - के लिए भी थोड़ा-सा,
जिसकी हँसी और अपनापन घर को हमेशा घर बनाए रखते हैं।

विषय-सूची

CONTENTS

* * *

-	पृष्ठभूमि - मॉस्को से दिल्ली BACKGROUND - MOSCOW TO DELHI	1
1	सूरज से पहले प्लेटफॉर्म PLATFORM BEFORE SUNRISE	9
2	कृष्ण की नगरी KRISHNA'S CITY	25
3	वृंदावन में रास्ता खो गया LOST IN VRINDAVAN	43
4	रात 2:17 का यात्री THE PASSENGER AT 2:17 AM	62
5	शहर जो आपसे पहले जागता है THE CITY THAT WAKES BEFORE YOU	87
6	विश्वनाथ VISHWANATH	109
7	गंगा पर सूर्योदय SUNRISE ON THE GANGA	142
8	गंगा पर अग्नि FIRE ON THE GANGA	166
9	वाराणसी का मेसोनिक पड़ाव A BROTHER IN KASHI	197
10	अयोध्या की रेल TRAIN TO AYODHYA	233
11A	सूर्योदय से पहले अयोध्या AYODHYA BEFORE SUNRISE	263
11B	पैरों से पढ़ी अयोध्या KANAK BHAWAN, RAM KI PAIDI & SARYU	283
12	टिकट दिखाइए TICKET PLEASE	313
13	लखनऊ की भूलभुलैया THE LABYRINTH OF LUCKNOW	340

विषय-सूची

CONTENTS - CONTINUED

* * *

14 चाय की दुकान पर पत्रकार 368
THE REPORTER AT THE TEA STALL

15 कमरा 307 395
ROOM 307

16 गंगा गोमती एक्सप्रेस 418
GANGA GOMTI EXPRESS

17 संगम की सुबह 440
MORNING AT THE SANGAM

18 रेल की खिड़की से भारत 462
INDIA THROUGH THE TRAIN WINDOW

19A आमेर की सुबह 500
AMER IN THE MORNING

19B गुलाबी शहर के भीतर 528
INSIDE THE PINK CITY

19C अल्बर्ट हॉल की शाम 567
EVENING AT ALBERT HALL

20 रात की स्लीपर बस 604
THE NIGHT SLEEPER BUS

21 किले के भीतर एक शहर 635
A CITY INSIDE THE FORT

22 थार के अंदर 668
INTO THE THAR

23 रात साढ़े बारह की ट्रेन 704
THE HALF-PAST-MIDNIGHT TRAIN

24 दूसरी बार जयपुर 738
JAIPUR, THE SECOND TIME

25 आश्रम एक्सप्रेस 781
ASHRAM EXPRESS

26 सूर्योदय से पहले अहमदाबाद 809
AHMEDABAD BEFORE SUNRISE

27 आख़िरी रेल, घर की सड़क 842
THE LAST TRAIN, THE ROAD HOME

यात्रा का मार्ग

THE ROUTE

* * *

दिल्ली - मथुरा - वृंदावन - वाराणसी - अयोध्या - लखनऊ - प्रयागराज - जयपुर - जैसलमेर - अहमदाबाद - जलगाँव

DELHI - MATHURA - VRINDAVAN - VARANASI - AYODHYA - LUCKNOW - PRAYAGRAJ - JAIPUR - JAISALMER - AHMEDABAD - JALGAON

“यात्रा केवल शहरों की सूची नहीं थी। वह प्लेटफॉर्म, सरकारी बस, सस्ता कमरा, मंदिर की कतार, सड़क की धूल, स्थानीय थाली और किसी अनजान आदमी की आधी बात से बनी।”

मुख्य पाठ की पृष्ठ-संख्या पृष्ठभूमि से 1 पर आरंभ होती है। वर्तमान संकलन में मुख्य कथा 866 पृष्ठों तक जाती है।

प्रस्तावना

INTRODUCTION

* * *

यह पुस्तक भारत को दस दिनों में "समझ लेने" का दावा नहीं करती। दस दिन किसी देश के लिए बहुत कम हैं; शायद किसी एक शहर के लिए भी। यह केवल उस गति का रिकॉर्ड है जिसमें एक यात्री रेल, बस, पैदल रास्तों और अचानक बदलते कार्यक्रम के बीच जितना देख सका, उतना दर्ज करता गया।

यात्रा मॉस्को से दिल्ली की उड़ान के बाद शुरू होती है और जलगाँव के घर तक पहुँचकर समाप्त होती है। बीच में कृष्ण की नगरी, काशी के घाट, अयोध्या की सुबह, लखनऊ की गलियाँ, प्रयागराज का संगम, जयपुर के तीन लंबे दिन, जैसलमेर का किला और थार, तथा अहमदाबाद की सुबह आते हैं। बड़े स्मारकों के साथ छोटे क्षण भी बराबर जगह लेते हैं - ट्रेन की चाय, गलत मोड़, होटल की चाबी, बहुत तीखी चटनी, बस की धूल और किसी stranger के साथ पाँच मिनट की बातचीत।

इस यात्रा में भोजन केवल सूची नहीं है। हर शहर का स्वाद उसकी हवा, भाषा और समय से जुड़ा है। उसी तरह देव-दर्शन केवल monument visit नहीं, बल्कि उन लोगों को देखने का अवसर है जिनके लिए वह स्थान रोजमर्रा के जीवन, विश्वास और परिवार की स्मृति का हिस्सा है।

प्रस्तावना

INTRODUCTION - CONTINUED

* * *

कहानी में एक नीली डायरी भी साथ चलती है। शुरुआत में उसके अंक, तस्वीरें और पुराने नोट जितने रहस्यमय दिखते हैं, यात्रा आगे बढ़ने पर उतने ही साधारण और मानवीय अर्थ लेने लगते हैं। यही इस पुस्तक की एक अंदरूनी धुन है: यात्री अक्सर रास्ते से कम, अपने अनुमान से ज्यादा भटकता है।

कुछ प्रसंग इतिहास, fraternity, पुरानी इमारतों और गुप्त-संघों की कल्पना से खेलते हैं। वे कथा का साहित्यिक हिस्सा हैं, इतिहास की वैकल्पिक घोषणा नहीं। पुस्तक का केंद्र अंततः conspiracy नहीं, यात्रा है - और वे लोग हैं जो किसी स्टेशन, घाट, चाय की दुकान या शहर की गली में थोड़ी देर के लिए साथ चलते हैं।

जयपुर में Shristi Joshi के साथ बिताए दिन इस तेज यात्रा में एक अलग गति लाते हैं। वहाँ कहानी अचानक धीमी होती है: bike ride, चाय, पुराने Moscow के संकेत, छोटी नाराज़गी, गलत समझे गए वाक्य और वे बातें जिन्हें कोई सीधे नहीं कहता। पाठक को संबंध का नाम नहीं दिया जाता; बस समय और व्यवहार देखने को मिलता है।

आख़िरी शहर जलगाँव है, लेकिन वहाँ narrator पर्यटक नहीं रहता। Station का poha-rassa, पुराना bus stand, Khandeshi varan-batti, Tower Chowk, Phule Market, KCE/M.J. College side, Asoda और घर का दरवाज़ा - यात्रा का अंत किसी स्मारक पर नहीं, पहचान पर होता है।

"दस दिन तक मैं हर शहर में पहुँचा था। जलगाँव में पहली बार लगा - मैं पहुँचा नहीं था। मैं वापस आया था।"

BACKGROUND / पृष्ठभूमि

मॉस्को से दिल्ली

Moscow to Delhi

एक यात्रा जो Day One से एक दिन पहले शुरू हुई

MOSCOW → DELHI → PAHARGANJ
और अगली सुबह → NEW DELHI RAILWAY STATION

पृष्ठभूमि

BEFORE THE FIRST TRAIN

मेरी यात्रा दिल्ली से शुरू नहीं हुई थी। असल में, चौबीस घंटे पहले तक मैं लगभग साढ़े चार हजार किलोमीटर दूर था - मॉस्को, रूस में।

एक दिन पहले सुबह मैं मॉस्को से दिल्ली आने वाली उड़ान में बैठा था। खिड़की से नीचे रूस की ठंडी, फीकी धरती धीरे-धीरे गायब हुई। कई घंटे बाद जब विमान उत्तर भारत के ऊपर उतरने लगा, दृश्य पूरी तरह बदल चुका था। नीचे खेत, इमारतें, सड़कें और दिल्ली की धुंधली-सी भूरी रोशनी फैली थी।

“We will shortly be landing at Indira Gandhi International Airport, New Delhi.”

घोषणा सुनते ही मैंने सीट बेल्ट बाँधी और खिड़की से बाहर देखा। उत्साह था, लेकिन उससे थोड़ा ज्यादा बेचैनी। मैं भारत लौट रहा था, पर इस बार किसी एक शहर में ठहरने नहीं। मेरे सामने दस दिनों का एक तेज, लंबा और थोड़ा पागल-सा रास्ता था।

Delhi → Mathura → Vrindavan → Varanasi → Ayodhya → Lucknow → Prayagraj → Jaipur → Jaisalmer → Ahmedabad → Surat → Jalgaon

---

मॉस्को में बैठकर यह route बहुत साफ दिखता था - एक शहर, फिर अगला; एक train, फिर bus; एक रात, फिर अगली सुबह। लेकिन Delhi airport के automatic doors खुलते ही spreadsheet वाली simplicity खत्म हो गई।

गरम हवा सीधे चेहरे से टकराई। टैक्सी ड्राइवर, pickup zones, suitcases, रिश्तेदारों को ढूँढते लोग, horns और announcements - India ने बिना introduction के स्वागत कर दिया।

मेरे पास सिर्फ एक black backpack था। अगले दस दिनों में मुझे railway platforms, state buses, crowded lanes और cheap hotels के बीच घूमना था; suitcase उस यात्रा में सुविधा से ज्यादा सजा बन जाता।

- कुछ कपड़े
- हल्का jacket
- power bank और chargers
- basic medicines
- documents
- camera और notebook
- पानी की bottle

बस इतना। कम से कम कागज पर। कंधे पर रखते ही backpack ने अपनी अलग राय दे दी।

पहाड़गंज में एक दिन

DAY ZERO - DELHI

मैंने airport से पहाड़गंज जाने का फैसला किया। वजह बहुत romantic नहीं थी - सस्ता कमरा, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पास, और अगली सुबह Mathura की ट्रेन पकड़ना आसान। Budget travel में convenience अक्सर beauty से ज्यादा काम की चीज होती है।

पहाड़गंज पहुँचते-पहुँचते शाम होने लगी थी। सामने चमकते hotel boards, पुराने buildings, travel agencies, currency exchange, scooters, rickshaws, foreign backpackers, cows और ऊपर उलझे electric wires। कुछ घंटे पहले तक मैं Moscow की चौड़ी सड़कों और व्यवस्थित metro exits में था; अब Main Bazaar Road मेरे सामने था।

एक दुकानदार ने पूछा, “Room चाहिए?”

“Already booked.”

“SIM card?”

“नहीं।”

“Taxi tomorrow?”

“नहीं।”

“Money exchange?”

मैं हँसा, “वो भी नहीं।”

वह भी हँसा। “फिर chai पी लो।”

यह offer reject करने की कोई वजह नहीं थी। Delhi में इस यात्रा की पहली chai एक छोटे steel counter के पास खड़े होकर पी। Moscow में coffee मेरी रोज की habit

थी; यहाँ paper cup में मिली मीठी, मसालेदार chai ने जैसे taste buds से अलग भाषा में बात की।

चाय वाले ने पूछा, “कहाँ से आए?”

“Russia से।”

“Russian?”

“नहीं, India का हूँ। Moscow से आया हूँ। अभी travel करने आया हूँ।”

मैंने route बताना शुरू किया। Mathura, Varanasi, Ayodhya, Lucknow, Prayagraj, Jaipur, Jaisalmer...

वह बीच में ही हँस पड़ा - “भाई, घूमने आए हो या transfer लेने?”

मेरे छोटे hotel का कमरा simple था: narrow staircase, reception के पीछे calendar, single bed, fan, एक AC जो remote दबाने पर दो seconds सोचता था कि command माननी है या नहीं। Bathroom clean था। बस इतना काफी था।

शाम को मैंने sightseeing नहीं की। बस चला। किताबों की दुकान, पुराने cyber cafés, travel agencies, backpackers, railway station का रास्ता पूछते लोग। Paharganj destination से ज्यादा waiting room लगा - जैसे हर आदमी किसी और जगह जाने वाला हो।

> “यात्रा कभी-कभी उस दिन से पहले शुरू हो जाती है जिसे हम *Day One* कहते हैं।”

रात का खाना एक छोटे ढाबे पर हुआ: dal, roti, jeera rice और pickle। मैंने notebook खोली और लिखा:

Day Zero - Delhi
Flight: Moscow → Delhi
Stay: Paharganj

Food: chai + dal-roti
Feeling: tired, excited, slightly confused
Tomorrow: Mathura

नीचे मैंने एक line और लिखी: “Journey begins tomorrow.”

बाद में वह line थोड़ी मज़ेदार लगने वाली थी, क्योंकि सफर तब तक शुरू हो चुका था।

अगली सुबह

5:15 AM - PAHARGANJ

रात लगभग ग्यारह बजे मैंने तीन alarms लगाए - 4:45, 4:50 और safety के लिए 5:00। शरीर अभी भी Moscow और Delhi के time zones के बीच अटका हुआ था, लेकिन सुबह alarm से पहले आँख खुल गई।

कुछ seconds समझ नहीं आया मैं कहाँ हूँ। फिर ceiling fan, hotel room, Delhi, Mathura - सब याद आया। जल्दी shower लिया, backpack बंद किया और room दो बार check किया।

Passport. Wallet. Phone. Charger. Camera. Everything.

Reception पर night-shift वाला आदमी आधा सोया हुआ था। मैंने key दी।

“Check-out?”

“हाँ।”

“इतनी सुबह?”

“Train है।”

“कहाँ?”

“Mathura।”

उसने सिर हिलाया। “Station पास है। Walk कर लो।”

यही पहाड़गंज में ठहरने का असली फायदा था। बाहर Main Bazaar रात की तुलना में लगभग शांत था। कुछ shutters बंद थे, कहीं-कहीं chai बनना शुरू हो चुका था, सड़क पर हल्की नमी थी और Delhi अभी पूरी तरह जागी नहीं थी।

मैं backpack लेकर New Delhi Railway Station की ओर चल पड़ा।

मेरे शरीर का कुछ हिस्सा अब भी Moscow के समय पर चल रहा था। आँखों ने Delhi देख ली थी, body शायद अभी भी Russia में थी। लेकिन railway station को jet lag से कोई मतलब नहीं था।

सुबह 5:52

“चाय... गरम चाय!”

“साइड दीजिए!”

“कुली! कुली!”

“मथुरा वाली train किधर लगेगी?”

और कुछ मिनट बाद -

Seat 41 पर वह नीली **diary** मेरा इंतज़ार कर रही थी।

* * *

अगला अध्याय: सूरज से पहले प्लेटफॉर्म

Chapter 1 - Platform Before Sunrise

CHAPTER ONE

सूरज से पहले प्लेटफॉर्म

PLATFORM BEFORE SUNRISE

नई दिल्ली

5:52 AM

“कभी-कभी असली सफ़र टिकट पर लिखी जगह से नहीं, किसी अनजान सवाल से शुरू होता है।”

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन शहर से पहले जाग चुका था।

बाहर दिल्ली अभी पूरी तरह सुबह नहीं हुई थी। आसमान में हल्का नीला अँधेरा बचा था, सड़क की कुछ लाइटें अब भी जल रही थीं और पहाड़गंज से स्टेशन तक आते हुए मुझे लग रहा था कि मेरा शरीर अभी भी मॉस्को के समय पर चल रहा है।

सिर्फ एक दिन पहले मैं रूस से दिल्ली पहुँचा था। रात पहाड़गंज के एक छोटे से होटल में बीती थी - इतनी छोटी कि suitcase लाता तो शायद कमरे से पहले वही settle हो जाता। लेकिन मेरे पास सिर्फ black backpack था, और वही अगले दस दिनों के लिए मेरा घर बनने वाला था।

स्टेशन के अंदर किसी को मेरे jet lag से कोई मतलब नहीं था।

“चाय... गरम चाय!”

“साइड दीजिए!”

“कुली! कुली!”

“मथुरा वाली train किधर लगेगी?”

किसी बच्चे के रोने की आवाज़, किसी phone पर बजती आरती, लोहे के पहियों पर घिसटते suitcases और ऊपर से आती railway announcement - सब कुछ एक साथ चल रहा था।

मैं कुछ seconds वहीं खड़ा रहा। कंधे पर backpack था। उसके अंदर कपड़े, charger, power bank, basic medicines, पानी की bottle, notebook, documents, camera और जरूरत से थोड़ा ज्यादा भरोसा था कि मैंने सामान बहुत कम रखा है।

असल में backpack पहले ही भारी लग रहा था।

मैंने mobile निकाला। Ticket खोला। Coach देखा - **S6**. Seat - **41**.

दो कदम चला। फिर ticket खोला। Platform number दोबारा देखा। मुझे पूरा यकीन था कि मैं सही दिशा में जा रहा हूँ।

“भैया।”

मैंने पीछे मुड़कर देखा। लाल कमीज़ पहने एक उम्रदराज़ कुली मुझे देख रहा था।

“मथुरा?”

“हाँ।”

उसने मेरे पीछे इशारा किया। “तो उधर जाइए। आप उल्टा जा रहे हैं।”

मैंने सामने लगे coach indicators देखे। फिर phone देखा। फिर उसके चेहरे की तरफ। वह हल्का-सा मुस्कुराया।

“पहला दिन?”

“इतना साफ दिख रहा है?”

“बैग से नहीं। हर दस सेकंड में ticket देख रहे हो।”

मैं हँस पड़ा। “हाँ... पहला दिन है।”

“कहाँ तक?”

यह simple सवाल था। जवाब थोड़ा पागलपन जैसा था।

“आज Mathura. फिर Vrindavan. उसके बाद Varanasi, Ayodhya, Lucknow, Prayagraj, Jaipur, Jaisalmer... फिर Gujarat होकर Jalgaon.”

वह कुछ seconds मुझे देखता रहा।

“अकेले?” - “हाँ।”

“दस दिन में?” - “हाँ।”

उसने सिर थोड़ा झुकाया। मुझे लगा वह बोलेगा - मत जाओ। इसके बजाय उसने कहा, “जहाँ अच्छा खाना मिले, वहाँ timetable भूल जाना।”

मैं हँसा। वह भी। फिर उसकी आवाज़ थोड़ी शांत हुई।

“और जहाँ अच्छे लोग मिलें... वहाँ जल्दी मत करना।”

उस समय यह बस एक पुराने traveller की अच्छी line लगी। बाद में समझ आया कि पूरी यात्रा में यही शायद सबसे काम की सलाह थी।

S6 तक पहुँचते-पहुँचते स्टेशन और भी crowded हो चुका था। कुछ लोग अपनी seats पर बैठ चुके थे, कोई bedding adjust कर रहा था, कोई luggage chain लगा रहा था। एक family ने train चलने से पहले ही गरम पराठे खोल दिए थे।

मुझे उस family से तुरंत jealousy हुई। मेरे पास दो biscuit packets थे। Planning में पहली कमी दर्ज हो चुकी थी।

Coach में वही familiar railway smell थी - iron, dust, पुराने upholstery, detergent और किसी पिछली journey के खाने की हल्की-सी गंध।

मैं numbers पढ़ते हुए आगे बढ़ा।

37 38 39 40 41

Window seat.

Perfect.

Window seat का logic समझाना मुश्किल है। आप उसी destination पर पहुँचते हैं जहाँ बाकी लोग पहुँचते हैं। उतनी ही देर train में रहते हैं। Seat हमेशा ज्यादा comfortable भी नहीं होती। फिर भी window मिलने पर ऐसा लगता है जैसे journey में कोई extra हिस्सा मिल गया हो। शायद इसलिए क्योंकि दुनिया सामने खुली रहती है।

मैं Seat 41 तक पहुँचा - और रुक गया।

मेरी जगह पर कोई passenger नहीं बैठा था। सिर्फ एक किताब पड़ी थी। या शायद diary.

गहरे नीले रंग का cover. कोई title नहीं। कोई नाम नहीं। किनारे घिसे हुए। ऐसी चीज़ जो नई खरीदकर भूल नहीं गई थी; उसे लंबे समय तक किसी ने इस्तेमाल किया था।

मैंने आसपास देखा। “ये किसकी है?”

कोई जवाब नहीं। ऊपर वाली berth पर एक आदमी चादर ओढ़कर सो रहा था। सामने एक सज्जन trolley bag नीचे adjust कर रहे थे।

मैंने उनसे पूछा, “Sir, ये diary आपकी है?”

उन्होंने एक नजर देखी। “नहीं। मैं अभी आया हूँ।”

मैंने diary उठा ली। पहला page - खाली। दूसरा - खाली। तीसरा - खाली। लगभग बीस pages पलटे। सब blank.

“बहुत बढ़िया,” मैंने खुद से कहा। “किसी ने empty diary खोई है और detective मुझे बनना पड़ेगा।”

मैं उसे seat के corner पर रखने ही वाला था कि pages के बीच कुछ अटक गया।

एक पुराना railway ticket.

कागज पीला पड़ चुका था। Printing इतनी faded थी कि पहले कुछ समझ नहीं आया। फिर दो नाम साफ दिखाई दिए:

JAISALMER
and
JAIPUR

मैं कुछ seconds ticket देखता रहा। Jaisalmer मेरी itinerary में भी था - लगभग एक हफ्ते बाद।

Passenger name वाला हिस्सा फटा हुआ था। Date लगभग मिट चुकी थी।

“Coincidence,” मैंने धीरे से कहा। यही सबसे आसान explanation था।

फिर ticket पलटा। पीछे नीली ink से चार numbers लिखे थे:

10 - 3 - 7 - 1

बस। न नाम। न phone number. न sentence.

मैंने diary फिर पलटी। शायद numbers का explanation आगे हो। कुछ pages पर पुरानी writing के दबाव जैसे निशान दिखाई दिए, पर कुछ पढ़ा नहीं जा रहा था।

उसी समय आवाज़ आई - “चाय!”

Vendor हाथ में kettle और paper cups लेकर खड़ा था। मैंने एक cup लिया। पहली sip बहुत गरम थी, बहुत मीठी भी - और उस समय बिल्कुल सही।

यात्रा का पहला स्वाद:

रेलवे प्लेटफॉर्म की मीठी चाय।

मैंने notebook निकाली और लिखा:

Delhi. 5:58 AM. Journey begins.

Blue diary found on Seat 41.

10-3-7-1?

मैं खुद पर हँसा। Train चली भी नहीं थी और मैंने mystery diary शुरू कर दी थी।

उसी समय किसी ने कहा, “वो किताब आपकी नहीं है।”

आवाज़ बहुत तेज नहीं थी, लेकिन clearly मेरे लिए थी।

मैंने ऊपर देखा। Seat 39 के पास एक लड़की खड़ी थी। Black backpack. सफेद kurta. Shoulder पर camera. बाल जल्दी में बाँधे गए लग रहे थे।

वह मुझे नहीं देख रही थी। उसकी नजर diary पर थी।

“नहीं,” मैंने कहा, “seat पर पड़ी थी।”

उसने पहली बार मेरी तरफ देखा। कोई dramatic expression नहीं, कोई movie जैसी रहस्यमय मुस्कान नहीं। बस एक traveller.

“आप जानती हैं किसकी है?”

“नहीं।”

“फिर आपको कैसे पता कि मेरी नहीं है?”

इस बार उसकी आँखों में हल्की हँसी आई। “क्योंकि आप उसे ऐसे देख रहे हो जैसे अभी पाँच मिनट पहले मिली है।”

Fair point.

“आपने पहले देखी है?”

वह कुछ कहने वाली थी कि पीछे से किसी ने कहा, “Madam, थोड़ा side please.” उसने रास्ता छोड़ा और camera strap ठीक किया।

“आप Mathura जा रही हैं?” मैंने पूछा।

“शायद।”

“शायद?”

“Train जहाँ उतार दे।”

मैं हँसा। “Railway ऐसा flexible ticket नहीं देती।”

वह पहली बार ठीक से मुस्कुराई। “तो फिर Mathura.”

बस इतना ही। न नाम पूछा, न मैंने बताया, न कोई लंबी बातचीत। वह अपना backpack लेकर coach के दूसरे end की तरफ चली गई।

यात्रा में लोगों से मिलना आसान है। उन्हें दोबारा मिलना अलग बात है। उस समय मुझे यह बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि यह छोटी-सी conversation आगे किसी काम आएगी - और उससे भी कम कि diary पर उसकी नजर इतनी जल्दी क्यों गई थी।

* * *

Train ने हल्का झटका लिया। फिर दूसरा। Platform धीरे-धीरे पीछे जाने लगा।

एक बच्चा बाहर खड़े अपने father को हाथ हिला रहा था। कोई window से आखिरी बार पानी की bottle दे रहा था। एक passenger चलती train के साथ कुछ कदम दौड़ा और coach में चढ़ गया।

Delhi पीछे छूट रही थी। Station roof खत्म हुई। Tracks बढ़ते गए। Signals, दीवारें, पुराने buildings, flyovers और सुबह की धुंध में शहर धीरे-धीरे खुलता गया।

मैंने phone पर route देखा:

Mathura → Vrindavan → Varanasi → Ayodhya → Lucknow → Prayagraj → Jaipur → Jaisalmer → Ahmedabad → Surat → Jalgaon

सब planned था। कम से कम मुझे ऐसा लगता था।

सामने बैठे लगभग पचपन-साठ साल के आदमी ने newspaper fold किया।

“घूमने जा रहे हो?”

“हाँ।”

“Mathura?”

“Mathura से आगे भी।”

“कहाँ-कहाँ?”

मैंने route बताया। उन्होंने newspaper पूरी तरह बंद कर दिया।

“इतना?”

“दस दिन।”

वह हँसे। “दस दिन में तो आदमी हमारा railway system ही समझ ले, वही बहुत है।”

उन्होंने अपना परिचय शर्मा जी के रूप में दिया। सरकारी school में teacher थे और Mathura के आगे उनका घर था।

“अकेले travelling में एक फायदा है,” उन्होंने कहा।

“क्या?”

“आपको strangers से बात करनी पड़ती है।”

“और नुकसान?”

“Strangers से बात करनी पड़ती है।”

हम दोनों हँस पड़े। और यहीं से Chapter One की पहली असली बातचीत शुरू हुई।

शर्मा जी ने पूछा, “इतने शहर क्यों?”

“देखना है public transport से India कैसा लगता है।”

उन्होंने eyebrow उठाई। “India? दस दिन में?”

“पूरा India नहीं।”

“अच्छा है। कम से कम ये तो मानते हो।”

बात मज़ाक में थी, मगर point सीधा था।

उन्होंने कहा, “Tourist लोग जगह देखते हैं। Traveller लोग रास्ता भी देखते हैं। दोनों में फर्क है।”

मैंने notebook खोल ली। “ये line लिख सकता हूँ?”

वह हँसे। “Royalty देना पड़ेगा।”

“Chai पिला दूँ?”

“चलो, इतने में rights दे दिए।”

फिर बात school पर चली गई। उन्होंने बताया कि छोटे शहरों के बच्चों के सपने तेजी से बदले हैं। कोई सरकारी नौकरी चाहता है, कोई private company, कोई city जाना चाहता है, कोई social media पर दुनिया देखकर ऐसा career चुनना चाहता है जिसका नाम उसके माता-पिता ने पहली बार सुना हो।

“हमारे समय में options कम थे,” उन्होंने कहा। “अब options बहुत हैं। Confusion भी बहुत है।”

यह interview नहीं था। बस train वाली बातचीत थी - जिसकी शुरुआत कोई तय नहीं करता और ending अक्सर station तय करता है।

“आपके बच्चे?” मैंने पूछा।

“बेटा Pune में है। बेटी Noida.”

“और आप?”

“मैं Mathura के पास।”

उन्होंने window की तरफ देखा। “इसीलिए railway चाहिए।”

यह छोटा-सा sentence याद रह गया। Railway सिर्फ cities connect नहीं करती; बहुत बार वह families को ऐसी दूरी पर रखती है जिसे weekend, छुट्टी और अचानक जरूरत पड़ने पर पार किया जा सके।

कुछ देर बाद concrete कम होने लगा और खेत बढ़ने लगे। सुबह की light साफ थी। छोटे stations आते-जाते रहे। Track के किनारे लोग अपना दिन शुरू कर रहे थे।

मैंने camera निकाला। Window से photo लेने की कोशिश की। पहला blurred. दूसरा और खराब। तीसरे में सिर्फ electric pole.

शर्मा जी ने देखा।

“Travel photography सीख रहे हो?”

“लगता है आज से।”

“पहले आँख से देख लो। Camera बाद में।”

मैंने camera नीचे रख दिया। उनकी दूसरी royalty-worthy line.

* * *

Mathura करीब आने लगा। Coach में activity बढ़ गई। लोग bags नीचे उतार रहे थे। Shoes पहन रहे थे। किसी ने पूछा, “Mathura next है?” चार लोगों ने अलग-अलग confidence में एक साथ जवाब दिया। यही Indian Railways का unofficial information system है।

मैंने backpack नीचे लिया। Blue diary main compartment में थी। Ticket उसके बीच।

10 - 3 - 7 - 1

मैं numbers भूलना चाहता था। लेकिन अब वे दिमाग में अटक चुके थे।

Train धीमी हुई। बाहर station buildings दिखाई देने लगीं। फिर board आया:

MATHURA JN

मैंने शर्मा जी से हाथ मिलाया।

“Enjoy,” उन्होंने कहा। “और route पूरा करना जरूरी नहीं है।”

“मतलब?”

“Travel plan आदमी बनाता है। कभी-कभी रास्ता बेहतर plan बना देता है।”

वह उतरने लगे। मैं पीछे था।

Platform पर उतरते ही Mathura ने तीन चीजों से स्वागत किया - गर्मी, आवाज़ और खाने की smell.

“पेड़ा ले लो!” “Vrindavan!” “Janmabhoomi!” “Auto!”

Delhi अब पहला शहर बन चुका था। Mathura पहला destination.

मैंने instinctively backpack की front zip check की। Phone था। Wallet था। Power bank था। फिर main compartment खोला। Blue diary भी थी।

मैंने राहत की साँस ली - और तुरंत खुद से पूछा कि मैं एक अनजान diary की safety check क्यों कर रहा हूँ।

उसी वक्त platform के दूसरी तरफ white kurta दिखा। Black backpack. Camera.

वही लड़की।

वह crowd में आगे जा रही थी। एक second के लिए उसने पीछे देखा। हमारी नजर मिली। फिर उसने मेरी तरफ नहीं - मेरे backpack की तरफ देखा। ठीक वहीं जहाँ diary रखी थी।

भीड़ ने उसे ढक लिया।

मैं कुछ कदम आगे गया। “Excuse me!”

कोई जवाब नहीं। कुछ seconds बाद वह दिखाई देना बंद हो गई।

मैं वहीं रुक गया। सामने station exit था। बाहर Mathura इंतजार कर रहा था - Krishna Janmabhoomi, Dwarkadhish, Yamuna, Vishram Ghat, local food और फिर Vrindavan.

मैंने backpack कंधे पर डाला।

और पहली बार लगा - शायद diary train में भूली नहीं गई थी। शायद उसे वहाँ रखा गया था।

किसके लिए?

यह सवाल थोड़ा बेवकूफी भरा लगा। इसलिए मैंने उसे ignore किया। कम से कम अगले दो घंटे के लिए।

Station से बाहर निकलते ही एक e-rickshaw driver मेरे पास आया।

“कहाँ?”

“Krishna Janmabhoomi.”

“बैठो।”

मैं बैठ गया। उसने mirror में देखा। “पहली बार Mathura?”

मैं मुस्कुराया। “इतना obvious है?”

वह बोला, “Backpack से पता चल जाता है।”

Delhi वाला porter याद आया। Rickshaw traffic में निकल गया।

और मेरे दस दिन के सफ़र का पहला असली शहर शुरू हो गया।

* * *

CHAPTER TWO

कृष्ण की नगरी

KRISHNA'S CITY

मथुरा

Day One - Morning

"किसी शहर को समझने के लिए उसके *monuments* से पहले उसकी सुबह देखो।"

मथुरा जंक्शन से बाहर निकलते ही मुझे पहली बात समझ आ गई - स्टेशन पर उतरना और शहर में पहुँच जाना दो अलग बातें हैं।

बाहर e-rickshaw, auto, cycle-rickshaw और यात्रियों की आवाज़ों का अपना traffic था। हर तीसरे आदमी को लगता था कि उसे पता है मुझे कहाँ जाना चाहिए।

"वृंदावन?"

"जन्मभूमि?"

"गोवर्धन?"

"पूरा दर्शन करा दूँ?"

मैंने backpack थोड़ा ऊपर खींचा और एक e-rickshaw वाले से कहा, "Krishna Janmabhoomi."

उसने बिना किसी negotiation के कहा, "बैठो।"

मुझे यह suspiciously आसान लगा।

मैंने पूछा, "कितना?"

अब negotiation शुरू हुआ।

यही travel का पहला practical lesson था: जो fare पहले नहीं पूछा जाए, वह destination पर अक्सर spiritual experience से ज्यादा powerful हो जाता है।

कुछ bargaining के बाद हम चल पड़े।

Mathura की सड़कें किसी polished tourist city जैसी नहीं थीं। दुकानों के ऊपर पुराने signboards, scooters, दूध के cans, cycle-rickshaws, मंदिरों के छोटे शिखर, सड़क किनारे खड़ी गायें और बीच-बीच में अचानक आती बहुत तेज़ horn की आवाज़।

Driver ने mirror में देखा।

"पहली बार?"

मैंने हँसकर कहा, “आज तीसरा आदमी है जो पूछ रहा है।”

“चेहरे से पता चल जाता है।”

“Backpack से नहीं?”

वह हँसा। “वो भी।”

Delhi वाला porter याद आ गया।

मैंने उसके नाम के बारे में पूछा। उसने कहा, “रमेश।”

“यहाँ रोज tourist?”

“Tourist नहीं,” उसने सुधारते हुए कहा, “यात्री।”

फिर थोड़ी देर बाद खुद ही बोला, “Tourist photo लेता है, यात्री दर्शन करता है। लेकिन पैसा दोनों खर्च करते हैं।”

Mathura ने मुझे पहले दस मिनट में दूसरा philosopher दे दिया था।

* * *

मैंने breakfast नहीं किया था। स्टेशन की chai अब तक पेट में अकेली थी। रास्ते में एक दुकान के सामने गरम कचौड़ियाँ तलती दिखाई दीं।

मैंने रमेश से कहा, “दो मिनट रुक सकते हो?”

उसने तुरंत गाड़ी किनारे की। शायद उसे भी पता था कि Mathura में खाली पेट दर्शन करना unnecessary bravery है।

दुकान छोटी थी। सामने बड़े लोहे के कड़ाह में तेल उबल रहा था। एक आदमी कचौड़ी निकाल रहा था, दूसरा आलू की सब्ज़ी डाल रहा था, तीसरा पैसे ले रहा था। किसी formal system की जरूरत नहीं थी - workflow सालों से चल रहा होगा।

मेरी plate में दो कचौड़ियाँ, मसालेदार आलू और ऊपर थोड़ी हरी चटनी आई।

पहला निवाला लेते ही Moscow की coffee और Paharganj की dal-roti दोनों बहुत दूर लगने लगे।

मथुरा का पहला स्वाद:

कचौड़ी - आलू की सब्ज़ी - गरम चाय

दुकानदार ने पूछा, “कहाँ से?”

“कल Moscow से Delhi आया। आज Mathura.”

उसने हाथ रोककर मेरी तरफ देखा।

“Russia?”

“हाँ।”

“वहाँ कचौड़ी मिलती है?”

मैंने कहा, “मिल भी जाए तो यह वाली नहीं मिलेगी।”

वह संतुष्ट हुआ। शायद मैंने सही diplomatic answer दिया था।

रमेश ने बाहर से आवाज़ लगाई, “भैया, दर्शन भी आज ही करना है!”

मैंने आखिरी bite जल्दी खत्म की। Travel में कुछ meals स्वाद से नहीं, timetable से भी खाए जाते हैं।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि

SHRI KRISHNA JANMABHOOMI

जन्मभूमि क्षेत्र के पास पहुँचते ही traffic का character बदल गया। दुकानों पर माला, प्रसाद, छोटे मुकुट, बांसुरी, पीले कपड़े और भगवान कृष्ण की तस्वीरें दिखाई देने लगीं। सड़क पर आने वाले लोगों की चाल भी अलग थी - कुछ family groups, कुछ बुजुर्ग, कुछ बच्चे, कुछ अकेले यात्री।

रमेश ने मुझे एक जगह उतारते हुए कहा, “Phone और bag rules पूछ लेना। अंदर सब चीज़ लेकर नहीं जाने देंगे।”

यात्रा के दौरान यह practical हिस्सा अक्सर guidebooks की romantic language में गायब रहता है। किसी sacred place तक पहुँचने से पहले आपको shoes, bag, phone, camera, security line और locker की reality से गुजरना पड़ता है।

मैंने backpack जमा करने की व्यवस्था की, जरूरी documents और थोड़ा cash संभाला, और security line में लग गया।

लाइन धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। सामने खड़े एक बुजुर्ग दंपति शायद Rajasthan से आए थे। उनके पीछे एक छोटा बच्चा लगातार पूछ रहा था, “अंदर कितना दूर है?” उसकी माँ हर बार अलग जवाब दे रही थी।

अंदर जाते हुए आवाज़ें बदल गईं। बाहर horn और दुकानों की पुकार थी; भीतर मंत्र, घंटियाँ और लोगों की धीमी बातचीत।

कृष्ण जन्मभूमि का महत्व सिर्फ एक building की वजह से नहीं था। श्रद्धालुओं के लिए यह वह स्थान था जिसे भगवान कृष्ण के जन्म से जोड़ा जाता है - एक ऐसा कथात्मक और धार्मिक केंद्र जिसने सदियों से Braj क्षेत्र की पहचान को आकार दिया है।

मैं इतिहास की तारीखें याद करने नहीं आया था। मैं देखना चाहता था कि ऐसी जगह आज के traveller को कैसी महसूस होती है।

उत्तर था - बहुत layered.

एक तरफ सुरक्षा व्यवस्था। दूसरी तरफ devotion. एक तरफ crowd management. दूसरी तरफ लोग जो बहुत लंबी दूरी तय करके सिर्फ कुछ मिनटों के दर्शन के लिए आए थे।

मैंने कुछ समय वहीं खड़े होकर लोगों को देखा। एक आदमी हाथ जोड़कर बिल्कुल स्थिर था। एक परिवार बच्चों को शांत रखने की कोशिश कर रहा था। एक बुजुर्ग महिला ने आंखें बंद कीं और शायद अपने बाकी group को भूल गईं।

ऐसी जगहों पर travel writer की सबसे बड़ी समस्या होती है - कितना देखना है, कितना समझना है और कितना बस महसूस होने देना है।

मैंने notebook नहीं निकाली। वैसे भी वह backpack के साथ बाहर थी।

शायद अच्छा ही था। कुछ जगहों पर notes बाद में लिखे जाने चाहिए।

* * *

बाहर निकलते ही पहला काम backpack check करना था। दूसरा - पानी। तीसरा - एक सवाल:

अब कहाँ?

Mathura में locations map पर करीब दिखाई देती हैं, लेकिन narrow streets और traffic उनकी वास्तविक दूरी बदल देते हैं। मैंने Dwarkadhish Temple की तरफ जाने का फैसला किया।

रमेश जा चुका था। अब local e-rickshaw और पैदल चलना था।

एक shop के सामने रुककर मैंने पानी लिया। वहीँ लगभग साठ साल के एक आदमी माला और छोटी पूजा-सामग्री बेच रहे थे।

उन्होंने पूछा, “दर्शन हो गया?”

“हाँ।”

“अब Dwarkadhish?”

“हाँ।”

“फिर Vishram Ghat जाना। शाम तक रुको तो अच्छा लगेगा।”

मैंने कहा, “आज ही Vrindavan भी जाना है।”

उन्होंने सिर हिलाया।

“तुम लोग शहर गिनते ज्यादा हो, देखते कम हो।”

उनका tone शिकायत वाला नहीं था। बस observation था।

मैं मुस्कुराया। “मेरे पास दस दिन हैं।”

“भगवान के पास ज्यादा हैं।”

मैं हँसा।

उन्होंने भी।

मैंने उनसे पूछा, “यहाँ tourist बढ़े हैं?”

“बहुत।”

“अच्छा है या बुरा?”

वह कुछ seconds सोचते रहे।

“दुकानदार से पूछोगे तो अच्छा। सड़क से पूछोगे तो बुरा। मंदिर से पूछोगे तो पता नहीं।”

मैंने मन ही मन तय किया - इस शहर में हर तीसरे आदमी को किताब लिखनी चाहिए।

द्वारकाधीश मंदिर

DWARKADHISH TEMPLE

पुरानी Mathura की तरफ जाते हुए सड़कें और संकरी होती गईं। E-rickshaw जहाँ तक जा सकता था गया, फिर मुझे उतरकर पैदल चलना पड़ा।

यह वही हिस्सा था जिसकी मुझे सबसे ज्यादा उम्मीद थी - जब Google Maps theoretically सही हो और ground reality कहे, “अब खुद देखो।”

गलियों में मिठाई की दुकानें, पूजा-सामग्री, छोटे घर, balconies, scooters और लोग सब एक साथ मौजूद थे। किसी ने पीछे से horn दिया। मैंने side लिया। फिर पता चला horn scooter का नहीं, cycle वाले की छोटी electric bell थी।

Dwarkadhish Temple के आसपास crowd था, लेकिन Krishna Janmabhoomi की security-driven movement से अलग। यहाँ old-city rhythm ज्यादा महसूस हो रही थी।

मंदिर भगवान कृष्ण के Dwarkadhish - अर्थात Dwarka के स्वामी - रूप को समर्पित है। लेकिन मेरे लिए उस समय architecture से ज्यादा interesting लोग थे।

एक family ने बच्चे को कंधे पर उठाया हुआ था। दो बुजुर्ग महिलाएँ धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं। एक युवक अपने parents के shoes संभाल रहा था और clearly इस assignment से खुश नहीं था।

दर्शन के बाद मैं कुछ देर बाहर खड़ा रहा। घंटियों की आवाज़ पीछे से आती रही और सामने street vendors अपने काम में लगे थे। Sacred और ordinary life के बीच कोई साफ सीमा नहीं थी।

शायद Braj की खासियत यही थी - mythology किसी museum में बंद नहीं थी। वह दुकानों, greetings, songs, food और street names में घुली हुई थी।

एक छोटी दुकान से मैंने Mathura peda लिया। दुकानदार ने पूछा, “यहीं खाओगे या pack?”

मैंने कहा, “यहीं।”

“अच्छा है। घूमते-घूमते pack दब जाएगा।”

मैंने पहला peda खाया। बहुत मीठा, dense, थोड़ा grainy.

दूसरा लेने की गलती भी की।

तीसरा लेने का विचार आया, पर backpack को देखकर self-control लौट आया।

Local food note:

Mathura peda को सिर्फ souvenir मत समझिए। ताज़ा खाया हुआ peda अलग अनुभव है - लेकिन दो के बाद पानी जरूरी है।

वहीं खड़े-खड़े मैंने अपना phone check किया। Battery ठीक थी। Time उम्मीद से तेज जा रहा था।

Vrindavan अभी बाकी था।

लेकिन पहले Yamuna.

Vishram Ghat की तरफ पैदल निकल पड़ा।

* * *

गलियाँ धीरे-धीरे riverfront की ओर उतरने लगीं। हवा में हल्का बदलाव था। Temple lanes की बंद गर्मी की तुलना में घाट की तरफ openness महसूस होने लगी।

रास्ते में एक लड़का बोला, “Boat?”

मैंने कहा, “पहले ghat.”

वह मेरे साथ कुछ कदम चला।

“Boat बाद में?”

“देखेंगे।”

“देखेंगे मतलब नहीं।”

मैं हँसा। “तुम business बहुत जल्दी सीख गए।”

“School भी जाता हूँ।”

“अच्छा?”

“हाँ। शाम को uncle के साथ boat.”

वह अचानक किसी और tourist की तरफ मुड़ गया। Conversation खत्म।

यही street travel था - लोग आपकी कहानी में बिना introduction आते हैं और बिना goodbye चले जाते हैं।

विश्राम घाट

VISHRAM GHAT - YAMUNA

Yamuna सामने थी।

Mathura की crowded streets के बाद riverfront अचानक खुला हुआ लगा। सीढ़ियाँ नीचे पानी तक जाती थीं। किनारे boats बंधी थीं। priests अपने-अपने स्थान पर बैठे थे। कुछ लोग पूजा कर रहे थे, कुछ बस बैठकर नदी देख रहे थे।

Vishram Ghat को Krishna tradition में विशेष महत्व दिया जाता है। नाम स्वयं "विश्राम" - rest - की ओर इशारा करता है, और स्थानीय धार्मिक कथाओं में इसे Krishna से जुड़े प्रसंगों के साथ याद किया जाता है।

लेकिन मेरे लिए उस दोपहर सबसे जरूरी चीज बस पाँच मिनट बैठना था।

Backpack उतारा। सीढ़ी पर रखा। पानी की bottle निकाली।

Travel schedule अचानक बहुत ambitious लगने लगा। Moscow से flight, Paharganj की रात, सुबह Delhi station, train, Mathura streets, temples - शरीर itinerary से थोड़ा पीछे चल रहा था।

मैंने phone airplane mode पर रखा और नदी देखने लगा।

कुछ minutes बाद एक नाविक मेरे पास बैठ गया। उम्र शायद चालीस-पैंतालीस। उसने boat offer नहीं की। यह unusual था।

उसने पूछा, "कहाँ से?"

मैंने कहा, "आज Delhi से। कल Moscow से।"

वह मेरी तरफ घूम गया। "Russia?"

मैंने सिर हिलाया।

"बहुत ठंड?"

“हाँ।”

उसने Yamuna की तरफ देखा। “यहाँ गर्मी में याद आएगी।”

हम दोनों हँसे।

उसका नाम महेश था। उसके परिवार में कई लोग boat work से जुड़े थे।

मैंने पूछा, “नदी बदल गई है?”

वह तुरंत बोला, “बहुत।”

फिर रुक गया।

“कैसे?”

“पानी, crowd, काम - सब बदलता है। लेकिन लोग आते रहते हैं।”

उसने religious tourism पर कोई grand speech नहीं दी। बस practical बातें कीं - festival days पर काम बढ़ता है, कुछ seasons धीमे होते हैं, river की condition बदलती है, और tourists अक्सर boat price पर ज्यादा बहस करते हैं लेकिन hotel में दस गुना ज्यादा खर्च कर देते हैं।

“आपको tourist अच्छे लगते हैं?” मैंने पूछा।

“अच्छे-बुरे क्यों? ग्राहक हैं।”

फिर उसने मुस्कुराकर जोड़ा, “कुछ आदमी दो मिनट में दोस्त भी बन जाते हैं।”

Delhi के porter की line याद आई: अच्छे लोग मिलें तो जल्दी मत करना।

मैंने समय देखा। फिर phone वापस pocket में रखा।

पाँच मिनट और।

* * *

महेश किसी passenger को boat दिखाने चला गया। मैं सीढ़ियों पर थोड़ा नीचे उतरा। पानी तक नहीं - बस river edge के करीब।

पत्थर पुराने थे। कुछ जगह नाम और छोटे निशान खुरचे हुए थे। लोगों की आदत है - monument हो, tree हो, fort हो या ghat - कोई न कोई अपना नाम इतिहास में जोड़ना चाहता है।

मैं ऊपर लौटने वाला था कि एक सीढ़ी के किनारे कुछ परिचित दिखा।

पहले लगा random scratches हैं।

फिर मैं झुककर देखने लगा।

चार numbers.

10 - 3 - 7 - 1

मेरी पीठ सीधी हो गई।

मैंने तुरंत backpack खोला। Blue diary निकाली। उसके अंदर का पुराना ticket.

पीछे वही numbers.

10 - 3 - 7 - 1

मैंने दोनों को बारी-बारी देखा।

“No way.”

यह पहली बार था जब coincidence वाली explanation कमजोर लगी।

मैंने आसपास देखा। लोगों को मेरी तरफ कोई interest नहीं था। कोई पूजा कर रहा था, कोई boat में बैठ रहा था, कोई बच्चों को बुला रहा था।

यह निशान नया था या पुराना - मैं नहीं जानता था। शायद किसी और कारण से वही numbers लिखे गए हों। शायद मैंने अब numbers को इतना महत्व दे दिया था कि दुनिया में जहाँ वे दिखें, मुझे connection लगे।

लेकिन चारों numbers उसी क्रम में?

मैंने phone निकाला और एक photo ले लिया - सिर्फ reference के लिए।

फिर diary के blank pages पलटे।

कुछ नहीं।

एक पल के लिए मुझे white kurta वाली traveller याद आई। क्या उसने Mathura station पर diary को पहचान लिया था? अगर हाँ, तो कैसे?

मैंने खुद को रोका।

यह travel book था, detective agency नहीं।

कम से कम अभी तक।

घाट से ऊपर लौटते हुए hunger वापस आ गई। Mathura peda अच्छा था, लेकिन lunch नहीं।

एक छोटी दुकान पर lassi के बड़े steel glasses दिखे। मैंने एक लिया। ऊपर malai की मोटी layer थी। Glass हाथ में आते ही मुझे समझ आ गया कि यह beverage नहीं, commitment है।

पास बैठे दो college-age लड़के हँस रहे थे। उनमें से एक ने पूछा, “पहली बार?”

मैंने कहा, “क्या यहाँ सबको पता चल जाता है?”

“आप lassi को देखकर डर रहे हो।”

मैंने पहला sip लिया।

“अब नहीं डर रहा।”

हमारी थोड़ी बातचीत हुई। दोनों Mathura के आसपास के थे, एक Agra में पढ़ता था, दूसरा competitive exams की तैयारी कर रहा था। उन्होंने Vrindavan जाने के local options बताए और चेतावनी दी कि शाम में traffic बढ़ सकता है।

उनमें से एक ने कहा, “Banke Bihari जाओ तो phone संभालना। Monkey ले गया तो negotiation अलग level का होगा।”

मैंने पूछा, “Phone वापस कैसे?”

“Frooti.”

मैंने सोचा वह मज़ाक कर रहा है।

दूसरे ने सिर हिलाया। “कभी-कभी सच में।”

India में travel information का सबसे reliable हिस्सा अक्सर वही होता है जो इतना अजीब लगे कि fake होना चाहिए।

मथुरा food trail:

कचौड़ी-सब्ज़ी → peda → lassi

Simple rule: taste everything, but not all at once.

मैंने notebook निकाली और सुबह के notes पूरे किए:

Mathura is not quiet spirituality. It is devotion inside traffic.

फिर नीचे:

Numbers seen again at Vishram Ghat.

और उसके नीचे बड़ा question mark.

* * *

Vrindavan जाने से पहले मैं वापस main road की तरफ चल पड़ा। Backpack अब ज्यादा भारी था या शरीर थका था - पता नहीं।

एक auto वाला Vrindavan के लिए passengers भर रहा था। उसने पूछा, “एक?”

“हाँ।”

“बैठो, दो आदमी और।”

मैं पीछे बैठ गया। मेरे साथ एक family और एक बुजुर्ग साधु-जैसे व्यक्ति बैठे। Auto तब तक नहीं चला जब तक driver को लगा कि vehicle की theoretical capacity का कम से कम 140 percent पूरा नहीं हुआ।

मैंने diary फिर backpack के अंदर रख दी।

Numbers दिमाग में थे।

लेकिन अब सामने Vrindavan था।

मैंने तय किया - mystery शाम तक wait करेगी।

Driver ने engine start किया।

Mathura की streets पीछे जाने लगीं।

कुछ देर बाद शहर पतला हुआ और road Vrindavan की तरफ बढ़ने लगी।

मुझे नहीं पता था कि वहाँ monkeys, crowded lanes और एक और familiar face मेरा इंतजार कर रहे थे।

लेकिन वह अगले chapter की बात थी।

* * *

CHAPTER THREE

वृंदावन में रास्ता खो गया

LOST IN VRINDAVAN

वृंदावन

Day One - Afternoon to Evening

“कुछ शहर रास्ता बताते हैं। कुछ शहर पहले आपको भटकाते हैं।”

Mathura से Vrindavan जाने वाला shared auto तब तक नहीं चला जब तक driver को यह यकीन नहीं हो गया कि उसमें एक और आदमी theoretically बैठ सकता है।

मैं पीछे की तरफ corner में था। Backpack घुटनों पर रखा था। मेरे दाएँ एक family, बाएँ एक बुजुर्ग साधु-जैसे व्यक्ति, और सामने driver के पास दो लोग ऐसी जगह बैठे थे जहाँ मुझे seat दिखाई ही नहीं दे रही थी।

Auto ने झटका लिया और Mathura पीछे छूटने लगा।

मैंने phone पर time देखा। फिर battery.

42%

इतनी भी कम नहीं थी। लेकिन मेरे सामने अभी Vrindavan, फिर Mathura वापसी, रात की train और उसके बाद Varanasi था। Power bank backpack में था, पर cable शायद नीचे किसी shirt के बीच दबी थी।

मैंने phone वापस pocket में रखा।

Road पर boards बदलने लगे। Krishna, Radha, ashram, guest house, dharamshala, temple, food, parking - लगभग हर तीसरा sign किसी न किसी तरह pilgrimage economy का हिस्सा था।

मेरे सामने बैठे बुजुर्ग ने अचानक कहा, “पहली बार वृंदावन?”

मैं हँस पड़ा।

आज यह सवाल चौथी या पाँचवीं बार था।

“हाँ।”

उन्होंने कहा, “तो जल्दी मत करना।”

Delhi वाले porter की line फिर याद आई।

शायद north India के सभी अनुभवी लोग मेरी itinerary के खिलाफ एक secret union चला रहे थे।

* * *

Vrindavan पहुँचते ही पहला impression किसी शांत spiritual postcard जैसा नहीं था।

वह loud था।

बहुत loud.

Battery rickshaws, pedestrians, temple bells, दुकानें, bhajans, horns, monkeys, pilgrims और बीच-बीच में कोई आदमी अचानक “Radhe Radhe” कहता हुआ निकल जाता।

Driver ने एक मोड़ पर कहा, “आगे नहीं जाएगा। यहाँ से पैदल।”

मैं उतरा।

“Banke Bihari?”

उसने हाथ से एक दिशा दिखाई।

“सीधा, फिर left, फिर पूछ लेना।”

मैंने पूछा, “कितना दूर?”

“बस पास।”

India में “बस पास” distance की unit नहीं है। वह विश्वास की परीक्षा है।

मैंने backpack कंधे पर डाला और गलियों में उतर गया।

बाँके बिहारी मंदिर की ओर

THE LANES OF BANKE BIHARI

पहली गली आसान थी। दूसरी भी। तीसरी पर मुझे लगा शायद गलत मुड़ गया हूँ। चौथी पर मुझे पूरा यकीन हो गया कि गलत मुड़ गया हूँ।

Google Maps पर blue dot घूम रहा था। शायद मैं भी।

गलियाँ इतनी narrow थीं कि map की straight line ground पर तीन turns में बदल जाती थी। सामने से scooter आया तो मुझे एक दुकान के shutter से लगभग चिपकना पड़ा। उसके पीछे गाय। फिर pilgrims का group. फिर एक monkey बिजली के तार पर बैठा हुआ नीचे देख रहा था जैसे traffic police वही हो।

एक दुकान के बाहर फूलों की मालाएँ सजी थीं। मैंने वहाँ बैठी लगभग पचास साल की महिला से पूछा, “Banke Bihari?”

उन्होंने बिना ऊपर देखे कहा, “पीछे।”

मैंने मुड़कर देखा।

“पीछे मतलब?”

अब उन्होंने मेरी तरफ देखा।

“जहाँ से आए वहीं वापस। दूसरी गली से right.”

मैंने लंबी साँस ली।

“मैं तो समझ रहा था सीधा जा रहा हूँ।”

वह मुस्कुराईं। “वृंदावन में सब यही समझते हैं।”

उनका नाम सावित्री था। फूल और तुलसी-माला बेचती थीं। मैंने एक छोटी माला ली, और direction confirm करने के बहाने कुछ देर वहीं खड़ा रहा।

“रोज इतना crowd?” मैंने पूछा।

“रोज भीड़ है। दिन बदलता है, भीड़ का रंग बदलता है।”

“Tourism बढ़ा है?”

“बहुत।”

“अच्छा?”

उन्होंने माला के धागे को खींचकर ठीक किया।

“कमाई के लिए अच्छा। रहने के लिए मुश्किल। किराया बढ़ा, traffic बढ़ा, बाहर के लोग बहुत आए। लेकिन काम भी इसी से चलता है।”

यही वह balance था जो travel brochures में अक्सर नहीं दिखता। जिस crowd से traveller परेशान होता है, वही crowd किसी और की livelihood हो सकता है।

मैंने पूछा, “आपके बच्चे भी यही काम करते हैं?”

“बेटा delivery करता है। बेटी college जाती है।”

“फिर दुकान?”

“जब तक हाथ चलते हैं, दुकान चलेगी।”

उन्होंने मुझे ऊपर से नीचे देखा।

“आप कहाँ से?”

“कल Moscow से Delhi.”

“Moscow?”

मैंने सिर हिलाया।

“वहाँ भी Radhe Radhe बोलते हैं?”

मैं हँस पड़ा। “कुछ लोग जरूर बोलते होंगे।”

वह भी हँसीं।

फिर direction दोबारा समझाया: “इस बार phone मत देखना। लोगों के पीछे चलना।”

मैंने phone pocket में रख दिया।

कभी-कभी local navigation satellite से बेहतर होता है।

Stranger Note:

सावित्री - फूल बेचने वाली।

“भीड़ किसी के लिए परेशानी है, किसी के लिए रोज़ी।”

मैं सही गली में आया। Crowd अचानक और dense हो गया। अब मुझे पूछने की जरूरत नहीं थी। जिस दिशा में सबसे ज्यादा लोग जा रहे थे, वही दिशा मंदिर की थी।

बाँके बिहारी मंदिर

BANKE BIHARI TEMPLE

मंदिर के पास पहुँचते-पहुँचते pace मेरे control से बाहर हो गया। Crowd खुद आगे ले जा रहा था।

कहीं से “राधे राधे” की आवाज़। कहीं घंटियाँ। कोई बच्चे को उठाए हुए। कोई shoes संभाल रहा। कोई अपने group को phone पर ढूँढ रहा।

मैंने backpack आगे कर लिया। Wallet और phone front pocket में shift किए।

Mathura के students की warning याद थी: monkeys.

उनकी reputation शायद exaggerated थी - लेकिन सामने एक monkey ने किसी आदमी के हाथ से plastic packet इतनी आसानी से छीना कि मैंने तुरंत sunglasses bag के अंदर डाल दिए।

Temple approach पर movement तेज था। Banke Bihari Temple Vrindavan की सबसे प्रसिद्ध Krishna devotional traditions में से एक का केंद्र है। यहाँ devotion का अनुभव शांत museum-like silence में नहीं, बल्कि movement, crowd, पुकार, anticipation और brief darshan के बीच होता है।

मैंने crowd के साथ आगे बढ़ते हुए महसूस किया कि traveller को यहाँ एक अलग skill चाहिए: control छोड़ना, लेकिन awareness नहीं।

Phone pocket में। Backpack सामने। Shoes याद। Exit याद। Breath normal.

Darshan का समय छोटा था, लेकिन atmosphere intense.

कुछ लोग आँखे बंद करके खड़े थे, कुछ हाथ ऊपर किए हुए, कुछ बच्चे अपने parents से चिपके। मेरे आगे एक बुजुर्ग आदमी की आँखों में आँसू थे। उनके लिए यह destination नहीं था। शायद वर्षों की इच्छा थी।

Travel writing में यह difference जरूरी है - visitor वही जगह देख सकता है जहाँ pilgrim जीवन का अर्थ देखता है। दोनों experiences एक ही courtyard में खड़े होकर भी अलग हो सकते हैं।

मैं बाहर निकला तो पहली feeling spiritual नहीं थी।

पहली feeling थी - मेरे shoes कहाँ हैं?

मैंने गलत side पर ढूँढना शुरू कर दिया। पाँच मिनट बाद समझ आया entry और exit अलग थे। Shoes वहीं थे जहाँ छोड़े थे।

Adventure level: unnecessary.

Phone निकाला। Battery:

27%

“अच्छा,” मैंने खुद से कहा। “अब शुरू हुआ।”

* * *

Temple area से बाहर आते हुए एक छोटा लड़का मेरे पीछे “Frooti! Frooti!” कह रहा था। पहले मुझे लगा वह बेच रहा है। फिर देखा - उसके हाथ में juice packet था और ऊपर छत पर monkey बैठा था, हाथ में किसी tourist का चश्मा।

कुछ bargaining species के बीच भी चलती है।

मैंने अपने sunglasses की सुरक्षा फिर confirm की।

वृंदावन का स्वाद

FOOD BETWEEN TEMPLES

दोपहर अब शाम की तरफ बढ़ रही थी और मुझे भूख फिर लग चुकी थी। Mathura की kachori और lassi बहुत पहले की चीज लग रही थी।

एक छोटी दुकान पर aloo-puri मिली। Steel plate. गरम puri. मसालेदार आलू. साथ में थोड़ा pickle.

मैंने दुकान के बाहर खड़े होकर खाया। सामने pilgrims आते-जाते रहे।

दुकानदार ने पूछा, “और दूँ?”

मैंने plate की तरफ देखा। फिर clock.

“एक puri.”

उसने दो डाल दीं।

“मैंने एक बोला था।”

“एक free.”

“क्यों?”

“यात्रा में हो।”

यह logic मुझे पसंद आया।

Local food:

aloo-puri, lassi, rabri और chai.

Vrindavan rule: never plan a strict diet near a temple lane.

पास में rabri दिखाई दी। मैंने सिर्फ देखा।

फिर वापस गया।

“थोड़ी।”

दुकानदार ने कटोरी भरी।

मेरे travel budget का सबसे बड़ा दुश्मन hotels नहीं, self-control था।

खाने के बाद phone फिर निकाला। Battery 23%.

मुझे ISKCON जाना था। फिर Prem Mandir. फिर Mathura वापस। रात की train miss नहीं करनी थी।

मैंने power bank निकालने के लिए backpack खोला। मिला। Cable नहीं मिली।

एक shirt.

Notebook.

Medicines.

Blue diary.

Biscuits.

Camera pouch.

Cable नहीं.

मैंने पूरा bag footpath के किनारे खोलने का idea तुरंत reject किया।

“बाद में।”

Travel का dangerous word.

* * *

मैंने e-rickshaw लेकर ISKCON का नाम लिया। Driver ने कहा, “बैठो।”

इस बार fare पहले पूछा। Character development.

इस्कॉन कृष्ण-बलराम मंदिर

ISKCON KRISHNA-BALARAM MANDIR

Banke Bihari की dense गलियों के बाद ISKCON का अनुभव अलग था। Courtyard, white architecture, chanting, international visitors और अधिक organised movement - उसी Krishna devotion का एक अलग expression.

मैंने कुछ देर shoes जमा किए, backpack संभाला और courtyard में बैठ गया।

यहीं पहली बार दिन थोड़ा slow लगा।

मेरे पास बैठा एक युवक शायद Europe से था। हाथ में beads थे। उसने पूछा, “You travelling?”

मैंने कहा, “Ten days. Too many cities.”

वह हँसा। “Then you already know the problem.”

“Which one?”

“When you travel fast, every place becomes a departure.”

मैंने यह line notebook में लिखने की कोशिश की। फिर याद आया notebook bag में है और मैं बैठा हूँ।

मैंने phone निकाला।

Battery 18%.

Notes app खोली। फिर तुरंत बंद कर दी।

कुछ wisdom battery बचाने के लिए sacrifice करनी पड़ती है।

उसने पूछा, “Where next?”

“Prem Mandir. Then Mathura. Then Varanasi.”

“Tonight?”

“Yes.”

उसने सिर हिलाया।

“Good luck.”

यह blessing कम और warning ज्यादा लगी।

Temple complex में कुछ समय बिताकर मैं बाहर आया। शाम की रोशनी नरम होने लगी थी।

Time अब enemy बन चुका था।

मैंने map खोला। Prem Mandir manageable distance पर था।

Battery 16%.

मैंने power-saving mode लगाया।

Phone ने शायद internally कहा होगा - finally.

प्रेम मंदिर

PREM MANDIR - EVENING

Prem Mandir पहुँचते-पहुँचते daylight almost खत्म हो रही थी।

सफेद stone structure पर evening light बदल रही थी। Families, children, couples, pilgrims, tourists - crowd यहाँ अलग तरह का था। Banke Bihari की devotional urgency की जगह यहाँ visual spectacle और open-space movement ज्यादा था।

जैसे-जैसे lights आने लगीं, पूरा complex अलग दिखाई देने लगा।

मैंने camera निकाला।

Phone बचाना था, camera battery अभी strong थी।

कुछ photos लिए। फिर camera नीचे कर दिया। Sharma ji की line याद आई:

"पहले आँख से देख लो। *Camera* बाद में।"

मैंने इस बार obey किया।

कुछ minutes बाद भीड़ में मुझे सफेद kurta दिखाई दिया।

मैंने फिर देखा।

Camera shoulder पर.

Black backpack.

वही traveller.

Mathura station वाली लड़की।

वह लगभग बीस-पच्चीस meter दूर थी, किसी sculpture panel की photograph ले रही थी।

मैंने instinctively उसकी तरफ चलना शुरू किया।

फिर crowd बीच में आ गया।

एक family group.

दो बच्चे.

एक stroller.

जब रास्ता साफ हुआ, वह वहाँ नहीं थी।

मैंने phone निकालने की कोशिश की - जैसे उसका number मेरे पास हो।

फिर खुद पर हँसा।

मैं उसका नाम भी नहीं जानता था।

Love story नहीं थी।

बस वही अजीब coincidence फिर सामने था।

Delhi train.

Mathura station.

अब Vrindavan.

और हर बार diary nearby.

* * *

मैंने time देखा और अचानक सारी spirituality practical panic में बदल गई।

मुझे Mathura वापस जाना था।

Night train.

Luggage.

Food.

Platform.

और phone:

11%

मैं exit की तरफ तेजी से चला।

Prem Mandir के बाहर e-rickshaw मिल गया, लेकिन driver Mathura नहीं जा रहा था।

“Chhatikara तक।”

“वहाँ से?”

“Auto मिलेगा।”

“Sure?”

उसने वही confidence दिखाया जो Indian transport system में हमेशा suspicious लगता है।

“मिल जाएगा।”

मैं बैठ गया।

कुछ दूरी बाद traffic slow हुआ। फिर almost stop.

एक procession निकल रहा था।

Driver ने engine बंद कर दिया।

“कितना time?” मैंने पूछा।

“बस पाँच minute.”

मैंने तुरंत समझ लिया - इसका मतलब कुछ भी हो सकता है।

Phone 9%.

मैंने finally backpack खोला। इस बार patience से। Shirt बाहर. Notebook बाहर. Camera pouch बाहर.

और cable?

Blue diary के नीचे.

“मिल गई।”

Power bank connect किया।

कुछ seconds बाद charging symbol आया।

यह उस दिन का सबसे reassuring spiritual sign था।

Traffic चला। Chhatikara पहुँचे। Shared auto मिला। मैं Mathura की तरफ निकल गया।

* * *

Auto में हवा तेज आ रही थी। बाहर darkness बढ़ रही थी। मैं थोड़ा relaxed हुआ।

Backpack से notebook निकालने लगा तो blue diary नीचे गिर गई।

मैंने उठाई।

Cover पर dust लग गई थी। हाथ से साफ की।

पता नहीं क्यों, मैंने उसे फिर खोला।

Blank pages.

कुछ आगे.

फिर वही faded pressure marks.

मैं pages पलटता गया।

एक page पर कुछ ऐसा दिखा जो पहले नहीं दिखा था।

बहुत हल्का.

Blue ink.

शायद किसी दूसरी sheet से transfer हुई थी।

मैंने phone flashlight on की।

Page को angle पर किया।

एक word.

English letters में.

KASHI

Auto का horn बजा। मैं चौंका।

मैंने page फिर देखा।

KASHI.

Varanasi.

मेरी अगली overnight journey.

अब coincidence वाली explanation almost insulting लग रही थी।

क्या diary मेरी route जानती थी?

या route diary का था?

मैंने तुरंत पहला logical answer चुना: किसी पुराने traveller की diary होगी जिसने यही route कभी किया होगा। पुराना Jaisalmer-Jaipur ticket भी उसी का। Numbers किसी date, room, train या code से जुड़े होंगे। Kashi अगला stop नहीं - बस उसकी यात्रा का कोई हिस्सा.

Simple.

Possible.

Human.

मैं mystery को supernatural बनाने के mood में नहीं था।

फिर मुझे white-kurta traveller याद आई।

और logic फिर थोड़ा uncomfortable हो गया।

मैंने diary बंद की।

Mathura की lights आगे दिखने लगी थीं।

मेरे पास night train पकड़ने से पहले limited time था।

Kashi जवाब देगा या नया सवाल - पता नहीं।

फिलहाल मुझे dinner चाहिए था।

* * *

Auto Mathura में रुका। मैं उतरा, backpack ठीक किया और station की दिशा पूछी।

एक आदमी ने कहा, “सीधा।”

दूसरे ने कहा, “उधर।”

तीसरे ने कहा, “Auto ले लो।”

मैंने हँसते हुए phone map खोला।

Battery अब 31% थी।

Technology और faith के बीच अस्थायी समझौता हो चुका था।

मैं station की तरफ बढ़ा।

Day One अभी खत्म नहीं हुआ था।

असल में उसकी सबसे लंबी रात अभी शुरू होने वाली थी।

* * *

CHAPTER FOUR

रात 2:17 का यात्री

THE PASSENGER AT 2:17 AM

मथुरा से वाराणसी

Day One - Night

“दिन में हम रास्ता देखते हैं। रात में रास्ता हमें देखता है।”

Mathura वापस पहुँचते-पहुँचते मेरे Day One ने मेरी planning का मज़ाक बनाना शुरू कर दिया था।

सुबह Delhi. फिर Mathura. फिर Vrindavan. तीन मंदिर, कई गलियाँ, दो बार रास्ता भूलना, एक बार shoes लगभग भूलना, phone battery का संकट, और अब रात की long-distance train.

Body कह रही थी - hotel.

Ticket कह रहा था - Varanasi.

मैंने ticket की बात मानी।

Mathura Junction रात में सुबह से बिल्कुल अलग शहर था। Platform की रोशनी में faces ज्यादा थके हुए दिख रहे थे। Families floor पर चादर बिछाकर बैठी थीं। किसी के हाथ में steel tiffin, किसी के पास plastic bucket, किसी के पास इतना luggage कि देखकर लगता था वे यात्रा नहीं, migration पर निकले हैं।

मैंने departure board देखा, फिर phone, फिर ticket.

Delhi वाले porter की आवाज़ जैसे कान में आई - “हर दस सेकंड में ticket देख रहे हो।”

मैंने phone pocket में रख लिया।

एक stall से पानी की bottle, नमकीन और दो केले लिए। Peda का छोटा packet भी backpack में था, लेकिन उसे dinner मानना self-deception होता।

Platform पर थोड़ी दूरी पर poori-sabzi मिल रही थी। मैंने plate ली। गरम, oily, simple - और उस समय perfect.

Night-platform dinner:

poori-sabzi, banana, पानी और railway chai.

Luxury: zero. Satisfaction: surprisingly high.

Train आने की announcement हुई और platform का पूरा mood बदल गया। जो लोग अभी तक शांत बैठे थे, अचानक strategic हो गए। Bags उठे। बच्चे जगाए गए। लोग coach position पूछने लगे।

मैं भी crowd के साथ आगे बढ़ा।

आज दूसरी train थी, लेकिन confidence पहली जैसी ही shaky था।

* * *

Coach मिला। Reservation confirm. Berth इस बार lower नहीं थी।

मैंने ऊपर देखा।

Middle berth.

“Of course,” मैंने खुद से कहा।

Backpack नीचे seat के नीचे chain से secure किया। Passport और wallet छोटी pouch में रखे। Blue diary main compartment में थी।

मैंने उसे निकालकर एक बार फिर देखा।

उस faint page पर वही word था:

KASHI

Destination अब सिर्फ Varanasi नहीं लग रहा था। Diary ने उसे पहले ही name कर दिया था।

मैंने diary बंद की।

आज mystery काफी हो चुकी थी।

कम से कम मैं यही सोच रहा था।

स्लीपर क्लास का अपना समाज

A SMALL COUNTRY INSIDE ONE COACH

Train चलने के पहले दस minutes में ही हमारा compartment temporary neighbourhood बन चुका था।

Side-lower पर एक college student. सामने एक married couple और उनका लगभग छह साल का बच्चा. Upper berth पर एक आदमी जो train चलने से पहले ही blanket में गायब हो चुका था. मेरी seat के सामने लगभग पचास साल के एक gentleman leather bag के साथ बैठे थे।

उन्होंने मुझे backpack adjust करते देखा।

“कहाँ तक?”

“Varanasi.”

“हम भी।”

उनका नाम राकेश अग्रवाल था। छोटा manufacturing और wholesale business संभालते थे। Uttar Pradesh के कई शहरों में travel करते रहते थे।

उन्होंने पूछा, “काम?”

“Travel.”

“Travel भी काम है?”

“अभी तो खर्च है।”

वह हँस पड़े।

“कहाँ से आ रहे?”

“कल Moscow से Delhi.”

उनकी eyebrows ऊपर चली गईं।

“Russia?”

“हाँ।”

“फिर सीधे Mathura?”

“और अब Kashi.”

उन्होंने सिर हिलाया।

“आपको आराम से दुश्मनी है।”

यह assessment fair था।

Train ने movement शुरू की। Platform पीछे गया। Night journey officially शुरू हो गई।

कुछ minutes बाद berth negotiations शुरू हुईं।

“भैया, आपकी middle है? मेरी mother को lower चाहिए।”

किसी और ने कहा, “हमारा बच्चा ऊपर नहीं सोएगा।”

Third passenger ने chart देखा जैसे Supreme Court का order हो।

आखिर permutations solve हुईं। मैं middle berth पर ही रहा।

मेरे लिए ठीक था। Backpack नीचे secure था।

एक vendor आया।

“चाय! Coffee! चाय!”

राकेश जी ने पूछा, “चाय?”

मैंने कहा, “आज count भूल चुका हूँ।”

“तो एक और सही।”

दो cups आ गए।

Train में friendship का सबसे common opening statement शायद “चाय लोगे?” ही है।

* * *

बगल वाली side-lower पर बैठा युवक अपने phone पर कुछ पढ़ रहा था। नाम नसीम था। वह Prayagraj के पास के एक कस्बे से था और Delhi में private job करता था। छुट्टी पर घर जा रहा था।

हम चार-पाँच लोगों की बात पहले railway से शुरू हुई। Delay, cleanliness, reservation, waiting list, platform food.

फिर किसी ने roads की बात की।

और जैसे अक्सर होता है, roads से बात government तक पहुँच गई।

एक डिब्बा, दो राय

POLITICS WITHOUT A STUDIO

राकेश जी ने कहा, “एक चीज माननी पड़ेगी, roads बहुत improve हुए हैं। Business travel आसान हुआ है। पहले माल भेजने में जो time लगता था, अब कई routes पर फर्क है।”

नसीम ने phone नीचे रखा।

“Road अच्छा होना चाहिए। इसमें कौन disagree करेगा?”

राकेश जी मुस्कुराए। “आप disagree करने वाले लग रहे हो।”

“Disagree नहीं। बस पूरी picture अलग है।”

मैं चुप रहा। यह वही conversation थी जिसे force करने की जरूरत नहीं थी। Train compartment ने खुद पैदा कर दिया था।

राकेश जी ने अपना business experience बताया। उनके हिसाब से formalisation, digital payments और tax system ने कुछ चीजें साफ की थीं, लेकिन paperwork और compliance छोटे व्यापारी को परेशान भी करते थे।

“देखिए,” उन्होंने कहा, “tax देना problem नहीं है। Problem तब है जब छोटी firm का आदमी आधा time forms समझने में लगाए।”

नसीम बोला, “हम job वालों की तरफ से देखो। Salary उतनी तेजी से नहीं बढ़ती जितना rent, education, medical खर्च। Road देखकर अच्छा लगता है, लेकिन घर का budget भी development है।”

राकेश जी ने सिर हिलाया।

“ठीक बात है। लेकिन रोजगार business से भी आता है। Business को breathing space चाहिए।”

नसीम ने कहा, “और worker को security.”

दोनों एक second के लिए मेरी तरफ देखने लगे।

शायद foreign-returned traveller होने के कारण मुझे neutral referee समझ लिया गया था।

मैंने कहा, “मैं अभी पहले दिन पर हूँ। दस दिन बाद भी referee बनने का plan नहीं है।”

दोनों हँस पड़े।

Conversation हल्की हो गई।

फिर inflation की बात आई। Government schemes. Small-town aspirations. Private jobs. सरकारी नौकरी की चाह. किसान परिवारों के बच्चों का city जाना.

राकेश जी की राय साफ थी: infrastructure और business environment में improvements दिखे हैं, लेकिन bureaucracy और unpredictable rules छोटे कारोबार को परेशान करते हैं।

नसीम का focus अलग था: jobs की quality, salaries, housing, education और social mobility.

किसी ने किसी party का नारा नहीं लगाया। किसी ने दूसरे को देशद्रोही या अंधभक्त नहीं कहा।

बस दो लोग अपनी जिंदगी के हिसाब से India को देख रहे थे।

Travel conversation:
एक ही देश की political condition दो लोगों को अलग दिख सकती है, क्योंकि एक payroll बनाता है और दूसरा salary slip घर ले जाता है। इस chapter में उनकी बातें व्यक्तिगत राय हैं - कोई अंतिम फैसला नहीं।

मुझे यह television debate से ज्यादा useful लगा।

यहाँ कोई countdown clock नहीं था। कोई anchor interrupt नहीं कर रहा था। कोई applause नहीं।

सिर्फ train की आवाज़ और बीच-बीच में chai वाला।

राकेश जी ने अचानक पूछा, “Russia में लोग India की politics के बारे में क्या सोचते हैं?”

मैंने कहा, “जितना हम उनकी politics के बारे में accurately जानते हैं, शायद उतना ही।”

नसीम हँसा।

“मतलब headline level?”

“Mostly.”

राकेश जी ने कहा, “फिर तो दुनिया ठीक चल रही है। सब एक-दूसरे को आधा जानते हैं और पूरा opinion रखते हैं।”

इस line की royalty मैंने उन्हें नहीं बताई।

रात का रेलवे

INDIA AFTER MIDNIGHT

करीब आधी रात के बाद compartment धीरे-धीरे शांत होने लगा।

Berths ऊपर उठीं। Chains खनकीं। Bags adjust हुए। Lights dim हुईं।

बच्चा जो पूरे समय energy का private power plant था, finally सो गया।

राकेश जी ने blanket निकाली। नसीम ने earphones लगाए।

मैं middle berth पर चढ़ गया।

Middle berth पर इंसान सोता कम है, geometry solve ज्यादा करता है। करवट बदलो तो wall. दूसरी तरफ गिरने का डर. नीचे उतरना हो तो पूरा body negotiation.

मैंने backpack की direction check की। Secure.

Blue diary अंदर.

Phone 67%.

Power bank काम कर चुका था। Civilisation बच गई थी।

Train darkness में जा रही थी। Window से बाहर कुछ नहीं दिखता था - कभी distant light, कभी platform की अचानक brightness, फिर blackness.

मैंने आँखें बंद कीं।

Moscow की flight याद आई। Paharganj. Delhi station. Sharma ji. Mathura peda. Yamuna. Vrindavan की गलियाँ. Savitri. Prem Mandir.

एक ही दिन बहुत लंबा हो चुका था।

नींद आने लगी।

* * *

पता नहीं कितनी देर सोया।

एक station की आवाज़ से आँख खुली।

Train रुकी थी। Platform light berth के बीच से अंदर आ रही थी।

मैंने phone उठाया।

1:36 AM

नाम पढ़ने की कोशिश की, लेकिन board निकल गया।

नीचे उतरकर पानी पीने का idea आया। फिर middle berth से उतरने का काम याद आया। Idea cancel.

Train फिर चल पड़ी।

कुछ minutes बाद corridor से धीमी footsteps सुनाई दीं। शायद कोई washroom जा रहा था।

मैंने आँखें बंद रखीं।

फिर कोई मेरे berth के पास रुका।

मैंने सोचा ticket checker होगा।

आँख खोली।

एक elderly आदमी खड़ा था।

सफेद-धूसर बाल। हल्की दाढ़ी। Dark shawl. हाथ में छोटा cloth bag.

वह मेरी तरफ नहीं, नीचे seat की तरफ देख रहा था।

फिर उसने ऊपर देखा।

“Seat 41?”

मैं आधी नींद में था।

“क्या?”

उसने दोबारा पूछा, “Delhi वाली train. Seat 41?”

मेरी नींद एक second में गायब हो गई।

मैं नीचे उतरने लगा। Middle berth ने इस बार विरोध नहीं किया।

“आप कौन?”

वह आदमी सामने वाली खाली edge पर बैठ गया।

“Diary मिली?”

अब compartment की बाकी आवाज़ें जैसे दूर चली गईं।

मैंने तुरंत backpack की तरफ देखा।

“आपको कैसे पता?”

उसने जवाब नहीं दिया।

“वो diary आपकी है?”

“नहीं।”

“फिर किसकी?”

वह मेरी आँखों में नहीं देख रहा था। उसका attention backpack पर था।

मैंने chain खोली, bag थोड़ा बाहर खींचा, diary निकाली।

उसके चेहरे पर पहली बार reaction आया। बहुत छोटा. Recognition.

“यही है?” मैंने पूछा।

उसने diary छुई नहीं।

“Ticket अंदर है?”

मैंने कहा, “आप पहले बताइए आप कौन हैं।”

वह हल्का-सा मुस्कुराया।

“सही सवाल देर से पूछ रहे हो।”

"और सही जवाब?"

"वो भी देर से मिलेगा।"

मुझे irritate होना चाहिए था। शायद मैं हुआ भी।

"देखिए, अगर यह किसी की खोई चीज है तो मैं return कर दूँगा। लेकिन आप ऐसे clues में बात क्यों कर रहे हैं?"

उसने पहली बार सीधे मेरी तरफ देखा।

"क्योंकि जिसने सीधी बात की थी, उसने बहुत कुछ खोया।"

यह line इतनी dramatic थी कि मुझे लगा मैं सपना देख रहा हूँ।

मैंने phone देखा।

2:17 AM

Time ने उस moment को unnecessary importance दे दी।

मैंने diary खोली। पुराना Jaisalmer-Jaipur ticket दिखाया।

"ये numbers?"

उसने ticket नहीं लिया। बस देखा।

10 - 3 - 7 - 1

उसके jaw की muscle हल्की-सी tight हुई।

"कहाँ देखा?"

"Diary में. फिर Mathura में Vishram Ghat पर भी."

उसने तुरंत मेरी तरफ देखा।

“घाट पर?”

“हाँ।”

पहली बार वह genuinely surprised लगा।

“Photo लिया?”

“हाँ।”

वह कुछ seconds चुप रहा।

फिर पूछा, “Kashi लिखा मिला?”

मेरे हाथ diary पर freeze हो गए।

“आपने लिखा?”

“नहीं।”

“तो किसने?”

वह उठा।

“Kashi में आग देखना।”

मैंने उसका रास्ता रोका नहीं, लेकिन खड़ा हो गया।

“कौन-सी आग?”

वह corridor की तरफ मुड़ा।

फिर पीछे देखे बिना बोला:

“काशी में आग देखना...
मगर उसकी परछाई मत भूलना।”

“इसका मतलब क्या है?”

वह आगे बढ़ गया।

मैं उसके पीछे corridor में आया।

Coach joint पार किया। अगले section में एक आदमी washbasin के पास था, दो passengers सो रहे थे।

Elderly traveller आगे जा रहा था।

तभी train slow हुई।

किसी छोटे station का platform आया।

वह doorway की तरफ बढ़ा।

मैंने कहा, “रुकिए!”

Train अभी पूरी तरह रुकी भी नहीं थी।

वह side में खड़ा रहा। Train stop हुई। Door के बाहर platform पर बहुत कम लोग थे।

वह उतर गया।

मैं doorway तक पहुँचा।

“आपका नाम?”

उसने मुड़कर देखा।

एक second.

फिर crowd नहीं - सिर्फ darkness और station lights के बीच वह दूर चलता गया।

Announcement अस्पष्ट थी। Board दूसरी तरफ था।

मैं नीचे उतरने वाला था कि guard whistle सुनाई दी।

Train हिली।

मैंने risk नहीं लिया।

Door पर खड़ा उसे देखता रहा।

कुछ seconds बाद platform पीछे छूट गया।

वह आदमी darkness में गायब हो गया।

और मैं उसका नाम तक नहीं जानता था।

Compartment में लौटते समय मुझे महसूस हुआ कि हाथ में diary अब पहले से भारी लग रही थी।

Weight वही था। Meaning बदल गया था।

मैंने seat के पास बैठकर phone खोला। Time:

2:24 AM

नसीम side-lower पर आधी नींद में उठ गया।

“सब ठीक?”

मैंने कहा, “हाँ।”

फिर मुझे खुद ही अपना जवाब weird लगा।

“शायद।”

वह फिर सो गया।

मैंने diary खोली। KASHI वाला page. Ticket. Numbers.

फिर Vishram Ghat की photo खोली। Zoom किया।

10 - 3 - 7 - 1

Same sequence.

मैंने elderly passenger का face याद करने की कोशिश की। कहीं देखा था?

No.

Delhi station?

No.

Mathura?

No.

Vrindavan?

Maybe?

जब आप mystery ढूँढना शुरू कर देते हैं, memory unreliable partner बन जाती है। हर face familiar लगने लगता है। हर coincidence clue.

मैंने notebook निकाली।

2:17 AM - unknown elderly passenger.

Knew about Seat 41.

Knew ticket.

Knew "KASHI".

Said: See the fire in Kashi. Do not forget its shadow.

फिर मैंने एक line लिखी:

Do not turn this into a thriller.

उसके नीचे:

Too late?

मैं हँसा नहीं।

* * *

राकेश जी की नींद खुली।

“सोए नहीं?”

“थोड़ा।”

उन्होंने clock देखा।

“पहले दिन में ही over-travel कर लिया।”

मैंने diary बंद की।

“शायद।”

“Kashi पहुँचकर rest करना।”

मैंने सोचा - हाँ, बिल्कुल।

फिर elderly passenger की line याद आई।

आग.

परछाई.

Rest शायद plan में नहीं था।

सुबह की तरफ

TOWARD VARANASI

करीब चार बजे के बाद फिर नींद आई। इस बार सपने में कोई diary नहीं थी। सिर्फ trains थीं - बहुत सारी trains, जिनके boards पर city names की जगह numbers लिखे थे।

जब अगली बार आँख खुली तो coach की light बदल चुकी थी। Window के बाहर darkness grey हो रही थी। सुबह अभी आई नहीं थी, लेकिन रात हारने लगी थी।

नीचे उतरकर मैंने chai ली।

राकेश जी भी जाग गए थे। नसीम अभी सो रहा था।

“कितनी chai?” राकेश जी ने पूछा।

“अब हिसाब रखना insult होगा।”

वह हँसे।

कुछ देर हम दोनों window के पास खड़े रहे। Fields, small stations, foggy settlements, railway crossings.

उन्होंने कहा, “Kashi पहली बार?”

“हाँ।”

“पहली बार में city समझ नहीं आएगी।”

“दूसरी बार?”

“दूसरी बार भी नहीं।”

“फिर?”

“लोग जाते रहते हैं। शायद इसी कारण।”

मैंने सोचा, एक city जिसकी reputation ही यह हो कि वह पूरी तरह समझ में नहीं आती - travel writer के लिए unfair advantage है।

Phone network stable हुआ। Maps ने location update की। हम Varanasi की तरफ बढ़ रहे थे।

मैंने diary backpack में रख दी।

इस बार zip बंद करने के बाद दो बार check किया।

फिर खुद पर हँसा।

अब मैं उस diary को खोई हुई वस्तु नहीं मान रहा था।

वह मेरी responsibility बन चुकी थी।

क्यों - इसका answer नहीं था।

* * *

सुबह बढ़ी। Compartment फिर जीवित हुआ। Berths fold हुईं। Toothbrush, पानी की bottles, phone charging, luggage rearrangement.

वही overnight train जो रात में temporary bedroom थी, अब फिर public transport बन गई थी।

नसीम ने पूछा, “Varanasi में कहाँ?”

“पहले room. फिर घाट.”

राकेश जी ने बीच में कहा, “पहले breakfast.”

Delhi porter की philosophy national network पर spread हो रही थी।

मैंने कहा, “ठीक है. Breakfast first.”

“Kachori खाना,” उन्होंने कहा.

“Mathura से लगातार यही हो रहा है।”

“Travel में calories count नहीं होतीं।”

“ये scientifically wrong है।”

“Emotionally सही है।”

नसीम हँस पड़ा।

Train धीरे-धीरे destination की तरफ बढ़ रही थी।

मेरी पहली night journey खत्म होने वाली थी।

लेकिन Kashi ने आने से पहले ही अपना पहला सवाल भेज दिया था।

आग कहाँ थी?

और उसकी परछाई किसकी?

* * *

CHAPTER FIVE

शहर जो आपसे पहले जागता है

THE CITY THAT WAKES BEFORE YOU

वाराणसी

Day Two - Morning

“कुछ शहरों में आप सुबह पहुँचते हैं। काशी में लगता है सुबह आपसे पहले पहुँच चुकी थी।”

Varanasi पहुँचने से पहले ही मैं उसके बारे में बहुत कुछ सुन चुका था।

घाट। गलियाँ। मंदिर। गंगा। भीड़। मोक्ष। चाय। नावें। और अब मेरी अपनी list में एक नया शब्द भी जुड़ गया था -

परछाई

रात 2:17 वाले अज्ञात passenger की बात दिमाग में घूम रही थी:

"काशी में आग देखना...
मगर उसकी परछाई मत भूलना।"

Problem यह थी कि मुझे नहीं पता था वह किस आग की बात कर रहा था।

और उससे भी बड़ी problem यह थी कि मैं उस आदमी की बात को serious क्यों ले रहा था।

Train Varanasi की तरफ धीमी होने लगी। Compartment में हर कोई अचानक जाग गया। Blankets fold. Bottles refill. Bags बाहर. Shoes खोजो. बच्चे उठाओ. Phone charger निकालो.

Night train फिर से bedroom से public transport बन चुकी थी।

राकेश जी ने leather bag बंद किया।

"Room booked है?"

मैंने कहा, "Half booked."

"Half booked क्या होता है?"

"तीन hotels shortlist किए हैं।"

उन्होंने मुझे ऐसे देखा जैसे मैंने अभी कहा हो कि parachute भी half packed है।

“Kashi में उतरकर room search?”

“Budget travel.”

“Budget travel और unnecessary suffering में thin line होती है।”

नसीम ने side से कहा, “पहले breakfast कर लेना। खाली पेट rate ज्यादा मान लोगे।”

दोनों की practical wisdom का मैंने विरोध नहीं किया।

Train platform में घुसी। बाहर board दिखा। लोगों की movement तेज हुई। मैं backpack कंधे पर डालकर door की तरफ बढ़ा।

रात के उस elderly passenger का कोई sign नहीं था।

मुझे उम्मीद भी नहीं थी।

फिर भी मैंने platform पर उतरते ही crowd में दो-तीन grey-haired faces ज्यादा ध्यान से देखे।

कोई वह नहीं था।

* * *

Platform पर पाँव रखते ही पहली चीज़ जो महसूस हुई, वह spiritual नहीं थी।

गर्मी थी।

दूसरी - आवाज़।

तीसरी - भूख।

Varanasi ने welcome ceremony बहुत practical रखी।

स्टेशन से बाहर

ARRIVAL - VARANASI

Station exit की तरफ जाते हुए मैं यात्रियों के flow में बहता रहा। बाहर आते ही auto और e-rickshaw drivers ने मुझे उस तरह घेर लिया जैसे मैं अकेला passenger हूँ जिसे पूरे शहर में कहीं जाना है।

“Godowlia?”

“Assi?”

“Vishwanath?”

“Hotel?”

“Cheap hotel?”

आखिरी offer suspiciously accurate था।

एक driver मेरे साथ-साथ चलने लगा। उम्र लगभग तीस-पैंतीस। नाम इमरान। उसने पूछा, “Booking है?”

“Shortlist है।”

वह हँसा। “मतलब booking नहीं है।”

“Technically.”

“कहाँ देखना?”

मैंने Cantt और Sigra side के दो budget hotels के नाम बताए।

“चलो, दिखा देता हूँ।”

“Fare?”

उसने amount बताया।

मैंने कम कहा।

उसने ज्यादा कहा।

हम दोनों दो rounds बाद ऐसी figure पर पहुँचे जिसे दोनों ने जीत माना। यही successful bargaining होती है।

Bag पीछे रखा। मैं e-rickshaw में बैठ गया।

Station area पीछे छूटा। Morning traffic already active था। Cycles, autos, school vans, motorcycles, pedestrians और गायें - हर एक की अपनी lane थी, और उनमें से कोई भी painted lane से related नहीं थी।

मैंने पूछा, "इतनी सुबह traffic?"

इमरान ने mirror में देखा।

"भैया, बनारस late सोता है और जल्दी उठ जाता है।"

"फिर सोता कब है?"

"Traffic signal पर।"

हम दोनों हँस पड़े।

यह शहर में मेरी पहली proper local line थी और immediately useful भी।

* * *

पहला hotel full.

दूसरे में room था, लेकिन rate online listing से ज्यादा.

मैंने reception वाले से कहा, "Online कम दिखा रहा है।"

उसने कहा, "Online वाला room अलग।"

मैंने room देखा।

Bed साफ. Bathroom usable. Fan working. AC optional. Window से कोई postcard view नहीं - सामने दूसरी building की wall.

Perfect budget luxury.

मैंने पूछा, “Early check-in?”

Receptionist ने clock देखा, फिर मुझे देखा, फिर backpack.

“थोड़ा extra.”

Negotiation round two.

आखिर room मिल गया।

मैंने bag bed पर रखा और खुद भी उसके बगल में बैठ गया।

Body ने तुरंत घोषणा की: अब सो जाओ.

लेकिन stomach ने constitutional objection दाखिल कर दिया।

Breakfast first.

Budget Travel Reality:

“Cheap room” का अर्थ केवल कम किराया नहीं है। Location, early check-in, luggage safety, clean bathroom और अगले transport connection की दूरी भी cost का हिस्सा हैं।

पहली बनारसी सुबह

KACHORI BEFORE PHILOSOPHY

Hotel से बाहर निकलते समय मैंने सिर्फ छोटा sling bag लिया। Main backpack room में lock कर दिया। Passport, wallet, phone और notebook साथ।

Blue diary?

मैंने दो seconds सोचा।

फिर उसे भी sling bag में रख लिया।

यह decision logical नहीं था।

लेकिन अब diary को room में छोड़ना uncomfortable लग रहा था।

बाहर breakfast की दुकान ढूँढने में ज्यादा effort नहीं लगा। Oil की smell ने map से पहले direction दे दी।

एक दुकान पर kachori-sabzi की तेजी से service चल रही थी। Plate आए, खाली हों, फिर तुरंत अगली. कोई leisurely brunch नहीं।

मैं खड़ा हुआ।

दो kachori. आलू की मसालेदार sabzi. ऊपर थोड़ा हरा धनिया. Side में तीखी chutney.

पहला bite लेते ही समझ आया कि Varanasi sightseeing से पहले stomach conditioning करवाता है।

Spicy.

बहुत अच्छा.

बहुत गरम.

पास खड़े एक आदमी ने कहा, “ऊपर से jalebi ले लो।”

मैंने उसकी तरफ देखा। “Mandatory?”

वह बोला, “Banaras में recommendation को order समझो।”

Jalebi भी आ गई।

Banarasi Breakfast:

kachori-sabzi + jalebi + chai

Healthy? Debatable. Memorable? Absolutely.

Chai clay cup में नहीं, छोटे glass में मिली। Strong, sweet, milky.

Moscow की black coffee धीरे-धीरे किसी पुराने जीवन की habit लगने लगी थी।

दुकानदार ने पूछा, “कहाँ से?”

यह सवाल अब यात्रा का unofficial password बन चुका था।

“Moscow से आया। India travel कर रहा हूँ।”

“Russia?”

मैंने सिर हिलाया।

वह तुरंत बोला, “वहाँ ठंड बहुत?”

“हाँ।”

उसने kachori के कड़ाह की तरफ इशारा किया। “यहाँ दो minute खड़े रहो, सब balance हो जाएगा।”

मैं हँस पड़ा।

Breakfast के बाद मैंने notebook में सिर्फ एक line लिखी:

Varanasi begins with oil, bells and traffic.

फिर नीचे Hindi में:

और अभी गंगा देखी भी नहीं।

कैंट से गोदौलिया

THE ROAD INTO OLD VARANASI

मैंने इमरान को call किया। उसने कहा, “दस minute।”

Twenty-five minutes बाद वह आया।

“Banaras का दस minute?” मैंने पूछा।

उसने बिना शर्म के कहा, “Traffic वाला।”

मैंने उसे Godowlia जाने को कहा। Plan simple था: पुराने शहर के edge तक vehicle, फिर पैदल गलियाँ समझना। आज Vishwanath darshan का पूरा chapter नहीं - पहले शहर का rhythm पकड़ना था।

Road पर जाते हुए उसने अलग-अलग areas के नाम बताने शुरू किए।

“उधर Sigra. आगे Godowlia. वहाँ से अंदर गाड़ी कम जाएगी. Vishwanath side पैदल. Assi अलग तरफ.”

“और ghats?”

“Ghats बहुत हैं. पहले decide करो कौन-सा देखना।”

“सब।”

वह mirror में हँसा।

“दस दिन में India भी घूमोगे और एक दिन में Banaras भी?”

मेरी reputation route से पहले पहुँच रही थी।

Traffic एक junction पर almost jam हो गया। Horns की आवाज़ एक continuous sound में बदल गई।

मैंने पूछा, “आप रोज ये route करते हो?”

“रोज।”

“थकते नहीं?”

“थकते हैं। लेकिन क्या करें? काम है।”

कुछ देर बाद उसने खुद बात आगे बढ़ाई।

“अब tourists बहुत आते हैं. अच्छे हैं काम के लिए. लेकिन season में road मुश्किल. Hotel वाले कमाते, boat वाले कमाते, auto वाले कमाते. किराया भी बढ़ता है.”

“City बदल रहा है?”

“बहुत।”

“अच्छा या बुरा?”

उसने वही pause लिया जो Mathura के flower seller ने लिया था।

“दोनों। सड़क साफ हो तो अच्छा. पुरानी चीज़ टूटे तो बुरा. लेकिन कौन-सी पुरानी चीज बचानी है, कौन-सी बदलनी - ये ऊपर वाले लोग decide करते हैं. हम traffic में decide करते रहते हैं कौन-सी गली से निकलें।”

उसकी बात political speech नहीं थी। Everyday governance का street version थी।

मैंने notebook में नहीं लिखा। याद रखने के लिए enough था।

Godowlia के पास उसने e-rickshaw रोक दिया।

“आगे walk.”

मैं उतरा। Fare दिया।

वह बोला, “Return call कर लेना।”

“अगर गलियों से बाहर निकल पाया तो।”

“निकाल देंगे लोग।”

फिर जोड़ा, “कभी गलत भी निकाल देंगे।”

और चला गया।

* * *

मैंने सामने देखा।

अब Varanasi सच में शुरू हो रहा था।

गलियाँ

WHERE MAPS BECOME SUGGESTIONS

Old Varanasi की गलियों में पहला rule जल्दी समझ आया: distance meter में नहीं, interruptions में मापी जाती है।

दस meter चलो - scooter.

पाँच meter - गाय.

तीन meter - पूजा की दुकान.

फिर अचानक एक छोटा मंदिर.

फिर दूध वाला.

फिर कोई आदमी पीछे से “भैया side” कहता हुआ निकल जाए.

ऊपर balconies इतनी करीब कि दो घरों के लोग बिना phone के बातचीत कर सकते थे।

Walls पर faded paint. कहीं fresh signboards. कहीं Sanskrit lines. कहीं mobile recharge. कहीं silk shop. कहीं lassi.

Ancient और modern एक-दूसरे के सामने नहीं खड़े थे। एक-दूसरे के ऊपर चढ़े हुए थे।

मैंने map खोला। Blue dot फिर घूम रहा था।

Vrindavan déjà vu.

एक चाय की छोटी दुकान पर रुक गया।

दुकानदार उम्र में मुझसे छोटा था। उसने पूछा, “खो गए?”

मैंने कहा, “नहीं. Explore कर रहा हूँ।”

वह मुस्कुराया। “मतलब खो गए।”

मैंने chai order की।

पास दो local लोग बैठे थे, सुबह का newspaper खुला था। Headlines पर बहस चल रही थी, लेकिन मैं conversation में नहीं घुसा। Political voices आगे journey में आने वाले थे; हर tea stall को debate stage बनाना भी artificial होता।

मैंने सिर्फ सुना। Local news, बिजली, सड़क, किसी ward की समस्या, cricket. Public life अपनी natural mix में चल रही थी।

Chai वाले ने direction दिया।

“सीधा. फिर मंदिर के पास left. फिर जहाँ गाय बैठी हो वहाँ right.”

मैंने पूछा, “अगर गाय उठ गई?”

वह कुछ seconds serious रहा।

“फिर पूछ लेना।”

Banaras navigation system location-independent था।

* * *

मैं आगे चला। कहीं-कहीं इतनी narrow lane कि backpack होता तो लोगों को inconvenience होता। Good decision कि hotel में छोड़ आया था।

एक doorway के ऊपर पुरानी stone carving दिखी। कुछ आगे लकड़ी का भारी दरवाज़ा, जिसकी paint कई layers में उतर चुकी थी।

मैं architecture का expert नहीं था, लेकिन शहर की उम्र दीवारों पर visible थी।

उसी समय मेरी नजर एक छोटे metal plate पर पड़ी।

उस पर numbers थे।

मैं अचानक रुक गया।

दिल ने एक second के लिए वही sequence expect किया:

10 - 3 - 7 - 1

लेकिन plate पर कुछ और house number था।

मैंने खुद पर irritation महसूस की।

अब हर number clue लगने लगा था।

यही problem थी। Mystery जितनी interesting होती है, उतनी ही जल्दी perception को corrupt करती है।

मैंने blue diary नहीं निकाली।

आज शहर देखना था। Diary को शहर पर कब्ज़ा नहीं करने देना था।

पहली झलक - गंगा

THE RIVER APPEARS

एक गली अचानक खुली।

और सामने सीढ़ियाँ नीचे उतर रही थीं।

उसके पार गंगा।

मैं रुक गया।

कई दिनों से नहीं - कई घंटों से इस दृश्य का इंतज़ार था, लेकिन शायद रात की train और city chaos ने उसे ज्यादा dramatic बना दिया था।

River wide थी। Opposite bank दूर और flat. Boats scattered. Morning light अब पूरी तरह फैल चुकी थी।

कुछ लोग स्नान कर रहे थे। कुछ पूजा. कुछ बस बैठे थे. एक आदमी कपड़े धो रहा था. दो बच्चे किनारे खेल रहे थे.

यह postcard भी था और workplace भी. Sacred भी और everyday भी.

मैं सीढ़ियों पर बैठ गया।

कोई boatman तुरंत पास आया।

"Boat? Sunrise miss हो गया, लेकिन घूम देंगे।"

मैंने कहा, "कल सुबह।"

"आज क्यों नहीं?"

"आज city समझना है।"

वह हँसा। "Boat से जल्दी समझोगे।"

"कल।"

"पक्का?"

"शायद।"

"शायद मतलब नहीं।"

Mathura के boat-boy की line याद आई।

India में vendors एक ही business school से graduate लगते थे।

मैंने पानी की bottle निकाली। कुछ देर river देखता रहा।

फिर रात की warning अचानक वापस आई:

आग देखना.

Ghats पर आग कई meanings रख सकती थी। Aarti की lamps? Cremation fire? Sunrise? कोई symbol?

और shadow?

मैंने सवाल को फिर side में रखा।

आज सिर्फ पहली झलक थी।

आग का chapter बाद में आएगा।

* * *

एक बुजुर्ग आदमी मेरे पास बैठ गया। हाथ में कपड़े की छोटी थैली। उसने कुछ नहीं पूछा। मैं भी चुप रहा।

कई minutes बाद उसने कहा, “पहली बार?”

मैंने नदी की तरफ देखते हुए कहा, “हाँ।”

वह बोला, “पहली बार लोग बहुत देखते हैं। दूसरी बार थोड़ा समझते हैं।”

“और तीसरी बार?”

“फिर अपने बारे में सोचते हैं।”

मैं उसकी तरफ मुड़ा।

वह उठ रहा था।

मैंने नाम पूछने की कोशिश नहीं की।

कुछ strangers को stranger ही रहने देना चाहिए।

तमाटर चाट और दोपहर की थकान

FOOD, HEAT AND A WRONG TURN

Riverfront से वापस lanes में आया तो time का अंदाज़ा बिगड़ चुका था। Ghats पर बैठकर twenty minutes कब forty हो गए, पता नहीं।

Phone ने बताया कि breakfast के बावजूद फिर भूख थी।

Godowlia side एक shop पर tamatar chaat मिल रही थी। मैंने plate ली। गरम, tangy, मसालेदार, ऊपर crunchy toppings.

पहला spoon लेते ही समझ आया - यह snack नाम से हल्का है, effect से नहीं।

Local Food Note:

kachori-sabzi, jalebi, chai, tamatar chaat.

Varanasi में walking और eating एक-दूसरे को justify करते रहते हैं।

पास में एक आदमी lassi की recommendation देने लगा।

मैंने कहा, “अभी नहीं।”

उसने मेरी plate देखी। “फिर कब?”

मैंने जवाब नहीं दिया। क्योंकि मुझे पता था एक घंटे बाद मैं lassi पी रहा होऊँगा।

Hotel लौटने के लिए मैंने map खोला।

Route simple दिख रहा था।

मैं confidently गलत direction में चला।

Ten minutes बाद एक silk shop वाले ने पूछा, “कहाँ?”

मैंने area बताया।

उसने पीछे इशारा किया।

“उल्टा।”

Delhi porter.

Vrindavan flower seller.

अब Banaras silk shop.

मेरी यात्रा का recurring theme clear था: मैं direction में emotionally confident, geographically unreliable था।

वापस मुड़ा।

एक point पर traffic इतना dense था कि walk करना भी vehicle navigation जैसा था।

मैंने इमरान को call किया।

“कहाँ हो?” उसने पूछा।

मैंने एक दुकान का नाम पढ़ा।

“वहाँ कैसे पहुँच गए?”

“Explore.”

उसने हँसते हुए कहा, “मतलब खो गए।”

आज दूसरी बार यह correction मिली।

कमरा, डायरी और एक निर्णय

AFTERNOON - BACK AT THE HOTEL

Hotel room वापस पहुँचते ही मैंने shoes उतारे और bed पर गिर गया।

Plan था बीस minutes rest.

मैंने alarm लगाया।

फिर sling bag खोला। Blue diary बाहर निकाली।

पता नहीं क्यों।

मैंने KASHI वाला page खोला। फिर ticket.

JAISALMER - JAIPUR

पीछे:

10 - 3 - 7 - 1

फिर notebook में रात की entry:

2:17 AM. Unknown man. "See the fire in Kashi. Do not forget its shadow."

मैंने तीन possibilities लिखीं:

1. वह आदमी diary के पुराने owner को जानता था.

2. वह somehow मेरी journey track कर रहा था.

3. मैं बहुत कम सोया हूँ और हर coincidence को ज्यादा importance दे रहा हूँ.

तीसरा option सबसे comfortable था।

मैंने उसे circle किया।

फिर याद आया - उसने Seat 41 कैसे जाना?

Circle के ऊपर question mark लगा दिया।

* * *

Diary के कुछ blank pages को light में angle पर देखा। Faint pressure marks फिर दिखाई दिए। कोई readable word नहीं।

एक page के corner में बहुत हल्का geometric impression था - straight lines, शायद किसी पुराने paper या stamp का दबाव।

मैंने उसे ज्यादा interpret नहीं किया। Square? Window? बस random marks?

Phone camera से close photo लिया।

फिर diary बंद की।

Varanasi में मेरे अगले stops तय थे:

Kashi Vishwanath.

Ganga sunrise.

Evening Aarti.

और कहीं इन सबके बीच उस diary का Masonic-looking mystery अभी आने वाला था - हालांकि मुझे उस समय यह नहीं पता था।

मैं सिर्फ इतना जानता था कि next morning तक city को थोड़ा और समझना है।

और आज शाम?

आज मैं सोऊँगा।

कम से कम alarm बजने तक।

* * *

मैंने light off की।

Window के बाहर horns अभी भी थे। दूर कहीं temple bell. Corridor में किसी room का television. Reception से conversation.

Varanasi सच में शायद सोता नहीं था।

मैंने आँखें बंद कीं।

नींद आने से पहले आखिरी thought यही था:

अगर आग Aarti थी, तो परछाई कहाँ होगी?

* * *

CHAPTER SIX

विश्वनाथ

VISHWANATH

काशी

Day Two - Late Morning

“कभी-कभी एक मंदिर तक पहुँचने का रास्ता ही उस शहर का पहला पाठ बन जाता है।”

Hotel की छोटी-सी नींद मेरी योजना से लंबी हो गई।

Alarm बजा, मैंने बंद किया। दूसरा alarm नहीं था। यह गलती थी।

जब आँख खुली तो कमरे की दीवार पर पड़ती रोशनी बता रही थी कि सुबह अब सुबह नहीं रही। Phone उठाया। Time देखकर पहला thought आया - Vishwanath.

दूसरा - breakfast already हो चुका था.

तीसरा - blue diary कहाँ है?

वह side table पर थी।

मैंने अनजाने में राहत की साँस ली।

अब यह आदत बनने लगी थी।

मैंने diary उठाई, sling bag में रखी और mirror में खुद को देखा। Moscow से निकलते समय जो आदमी airport पर relatively fresh दिख रहा था, उसके मुकाबले यह version ज्यादा Indian railway compatible लग रहा था - कम sleep, ज्यादा chai, और hair style पर कोई national policy नहीं।

Hotel के बाहर आते ही Varanasi अपनी full volume पर था। Morning वाली softness खत्म. Traffic dense. Heat ऊपर. Shops open. Rickshaw horns. Temple-bound यात्रियों की line. Local लोग अपने काम में.

आज का मुख्य उद्देश्य simple था:

Shri Kashi Vishwanath.

लेकिन Kashi में simple objective तक पहुँचने के लिए भी कई छोटी realities से गुजरना पड़ता है। कौन-सी lane, कहाँ तक vehicle, क्या साथ ले जा सकते हैं, कहाँ shoes छोड़ें, कहाँ security check, और कहाँ सिर्फ patience की जरूरत है।

मैंने तय किया कि camera hotel में ही रहेगा। Phone और documents minimal. Main backpack locked. Sling bag भी entrance rules के हिसाब से जहाँ जरूरी हो, जमा कर दूँगा।

Travel writing के लिए हर चीज photograph करना जरूरी नहीं होता। कुछ जगहों पर camera छोड़ना ही बेहतर note बन जाता है।

* * *

Godowlia की तरफ पहुँचते हुए एक बार फिर मुझे लगा कि Varanasi का traffic किसी city-planner के software से नहीं, collective instinct से चल रहा है।

एक scooter मेरे इतने पास से निकला कि rider ने “sorry” नहीं कहा - बस “Har Har Mahadev” कहा।

मैंने इसे apology मान लिया।

काशी की गलियों में

THE APPROACH TO VISHWANATH

Old city की तरफ movement पैदल हो गई।

हर तरफ shopfronts: फूल, बेलपत्र, रुद्राक्ष, पीतल के छोटे त्रिशूल, चंदन, प्रसाद, धार्मिक किताबें, sweets, water bottles, mobile covers - devotion और everyday commerce बिना किसी embarrassment के साथ-साथ चल रहे थे।

एक दुकान के बाहर रुका। मैंने सिर्फ पानी पूछा था, दुकानदार ने पूरा पूजा package offer कर दिया।

“बेलपत्र ले लो।”

“अभी सिर्फ water.”

“रुद्राक्ष?”

“नहीं।”

“प्रसाद?”

“बाद में।”

वह हँसा। “आप बहुत disciplined यात्री हो।”

“Budget disciplined.”

“Budget में भी भगवान मिलते हैं।”

“अच्छी बात है।”

उसने bottle दी और direction भी।

जैसे-जैसे temple approach करीब आई, security और crowd management visibly stricter हुआ। मैंने posted instructions follow कीं, restricted items जमा किए और line में लग गया।

यहाँ एक travel writer को एक basic rule याद रखना चाहिए: sacred site पर आपका schedule सबसे important चीज नहीं है। Rules, security और दूसरे pilgrims की जगह पहले आती है।

Line धीमी थी, लेकिन stagnant नहीं। मेरे आगे एक family Maharashtra से थी। पीछे दो young men शायद Bihar से। बीच-बीच में लोग एक-दूसरे को पानी offer कर रहे थे।

मेरे आगे खड़ी एक elderly woman ने पूछा, “कहाँ से?”

मैंने कहा, “कल Russia से आया.”

उन्होंने बिना surprise के कहा, “अच्छा. वहाँ से भी लोग आते हैं.”

फिर उन्होंने मुझसे पूछा, “पहली बार बाबा के दरबार?”

“हाँ।”

उन्होंने बस इतना कहा, “तो जल्दी मत करना।”

मैं almost हँस पड़ा।

Delhi porter, Vrindavan elder, और अब Kashi की यह महिला - मेरी itinerary के खिलाफ यह conspiracy वास्तव में national हो चुकी थी।

फिर मैंने सोचा, शायद वे लोग itinerary के खिलाफ नहीं थे। शायद वे उस habit के खिलाफ थे जिसमें traveller हर experience के बीच अगला stop देखता रहता है।

मैंने phone check करना बंद कर दिया।

* * *

कुछ जगहों पर city की आवाज़ पीछे छूटती जाती थी। फिर अचानक bell, chant, या किसी group की पुकार उसे बदल देती।

मैं पूरी religious vocabulary नहीं जानता था। लेकिन एक चीज स्पष्ट थी - यहाँ लोगों की arrival सिर्फ tourism नहीं थी। कई लोग अपने साथ family memory, vows, grief, gratitude, fear और hope लेकर आए थे।

किसी भी temple को केवल architecture लिखकर खत्म करना आसान है। लेकिन sacred place की असली architecture शायद लोग बनाते हैं।

श्री काशी विश्वनाथ

SHRI KASHI VISHWANATH

Kashi Vishwanath को शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक के रूप में श्रद्धा दी जाती है। यह fact किसी guidebook में एक line में लिखा जा सकता है। लेकिन line में खड़े लोगों के लिए उसका meaning अलग-अलग था।

किसी के लिए pilgrimage complete करना।

किसी के लिए parents की इच्छा.

किसी के लिए spiritual duty.

किसी के लिए curiosity.

और मेरे लिए?

शायद इन सबके बीच थोड़ी travel curiosity, थोड़ी faith की respect, और थोड़ी यह इच्छा कि city को उसके सबसे important symbols में से एक के भीतर से समझा जाए।

Darshan brief था।

इतना brief कि modern traveller का instinct कहे - बस?

लेकिन pilgrimage का logic duration से अलग होता है। कई लोग घंटों travel करके कुछ seconds के लिए आते हैं। Value time spent में नहीं, meaning में होती है।

मैं उस moment को literary बनाने की कोशिश नहीं करना चाहता। Bells थीं. Crowd था. Movement था. Hands folded थे. Stone, metal, flowers, water, voices - सब एक साथ.

और strangely, blue diary मेरे दिमाग से कुछ minutes के लिए गायब हो गई।

यह शायद अच्छा था।

Mystery को हर sacred moment पर कब्जा नहीं करना चाहिए।

* * *

बाहर निकलने के बाद मैंने side में खड़े होकर सांस ली।

Phone फिर हाथ में आया। Time expected से ज्यादा चला गया था।

मेरे पास next stop Maa Annapurna का था।

एक local volunteer-type व्यक्ति से direction पूछा। उसने हाथ से बताया।

“पहले पानी पी लो,” उसने कहा।

मैंने पूछा, “इतना tired दिख रहा हूँ?”

“Russia से आए हो?”

मैं चौंका।

“आपको कैसे पता?”

उसने पीछे इशारा किया।

वही elderly woman family के साथ खड़ी थी। शायद बात वहाँ तक पहुँच गई थी।

मैं हँसा।

Varanasi की गलियों में information भी crowd की तरह travel करती थी।

माँ अन्नपूर्णा

MAA ANNAPURNA

अन्नपूर्णा - nourishment, food, sustenance.

नाम सुनते ही मुझे पिछले दो दिनों का menu याद आ गया: Paharganj dal-roti, railway chai, Mathura kachori, peda, Vrindavan aloo-puri, rabri, night platform poori, Banarasi kachori-jalebi.

Spiritual symbolism और digestive reality एक साथ आ गए।

Maa Annapurna की tradition में भोजन केवल stomach भरने की चीज नहीं, giving और sustaining का symbol भी है। यह idea travel में और साफ दिखता है, क्योंकि stranger द्वारा दिया गया छोटा food item disproportionate memory बन जाता है।

Train में Sharma ji की chai.

Pilgrim family की shared food smell.

Vrindavan shopkeeper की extra puri.

Banaras breakfast वाले की jalebi recommendation.

Travel में भोजन सिर्फ local cuisine नहीं होता। बहुत बार hospitality की भाषा होता है।

Dev Darshan Note:
Vishwanath की यात्रा शक्ति और presence का अनुभव थी; Annapurna के सामने वही शहर भोजन, दान और रोजमर्रा की जरूरत की भाषा में दिखाई दिया।

बाहर निकलते हुए एक छोटी दुकान से मैंने थोड़ा प्रसाद लिया।

दुकानदार ने पूछा, “कहाँ जाना?”

“अभी कुछ देर बैठना है।”

“घाट?”

“हाँ. बाद में.”

“पहले lassi.”

Varanasi मुझे systematically feed कर रहा था।

मैंने resistance छोड़ दिया।

एक छात्र, दो काशियाँ

TRADITION AND A CHANGING CITY

Lassi की दुकान के पास बैठने की थोड़ी जगह थी। Thick lassi, ऊपर malai. Glass इतना heavy कि उसे drink कहना technically incomplete था।

मेरे पास लगभग पच्चीस-छब्बीस साल का युवक बैठा था। Simple kurta, canvas bag, हाथ में Sanskrit text की photocopies.

उसने मेरी notebook देखी।

“आप लिखते हैं?”

“आजकल ज्यादा notes. शायद बाद में book.”

“किस पर?”

“दस दिन public transport से travel. Delhi से Jalgaon तक.”

“दस दिन?”

मैंने कहा, “हाँ, सबका यही reaction है।”

वह हँसा। उसका नाम आदित्य था। Sanskrit और philosophy पढ़ रहा था, साथ में students को tuition भी देता था। Family Varanasi के आसपास की थी।

हमारी बात temple से city पर चली गई।

मैंने पूछा, “पुराना Banaras कितना बचा है?”

उसने कहा, “यह सवाल इस पर depend करता है कि आप पुराना किसे मानते हैं।”

“मतलब?”

“अगर narrow lane पुराना है और clean access नया, तो दोनों लड़ते दिखेंगे। लेकिन tradition सिर्फ wall नहीं है। भाषा, पूजा, music, teaching, families - ये भी tradition हैं.”

मैंने पूछा, “तो redevelopment अच्छा है?”

वह हँसा। “आप journalist की तरह yes-no पूछ रहे हो।”

“Travel writer हूँ. Beginner.”

“फिर yes-no से बचो।”

उसने lassi का आखिरी sip लिया।

“देखिए, कुछ लोगों को wider access अच्छा लगता है. Elderly pilgrims के लिए सुविधा important है. Cleanliness important है. लेकिन किसी भी पुरानी city में change का cost होता है - memory, local businesses, houses, familiar routes. किसका कितना cost हुआ, किसको कितना benefit मिला - यह अलग-अलग लोग अलग बताएँगे.”

मैं सुनता रहा।

यह political voice नहीं था। Culture का practical voice था।

“Young people?” मैंने पूछा। “उन्हें tradition में interest है?”

“कुछ को बहुत. कुछ को नहीं. वैसे ही जैसे Moscow में सब लोग Russian literature नहीं पढ़ते होंगे।”

मैं हँसा।

“Fair.”

“हम tradition को museum बना देते हैं तो young लोग दूर होंगे. अगर वह living thing है तो बदलती भी है.”

मैंने notebook में यह line लिखी।

Living tradition changes without becoming meaningless.

फिर मैंने पूछा, “Tourists शहर को बदलते हैं?”

“Pilgrims भी. Students भी. Locals भी. Governments भी. Markets भी. कोई शहर एक कारण से नहीं बदलता.”

उसका answer मुझे पसंद आया क्योंकि उसमें villain नहीं था।

Travel writing का temptation होता है - हर शहर को एक simple conflict में बदल दो. Old versus new. Sacred versus commercial. Local versus tourist.

Reality rarely इतनी convenient होती है।

Conversation Note - Aditya:
“परंपरा सिर्फ पुरानी दीवार नहीं है। अगर वह जीवित है तो बदलती भी है। सवाल यह है कि बदलते समय किसकी आवाज़ सुनी गई और किसकी नहीं।”

हमने कोई contact exchange नहीं किया।

बस नाम.

कुछ बातें.

और फिर वह अपनी class के लिए चला गया।

Stranger conversation number पता नहीं कौन-सा था।

लेकिन यही travel का हिस्सा था जिसे मैं सबसे ज्यादा याद रखने लगा था।

गलियों की दूसरी परत

WHAT A CITY HIDES IN PLAIN SIGHT

Aditya के जाने के बाद मैं बिना fixed destination थोड़ा चला।

अब गलियाँ पहली बार से कम confusing लग रही थीं। शायद city नहीं बदली थी, मैं थोड़ा adapt हो गया था।

एक silk shop. एक tiny shrine. ऊपर wooden balcony. नीचे scooter repair. Corner पर दूध की कड़ाही. अगले मोड़ पर किताबों की छोटी दुकान.

मैंने एक पुरानी-looking postcards और printed images की दुकान देखी। Mostly modern prints, कुछ old-city reproductions.

मैं अंदर गया।

Owner ने पूछा, “Old Banaras photo?”

“बस देख रहा हूँ।”

एक stack में ghats, temples, colonial-era streets की reproductions थीं। कोई खास rare archive नहीं - tourist prints.

फिर भी एक image पर मेरी नजर रुक गई।

पुरानी building façade. ऊँची खिड़की. Geometric grill.

मुझे blue diary के faint pressure mark की याद आई।

मैंने image हाथ में ली।

“यह कहाँ की है?”

Shopkeeper ने देखा।

“पुराना Banaras. Exact building नहीं पता. Reprint है.”

“Original?”

“हमारे पास नहीं. Market print.”

मैंने picture वापस रख दी।

Connection शायद imaginary था।

लेकिन geometric shape फिर दिमाग में अटक गई।

Square?

Window?

Symbol?

मैंने diary नहीं निकाली।

यह clue नहीं था - अभी नहीं।

मैंने खुद को remind किया: confirmation bias भी mystery जितना interesting हो सकता है, बस कम romantic नाम है।

* * *

कुछ आगे एक old doorway के ऊपर faded plaque था। English letters मुश्किल से पढ़े जा रहे थे। Date शायद colonial period की थी, लेकिन मैं clearly नहीं पढ़ पाया।

Varanasi की layers सिर्फ temples की नहीं थीं। व्यापार, education, colonial institutions, religious orders, old houses, modern hotels - सब overlapping history का हिस्सा थे।

यहीं कहीं शहर की एक और layer बाद में मेरे सामने आने वाली थी - fraternity की, जिसके बारे में मैंने अभी तक किसी से बात भी नहीं की थी।

लेकिन उस समय मैं सिर्फ इतना जानता था कि diary का geometric mark मुझे बार-बार architecture की तरफ देखने पर मजबूर कर रहा है।

दोपहर का खाना

A SIMPLE BANARASI MEAL

By now lassi का effect खत्म हो चुका था और proper food जरूरी था।

मैंने fancy restaurant नहीं ढूँढा। एक simple vegetarian भोजनालय मिला। Thali: dal, sabzi, roti, rice, achar.

दो दिनों में यह pattern interesting था। Local specialty memorable थी, लेकिन long travel में simple dal-roti शरीर को reset करती थी।

मेरे पास वाली table पर South India से आए दो pilgrims route discuss कर रहे थे। दूसरी तरफ एक local office worker जल्दी-जल्दी lunch खत्म कर रहा था।

यह वही city थी जिसे बाहर से लोग spirituality के single word में compress कर देते हैं। भीतर लोग lunch break भी लेते हैं। Electricity bill भी भरते हैं। बच्चे school जाते हैं। Drivers EMI देते हैं। Priests भी traffic cross करते हैं।

Sacred city होना ordinary life को cancel नहीं करता।

शायद उसे और visible बनाता है।

Food Memory:
Morning kachori-jalebi के बाद thick lassi, फिर simple dal-roti thali. Travel में हर meal “must try” नहीं होना चाहिए; कुछ meals बस आगे चलने की ताकत देते हैं।

Bill pay करके बाहर निकला।

Phone screen पर next day का rough plan लिखा था:

Before sunrise - Ganga.

Boat.

Ghats.

Evening - Aarti.

और 2:17 AM वाली line फिर वापस आई:

आग देखना.

यह almost निश्चित लग रहा था कि “आग” Ganga Aarti हो सकती है।

लेकिन “परछाई”?

Answer अभी भी नहीं।

शाम से पहले

BACK TO THE ROOM

Hotel लौटते समय मैंने इस बार रास्ता नहीं खोया।

यह achievement थी।

Reception वाले ने पूछा, “Darshan?”

“हो गया।”

“भीड़?”

मैंने कहा, “Varanasi standard नहीं पता, लेकिन मेरे standard से बहुत।”

वह हँसा।

Room में पहुँचकर sling bag खाली किया। Wallet. Phone. Notebook. प्रसाद.

Blue diary.

मैंने उसे bed पर रखा।

आज उसने कोई नया clue नहीं दिया था।

और surprisingly, मुझे relief महसूस हुई।

Travel book को भी सांस चाहिए।

हर chapter में mystery बढ़े तो journey background बन जाएगी। मैं यह नहीं चाहता था - शायद writer के रूप में तब भी नहीं, traveller के रूप में भी नहीं।

मैंने notebook में chapter heading जैसी line लिखी:

Vishwanath - The city is older than my questions.

फिर Aditya की बात:

Tradition is not only a wall. It is something people keep doing.

और अंत में:

Tomorrow: the river before sunrise.

* * *

Diary बंद करते समय एक page का corner fold हुआ। मैंने सीधा किया। Faint geometric pressure mark फिर दिखा।

इस बार मैंने उसे notebook में sketch किया।

चार straight lines.

एक angle.

शायद कुछ नहीं.

शायद एक window.

शायद किसी पुराने symbol का हिस्सा.

मैंने नीचे लिखा:

Do not guess yet.

यह advice mystery के लिए थी।

और शायद politics, history, religion और travel - सबके लिए भी।

बाहर शहर अपनी आवाज़ में चलता रहा।

मैंने alarm set किया:

4:35 AM

फिर दूसरा:

4:40 AM

Moscow से Delhi आने वाले traveller ने आखिर lesson सीख लिया था।

Tomorrow, Ganga sunrise.

और शायद आग की पहली असली झलक।

* * *

रात की लॉबी

KASHI, MEMORY AND THE GYANVAPI QUESTION

उस रात मैं जल्दी सोने वाला था। कम से कम कमरे में लौटते समय यही plan था।

लेकिन travel plans की तरह sleep plans भी अक्सर ground reality से हार जाते हैं।

करीब साढ़े दस बजे मैं नीचे lobby में आया। वजह बहुत साधारण थी - गरम पानी चाहिए था और reception से अगले दिन सुबह जल्दी निकलने की बात confirm करनी थी।

Lobby छोटी थी। दो पुराने sofa, एक glass-top table, दीवार पर भगवान शिव की framed तस्वीर, reception desk के पीछे चाबियों का wooden board और corner में एक television, जिसकी आवाज़ लगभग बंद थी।

Hotel owner खुद desk पर बैठे थे। उम्र करीब पचपन-साठ। सफेद kurta, हल्की grey moustache, आँखों पर reading glasses.

दिन में मैंने उन्हें सिर्फ दो-तीन बार देखा था। Reception अक्सर उनका staff संभाल रहा था।

उन्होंने मुझे देखते ही पूछा, “Darshan हो गया?”

“हाँ. Vishwanath और Annapurna दोनों.”

उन्होंने glasses उतारे।

“पहली बार?”

मैं हँसा। “आज यह सवाल बहुत लोगों ने पूछा।”

“Kashi में यही पूछा जाता है. यहाँ आदमी पहली बार आता है या फिर लौटकर आता है.”

मैंने गरम पानी माँगा। उन्होंने staff को आवाज़ दी, फिर सामने वाले sofa की तरफ इशारा किया।

“बैठो. Moscow से आए हो न?”

मैं चौंका।

“यह भी lobby intelligence network से पता चला?”

वह हँसे। “छोटा hotel है. कौन कहाँ से आया, पता चल जाता है.”

उनका नाम **मिश्रा जी** था। यह नाम मैं अपनी notebook में लिखूँगा या नहीं, तब तय नहीं किया था। लेकिन बातचीत कुछ minutes में ordinary hotel-small-talk से बहुत आगे निकल गई।

* * *

उन्होंने पूछा, “Vishwanath देखकर क्या लगा?”

मैंने कुछ seconds सोचा।

“Crowd बहुत था. Security भी. लेकिन अंदर जाकर लगा कि लोग सिर्फ monument देखने नहीं आते. किसी के लिए family की इच्छा है, किसी के लिए faith.”

मिश्रा जी ने धीरे से सिर हिलाया।

“बस यही समझना चाहिए. बाहर वाला आदमी building देखता है. बनारसी आदमी memory देखता है.”

मैंने पूछा, “Memory?”

उन्होंने television की तरफ देखा। Screen पर muted news चल रही थी। नीचे ticker में Gyanvapi शब्द दिखाई दिया।

उन्होंने remote से TV बंद कर दिया।

“आपने ज्ञानवापी देखा?”

“बाहर से area देखा. Detail में नहीं.”

कुछ seconds silence रहा।

फिर उन्होंने कहा, “देखिए, मैं आपको पहले ही बता दूँ - मेरी सोच Hindu side की है.”

उनका tone aggressive नहीं था। बहुत matter-of-fact था।

“मेरे लिए Kashi Vishwanath सिर्फ आज का मंदिर नहीं है. यह हमारी धार्मिक और सभ्यतागत स्मृति है. पीढ़ियों से इस शहर में लोग उस memory के साथ जीते आए हैं. इसलिए जब कोई कहता है कि पुराने सवाल मत उठाओ, बस आगे बढ़ो - मुझे वह बात इतनी आसान नहीं लगती.”

मैंने उनकी तरफ देखा।

“आप चाहते हैं कि पूरा dispute reopen हो?”

“Reopen नहीं,” उन्होंने कहा, “जो court में है, उसे evidence के साथ decide होने दो. Hindu side को अपना दावा रखने का पूरा अधिकार है. अगर historical record, archaeology, documents, worship tradition - जो भी legally admissible material है - किसी बात को support करता है, तो उसे दबाना क्यों चाहिए?”

उन्होंने table पर उँगली से हल्का tap किया।

“आस्था कोई छोटा विषय नहीं है. और हिंदुओं से हमेशा यह expectation भी नहीं हो सकती कि अपनी हर historical hurt को केवल इसलिए भूल जाएँ क्योंकि वह uncomfortable है.”

यह पहली line थी जिसमें उनकी बात साफ pro-Hindu थी।

लेकिन उन्होंने अगले ही sentence में जोड़ा:

“इसका मतलब यह भी नहीं कि सड़क पर लड़ो, किसी ordinary Muslim से नफरत करो, या भीड़ फैसला करे. Court है. Evidence है. कानून है. उसी से होना चाहिए.”

मैं थोड़ा आगे झुका।

“यही difference important है.”

“बहुत important,” उन्होंने कहा। “मेरा disagreement किसी मुसलमान पड़ोसी से नहीं है. मेरा सवाल historical और religious claim से है. दोनों को mix करोगे तो शहर जलता है. अलग रखोगे तो court सुन सकता है.”

Owner's View:
मिश्रा जी का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से Hindu civilizational memory के पक्ष में था: उनका मानना था कि Hindu claim को evidence और कानून के आधार पर पूरी सुनवाई मिलनी चाहिए, लेकिन communal hostility या street confrontation समाधान नहीं है।

मैंने पूछा, “आपको लगता है Kashi Vishwanath और Gyanvapi को अलग-अलग समझना possible है?”

“Legal file में अलग-अलग questions होंगे,” उन्होंने कहा, “लेकिन local memory में दोनों पास हैं. आप आज मंदिर से निकले होंगे. आपको physical proximity दिखी होगी. यहाँ रहने वाला आदमी उस geography को रोज देखता है.”

मैंने सिर हिलाया।

“हाँ. Tourist के लिए map है. Local के लिए memory.”

वह मुस्कुराए।

“अब traveller बन रहे हो.”

* * *

गरम पानी आ गया। Staff ने steel flask table पर रखा। मैं उठा नहीं। Conversation अभी खत्म नहीं हुई थी।

मैंने कहा, “एक problem है. ऐसे disputes में हर side अपने historical version को complete truth मानती है.”

“तो court इसी लिए है,” मिश्रा जी ने कहा।

“लेकिन court भी history department नहीं है.”

“सही. Court law decide करेगा. Historian history पर debate करेगा. Archaeology evidence देगी. Faith अपना meaning देगा. Problem तब होती है जब कोई एक चीज बाकी तीनों की जगह लेने लगे.”

यह answer मेरे expectation से ज्यादा measured था।

मैंने पूछा, “आप personally क्या चाहते हैं?”

उन्होंने थोड़ी देर उत्तर नहीं दिया।

“मैं चाहता हूँ कि Hindu पक्ष को यह feeling न रहे कि उसकी बात सुनने से पहले ही उसे communal कह दिया गया. Kashi हमारे लिए कोई random property dispute नहीं है. अगर किसी temple tradition से जुड़ा historical grievance है, तो उसे dignity से सुना जाना चाहिए.”

फिर उन्होंने मेरी तरफ देखा।

“और आप?”

अब सवाल मेरी तरफ था।

मैंने flask के ढक्कन से निकलती steam देखी।

“मैं Hindu cultural memory के प्रति sympathetic हूँ,” मैंने कहा। “मुझे भी लगता है कि किसी historical religious claim को सिर्फ इसलिए dismiss नहीं करना चाहिए कि वह politically sensitive है. अगर evidence है तो उसे examine होना चाहिए. अगर legal remedy है तो उसे pursue करना चाहिए.”

मैं रुका।

“लेकिन मैं ordinary Muslims को historical rulers के actions के लिए responsible मानने के खिलाफ हूँ. और मुझे यह भी नहीं चाहिए कि faith के नाम पर crowd न्याय करे.”

मिश्रा जी ने कहा, “यही तो. न्याय चाहिए, बदला नहीं.”

यह line lobby की उस बातचीत का सबसे साफ summary बन गई।

न्याय चाहिए, बदला नहीं।

मैंने notebook निकाल ली।

“यह लिखूँ?”

वह हँसे। “Royalty लगेगी.”

Sharma ji याद आ गए।

“Chai?” मैंने पूछा।

“Lobby की chai खराब है. कल बाहर पिलाऊँगा.”

“तो royalty pending.”

हम दोनों हँसे।

* * *

फिर बात थोड़ा broader हो गई।

मिश्रा जी ने कहा कि Kashi की identity को केवल dispute से define करना भी गलत है।

“यहाँ music है. Sanskrit है. weaving है. घाट हैं. अखाड़े हैं. खाना है. scholars हैं. cremation भी है, weddings भी. केवल Gyanvapi दिखाओगे तो Banaras छोटा हो जाएगा.”

मैंने कहा, “लेकिन बाहर news में conflict ज्यादा दिखाई देता है.”

“Conflict बिकता है,” उन्होंने कहा। “City नहीं.”

यह line मेरे future media chapter के लिए almost preview थी।

उन्होंने आगे कहा, “हमारे यहाँ Hindu identity strong है. इसमें शर्म की क्या बात? यह Kashi है. Mahadev की नगरी. लेकिन strong identity का मतलब insecure identity नहीं होना चाहिए.”

“मतलब?”

“अगर अपनी civilization पर भरोसा है तो हर conversation में चिल्लाने की जरूरत नहीं. अपना claim रखो. Evidence रखो. पूजा करो. Court जाओ. लिखो. पढ़ो. लेकिन किसी innocent आदमी से दुश्मनी क्यों?”

मैंने उस sentence को धीरे से notebook में लिखा।

यह pro-Hindu था, लेकिन hatred नहीं।

शायद मैं exactly यही tone अपनी book में चाहता था।

मेरी notebook में उस रात तीन lines लिखी गईं:

Hindu memory को dismiss मत करो.
Historical claim को evidence से test करो.
न्याय और बदला एक चीज नहीं हैं.

मिश्रा जी ने पूछा, “कल sunrise?”

“हाँ. Boat.”

“फिर शाम को Aarti?”

“हाँ.”

उन्होंने कहा, “तब Kashi का दूसरा face देखोगे.”

मैं almost पूछने वाला था - आग?

लेकिन रुक गया।

2:17 AM वाले आदमी की line किसी stranger को बताने का मन नहीं हुआ।

मैंने बस पूछा, “Aarti में सबसे interesting क्या है?”

उन्होंने कहा, “लोग flame देखते हैं.”

मेरे हाथ का flask हल्का-सा रुक गया।

“और?”

उन्होंने shoulders उचकाए।

“बाकी आप traveller हो. खुद देखो.”

Coincidence.

बस coincidence.

मैंने खुद से यही कहा।

* * *

Room में वापस आया तो रात ग्यारह से ऊपर हो चुकी थी।

Blue diary bed पर थी। मैंने उसे उठाया।

आज उसके pages ने कोई नया clue नहीं दिया था।

लेकिन lobby conversation ने Kashi को mystery से ज्यादा complicated बना दिया था।

Faith.

History.

Memory.

Law.

Identity.

एक ही जगह पर सब मौजूद थे, लेकिन एक-दूसरे के synonyms नहीं थे।

मैंने notebook के bottom पर एक editorial reminder लिखा:

When writing: distinguish faith, historical claims, legal findings and personal opinion.

फिर एक और:

किसी समुदाय के बारे में generalization नहीं.

और आखिरी:

मिश्रा जी की आवाज़ को उनकी आवाज़ ही रहने देना.

मैंने alarms set किए:

4:35 AM

4:40 AM

Light off की।

नींद आने से पहले दो अलग sentences दिमाग में साथ घूम रहे थे।

एक lobby से:

न्याय चाहिए, बदला नहीं।

और एक midnight train से:

आग देखना... पर उसकी परछाई मत भूलना।

कल सुबह गंगा थी।

कल शाम आग।

और शायद उसके बाद वह परछाई भी, जिसे मैं अभी तक समझ नहीं पाया था।

* * *

CHAPTER SEVEN

गंगा पर सूर्योदय

SUNRISE ON THE GANGA

वाराणसी

Day Three - Before Sunrise

“कुछ शहरों को सड़क से नहीं, पानी से देखना चाहिए।”

Alarm 4:35 पर बजा।

मैंने बंद किया।

4:40 वाला alarm शायद इस यात्रा का सबसे समझदार decision था।

दूसरी घंटी पर मैं उठ बैठा। कमरे में अँधेरा था। बाहर corridor शांत. Phone की light बहुत तेज लगी।

चार घंटे से कम की नींद थी, लेकिन Ganga sunrise किसी दूसरे दिन shift नहीं किया जा सकता था। अगले connection already मेरी गर्दन पर थे।

मैंने जल्दी से face wash किया, light jacket पहना, छोटा sling bag लिया और blue diary को हाथ में उठाकर कुछ seconds देखा।

रात की lobby conversation अभी दिमाग में fresh थी।

मिश्रा जी की line:

“न्याय चाहिए, बदला नहीं।”

और midnight passenger की line:

“काशी में आग देखना... मगर उसकी परछाई मत भूलना।”

दोनों sentences एक ही शहर में थे, लेकिन एक-दूसरे से बिल्कुल अलग दुनिया के।

मैंने diary bag में रखी।

आज mystery solve करने नहीं जा रहा था।

आज सूर्योदय देखने जा रहा था।

* * *

Hotel lobby में वही owner बैठे मिले। शायद उनका sleep schedule भी Kashi के जैसा था।

उन्होंने पूछा, “Boat?”

“हाँ।”

“Rate पहले तय करना।”

“जी।”

“और बहुत सस्ता बोलने वाले के पीछे मत जाना।”

मैंने कहा, “कल आपने Hindu civilization पर lecture दिया था, आज fraud prevention?”

वह हँसे। “धर्म अपनी जगह, tourist rate अपनी जगह।”

मैं भी हँस पड़ा।

बाहर निकला तो सड़क लगभग खाली नहीं थी। यही Varanasi का पहला surprise था। चार-पाँच बजे भी कहीं chai, कहीं दूध, कहीं मंदिर की घंटी, कहीं लोग घाट की दिशा में जा रहे थे।

शहर सोता कम था; shift बदलता था।

अस्सी की ओर

THE CITY BEFORE DAYLIGHT

एक e-rickshaw मिला। Driver sleepy दिख रहा था लेकिन bargaining पूरी तरह awake थी।

“Assi?”

“हाँ।”

Rate तय हुआ। मैं बैठ गया।

Road पर हवा ठंडी थी। दिन की dust और traffic अभी पूरी तरह उठे नहीं थे। कुछ tea stalls पर छोटे groups. एक जगह अखबार bundles उतारे जा रहे थे। कहीं दूध के cans. कहीं मंदिर के बाहर पहला diya.

यह वही city थी जो दिन में horn, heat और crowd से भरी थी, लेकिन pre-dawn में उसका skeleton दिखाई दे रहा था।

Assi side पहुँचते-पहुँचते walkers, pilgrims और travellers बढ़ गए। कुछ लोग yoga mat लेकर जा रहे थे। कुछ camera. कुछ सिर्फ shawl में हाथ बाँधे।

Ghats की सीढ़ियाँ उतरते हुए पहली बार Ganga को darkness में देखा।

दिन की river से अलग।

Black नहीं - grey.

Opposite bank लगभग invisible.

Boats silhouettes जैसी.

Boatmen already काम पर थे।

“Boat?”

“Morning boat?”

“Full ghat?”

“Private?”

मैंने एक shared boat चुनी। Budget भी बचता और strangers भी मिलते।

मुझे यही चाहिए था।

Travel Choice:
Private boat आपको silence दे सकती है.
Shared boat आपको stories देती है.

Boat में कुल सात passenger थे। एक elderly couple, दो college-age लड़के, एक middle-aged man with small cloth bag, एक woman travelling with her sister, और मैं.

Boatman ने नाम बताया - रामू.

“कहाँ तक?” मैंने पूछा।

“घाट दिखाएँगे. सूरज उधर से निकलेगा. थोड़ा ऊपर, फिर वापस.”

Simple plan.

Boat pushed off.

और city shoreline बन गया।

पानी से दिखाई देता शहर

VARANASI FROM THE RIVER

Boat जैसे ही किनारे से दूर हुई, noise कम हो गई।

Oar पानी में जाता, हल्की आवाज़ आती, फिर boat थोड़ा आगे।

Ghats एक continuous wall की तरह दिख रहे थे - steps, temples, palaces, houses, platforms, lights.

किनारे पर life already शुरू थी। कोई स्नान कर रहा था. कोई पूजा. कोई बस बैठा. कुछ लोग कपड़े बदल रहे थे. कुछ boatmen passengers बुला रहे थे.

मैंने camera निकाला, दो photos लिए, फिर नीचे रख दिया।

Sharma ji की line अब automatic trigger बन गई थी:

“पहले आँख से देख लो. *Camera* बाद में.”

मैंने eyes से देखना शुरू किया।

Sky धीरे-धीरे बदल रही थी। पहले charcoal grey. फिर हल्का blue. फिर eastern horizon पर warm line.

Boat में मौजूद elderly woman ने हाथ जोड़ लिए।

College boys selfie लेने लगे।

Middle-aged man बिल्कुल चुप था।

मैंने उससे पूछा, “पहली बार?”

वह मुस्कुराया।

“नहीं. पाँचवीं शायद.”

“Local?”

“नहीं. बाहर काम करता हूँ. गाँव Chandauli side.”

नाम था **सुरेश यादव**। Mumbai के outskirts में construction-related work करता था। साल में कुछ बार घर आता। इस बार family work से आया था और सुबह Kashi भी चला आया।

“इतनी सुबह?” मैंने पूछा।

“घर में सोता तो माँ काम दे देती,” उसने हँसते हुए कहा।

Boat पर पहली laughter हुई।

फिर उसने मुझे पूछा, “आप कहाँ से?”

मैंने usual answer दिया।

“Moscow.”

उसने almost shout किया, “Russia?”

अब बाकी boat भी मेरी तरफ देख रही थी।

मेरी यात्रा में Russia mention किसी conversation accelerator की तरह काम कर रहा था।

* * *

सुरेश ने पूछा, “वहाँ काम अच्छा मिलता?”

“Depends. मैं वहाँ अलग काम से था. अभी India travel कर रहा हूँ.”

“India घूमने?”

“Public transport से.”

“फिर आप असली India देख लोगे,” उसने कहा।

Boatman रामू तुरंत बोला, “असली India कौन-सा है? हमारा boat वाला?”

सब हँसे।

सुरेश ने कहा, “हर आदमी अपना India असली बोलता है.”

यह line conversation का gate बन गई।

सुरेश का भारत

POLITICAL VOICE TWO - A MIGRANT WORKER

Sunrise अभी पूरा नहीं हुआ था। Boat धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी।

मैंने पूछा, “आप बाहर काम कब से कर रहे?”

“बारह साल.”

“वापस गाँव settle होने का plan?”

वह हँसा। “Plan बहुत है. Income का answer नहीं है.”

उसने बताया कि परिवार गाँव में है, लेकिन steady earnings के लिए उसे दूसरे राज्य में काम करना पड़ता है। गाँव में घर बना लिया, बच्चों को school भेजता है, parents के medical खर्च में मदद करता है।

“Development दिखता है?” मैंने पूछा।

वह कुछ seconds चुप रहा।

“Road दिखता है. बिजली पहले से better है हमारे side. Phone network है. कुछ schemes का benefit भी लोगों को मिला.”

फिर उसने हाथ पानी की तरफ किया।

“लेकिन job?”

उसने खुद ही सवाल का answer दिया।

“Job के लिए हम अभी भी बाहर जाते हैं.”

उसकी political opinion किसी party manifesto से नहीं निकली थी। उसके train tickets और wage slips से निकल रही थी।

“सरकार से सबसे बड़ा expectation?”

“काम,” उसने तुरंत कहा। “ऐसा काम कि बच्चा घर छोड़ना चाहे तो choice से छोड़े, मजबूरी से नहीं.”

Boat में बैठी एक महिला ने कहा, “लेकिन migration हमेशा बुरा भी नहीं. बाहर जाकर लोग सीखते हैं, पैसा कमाते हैं.”

सुरेश ने सिर हिलाया।

“हाँ. मैं भी कह रहा हूँ. बाहर जाना problem नहीं. केवल बाहर जाने पर ही घर चले - वह problem है.”

यह distinction मुझे पसंद आया।

मैंने पूछा, “Religion और politics mix होने पर?”

सुरेश ने नदी की तरफ देखा।

“देखिए, मैं मंदिर जाता हूँ. घर में पूजा होती है. मुझे अपने धर्म पर गर्व है. लेकिन जब election आता है तो घर में राशन, काम, school, road भी याद आता है. आदमी एक चीज नहीं है.”

उसने थोड़ी देर बाद जोड़ा:

“धर्म important है. बहुत important. लेकिन पेट भी धर्म नहीं भूलता.”

Boatman ने कहा, “पेट तो किसी का भी नहीं भूलता.”

फिर boat में हल्की हँसी।

Political Voice 2 - Suresh:
वह अपने Hindu faith पर गर्व करता है और infrastructure व welfare improvements को स्वीकार करता है, लेकिन उसके लिए employment, wages, education और मजबूरी वाला migration उतने ही महत्वपूर्ण political सवाल हैं।

मैंने जानबूझकर किसी party का नाम नहीं पूछा।

वह किसे vote करता है, इससे उसकी story छोटी हो जाती।

मुझे यह समझना था कि वह government को किन चीजों से measure करता है।

उसका answer साफ था:

काम. घर. बच्चों का future. और dignity.

* * *

तभी boat में बैठे college boys में से एक, नाम **अभिषेक**, conversation में आया।

“लेकिन भाई, अगर infrastructure नहीं बनता तो jobs भी कैसे आएँगे?”

सुरेश ने उसकी तरफ देखा।

“मैं मना कर रहा?”

“नहीं, पर हम लोग हर चीज तुरंत चाहते हैं. Road, railway, temple, industry, jobs - सब एक साथ.”

अभिषेक engineering student था, Varanasi में relatives के यहाँ आया था। उसकी राय ज्यादा optimistic थी।

“मेरे हिसाब से change दिख रहा है,” उसने कहा। “Highways, digital payments, infrastructure, city projects. Problems हैं, लेकिन direction भी देखना चाहिए.”

सुरेश ने पूछा, “आप job में गए?”

“अभी student.”

“तब direction अच्छा लगेगा. Salary आने दो.”

सब हँसे, अभिषेक भी।

उसने जवाब दिया, “ठीक है. लेकिन generation को सिर्फ government job भी नहीं देखना चाहिए. Skills, business, private sector...”

सुरेश ने कहा, “बिल्कुल. लेकिन village का बच्चा skill कहाँ सीखेगा, यह भी system का सवाल है.”

Conversation argumentative थी, hostile नहीं।

मैं बीच में सिर्फ सुन रहा था।

एक migrant worker और एक engineering student एक ही sunrise देख रहे थे, लेकिन future की horizon अलग-अलग थी।

Counter-view - Abhishek:
उसका मानना है कि infrastructure, digital systems और long-term investment को समय देना चाहिए, और youth को केवल सरकारी नौकरी पर निर्भर न रहकर skills और private opportunities भी देखनी चाहिए।

दोनों में एक बात common थी - दोनों चाहते थे कि India आगे बढ़े। Disagreement इस पर था कि progress को किस speed और किन indicators से measure किया जाए।

यह शायद politics का अधिक useful version था।

कम slogans.

ज्यादा lived experience.

सूरज

THE MOMENT EVERYONE BECAME QUIET

और फिर, बिना announcement के, horizon बदल गया।

पहले एक orange edge.

फिर आधा circle.

फिर पूरा सूरज.

Boat में conversation अपने आप बंद हो गई।

सुरेश चुप। अभिषेक चुप। Elderly couple चुप. Boatman भी कुछ seconds oar धीमा कर दिया।

Ganga पर light फैलने लगी। Water का रंग grey से gold नहीं - क्योंकि black-and-white memory में भी उसका brightness अलग था।

Ghats पर लोग अब clearly दिखाई दे रहे थे। Temple towers, steps, old facades. Pigeons. Smoke की हल्की lines. Clothes drying. Dogs moving on steps. Priests arranging puja items.

मैंने camera उठाया।

फिर नीचे रख दिया।

कुछ scenes record करने से पहले absorb करना चाहिए।

Moscow की winter mornings याद आईं - देर से आता light, snow reflect करता sky. यहाँ सूरज का character अलग था. जल से उठता, शहर पर फैलता, हर wall को जगाता।

किसी spiritual transformation का claim करना आसान होता।

मैंने कुछ ऐसा नहीं महसूस किया।

बस एक बहुत साफ moment था।

और शायद clarity भी enough होती है।

* * *

Boatman ने अलग-अलग ghats की ओर इशारा किया। वह names बोलता गया, कुछ stories, कुछ practical notes. कौन-सा ghat किस use के लिए जाना जाता है, कहाँ tourists ज्यादा, कहाँ locals ज्यादा, कहाँ boats line में रहती हैं.

मैंने सब याद रखने की कोशिश नहीं की।

Travel का दूसरा lesson: हर fact को पकड़ने की कोशिश memory को empty कर देती है। कुछ चीजें जाने देना जरूरी है।

लेकिन एक direction पर मेरी नजर टिक गई।

दूर smoke उठ रहा था।

मैंने पूछा, “वहाँ?”

Boatman ने short answer दिया।

“श्मशान side.”

मैंने तुरंत 2:17 AM वाली line याद की।

आग.

क्या वह cremation fires की बात कर रहा था?

या शाम की Aarti?

Varanasi में एक ही word कई meanings रखता था।

मैंने उस तरफ camera नहीं किया।

कुछ चीजें tourist frame से ज्यादा dignity मांगती हैं।

घाटों के बीच

THE RIVER AS A ROAD

Boat अब वापस की तरफ मुड़ रही थी।

Sunrise के बाद passenger relaxed हो गए।

Elderly couple ने अपने bag से छोटा प्रसाद निकाला। Woman ने मुझे भी दिया। मैंने धन्यवाद कहा।

सुरेश ने पूछा, “आप आगे कहाँ?”

“Ayodhya.”

“फिर?”

मैंने पूरा route बताया।

उसने दोनों हाथ माथे पर रख लिए।

“आपको घर वाले ढूँढते नहीं?”

मैं हँसा। “अभी तक नहीं.”

अभिषेक ने पूछा, “Jaisalmer भी?”

“हाँ.”

“Train?”

“Train, bus, जो मिले.”

Boatman बोला, “तो boat भी add कर लो. अब journey complete.”

मैंने notebook में mentally tick लगाया:

Train. Auto. E-rickshaw. Shared jeep later. State bus later. Boat - done.

यात्रा धीरे-धीरे transport museum बन रही थी।

* * *

हम एक quieter stretch के पास slow हुए। किनारे women clothes wash कर रही थीं। थोड़ा आगे men bathing. एक child steps पर soap bubbles बना रहा था।

Abhishek ने कहा, “TV पर Banaras अलग दिखता है.”

सुरेश ने पूछा, “कैसा?”

“बस temple, politics, Aarti.”

Boatman ने कहा, “हमको TV वाला कभी नहीं दिखाता कि सुबह पाँच बजे boat साफ करते हैं.”

मैंने कहा, “Travel book में दिखा देंगे.”

वह हँसा। “नाम भी लिखना.”

“रामू?”

“हाँ. लेकिन rate मत लिखना. कल customer वही माँगेगा.”

सभी हँसे।

यह line शायद सबसे real tourism economics थी जो मुझे अभी तक मिली।

अस्सी की चाय

AFTER THE BOAT

Boat वापस steps से लगी। हम उतरने लगे।

Shared journey इतनी जल्दी खत्म हो गई जैसे train compartment की conversations होती हैं।

सुरेश ने हाथ मिलाया।

“अगली बार Chandauli आना.”

“Route में नहीं है.”

“यही problem है आपके route की.”

फिर वह चला गया।

Abhishek ने goodbye कहा। कोई number exchange नहीं। कोई social media follow नहीं।

कुछ लोगों की memory contact list से ज्यादा अच्छी रहती है।

* * *

घाट के ऊपर chai stall पर रुका।

Morning walk के बाद chai का taste अलग था। शायद क्योंकि body अब पूरी तरह awake थी।

मैंने दो cups लिए। पहला जल्दी. दूसरा slowly.

Stall पर अखबार की headlines थीं। कुछ politics. कुछ local crime. कुछ sport.

मैंने newspaper fold करके side रख दिया। अभी-अभी boat पर जो conversation हुई थी, वह headlines से ज्यादा useful लग रही थी।

Morning food:

chai, light poha-style snack, बाद में kachori की temptation.

Banaras does not believe one breakfast is enough.

एक small bowl snack लिया। फिर मैंने kachori avoid की।

यह self-control historical event था।

Hotel लौटने से पहले मैं कुछ देर Assi area में पैदल चला। Morning culture अलग थी - students, pilgrims, walkers, chai drinkers, locals, visiting foreigners.

यहाँ city devotional भी था, social भी।

लोग सिर्फ भगवान से मिलने नहीं, एक-दूसरे से मिलने भी आते थे।

डायरी की परछाई

A CLUE THAT WASN'T READY YET

Hotel room में लौटकर मैंने shoes उतारे, curtains थोड़े खोले और bed पर बैठ गया।

Blue diary bag से बाहर आई।

मैंने कोई नया clue expect नहीं किया।

शायद इसी कारण जो मिला, वह ज्यादा noticeable था।

KASHI वाले faint page के बाद दो blank sheets थीं। तीसरे पर light angle में एक dark patch जैसा impression दिखा।

मैंने window light में page tilt किया।

कोई शब्द नहीं।

बस shape.

एक rectangular outline.

ऊपर छोटा arch जैसा.

और side में diagonal lines.

मैंने notebook में rough sketch बनाया।

यह window हो सकती थी।

Doorway.

Old stamp.

या बस page pressure.

मैंने नीचे लिखा:

Do not force the clue.

फिर sunrise boat की notes लिखीं।

सुरेश.

Migration.

Faith.

Jobs.

Abhishek.

Infrastructure.

Skills.

और सबसे important:

एक आदमी एक समय में धार्मिक भी हो सकता है और economic questions भी पूछ सकता है.

Public debate अक्सर लोगों को categories में बाँटती है। Ground travel उन्हें वापस human बना देता है।

* * *

मैंने phone पर evening plan देखा।

Dashashwamedh Ghat.

Ganga Aarti.

Midnight passenger की line फिर सामने थी.

आग.

अब तक मैंने sunrise देखा था.

Smoke भी दूर से देखा.

लेकिन शायद वह जिस आग की बात कर रहा था, वह शाम को सामने आने वाली थी।

और अगर ऐसा था...

तो shadow कहाँ होगी?

मैंने diary बंद की.

आज सुबह का chapter mystery पर खत्म नहीं होना चाहिए था।

इसलिए notebook में आखिरी line अलग लिखी:

Before politics, before mystery, before history - the river was simply there.

फिर नीचे Hindi में:

गंगा किसी बहस का जवाब नहीं थी। वह बहसों से पहले भी बह रही थी।

* * *

CHAPTER EIGHT

गंगा पर अग्नि

FIRE ON THE GANGA

वाराणसी

Day Three - Evening

"सुबह गंगा रोशनी को जन्म देती है। शाम को वही नदी अग्नि को अपने ऊपर तैरते देखती है।"

सुबह की boat ride के बाद मैंने सोचा था कि Varanasi मुझे थोड़ा समझ आने लगा है।

शाम तक यह confidence खत्म हो गया।

Kashi का एक अजीब नियम था: जैसे ही लगता कि आपने शहर की rhythm पकड़ ली है, वह एक नया layer खोल देता है। सुबह नदी शांत थी। दिन में गलियाँ गर्म और crowded. और अब, sunset के करीब, पूरा riverfront किसी विशाल stage की तरह तैयार हो रहा था।

मैं hotel से थोड़ा जल्दी निकला। Dashashwamedh Ghat की Aarti देखने वालों को देखकर यह समझ आ चुका था कि “समय पर पहुँचना” और “अच्छी जगह मिलना” दो अलग बातें हैं।

Sling bag में सिर्फ जरूरी चीजें थीं: phone, wallet, पानी, छोटा notebook, और blue diary.

Diary को साथ ले जाना अब conscious decision था।

मैंने उसे bag में रखते समय खुद से कहा:

आज अगर कोई *clue* नहीं मिला तो बेहतर है.

मैं सच में चाहता था कि ऐसा ही हो।

कभी-कभी traveller को mystery से छुट्टी चाहिए।

* * *

Godowlia के पास traffic दिन से भी ज्यादा compressed था। E-rickshaw ने मुझे जितना आगे ले जा सकता था ले गया, फिर driver ने हाथ से संकेत किया - “बस. आगे पैदल.”

मैं उतरा।

सड़क पर लोग नदी की दिशा में ऐसे जा रहे थे जैसे invisible current उन्हें खींच रहा हो। Families, solo travellers, elderly pilgrims, foreigners with cameras, local teenagers, flower sellers, priests, vendors carrying baskets of diyas.

यहाँ से गंगा दिखाई नहीं देती थी।

लेकिन उसकी presence दिखाई दे रही थी - लोगों की direction में।

गोदौलिया से घाट तक

A STREET THAT NARROWS INTO THE RIVER

जैसे-जैसे मैं Dashashwamedh की तरफ बढ़ा, street धीरे-धीरे narrow होने लगी। दुकानों की light शाम के dim sky के against चमक रही थी। ऊपर balconies बाहर निकली हुईं, नीचे shopfronts इतने close कि दो दुकानदार एक-दूसरे से बिना आवाज़ ऊँची किए बात कर सकते थे।

कहीं पीतल के lamps की दुकान थी। उनके polished surfaces में गुजरते लोगों की distorted reflections बन रही थीं। थोड़ी दूरी पर फूलों की baskets - marigold orange, rose red, green leaves. अगर यह book color में होती तो शायद वही page सबसे bright होता। लेकिन memory black-and-white में भी रंग भूलती नहीं।

एक दुकान से sandalwood और incense की smell आ रही थी। अगले दस कदम बाद frying oil. फिर wet stone की smell. फिर गाय. फिर hot milk.

Varanasi की गलियाँ smell से भी map होती थीं।

एक मोड़ पर अचानक crowd रुक गया। सामने से एक छोटी religious procession आ रही थी। लोगों ने side बनाई। Drums नहीं, सिर्फ chanting. कुछ seconds में procession निकल गई और street फिर everyday traffic बन गई।

मैंने wall छूकर side लिया। Stone गर्म था। शायद पूरे दिन की धूप अब भी उसमें जमा थी।

ऊपर wires का जाल था। नीचे uneven paving. एक जगह सीढ़ी अचानक नीचे जाती, फिर lane वापस ऊपर. कोई clear horizon नहीं।

Old city में आप दूर नहीं देख सकते। अगले बीस meter तक भी नहीं। हर turn एक curtain है।

शायद इसी कारण river का अचानक सामने आना इतना powerful लगता है।

* * *

मैंने एक flower seller से रास्ता पूछा। वह teenage लड़का था, हाथ में leaf-bowls में छोटे diyas तैयार कर रहा था।

“Aarti?” मैंने पूछा।

उसने हँसकर कहा, “सब उधर ही जा रहे हैं.”

“Good place?”

“अगर अभी जाओ तो steps. Late हुए तो boat.”

“तुम रोज देखते हो?”

“हम रोज काम करते हैं. देखने का time tourist के पास होता है.”

उसने यह complaint की तरह नहीं कहा। बस fact था।

मैंने एक छोटा diya लिया। उसने leaf bowl में फूल ठीक किए और कहा, “River में छोड़ना तो नीचे धीरे. Boat के सामने मत डालना.”

Spirituality के साथ traffic instructions free.

Location Detail:

Godowlia से Dashashwamedh तक पहुँचते हुए रास्ता किसी ceremonial corridor जैसा नहीं लगता। वह दुकानों, pilgrims, scooters, flowers, incense, food, stone walls और अचानक खुलते छोटे मंदिरों से बनता है - sacredness everyday life के बीच से गुजरती है।

दशाश्वमेध घाट

DASHASHWAMEDH GHAT BEFORE THE AARTI

फिर lane अचानक खुली।

पहले आसमान दिखाई दिया।

फिर सामने चौड़ी stone steps नीचे उतरती हुईं।

और उसके beyond - Ganga.

सुबह की वही river अब बिल्कुल अलग थी।

Morning में opposite bank pale और empty लगा था। शाम को near bank human energy से भरा था। Steps पर लोग layers में बैठे थे। ऊपर standing crowd. नीचे platforms तैयार किए जा रहे थे। नदी में boats line बनाकर close आ रही थीं - wooden boats, motor boats, छोटी rowboats, कुछ double-level tourist boats.

Water पर उनका reflection टूटता और जुड़ता रहा।

Sky अभी पूरी तरह dark नहीं था। पश्चिम की तरफ warm light buildings पर अटक रही थी। Ganga की surface पर grey-blue tone थी, लेकिन हर boat की छोटी bulb, हर diya और हर metal lamp उस darkness में धीरे-धीरे sharp होने वाला था।

मैंने steps पर जगह ढूँढी।

एक परिवार ने थोड़ा shift किया। मैं बैठ गया। मेरे सामने लगभग पंद्रह-बीस rows थीं। दूर central platforms clearly दिखाई दे रहे थे।

सामने priests तैयारी कर रहे थे - cloth व्यवस्थित, ritual objects aligned, बड़े multi-tier lamps एक तरफ रखे, conch shells और अन्य items ready. Movement में rehearsal जैसी precision थी, लेकिन atmosphere mechanical नहीं था।

ऊपर से कोई repeatedly लोगों को बैठने और रास्ता खाली रखने को कह रहा था।

Boatmen नदी से अपनी जगह negotiate कर रहे थे।

Police और volunteers crowd flow देख रहे थे।

एक elderly pilgrim अपने grandson को समझा रहा था कि हाथ जोड़कर बैठो.

एक foreign traveller camera settings change कर रहा था.

एक local child popcorn बेच रहा था.

एक sadhu चुपचाप side में बैठा था.

एक ही frame में ritual, tourism, livelihood, crowd control और family outing सब मौजूद थे।

यह exactly वही reason था कि इस book को सिर्फ मंदिरों की list नहीं बनना था।

Places people से बनते हैं।

* * *

मेरे बगल में लगभग तीस साल का आदमी बैठा था। उसने पूछा, “पहली बार?”

मैंने बिना उसकी तरफ देखे कहा, “हाँ. और please मत पूछना कैसे पता चला.”

वह हँसा।

“Camera से.”

मैंने camera नीचे देखा।

“Backpack से नहीं?”

“वो भी.”

पूरी journey एक running joke बन चुकी थी।

शाम का रंग बदलना

WHEN THE GHAT BECOMES A THEATRE

Aarti शुरू होने से कुछ minutes पहले atmosphere में subtle change आया।

पहले लोगों की बातचीत कम हुई।

फिर घंटियों की आवाज़ साफ सुनाई देने लगी।

फिर conch की लंबी आवाज़ riverfront के ऊपर फैल गई।

उस sound में physical vibration थी - जैसे stone steps तक हल्का कंपन आया हो।

Birds जो अभी तक sky में scattered थीं, dark silhouettes में ऊपर निकल गईं।

Priests अपने positions पर आए। Similar dress, synchronized movement, elevated platforms. Behind them, lamps और ritual objects arranged थे।

पहला flame उठा।

फिर दूसरा।

फिर पूरा sequence.

Large lamps जब circular movement में घूमे तो fire एक solid object नहीं रही। वह arcs बनाती हुई दिखाई दी - ऊपर, side, नीचे, फिर वापस. Smoke flame के पीछे thin veil की तरह उठता. Brass या metal surfaces light catch करते. Priests के silhouettes हर movement के साथ sharp और soft होते रहते.

नदी में सामने खड़ी boats अब dark blocks थीं। उनमें बैठे hundreds of faces lamps की तरफ turned थे। कुछ phones ऊपर. कुछ hands folded. कुछ लोग simply watching.

Bell sound repetitive थी, लेकिन monotonous नहीं। Conch और chants के साथ उसका rhythm लगातार build हो रहा था।

मेरे हाथ में camera था।

मैंने दो photos लिए।

फिर उसे गोद में रख दिया।

किसी moment को document करने और उसे miss करने के बीच distance कभी-कभी सिर्फ screen जितना होता है।

मैंने सीधे देखा।

आग.

2:17 AM वाले passenger की पहली word अब सामने थी।

काशी में आग देखना.

यह Aarti हो सकती थी।

बहुत आसानी से.

Flames हवा में उठतीं, नीचे आतीं, फिर ऊपर। Smoke river की तरफ drift कर रहा था।

मैं almost satisfied था।

Clue का आधा हिस्सा समझ में आ गया।

फिर मुझे दूसरी line याद आई:

मगर उसकी परछाई मत भूलना.

मैंने naturally water की तरफ देखा।

और तभी पहली बार मैंने flames के reflections notice किए।

Water पूरी तरह mirror नहीं था। Boats की movement, small waves और oars के कारण reflection टूट रहा था। हर lamp की आग नीचे कई fragmented flames में बदलती - लंबी, टेढ़ी, हिलती हुई।

Original flame ऊपर controlled movement में थी।

उसकी परछाई नीचे restless थी।

मेरी रीढ़ में हल्की ठंडक दौड़ी।

क्या बस यही था?

Fire और reflection?

इतना simple?

या वह stranger मुझे किसी particular reflection की तरफ देखने को कह रहा था?

“आग ऊपर थी.
उसकी परछाई पानी पर टूट रही थी.”

मैंने diary bag से नहीं निकाली।

Not yet.

पहले Aarti खत्म होने देना था।

नदी से दृश्य

THE SAME AARTI FROM BELOW

Aarti के बीच ही मुझे अचानक सुबह के boatman की बात याद आई - "Boat से जल्दी समझोगे."

Steps से दृश्य grand था।

लेकिन river से?

Main ritual खत्म होने के बाद crowd move होने लगा। मैंने तुरंत वापस जाने के बजाय नीचे boats की तरफ जाने का फैसला किया।

अब darkness पूरी हो चुकी थी। Stone steps पर people carefully उतर रहे थे। Wet patches चमक रहे थे। Vendors diyas बेच रहे थे। Boatmen loudly passengers बुला रहे थे।

मैंने एक short shared boat ride तय की - बस थोड़ा river से ghat देखने के लिए।

Boat में चढ़ते समय balance बिगड़ा। Boatman ने wrist पकड़कर stabilize किया।

"Slow. Ganga भाग नहीं रही."

यह line भी notebook-worthy थी।

Boat कुछ meter बाहर गई।

और पूरा scene बदल गया।

Land पर बैठकर हम ritual का हिस्सा थे। Water पर आकर पूरा ghat एक illuminated wall बन गया।

Steps ऊपर उठतीं, उनके ऊपर buildings stacked - कुछ painted, कुछ dark, कुछ balconies वाली, कुछ flat facades. Temple spires बीच-बीच में vertical interruptions. Electric lights छोटी stars जैसी. Smoke हवा में diffuse.

Dashashwamedh का lit central area brightest था। दोनों sides में ghats धीरे-धीरे darkness में dissolve होते जाते।

Water से लोगों की individual आवाज़ें गायब थीं। अब एक combined human murmur था।

Bell sound distance से softer, लेकिन broader लग रही थी।

मैं पीछे मुड़ा। Opposite bank almost black था।

एक तरफ dense city. दूसरी तरफ near emptiness.

बीच में river.

Kashi geography सिर्फ map नहीं थी; contrast था।

* * *

Boatman ने पूछा, “किधर तक?”

मैंने कहा, “थोड़ा ऊपर. बस ghats देखना.”

हम धीरे-धीरे current के साथ चले।

Dashashwamedh पीछे हुआ। आगे darker stretches आए। कहीं small temple light. कहीं stairs empty. कहीं groups बैठे. कहीं late puja.

एक ghat पर old sandstone facade में deep shadows थीं। Windows black rectangles जैसी. ऊपर projecting balconies. नीचे steps water में disappear.

मैं अचानक blue diary के faint geometric mark के बारे में सोचने लगा।

Rectangular outline.

Arch.

Diagonal lines.

शायद मैं हर old window में वही shape देख रहा था।

Confirmation bias, मैंने खुद को याद दिलाया।

लेकिन river से buildings का silhouette सचमुच अलग पढ़ा जा सकता था। Land से जो wall random लगती थी, water से architectural pattern बनती थी।

मणिकर्णिका की दिशा

THE OTHER FIRE

कुछ दूर आगे हवा की smell बदल गई।

यह incense जैसी नहीं थी।

Smoke heavier था।

Boatman ने बिना मेरे पूछे कहा, “आगे Manikarnika side.”

मैंने camera bag के अंदर रख दिया।

Distance थी। फिर भी flames दिखाई दे रही थीं।

यह Aarti की ceremonial fire नहीं थी।

यह मृत्यु से जुड़ी आग थी।

Kashi के बारे में पढ़ते समय Manikarnika का नाम abstract लगता है। River से उसे देखना अलग experience था।

Steps और structures darkness में merged थे। कुछ points पर flame bright थी। Smoke ऊपर उठकर city के night air में खोता। People movement छोटे silhouettes जैसा. कोई spectacle नहीं था। कोई synchronized ritual नहीं. यहाँ life का सबसे final work चल रहा था।

मैंने gaze नीचे कर ली।

Respect distance में भी हो सकता है।

Boatman चुप था। बाकी passengers भी।

कुछ places tourist commentary नहीं मांगते।

बस context और restraint.

ललिता घाट और पुरानी दीवारें

SHADOWS IN THE ARCHITECTURE

Boat वापस मुड़ी तो हम quieter ghats के पास से गुजरे।

एक जगह ऊपर wooden architecture की silhouette दिखाई दी - tiered roofline, dark timber, stone steps और narrow structures. River से Varanasi केवल North Indian stone city नहीं लगता; अलग-अलग historical influences, patronage और building traditions उसकी riverfront line में visible हैं।

Nearby facades की walls कुछ जगह smooth, कुछ जगह weather-worn. Water marks lower stones पर dark bands बनाते. पुराने doors steps से ऊपर. कहीं small shrine wall से almost attached.

मैंने imagine किया कि daytime में इन walls का रंग अलग होगा, लेकिन night में architecture shape और shadow में reduce हो गया था।

“यही shadow है?” मैंने almost खुद से कहा।

Boatman ने पूछा, “क्या?”

“कुछ नहीं.”

मैंने bag से blue diary निकाली।

Low light में pages almost blank थे। Phone flashlight on की।

Faint geometric impression वाले page को देखा।

Rectangular outline.

Top पर arch-like curve.

एक diagonal element.

मैंने riverfront buildings की तरफ देखा।

कुछ match नहीं।

फिर भी feeling जा नहीं रही थी कि shape किसी architecture से जुड़ा है।

मैंने diary बंद कर दी।

Boat Dashashwamedh की तरफ लौट रही थी।

एक पुरानी तस्वीर

THE PHOTOGRAPH INSIDE THE DIARY

Boat से उतरने के बाद crowd थोड़ी कम हो चुकी थी। Main Aarti audience disperse हो रही थी। Shops अभी open. Chai और food stalls busy.

मैंने river के पास एक relatively quiet step चुना। Diya जो शाम में खरीदा था, अभी sling bag में था।

मैंने उसे निकाला।

Flower petals थोड़े दब गए थे, लेकिन ठीक थे।

Nearby flame से diya जलाया और बहुत धीरे water edge पर रखा।

Leaf bowl एक second stationary रहा। फिर current ने पकड़ लिया।

छोटी flame बाकी dozens of diyas के बीच चली गई।

उसका reflection भी नीचे टूटता रहा।

Fire.

Shadow.

मैं कुछ देर उसे देखता रहा।

* * *

फिर blue diary निकाली।

मैंने वही faint page दोबारा खोला। शायद riverfront scene के बाद shape समझ आए।

कुछ नहीं।

मैंने अगले pages पलटे।

Blank.

Blank.

फिर एक page थोड़ा मोटा लगा।

दो sheets आपस में हल्की-सी चिपकी थीं। शायद moisture से।

मैंने carefully अलग किया।

बीच से एक पतली photograph नीचे मेरी गोद में गिर गई।

मैं freeze हो गया।

यह photograph पहले नहीं दिखी थी।

Old black-and-white print.

Edges yellow-brown.

Image में एक building थी। पूरा facade नहीं - सिर्फ side portion.

एक tall window.

ऊपर shallow arch.

Grill में diagonal geometry.

Exactly वही general shape जो diary के pressure mark में था।

मैंने phone flashlight photograph पर डाली।

Window के पास three men खड़े थे। Clothing से picture पुरानी लग रही थी, लेकिन exact decade guess करना irresponsible था।

Building stone/plaster mix जैसी. Window frame dark.

Photo के lower right corner में ink से कुछ draw किया गया था।

पहले random lines लगे।

फिर मैंने उसे rotate किया।

Heart थोड़ा तेज हुआ।

दो geometric tools जैसे intersect कर रहे थे।

एक square-like angle.

एक compass-like shape.

मैं Freemason था।

इसलिए वह pattern मुझे पूरी तरह unfamiliar नहीं था।

मैंने तुरंत final conclusion नहीं लिया।

यह reproduction, doodle या similar geometric mark भी हो सकता था।

लेकिन resemblance enough थी।

Square and Compasses?

मैंने photograph पलटी।

पीछे blue ink में सिर्फ एक छोटी line थी:

THE BROTHER'S DOOR

और नीचे -

VARANASI

बस।

मेरे हाथ में diary पहली बार mystery से ज्यादा personal लगने लगी।

क्योंकि अब clue मेरी journey के किसी random city से नहीं, मेरी अपनी fraternity से जुड़ा हुआ प्रतीत हो रहा था।

एक Freemason की नज़र

WHEN A SYMBOL BECOMES PERSONAL

मैंने photograph को जितना देखा, उतना ही cautious होना जरूरी लगा।

Freemasonry के public symbols दुनिया के कई हिस्सों में buildings, documents और memorial objects पर दिखाई देते हैं। Square and Compasses सबसे recognizable public symbols में से हैं। लेकिन केवल एक similar doodle देखकर किसी building को lodge घोषित करना गलत होता।

मैंने notebook में लिखा:

Looks Masonic. Not confirmed.

फिर:

Find public historical reference. No guessing.

मैं किसी secret ritual की खोज में नहीं था।

ना मुझे किसी private sign की जरूरत थी।

अगर Varanasi में कोई public Masonic history थी, तो मैं उसे history और fraternity की तरह देखना चाहता था - conspiracy की तरह नहीं।

लेकिन photograph का phrase परेशान कर रहा था:

The Brother's Door.

क्या किसी Brother ने यह diary बनाई थी?

क्या पुराना ticket उसका था?

10-3-7-1 का इससे connection?

2:17 AM वाला elderly passenger कौन था?

और white-kurta photographer?

Questions फिर बढ़ गए।

मैंने diary बंद की।

आज फिर travel mystery में बदल रहा था।

मुझे इसे limit करना था।

* * *

ऊपर घाट पर crowd अब काफी कम था। Stone steps पर wet patches lamps की light reflect कर रहे थे। कुछ vendors सामान समेट रहे थे। कुछ pilgrims अभी भी बैठे थे। Boats कम लेकिन active थीं।

Main Aarti platform अब ritual के बाद ordinary worksite की तरह लग रहा था। Objects हट रहे थे। Staff move कर रहा था।

यह after-scene मुझे बहुत पसंद आया।

हर spectacle के बाद लोग chairs उठाते हैं। हर ritual के बाद कोई floor साफ करता है। हर famous place के पीछे ordinary labour है।

Travel book को यह भी देखना चाहिए।

मैंने photograph diary में वापस रखी। इस बार pages अलग-अलग check करके।

फिर bag zip की।

और ऊपर city की तरफ चल पड़ा।

रात का बनारस

THE WALK BACK THROUGH GODOWLIA

Dashashwamedh से ऊपर आते हुए गलियाँ शाम की तुलना में अलग थीं। Crowd कम था, लेकिन shops bright थीं। Street food smoke हवा में था। कहीं hot milk बड़े कड़ाह में simmer कर रहा था। कहीं malai carefully fold की जा रही थी। कहीं chaat stall पर आखिरी rush.

मुझे भूख याद आई।

Mystery stomach को लंबे समय तक distract नहीं कर सकती।

मैंने एक stall पर tamatar chaat जैसी familiar चीज़ avoid की और इस बार simple **baati-chokha style local plate** देखने के बाद भी सिर्फ chai और थोड़ा snack लिया - heavy dinner से पहले सोच समझकर।

फिर एक दुकान पर hot milk देखा। ऊपर thick malai. मैंने हार मान ली।

Glass हाथ में लेकर मैं side में खड़ा हो गया।

गरम दूध, cardamom की हल्की smell, ऊपर malai.

Riverfront की smoke और street-food smoke के बाद यह taste strangely calming था।

Evening Food Memory:

Ghat-side chai, हल्का snack और गरम malai वाला दूध.

Varanasi में भोजन अक्सर sightseeing के बीच pause बन जाता है।

एक दुकानदार ने पूछा, “Aarti देखी?”

“हाँ.”

“कैसी लगी?”

मैंने कहा, “एक बार steps से. फिर river से.”

उसने approvingly सिर हिलाया। “तभी complete.”

“Complete?”

वह हँसा। “Banaras कुछ complete नहीं होता.”

Perfect contradiction.

* * *

Godowlia से बाहर निकलते हुए मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। River अब buildings के पीछे छिप चुकी थी।

लेकिन fire की image आँखों में थी।

और photograph bag में।

Hotel लौटते समय e-rickshaw की vibration के बीच मैं लगातार वही phrase सोच रहा था:

THE BROTHER'S DOOR

मुझे पहली बार लगा कि Varanasi में मेरा अगला stop itinerary में नहीं था।

वह diary ने तय किया था।

लॉबी में फिर वही रोशनी

A QUESTION FOR THE HOTEL OWNER

Hotel लौटकर lobby में light जल रही थी। Mishra ji desk पर accounts देख रहे थे।

मैं दो seconds रुका।

क्या उन्हें photograph दिखाऊँ?

फिर नहीं दिखाया।

अभी नहीं।

मैंने सिर्फ पूछा, “Varanasi में कोई पुरानी Masonic building या lodge history जानते हैं?”

उन्होंने glasses के ऊपर से देखा।

“Masonic?”

“Freemasons.”

“अंग्रेज़ों के time की?”

“शायद.”

उन्होंने सोचकर कहा, “सुना है बनारस में अलग-अलग पुराने clubs, societies, institutions रहे हैं. Exact नहीं पता. क्यों?”

मैंने कहा, “बस history में interest है.”

यह technically lie नहीं था।

बस complete truth नहीं।

Mishra ji ने कहा, “कल reception वाले Vivek से पूछना. उसका uncle पुराने records का बहुत शौक रखता है.”

“ठीक.”

फिर उन्होंने पूछा, “Aarti में आग देखी?”

मैं उनकी तरफ तुरंत देख बैठा।

उन्होंने casually कहा, “अरे lamps. पहली बार आने वाले को वही सबसे ज्यादा याद रहता.”

मैंने shoulders relax किए।

“हाँ. आग देखी.”

“और?”

मैंने कुछ seconds बाद कहा:

“परछाई भी.”

उन्होंने शायद मेरी बात समझी नहीं।

“अच्छा है,” बस इतना कहा।

* * *

Room में जाकर photograph bed पर रखी।

Phone की white light में उसे फिर देखा।

Old window.

Three men.

Geometric symbol.

Back side:

THE BROTHER'S DOOR - VARANASI

मैंने notebook खोली।

आज की final entry:

Morning: the river made politics quiet.

Evening: fire made the mystery personal.

फिर Hindi में:

काशी ने जवाब नहीं दिया। उसने सवाल को मेरे करीब ला दिया।

मैंने diary carefully backpack में रखी।

Zip बंद की।

Alarm नहीं लगाया।

कल का पहला काम train पकड़ना नहीं था।

पहले मुझे एक दरवाज़ा ढूँढना था।

एक ऐसा दरवाज़ा, जिसे photograph में किसी ने दशकों पहले शायद इसी नाम से लिखा था:

THE BROTHER'S DOOR

* * *

CHAPTER NINE

वाराणसी का मेसोनिक पड़ाव

A BROTHER IN KASHI

वाराणसी - Cantonment

Day Three - Late Morning

“एक ही शहर में घाट की सीढ़ियाँ और पुराने संस्थानों के दरवाज़े - दोनों इतिहास रखते हैं, बस उनकी आवाज़ अलग होती है।”

Ganga Aarti की रात के बाद मुझे लगा था कि अगली सुबह मैं सीधे Ayodhya की तैयारी करूँगा।

लेकिन Varanasi छोड़ने से पहले मेरे पास कुछ घंटे थे। और पहली बार इस यात्रा में एक stop ऐसा था जो किसी temple list, railway timetable या tourist itinerary से नहीं आया था।

वह मेरे अपने जीवन के एक हिस्से से जुड़ा था।

मैं Freemason था।

इसलिए blue diary में मिली पुरानी photograph पर बना Square-and-Compasses जैसा public symbol मेरे लिए किसी conspiracy movie का invitation नहीं था। वह बस एक familiar sign था - इतना familiar कि उसे ignore करना मुश्किल था, और इतना common कि बिना verification कोई बड़ा conclusion निकालना गलत होता।

मेरे hotel के reception वाले Vivek ने सुबह बताया कि Varanasi Cantonment side में एक Freemason Hall है। Public listing भी वही दिखाती थी। Exact visit availability अलग बात थी, लेकिन place itself कोई imaginary location नहीं था।

मैंने पहले ही तय कर लिया:

आज mystery नहीं. आज जगह देखनी है.

अगर photograph का connection मिला, ठीक.

नहीं मिला, तब भी एक travelling Brother के रूप में Kashi का Masonic stop अपने आप में interesting था।

* * *

Hotel से बाहर निकला तो late morning की Varanasi पूरी तरह जाग चुकी थी।

कल रात Dashashwamedh पर जो lamps, chants और river breeze थी, उसकी जगह अब road heat, school vans, delivery bikes, horns और दुकानों के shutters की metallic आवाज़ें थीं।

Ganga के पास शहर vertical और compressed लगा था - narrow lanes, ऊपर balconies, नीचे stone steps.

Cantonment की दिशा में जाते हुए Varanasi धीरे-धीरे shape बदलने वाला था।

मुझे इसी transition में interest था।

सिगरा से कैंट की ओर

FROM THE TIGHT CITY TO WIDER ROADS

मैंने सड़क किनारे e-rickshaw रोका। Driver लगभग चालीस का था, नीली shirt, steering के पास भगवान शिव का छोटा sticker और meter की जगह उसकी memory.

“Cantonment?”

“कहाँ?”

मैंने phone पर place दिखाया - Freemason Hall.

उसने screen को थोड़ा पास खींचकर देखा।

“अच्छा, Cantt side. बैठिए.”

“कितना?”

उसने rate बताया।

मैंने थोड़ा कम कहा।

उसने ऐसी expression दी जैसे मैंने उसकी family property खरीदने की offer दे दी हो।

हम halfway पर मिले।

Chapter One के बाद से fare पहले पूछना अब habit बन चुकी थी।

Driver का नाम मुन्ना था।

Sigra side से निकलते हुए road अभी भी busy थी। दुकानों के signboards, pharmacies, coaching centres, restaurants, small hotels, mobile shops, two-wheelers - यह वही ordinary urban India था जो postcards में rarely आता है।

मैंने पूछा, “Cantt side old Banaras से बहुत अलग लगता है?”

मुन्ना ने बिना सोचे कहा, “बहुत. उधर गली. इधर road.”

थोड़ी देर बाद उसने खुद explain किया।

“Godowlia में गाड़ी लेकर फँस जाओ. Cantt में थोड़ा सांस है. पेड़ भी हैं, compound वाले घर भी, hotels भी.”

हम आगे बढ़े।

Traffic का pressure तुरंत गायब नहीं हुआ, लेकिन road width बढ़ी। Buildings के बीच distance थोड़ा बढ़ा। कुछ boundary walls, gates और institutional-looking compounds दिखाई देने लगे। कहीं पुराने bungalow-style structures, कहीं नए hotels और commercial buildings. एक city के भीतर दूसरा texture.

Old Kashi में हर चीज़ आपके shoulder के पास से गुजरती थी। Cantonment side में चीज़ें कुछ feet दूर हो गईं।

यह difference small लग सकता है, लेकिन traveller body सबसे पहले महसूस करती है।

आपका shoulder relax होता है।

Backpack पीछे पहन सकते हैं।

हर दस second side होने की जरूरत नहीं।

और पहली बार sky एक narrow strip की जगह पूरा दिखाई देता है।

Location Contrast:

Old-city Varanasi को समझने के लिए उसकी गलियों में चलना जरूरी है; Cantonment side को समझने के लिए road width, compounds, trees और institutional buildings notice करना जरूरी है. दोनों एक ही Varanasi हैं, लेकिन body उन्हें अलग तरह से महसूस करती है।

मुन्ना ने एक roundabout के पास पूछा, “ये Freemason क्या होता?”

मैं हँसा।

“Long answer है.”

“Short बताइए.”

“एक पुरानी fraternity. Brotherhood, self-improvement, charity वगैरह.”

“Religion?”

“नहीं, religion नहीं.”

उसने सिर हिलाया।

“हमारे यहाँ भी association बहुत हैं.”

“हाँ. बस ये थोड़ा पुराना association है.”

उसका curiosity satisfy हो गया।

कोई secret-handshake question नहीं। कोई conspiracy नहीं।

Real life internet से काफी boring - और इसलिए बेहतर - होती है।

कैंटोनमेंट का धीमा चेहरा

VARANASI WITHOUT THE GHAT CROWD

Freemason Hall के पास पहुँचने से पहले मैंने मुन्ना से थोड़ा पहले रोकने को कहा।

मैं बाकी distance पैदल चलना चाहता था।

उसने कहा, “धूप है.”

“थोड़ा ही.”

“Banaras में ‘थोड़ा’ बोलकर लोग फिर phone करते हैं.”

मैंने उसका number नहीं लिया। Risk accepted.

Road पर उतरते ही difference और साफ था।

यहाँ soundscape बदल गया था।

Old city में bells, vendors, scooters और people का continuous wall of sound था। यहाँ बीच-बीच में silence के छोटे pockets थे। फिर अचानक motorcycle, फिर auto, फिर किसी compound से आती voices.

कुछ roads के किनारे shade देने वाले mature trees थे। गर्मी में उनका value architecture से ज्यादा immediately समझ आता है। Boundary walls के पीछे buildings पूरी नहीं दिखतीं - roofline, verandah का corner, old gate, window line, या garden trees.

कहीं पुराने masonry walls पर weather stains थे। कहीं newly painted gates. Varanasi Cantonment कोई preserved colonial museum नहीं था; old and new यहाँ भी साथ थे, लेकिन पुराने शहर की तरह एक-दूसरे के ऊपर नहीं चढ़े थे। उनके बीच थोड़ा space था।

मैं slowly चला।

यात्रा में यह rare luxury थी।

कोई train दस minute में नहीं। कोई temple closing time नहीं। कोई boat departure नहीं।

बस एक location तक walk.

* * *

एक tea stall दिखा - tin shade, दो benches, aluminium kettle, biscuits के glass jars.

मैं रुक गया।

“Chai?”

दुकानदार ने पूछा जैसे answer obvious हो।

“हाँ.”

उसका नाम रामजी था। पास के offices और drivers उसके regular customers थे।

मैंने Freemason Hall की direction confirm की।

उसने हाथ से आगे बताया।

“वो पुरानी building side?”

“हाँ.”

“आप meeting में?”

“Visit.”

“अंदर क्या होता है?”

मैंने cup लिया।

“Meetings.”

वह हँसा। “यह तो हमें भी पता.”

मैं भी हँसा।

“बस समझिए members मिलते हैं, charity और fraternity की activities होती हैं. कुछ ceremonies private होती हैं, बाकी कोई जादू नहीं.”

“Internet पर तो बहुत कुछ है.”

“Internet पर aliens भी हैं.”

रामजी जोर से हँसा। पास बैठा auto driver भी।

Local interaction कभी-कभी दस line exposition से ज्यादा effectively myth तोड़ देता है।

Local Tip:

किसी lesser-known institution या heritage building पर जाने से पहले nearby chai stall, guard या local shop से pedestrian access confirm करना surprisingly useful होता है. लेकिन opening hours और entry permission हमेशा official source या venue से verify करें।

फ्रीमेसन हॉल

FREEMASON HALL - VARANASI CANTONMENT

Hall तक पहुँचते हुए मैंने सबसे पहले कोई dramatic tower नहीं देखा।

कोई hidden gate भी नहीं।

बस एक institutional compound की तरह approach, आसपास Cantonment का quieter urban texture, और एक building जिसकी presence shouting नहीं थी।

यही मुझे पसंद आया।

Freemasonry का public image अक्सर symbols से शुरू होता है, लेकिन actual lodge buildings दुनिया भर में बहुत अलग-अलग दिखती हैं। कुछ grand, कुछ modest, कुछ purpose-built, कुछ adapted.

मैं gate के बाहर कुछ seconds रुका।

Street पीछे चल रही थी। Auto निकला. Motorcycle. दूर horn.

अंदर का atmosphere comparatively still.

मैंने कोई photograph तुरंत नहीं ली।

पहले permission.

यह rule temples जितना ही fraternity spaces पर लागू होना चाहिए।

एक caretaker-type व्यक्ति मिला। मैंने अपना परिचय दिया और साफ कहा कि मैं visiting Freemason हूँ, public-history interest से आया हूँ। Membership verification सामान्य administrative तरीके से हुई; उसकी details इस book का विषय नहीं थीं।

उसने मुझे waiting area में बैठने को कहा।

अंदर का temperature बाहर की heat से थोड़ा कम था। Walls thick feel होती थीं। Corridor में footsteps की आवाज़ sharp सुनाई देती। Furniture functional था, overly decorative नहीं। कुछ framed photographs और public-facing Masonic emblems दिखाई देते थे।

मैं intentionally उन चीज़ों का वर्णन नहीं कर रहा जो private lodge work का हिस्सा हों।

लेकिन public spaces का feel बताना जरूरी है।

Old institution की smell होती है - polished wood, paper, closed rooms, थोड़ा dust, कभी furniture polish. मुझे वही mix महसूस हुआ।

एक framed group photograph के glass पर window light reflect हो रही थी। Faces अलग decades के लग रहे थे - कुछ Indian formal dress, कुछ western suits. Exact dates और identities बिना label read किए guess करना ठीक नहीं था।

मैं बस देखता रहा।

इतने temples, ghats और crowds के बाद यह silence almost strange था।

एक वरिष्ठ Brother से मुलाक़ात

WHEN ONE MASON RECOGNISES ANOTHER

कुछ देर बाद corridor के दूसरे end से एक senior gentleman मेरी तरफ आते दिखाई दिए। इस narrative में मैं उन्हें **Brother Arvind** कहूँगा - privacy के लिए नाम composite है।

उनकी dark blazer की lapel पर बहुत छोटा-सा **Square and Compasses** emblem लगा था - वही public Masonic symbol जिसे दुनिया भर में लोग fraternity से जोड़ते हैं।

मेरी नजर पहले उनके चेहरे पर गई, फिर उस pin पर।

उन्होंने भी मेरे हाथ में रखे membership wallet/card के corner पर वही familiar emblem देख लिया।

एक second के लिए conversation शुरू होने से पहले ही context clear हो गया।

उन्होंने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा:

“Brother?”

मैंने सिर झुकाकर जवाब दिया:

“Brother.”

बस इतना।

कोई theatrical secret gesture नहीं। कोई movie-style password नहीं। Public symbol की recognition और fraternity का एक simple greeting.

उन्होंने हाथ मिलाया।

“Welcome to Kashi, Brother.”

उस sentence का effect unexpectedly warm था।

तीन दिनों से हर stranger मुझसे पूछ रहा था - कहाँ से? Tourist? पहली बार? लेकिन यहाँ मुझे traveller के रूप में नहीं, पहले एक Brother के रूप में receive किया गया।

Difference बहुत छोटा था, पर feel साफ था।

* * *

हम बैठने ही वाले थे कि Brother Arvind ने practical सवाल किया:

“आपका registration कहाँ का है? Which Grand Lodge and Region?”

मैंने कहा:

“Grand Lodge of India. Western Region - Mumbai. मेरा registration Mumbai side, Regional Grand Lodge of Western India के jurisdiction में है.”

उन्होंने तुरंत मुस्कुराकर कहा:

“अच्छा. West से East.”

फिर caretaker की तरफ देखकर बोले:

“Visiting Brother हैं. Guest register ले आइए.”

यह VIP treatment नहीं था।

लेकिन सामान्य visitor वाली दूरी अचानक कम हो गई।

मुझे entrance के पास खड़े रहकर बातें नहीं करनी पड़ीं। Membership verification के बाद मुझे members' lounge के public/guest area में बैठाया गया। Chai पूछी गई। Bag रखने की जगह दी गई। और Brother Arvind ने अपना schedule थोड़ा adjust कर मुझे building की public history दिखाने का समय निकाला।

Fraternity का privilege शायद यही था - luxury नहीं, familiarity.

आप किसी दूसरे शहर में पूरी तरह unknown हों, फिर भी एक verified connection conversation का पहला दस minute बचा देता है।

Visiting Brother Hospitality:

Verification के बाद narrator को कोई “secret access” नहीं मिलता; उसे fraternal guest की तरह warm welcome, members' guest area में chai, public historical displays और permitted heritage spaces का guided introduction मिलता है।

Brother Arvind ने पूछा, “Mumbai में कौन-सा side ज्यादा active रहते हो - Craft meetings, charity, visiting?”

मैंने कहा, “Travel की वजह से attendance हमेशा perfect नहीं रहती. लेकिन Craft मेरा base है. Mumbai में registered हूँ, और जब बाहर जाता हूँ तो local Masonic history देखना अच्छा लगता है.”

“तो यह trip interesting होगी,” उन्होंने कहा। “India में railway line follow करो और पुराने Masonic towns अपने आप मिलने लगते हैं.”

मैंने तुरंत पूछा, “Railway connection इतना strong था?”

वह chair पर थोड़ा पीछे हुए।

“British India में administration, military, railways, judiciary, trade - इन networks के साथ lodges भी अलग-अलग towns तक पहुँचे. लेकिन बाद में Indian membership ने fraternity को अपना अलग local character दिया. History को सिर्फ colonial club कहकर खत्म करोगे तो आधी कहानी रह जाएगी.”

यह line मेरे लिए useful थी।

Varanasi में मैं temples की history देख रहा था। यहाँ institution की.

दोनों की timelines अलग थीं, लेकिन city दोनों को अपने भीतर रखे हुए था।

* * *

मैंने पूछा, “यह Varanasi किस Region के under आता है?”

“Eastern Region,” उन्होंने कहा। “और आपका Western Region Mumbai से operate करता है. इसलिए technically आज आप पश्चिम के Brother हैं, पूर्व के घर में.”

“तो chai stronger मिलेगी?”

वह हँसे।

“Visiting Brother को कम-से-कम अच्छी chai तो मिलनी चाहिए.”

कुछ minutes बाद सच में chai बेहतर cup में आई - साथ में biscuits भी।

मैंने मज़ाक में कहा, “अब privilege समझ में आया.”

Brother Arvind बोले, “बस इसे book में five-star hospitality मत बना देना.”

“No. One extra biscuit तक ही लिखूँगा.”

“वो भी lodge accounts में डालना पड़ेगा.”

हम दोनों हँस पड़े।

* * *

बात India में Freemasonry की public history पर आई।

उन्होंने broadly समझाया कि organized Freemasonry India में eighteenth century से documented है; अलग-अलग British constitutions के lodges पहले major presidencies और military/administrative centres में बने, फिर अन्य towns तक network फैला। Independent India में 1961 में Grand Lodge of India constituted हुई, और उसके बाद regions ने national structure के भीतर काम करना शुरू किया।

मैंने कहा, “Mumbai की lodge culture और Kashi की lodge culture में फर्क होगा?”

“ज़रूर,” उन्होंने जवाब दिया। “Building, membership profile, city rhythm, local history - सब अलग. लेकिन Brother किसी दूसरे city में visit करे तो fraternity एक common language दे देती है.”

“Language - बिना secret language के?”

वह हँसे।

“Exactly. Courtesy भी language होती है.”

उन्होंने सामने लगे एक पुराने framed photograph की तरफ देखा।

“Old lodge records पढ़ोगे तो officers, railway men, doctors, judges, traders, Indian professionals - कई तरह के लोग मिलेंगे. लेकिन सबसे interesting names नहीं, movement है. लोग cities के बीच transfer होते थे. Lodges भी उन routes के साथ जुड़ते गए.”

मुझे अपनी route list याद आई:

Delhi - Mathura - Varanasi - Ayodhya - Lucknow - Prayagraj - Jaipur - Jaisalmer - Gujarat.

“तो मैं accidental Masonic railway tour कर रहा हूँ?”

“अगर हर city में lodge ढूँढोगे तो दस दिन में Jalgaon नहीं पहुँचोगे.”

Fair warning.

Public Historical Context:

Grand Lodge of India की public history के अनुसार उसका गठन 24 November 1961 को हुआ. उसी national structure के भीतर Western

Regional Grand Lodge का headquarters Mumbai और Eastern Regional Grand Lodge का headquarters Kolkata है. Varanasi की Grand Lodge of India craft presence Eastern Region में listed है।

मैंने उनसे पूछा, “Public लोग Freemasonry के बारे में सबसे गलत क्या समझते हैं?”

उन्होंने कहा, “कि private मतलब automatically sinister. हर institution की कुछ internal proceedings होती हैं. Private और conspiracy एक ही चीज नहीं.”

“और सबसे सही?”

उन्होंने थोड़ी देर सोचा।

“कि symbols important हैं. लेकिन symbol का काम आदमी को principle याद दिलाना है - symbol खुद आदमी से बड़ा नहीं होना चाहिए.”

मैंने notebook निकाल ली।

“यह line लिखूँ?”

“लिखो. लेकिन context मत काटना.”

मैंने सिर हिलाया।

“Promise.”

* * *

फिर मैंने blue diary से पुरानी photograph निकाली।

यह बातचीत का वह हिस्सा था जहाँ history में थोड़ा mystery घुला - बस उतना ही, जितना travel को interesting रखे।

Brother Arvind ने photograph हाथ में ली।

पहले building देखी। फिर arched window. फिर corner पर बना Square-and-Compasses जैसा mark.

उनका face dramatic नहीं हुआ।

वह बस ज्यादा ध्यान से देखने लगे।

“यह public Masonic emblem जैसा है,” उन्होंने कहा। “लेकिन photo की building को केवल symbol से identify नहीं करेंगे.”

“Varanasi हो सकती है?”

“हो सकती है. किसी और station की भी हो सकती है. कई old institutional buildings में ऐसी arches और grills मिलेंगी.”

उन्होंने photograph पलटी। पीछे लिखा था:

THE BROTHER'S DOOR - VARANASI

वह line पढ़कर वह कुछ seconds शांत रहे।

“Interesting.”

मैंने पूछा, “आपने phrase पहले सुना?”

“नहीं. और यही अच्छा है.”

“अच्छा?”

“क्योंकि अगर मैं हर पुरानी line को lodge legend बना दूँ तो history नहीं लिख रहे होंगे. पहले records देखेंगे.”

उन्होंने उठकर कहा:

“आइए. एक पुराना commemorative shelf है. Public material है. शायद architecture comparison में कुछ useful मिले.”

यही वह छोटा privilege था जो मेरे Mason होने से मिला।

सामान्य tourist शायद gate से building देखकर लौट जाता। मैं verified visiting Brother था, इसलिए मुझे permitted internal guest area तक ले जाया गया और public historical material personally दिखाया गया।

लेकिन line साफ थी:

Hospitality - yes. Private work - private.

मुझे यह balance बिल्कुल सही लगा।

एक Brother के रूप में थोड़ी extra warmth थी।

एक writer के रूप में थोड़ी extra responsibility भी।

Hall के भीतर की यात्रा

A HERITAGE VISIT, NOT A TREASURE HUNT

जहाँ अनुमति थी, वहाँ public-facing areas देखे।

मैंने architecture को treasure hunt की तरह नहीं, building की तरह देखना शुरू किया।

दरवाज़ों की ऊँचाई।

Ventilation के लिए पुराने openings.

Wooden frames पर age marks.

Floor का थोड़ा uneven feel.

कुछ walls पर newer paint, कुछ corners में older surface texture.

Old institutional buildings में यही interesting होता है - renovation history visible रहती है। हर generation पूरी building replace नहीं करती; वह patches जोड़ती है।

एक corridor से बाहर courtyard/compound side की light आती थी। Dust particles उस beam में visible थे। बाहर tree leaves movement से light floor पर बदलती रहती।

मैंने phone निकाला, फिर वापस रख दिया।

Photograph से ज्यादा useful note था:

The building feels used, not displayed.

Heritage site और living institution के बीच यही difference है।

Museum में चीज़ें आपके देखने के लिए रहती हैं। Living institution में आप visitor हैं, और building का अपना ongoing purpose है।

Brother Arvind ने कुछ public photographs और commemorative material दिखाया। कई names मेरे लिए unfamiliar थे। कुछ events, charity references, gatherings.

मैंने blue diary वाली old photograph निकाली।

यह इस visit का एकमात्र mystery-related moment था।

मैंने कहा, “इस building को पहचानते हैं?”

उन्होंने photograph काफी देर देखी।

फिर बोले, “Symbol Masonic जैसा लगता है. Building निश्चित नहीं कह सकता.”

“Varanasi?”

“हो सकता है. लेकिन old photo से guess नहीं करेंगे.”

मुझे उनका answer पसंद आया।

No drama.

No sudden revelation.

बस:

“Verify first.”

उन्होंने एक window detail की तरफ इशारा किया।

“Architecture match करने से पहले date जानो. कई public buildings में similar arches और grills हैं.”

मैंने diary photograph वापस रख दी।

इस chapter को clue की जरूरत नहीं थी।

Travel अपने आप enough था।

Charity की छोटी बातें

WHAT BROTHERHOOD LOOKS LIKE OUTSIDE A MEETING

बात charitable work पर गई।

मैंने deliberately specific numbers या grand claims नहीं लिखे। Charity की credibility slogans से नहीं, records से आती है।

Brother Arvind ने general examples बताए - medical assistance, education support, community-oriented service, जरूरत के समय members और non-members की मदद.

उन्होंने कहा, “Charity की सबसे अच्छी photo वह है जो कभी ली ही न जाए.”

मैंने पूछा, “फिर लोग जानेंगे कैसे?”

“Report में लिखो. Recipient के face पर camera क्यों?”

यह point मुझे immediately travel photography पर भी लागू लगा।

हर meaningful moment content नहीं होता।

मैंने पिछले दिनों के scenes याद किए:

Manikarnika के पास camera नीचे करना.

Temple security में phone जमा करना.

Train stranger की बातचीत बिना recording के याद रखना.

Travel book बनने का मतलब यह नहीं कि हर आदमी source material है।

कुछ लोग बस लोग हैं।

* * *

मैंने पूछा, “Varanasi में lodge membership local culture के साथ कैसे fit होती है?”

उन्होंने कहा, “बहुत normally. बाहर आदमी Banarasi है. घर में पिता, husband, son. Profession में अलग role. Lodge में Brother. कोई contradiction नहीं.”

“Kashi में morning Ganga, फिर Masonic Hall - मुझे contrast लगा.”

“आप traveller हो इसलिए contrast दिखता है. Local के लिए Tuesday और Wednesday जैसा है.”

यह शायद chapter का सबसे useful correction था।

Traveller differences notice करता है। Local continuity जीता है।

बाहर की चाय

BACK TO THE STREET

Visit खत्म होने के बाद मैं compound से बाहर आया तो noon heat बढ़ चुकी थी।

Road की brightness कुछ seconds आँखों को harsh लगी। Indoor shadow से बाहर आते ही asphalt almost white चमक रहा था।

मैं वापस उसी chai stall की तरफ चला।

रामजी ने मुझे देखते ही पूछा, “Secret पता चला?”

मैंने कहा, “हाँ.”

वह सचमुच curious हो गया।

मैंने cup लेते हुए कहा, “Secret यह है कि अंदर लोग meeting करते हैं.”

उसने disappointed face बनाया।

“बस?”

“बस.”

पास बैठा driver बोला, “हमारी union meeting ज्यादा dangerous है.”

तीनों हँस पड़े।

यही tone मुझे चाहिए था।

Freemasonry को human scale पर वापस लाने का सबसे अच्छा तरीका local chai stall था।

* * *

मैंने chai के साथ biscuit लिया। फिर दूसरा.

रामजी ने पूछा, “अब कहाँ?”

“Hotel. फिर station. Ayodhya.”

“आज?”

“हाँ.”

वह मुझे घूरता रहा।

“आप घूम नहीं रहे. भाग रहे.”

मैंने कहा, “Book का नाम यही होना चाहिए था.”

“दस दिन, कितने शहर?”

मैंने route बताया।

उसने कहा, “Banaras दो दिन में नहीं होता.”

“मुझे पता है.”

“फिर?”

“इसीलिए वापस आने का reason रहेगा.”

वह satisfied हुआ।

Local Travel Tip:

Varanasi को “complete” करने की कोशिश न करें. Old City, ghats, Cantonment, markets और neighbourhoods अलग textures हैं. Short trip में एक-दो areas को धीरे देखना दस rushed attractions से ज्यादा याद रहता है।

Cantonment से वापस शहर

THE RETURN RIDE

Return के लिए मैंने shared e-rickshaw लिया।

Private ride आसान होती, लेकिन shared transport इस book का unofficial research method बन चुका था।

मेरे साथ एक nursing student, एक elderly man और दो women थीं जिनके shopping bags में vegetables दिखाई दे रही थीं।

Driver हर थोड़ी दूरी पर रुकता। कोई उतरता. कोई चढ़ता. Fare coins और small notes में आगे-पीछे pass होता.

यह travel का वह हिस्सा था जो tourist itinerary में नहीं आता लेकिन city समझने में monument जितना useful है।

Nursing student hospital shift से लौट रही थी। उसने पूछा, “आप tourist?”

“Traveller.”

वह मुस्कुराई। “Difference?”

“Tourist जगह देखता है. Traveller रास्ता भी.”

Sharma ji की line मैंने चोरी कर ली।

Royalty अभी तक unpaid थी।

उसने कहा, “फिर Varanasi का traffic भी लिखना.”

“Already main character है.”

वह हँसी।

हमारी बातचीत बहुत छोटी रही - hospital shifts, commute, summer heat और कभी-कभी रात में transport मिलने की problem.

कोई grand life story नहीं।

लेकिन यही “unknown people” वाला हिस्सा था जिसे मैं book में चाहता था।

हर stranger को philosophical monologue नहीं देना चाहिए। कभी useful information, एक joke और दो stops साथ यात्रा करना enough है।

* * *

जैसे ही हम busy central areas में लौटे, roads फिर compress होने लगीं। Horns बढ़े. Shops denser. Pedestrians more unpredictable.

Cantonment का open feeling पीछे जा रहा था।

Varanasi फिर वही close-up city बन रहा था।

मैंने पहली बार समझा कि location description केवल buildings नहीं होती।

Space भी location है।

Old city की कमी.

Cantonment की थोड़ी अधिकता.

River की openness.

Train coach की narrowness.

Traveller का शरीर इन सबको map से पहले record करता है।

आखिरी बनारसी दोपहर

FOOD BEFORE THE NEXT TRAIN

Hotel वापस जाने से पहले मैंने lunch किया।

इस बार कोई elaborate “must-try” hunt नहीं।

Simple thali - dal, seasonal sabzi, roti, rice, achar, थोड़ा curd.

तीन days के heavy snacks के बाद body ने इसे gratitude से स्वीकार किया।

पास की table पर दो salesmen अपने routes discuss कर रहे थे। एक Gorakhpur जा रहा था, दूसरा Prayagraj. उनका पूरा conversation trains, clients और pending payments पर था।

India travel का दूसरा parallel network यही था - pilgrims के साथ salesmen, students, workers, families, patients, job-seekers.

Railway सिर्फ tourism नहीं ढोती।

Food Note:
हर city में famous dish chase करना जरूरी नहीं. Long journey में एक simple dal-roti thali कभी-कभी सबसे practical local meal होती है - affordable, filling और body-friendly.

Lunch के बाद मैंने एक Banarasi paan shop के सामने कुछ देर देखा। Paan बनते देखना itself craft जैसा था - leaf खुला, ingredients, fold, quick hand movement.

मैंने mild sweet paan लिया।

Moscow से तीन दिन पहले निकला आदमी शायद इस moment पर officially Kashi-adapted हो गया था।

मैंने mirror की जरूरत नहीं समझी।

कमरे में पैकिंग

LEAVING KASHI WITHOUT FINISHING IT

Hotel room में वापस आया तो पहली बार packing routine familiar लगी।

Dirty clothes अलग.

Chargers check.

Power bank.

Documents.

Water bottle.

Notebook.

Camera.

Blue diary.

मैंने photograph एक बार फिर देखी।

Brother Arvind का answer याद था:

“Looks Masonic. Building confirm नहीं.”

और बस।

मैंने इस chapter में उससे ज्यादा खोजने का फैसला नहीं किया।

Mystery को थोड़ा भूखा रहना चाहिए, लेकिन book को नहीं।

मैंने photograph वापस diary में रखी और bag close कर दिया।

Varanasi visit का सबसे बड़ा takeaway कोई clue नहीं था।

वह contrast था:

Morning river.

Temple crowd.

Night lobby.

Aarti fire.

Cremation smoke.

Cantonment roads.

Masonic Hall silence.

Chai stall laughter.

एक city में इतने अलग sounds.

* * *

Check-out करते समय Mishra ji reception पर थे।

“Masonic मिल गया?”

“हाँ.”

“Secret?”

मैंने कहा, “Chai stall वाला भी यही पूछ रहा था.”

वह हँसे।

“अब Ayodhya?”

“हाँ.”

उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, “जय श्री राम. Safe journey.”

मैंने भी धन्यवाद कहा।

Hotel से बाहर निकला।

Backpack फिर shoulder पर था।

इस बार भारी वही था, लेकिन मैं थोड़ा adjusted था।

तीन दिन की यात्रा में शायद backpack हल्का नहीं हुआ था।

बस body ने complaint करना कम कर दिया था।

Varanasi station की तरफ जाते हुए मैंने पीछे city को नहीं देखा।

कुछ शहर departure पर goodbye नहीं कहते।

वे बस unfinished रहते हैं।

Kashi उनमें से एक था।

* * *

CHAPTER TEN

अयोध्या की रेल

TRAIN TO AYODHYA

वाराणसी से अयोध्या

Day Three - Afternoon to Night

“भारत में एक शहर छोड़ना कभी सिर्फ *departure* नहीं होता; *platform* पर अगला शहर पहले से शुरू हो जाता है।”

Varanasi छोड़ते समय पहली problem यह थी कि मुझे जाने का मन नहीं था।

दूसरी problem यह थी कि ticket को मेरे emotions से कोई मतलब नहीं था।

Backpack packed था। Hotel check-out हो चुका था। Mishra ji ने reception से हाथ हिलाकर goodbye कहा, और मैं e-rickshaw में बैठकर station की तरफ निकल गया।

Kashi की गलियाँ पीछे नहीं दिख रही थीं; बस उनका असर साथ था।

तीन दिन में मैंने river को sunrise में देखा था, Aarti की fire में, cremation smoke की दूरी से, temple crowd के बीच, Cantonment की खुली roads पर और एक Masonic Hall की quiet corridor में।

Varanasi एक destination कम और कई अलग-अलग cities का stack ज्यादा लगा।

अब stack से बाहर निकलना था।

अगला नाम:

AYODHYA.

* * *

E-rickshaw traffic में धीरे-धीरे बढ़ रहा था। Central Varanasi की density फिर सामने थी - motorcycles gaps खोज रही थीं, buses अपने size के भरोसे चल रही थीं, pedestrians practical courage से road cross कर रहे थे।

Driver ने पूछा, “Train कितने बजे?”

मैंने time बताया।

उसने rear-view mirror में मुझे देखा।

“Time है.”

India में driver अगर कह दे “time है”, तब भी traveller को कम-से-कम बीस minute anxiety reserve रखनी चाहिए।

मैंने phone पर ticket नहीं खोला।

Character development जारी था।

वाराणसी स्टेशन की दोपहर

THE STATION BETWEEN TWO PILGRIMAGE CITIES

Station के बाहर उतरते ही traffic की सड़क वाली आवाज़ platform वाली आवाज़ में बदल गई।

Metal wheels.

Trolley bags.

Announcements.

“चाय-चाय.”

“पानी bottle.”

“समोसा.”

ऊपर foot-overbridge पर लोग लगातार flow में थे। नीचे platforms पर families floor पर बैठी थीं, कुछ bags को pillows की तरह use कर रही थीं।

Varanasi जैसे pilgrimage city का railway station अपने आप में एक waiting-room India था।

कुछ passengers के माथे पर चंदन था। कुछ के हाथ में temple packets. कुछ ordinary office travellers. Students with backpacks. बुजुर्ग couple. एक family whose luggage count family members से ज्यादा था।

मैंने platform पर जगह ढूँढी। Backpack नीचे नहीं रखा; पहले chain और surroundings check कीं।

फिर chai.

यह ritual बन चुका था।

Departure Ritual:

Platform number check → पानी refill → bag secure → chai.
इसी order में यात्रा कम stressful रहती है।

Chai stall के पास एक आदमी newspaper पढ़ रहा था। उसके bag पर Ayodhya का printed tag था।

मैंने पूछा, “Ayodhya?”

वह बोला, “हाँ. आप भी?”

“हाँ.”

“पहली बार?”

मैंने हँसकर कहा, “यह सवाल मेरी यात्रा का national anthem बन गया है.”

वह भी हँसा।

उसका नाम दीपक था। Lucknow में काम करता था, parents Ayodhya के पास रहते थे।

“अभी बहुत लोग आते हैं,” उसने कहा। “Weekend और festival में तो movement अलग हो जाता है.”

मैंने पूछा, “Local लोग परेशान होते हैं?”

“कुछ होते हैं. Business वाले खुश भी. City बदल रही है. Roads, hotels, shops, traffic - सब.”

उसने एक simple sentence कहा:

“Pilgrim city में visitor भगवान देखने आता है, local आदमी rent भी देखता है.”

मैंने line याद रख ली।

Location को सिर्फ श्रद्धा से नहीं, economics से भी पढ़ना चाहिए।

Train आती है

THE PLATFORM BECOMES MOTION

Train आने से कुछ minute पहले platform का atmosphere अचानक tighten हो गया।

जो लोग अभी आराम से बैठे थे, bags पकड़कर खड़े हो गए। जो बच्चे floor पर खेल रहे थे, mothers ने तुरंत पास बुला लिए।

एक आदमी coach position पूछते हुए तीन लोगों से अलग answers ले चुका था।

मैंने electronic board देखा। फिर platform markings.

Train दूर से दिखाई दी।

पहले horn.

फिर engine.

फिर coaches की लंबी line, metal और dust का moving wall.

Train जैसे ही slow हुई, लोग parallel चलने लगे। कोई door के साथ, कोई coach number पढ़ते हुए।

मुझे अपना coach मिला।

इस बार बिना गलत direction जाए।

मैंने silently खुद को congratulate किया।

Coach के अंदर afternoon heat trapped थी। Fans चल रहे थे। Window grills गर्म। Seat upholstery पिछले हजारों passengers की memory carry कर रही थी।

मेरी जगह window के पास थी।

मैं genuinely खुश हुआ।

Backpack नीचे secured.

Water side pocket.

Notebook accessible.

Blue diary deep inside.

आज उसे बाहर निकालने का कोई plan नहीं था।

Journey mystery से बड़ी रहनी चाहिए।

* * *

मेरे सामने एक family settle हो रही थी - husband-wife, लगभग दस साल की बेटी, और एक grandmother.

उनके पास steel tiffin, cloth bags और एक plastic basket थी।

Grandmother ने मेरी तरफ देखा, फिर backpack.

“अकेले?”

“हाँ.”

“Ayodhya?”

“हाँ.”

“Darshan?”

“हाँ. और travel.”

उन्होंने practical tone में कहा, “पहले room देख लेना.”

मैंने सिर हिलाया।

India की grandmothers किसी भी conversation को logistics में convert कर सकती हैं।

शहर पीछे, खेत आगे

PURVANCHAL THROUGH A TRAIN WINDOW

Train Varanasi से बाहर निकली तो city अचानक खत्म नहीं हुई।

पहले dense buildings.

फिर smaller houses.

फिर workshops, boundary walls, railway colonies, crossing gates.

फिर धीरे-धीरे खुले fields.

Window से देखना किसी map को horizontal direction में unfold होते देखने जैसा था।

Tracks के पास छोटे settlements. Brick walls. Water tanks. Children waving occasionally. खेतों में green patches और dry soil के हिस्से. कुछ जगह buffaloes पानी के पास. कहीं tractor. कहीं narrow roads tracks के parallel.

Afternoon light hard थी। Window grill की shadow seat पर parallel lines बना रही थी। हवा गर्म थी, लेकिन train speed उसे tolerable बना रही थी।

एक railway crossing पर vehicles लंबी line में खड़े थे। हम कुछ seconds में निकल गए।

Train passenger होने का privilege यही है: वही distance जो road पर traffic बनाता है, rail पर landscape बन जाता है।

* * *

Family की छोटी लड़की window के पास आना चाहती थी। मैंने थोड़ा shift किया।

उसने बाहर देखते हुए पूछा, “आप foreign से आए हो?”

मैंने उसकी mother की तरफ देखा। शायद conversation पहले ही family network में circulate हो चुकी थी।

“Moscow से.”

“Russia?”

“हाँ.”

“वहाँ snow होता है?”

“बहुत.”

“Ayodhya में नहीं होता.”

“यह information useful है.”

वह serious रही।

“हाँ.”

बाकी family हँस पड़ी।

उसका नाम गौरी था।

कुछ minutes बाद उसने मेरी notebook देखी।

“Drawing?”

“Writing.”

“क्या?”

“यात्रा.”

“हम भी आएँगे?”

मैंने कहा, “अगर permission मिले.”

उसकी grandmother ने कहा, “नाम बदल देना.”

यह editorial wisdom unexpected थी।

Tiffin खुलता है

THE MOST INDIAN DINING TABLE

Train कुछ घंटे चल चुकी थी जब सामने वाली family का steel tiffin खुला।

पहले पूरी coach में smell आई।

फिर मुझे plate offer हुई।

“ले लीजिए.”

“नहीं, मेरे पास food है.”

Grandmother ने मेरी तरफ बिना impressed हुए देखा।

“क्या है?”

मैंने backpack से biscuit packet दिखाया।

उन्होंने तुरंत verdict दिया:

“वो food नहीं.”

Case closed.

मेरे हाथ में एक छोटी steel plate आ गई।

घर की बनी puri, dry aloo sabzi, थोड़ा achar और मिठाई का छोटा piece.

Train suddenly restaurant नहीं बनी।

कुछ बेहतर बनी - temporary family table.

Food Memory:
किसी stranger family का घर का बना puri-aloo.
Travel में सबसे यादगार food हमेशा restaurant से नहीं आता।

मैंने पूछा, “आप Ayodhya अक्सर जाते हैं?”

Father ने कहा, “हमारे relatives वहाँ हैं. Darshan भी करेंगे.”

Grandmother बोलीं, “पहले भी जाते थे. अब city बहुत बदल गई.”

“कैसे?”

“Roads, crowd, buildings. पहले पहचान अलग थी. अब बहुत बड़ा हो रहा.”

उनकी tone nostalgia और complaint के बीच थी।

Father ने कहा, “लेकिन सुविधाएँ भी बढ़ीं.”

Grandmother ने तुरंत कहा, “सुविधा अच्छी. भीड़ खराब.”

Mother हँस पड़ी।

“माँ को हर नई चीज़ आधी अच्छी लगती है.”

Grandmother ने बिना defensive हुए कहा, “पुरानी चीज़ पूरी अच्छी थी क्या?”

सब हँस पड़े।

यह family debate development का सबसे honest form थी।

No slogans.

बस generations.

छोटे स्टेशन

WHERE A LONG JOURNEY BREAKS INTO MINUTES

Train बीच-बीच में छोटे stations पर रुकती रही।

हर station कुछ minute के लिए complete world बन जाता।

Yellow या white station board.

Tea stall.

Plastic chairs.

एक porter.

किसी tree के नीचे दो लोग.

Platform के end पर dog.

और फिर whistle.

World पीछे.

कुछ platforms पर samosa और chai vendors चढ़ते। किसी पर water bottles. कहीं roasted peanuts.

मैं एक station पर door के पास गया, लेकिन नीचे नहीं उतरा।

Night-train lesson याद था: train और confidence दोनों बिना warning चल सकते हैं।

Door से हवा अलग feel होती है। Window filtered landscape देती है; doorway speed देता है।

Tracks के पास gravel blur. दूर field slow. Horizon almost still.

Movement के तीन speeds एक साथ।

मैं कुछ minute वहाँ खड़ा रहा।

* * *

एक elderly man door के पास आए। उन्होंने पूछा, “Ayodhya?”

“हाँ.”

“Ram Mandir?”

“हाँ.”

उन्होंने सिर्फ “जय श्री राम” कहा।

मैंने भी हाथ जोड़ दिए।

Conversation खत्म।

हर interaction को interview बनाना गलत होता।

कभी दो words enough होते हैं।

एक pilgrim family की बातें

WHY PEOPLE RETURN

Seat पर वापस आया तो grandmother ने पूछा, “आप मंदिरों के बारे में book लिख रहे?”

“सिर्फ मंदिर नहीं. Trains, buses, strangers, food, cities.”

“फिर Ayodhya में क्या लिखोगे?”

मैंने कहा, “पहले देखूँगा.”

उन्होंने approvingly सिर हिलाया।

“अच्छा. पहले देखो.”

Sharma ji की philosophy again.

Father ने बताया कि उनके लिए Ayodhya सिर्फ Ram Mandir नहीं है। Family visits, Saryu, Hanuman Garhi, old lanes, relatives, childhood memory - सब साथ आते हैं।

“बाहर से लोग एक चीज़ देखने आते हैं,” उन्होंने कहा। “Local या family वाले कई चीज़ याद करने आते हैं.”

यह location writing के लिए important था।

Famous monument किसी शहर का magnet हो सकता है, पूरा शहर नहीं।

मैंने notebook में लिखा:

Ayodhya must not become only one building in the chapter.

इसके नीचे:

Saryu. Hanuman Garhi. Streets. Food. People. Morning light.

Next chapter की structure train में तय हो रही थी।

सांझ की खिड़की

WHEN THE LANDSCAPE LOSES ITS COLOUR

Late afternoon धीरे-धीरे evening में बदलने लगी।

Sun lower हुआ। Fields का contrast soften. Trees black silhouettes बनने लगे। गाँवों में पहली lights दिखाई देने लगीं।

Window glass अब बाहर और अंदर दोनों reflect कर रही थी।

एक तरफ landscape.

दूसरी तरफ coach के faces.

Gauri सो गई थी, सिर mother के shoulder पर। Grandmother mala हाथ में लिए quietly बैठी थीं। Father phone charging point ढूँढ रहे थे।

Coach में daytime energy कम हो रही थी।

Tea vendor आया।

मैंने chai ली।

Grandmother ने भी।

उन्होंने पूछा, “Russia की chai अच्छी या यह?”

मैंने कहा, “Different.”

“Diplomatic answer.”

मैं surprised हुआ।

“आपको diplomatic पता?”

“TV देखती हूँ.”

Family फिर हँसी।

* * *

Blue diary पूरे chapter में backpack के अंदर रही।

एक बार मैंने zip खोलते समय उसका corner देखा।

बस इतना।

ना कोई नया word.

ना कोई number.

ना कोई mysterious stranger.

और मुझे अच्छा लगा।

Journey को normal होने का मौका मिल रहा था।

Suspense के बिना भी train window interesting थी।

अयोध्या की ओर आखिरी घंटा

THE COMPARTMENT PREPARES TO ARRIVE

Destination करीब आने लगा तो coach फिर जाग गया।

Bags नीचे.

Water bottles collect.

Phone charger निकालो.

Child को जगाओ.

Ticket check.

Grandmother ने food containers वापस cloth bag में carefully stack किए।

Father ने पूछा, “Stay कहाँ?”

मैंने budget hotel area बताया।

उन्होंने practical advice दी कि station पर arrival के बाद auto fare पहले तय करना और अगर late हो तो बहुत अंदर की lane में पहली रात room न लेना - luggage के साथ मुश्किल हो सकती है।

“सुबह light bag लेकर निकलना,” उन्होंने कहा।

यह advice Varanasi में already proven थी।

On-the-road Local Advice

- Late arrival हो तो station से hotel तक transport पहले clear करें.

- Main pilgrimage area के बिल्कुल अंदर room जरूरी नहीं; walkability और luggage access balance करें.
- Morning darshan के लिए main backpack room में छोड़कर light day-bag रखें.
- Water साथ रखें; temple queues और walking time plan से लंबा हो सकता है.

Train slow हुई।

Outside lights dense होने लगीं।

Crossings.

Small roads.

Buildings.

Temple-shaped illuminated structures दूर-दूर glimpses में.

Phone network full.

Passengers door की तरफ gather होने लगे।

मैंने family को धन्यवाद कहा - खासकर food के लिए।

Grandmother ने कहा, “Book छपे तो हमें मत भूलना.”

मैंने कहा, “नाम बदल दूँगा.”

उन्होंने हँसकर कहा, “ठीक है. खाना मत बदलना.”

Perfect editorial instruction.

अयोध्या में उतरना

ARRIVAL IN A PILGRIMAGE CITY AT NIGHT

Train platform पर आई।

Door खुला।

Night air Varanasi से अलग नहीं थी, फिर भी arrival हर city को अलग smell देती है।

Platform पर उतरते ही first impression brightness था।

Signboards.

Passengers.

Announcements.

Families groups में.

Temple-bound visitors के हाथ में small bags और offerings.

Station area pilgrimage traffic के लिए तैयार दिखता था - direction signs, autos waiting, hotel agents की आवाज़ें, local transport का constant negotiation.

मैंने platform पर जल्दी नहीं की।

Family crowd में आगे निकल गई। Gauri ने पीछे मुड़कर हाथ हिलाया।

मैंने भी।

फिर वे disappear.

एक और temporary railway family खत्म।

* * *

Station building से बाहर आते ही city की night face शुरू हुई।

Autos line में.

E-rickshaws.

Tea stalls अभी open.

Small eateries पर late dinner.

कुछ shops devotional items बेच रही थीं - saffron cloth, small flags, pictures, malas.

Road पर illuminated signboards ज्यादा prominent थे क्योंकि sky dark था।

मैंने hotel location phone पर दिखाया।

Driver ने कहा, “चलो.”

मैंने fare पूछा।

उसने amount बताया।

मैंने bargain किया।

Travel habits अब automatic थीं।

Auto station से बाहर निकला।

Ayodhya की roads night lighting में साफ lines जैसी खुल रही थीं। कुछ stretches wide, कुछ आगे जाकर narrower. New construction और older neighbourhood textures बीच-बीच में change होते।

कहीं shops almost बंद. कहीं chai अभी भी active. कहीं devotional music low volume पर. कहीं family groups walking.

यह Varanasi की तरह vertical-close city नहीं लगा। कम-से-कम पहली night glimpse में space अलग था।

Driver ने पूछा, “कल Ram Mandir?”

“हाँ. सुबह.”

“Hanuman Garhi भी.”

“हाँ.”

“Saryu?”

“हाँ.”

वह हँसा।

“एक दिन में सब?”

मैंने कहा, “आप भी शुरू मत हो जाओ.”

उसे context नहीं पता था। वह फिर भी हँसा।

एक छोटा कमरा, एक नया शहर

THE NIGHT BEFORE DARSHAN

Hotel simple था। Ground-floor reception, ऊपर narrow stairs, room में single bed, fan, attached bathroom और wall पर भगवान राम की framed image.

Receptionist ने ID लिया।

“Morning निकलोगे?”

“Early.”

“तो बाहर से पानी अभी ले लो. सुबह दुकानें मिल जाएँगी, पर room से निकलते ही फिर queue और walking शुरू हो जाएगी.”

Useful.

मैंने दो bottles लीं।

Room में backpack bed पर रखा। Shoes उतारे। Phone charge.

और पहली बार उस दिन blue diary बाहर निकाली।

मैंने उसे खोला नहीं।

बस table पर रखा।

Ayodhya chapter mystery से शुरू नहीं होना चाहिए था।

मैं चाहता था कि सुबह city खुद बोले।

* * *

Notebook खोली।

आज के notes:

Varanasi station.

Window fields.

Stranger family.

Home food.

Small stations.

Ayodhya night arrival.

फिर एक line:

Today nothing mysterious happened.

उसके नीचे:

और यात्रा फिर भी पूरी तरह interesting रही.

यही मुझे याद रखना था।

Book का heartbeat clues नहीं थे।

Road, rail, people और places थे।

मैंने alarms set किए।

पहला:

4:50 AM

दूसरा:

4:55 AM

फिर light off.

बाहर कोई auto निकला। दूर से dog bark. Corridor में footsteps. फिर silence.

Tomorrow:

Ram Mandir.

Hanuman Garhi.

Kanak Bhawan.

Saryu.

और इस बार location को जल्दी पार नहीं करना था।

Ayodhya को देखना था - सिर्फ पहुंचना नहीं।

* * *

CHAPTER ELEVEN - B

पैरों से पढ़ी अयोध्या

KANAK BHAWAN, RAM KI PAIDI & SARYU

अयोध्या

Day Four - Morning to Afternoon

“किसी शहर को पैरों से देखो, तो प्रसिद्ध स्थानों के बीच की साधारण गलियाँ भी कहानी बन जाती हैं।”

पंद्रह रुपये के छोले-कुलचे खत्म हुए, पाँचों लोगों से हाथ मिलाया और मैं फिर सड़क पर आ गया।

सूरज अब पूरी तरह निकल चुका था।

कुछ घंटे पहले जिन गलियों में पीली बत्तियाँ और आधा अँधेरा था, वही गलियाँ अब अपने पूरे रूप में सामने थीं। दुकानों के रंग दिखाई देने लगे थे। पुराने मकानों की दीवारों की दरारें, छज्जों से लटकती बिजली की तारें, दरवाज़ों पर सूखते गेरुए और लाल कपड़े, और कहीं-कहीं दीवार पर हाथ से लिखा हुआ -

जय श्री राम।

सुबह चार बजे शहर लगभग फुसफुसा रहा था।

अब उसकी आवाज़ बढ़ चुकी थी।

मैंने पानी की बोतल निकाली, दो घूँट लिए और कनक भवन की दिशा पूछी।

एक दुकानदार ने बिना दुकान से बाहर निकले हाथ घुमाकर रास्ता बताया -

“सीधे जाइए। आगे जहाँ रास्ता दो होगा, बाएँ। फिर किसी से पूछ लेना।”

मैं हँसा।

देश बदल सकता था। शहर बदल सकते थे।

लेकिन आखिरी निर्देश अक्सर यही था -

“फिर किसी से पूछ लेना।”

आज किसी वाहन में बैठना नहीं था।

मैं चल पड़ा।

कनक भवन की ओर

THE WALK THROUGH OLD AYODHYA

रामलला के दर्शन वाले क्षेत्र से थोड़ा दूर होते ही सुरक्षा की कठोरता पीछे छूटने लगी।

लोहे की घेराबंदी खत्म हुई।

पुलिस की संख्या कम हुई।

और अयोध्या फिर शहर बनने लगी।

सामने एक बूढ़ा आदमी साइकिल धीरे-धीरे चला रहा था। उसके पीछे दूध के दो बड़े डिब्बे बँधे थे।

एक घर के सामने महिला बाल्टी से पानी डालकर जमीन साफ कर रही थी।

दो बच्चे स्कूल के कपड़ों में सड़क के किनारे खड़े किसी वाहन का इंतज़ार कर रहे थे।

एक छोटी दुकान में अखबार की गड्डी खुल रही थी।

दूसरी जगह आदमी लकड़ी की चौकी पर बैठा आलू छील रहा था।

मैंने महसूस किया -

तीर्थयात्री जिस अयोध्या में आते हैं, वह कुछ घंटों के लिए मंदिरों और दर्शन के रास्तों से बनी होती है।

लेकिन जो लोग यहाँ रहते हैं, उनकी अयोध्या में दूध, स्कूल, दुकान, किराया, काम और दोपहर का खाना भी है।

यही हिस्सा मुझे देखना था।

* * *

गलियाँ कहीं इतनी संकरी थीं कि दो मोटरसाइकिलें सामने आ जाएँ तो एक को रुकना पड़ता।

ऊपर पुराने मकानों के छज्जे निकले हुए थे।

कुछ मकानों के रंग बहुत पहले के लगते थे - हल्का पीला जो अब मिट्टी जैसा हो गया था, फीका नीला, कहीं गुलाबी जिसकी धूप ने चमक खा ली थी।

दरवाज़ों पर मोटी लकड़ी।

कुछ चौखटों पर फूलों की छोटी आकृतियाँ।

एक पुराने घर की पहली मंज़िल पर लकड़ी की जालीदार खिड़की थी। उसके पीछे से किसी ने पर्दा हटाया, नीचे सड़क देखी और फिर पर्दा वापस गिर गया।

ऐसे शहर में यात्री खुद को आगंतुक बहुत जल्दी महसूस करता है।

आप लोगों के घरों के बीच से गुजर रहे होते हैं।

आपके लिए गली एक दृश्य है।

उनके लिए वही गली घर का दरवाज़ा है।

* * *

एक बुजुर्ग पान की दुकान के बाहर बैठे थे।

मैंने पूछा -

“कनक भवन?”

उन्होंने पहले मुझे देखा।

फिर मेरे जूतों को।

फिर पूछा -

“पैदल?”

“हाँ।”

“कहाँ से चले?”

मैंने हनुमानगढ़ी और रामलला बताया।

उन्होंने मुस्कुराकर कहा -

“अच्छा। आज पैर से दर्शन कर रहे हो।”

मुझे यह वाक्य पसंद आया।

पैर से दर्शन।

उन्होंने रास्ता बताया और साथ में सलाह दी -

“धूप चढ़े उससे पहले सरयू की तरफ निकल जाना।”

मैंने पूछा -

“बहुत गर्मी होती है?”

उन्होंने कहा -

“अभी पूछ रहे हो। दो घंटे बाद पैर बताएँगे।”

अयोध्या में आज हर आदमी मेरे पैरों को लेकर मुझसे ज्यादा चिंतित था।

कनक भवन

A QUIETER COURTYARD

कुछ मोड़ों के बाद भीड़ का स्वभाव बदलने लगा।

प्रसाद की दुकानें बढ़ीं।

फूल.

छोटी धार्मिक तस्वीरें.

मालाएँ.

कुछ जगह मिठाई.

और फिर सामने कनक भवन का प्रवेश क्षेत्र आया।

हनुमानगढ़ी से इसका अनुभव बिल्कुल अलग था।

वहाँ सीढ़ियों ने पहले शरीर को रोका था।

यहाँ पहली अनुभूति थी -

खुलापन।

अंदर आते ही आसमान ज्यादा दिखाई दिया।

बीच का खुला भाग, उसके चारों ओर बने भवन, मेहराबें और सजावट - सब मिलकर ऐसा वातावरण बना रहे थे जिसमें आदमी का कदम अपने-आप धीमा हो जाए।

मैंने कुछ देर प्रवेश के पास ही खड़े होकर देखा।

दीवारों पर सजावटी काम था, लेकिन वह आँखों पर हमला नहीं करता था।

रंगों में कोमलता थी।

कुछ जगह धूप सीधी पड़ रही थी।

कुछ जगह बरामदे की छाया थी।

पत्थर के फर्श पर रोशनी चौकोर टुकड़ों में गिर रही थी।

लोग आते।

दर्शन करते।

फिर कुछ सीधे निकल जाते।

लेकिन बहुत लोग किनारे बैठ जाते।

मैं भी उनमें शामिल हो गया।

* * *

एक स्तंभ के पास जगह मिली।

पीठ दीवार से लगाई।

पैर आगे किए।

हनुमानगढ़ी की सीढ़ियाँ अब शरीर को याद आ रही थीं।

पास एक परिवार बैठा था। उनकी बुजुर्ग माँ शायद चलने से थक गई थीं। बेटी उनके पैर दबा रही थी।

दो बच्चे आँगन में कबूतरों के पीछे जा रहे थे और उनकी माँ बार-बार बुला रही थी -

“दूर मत जाना।”

घंटी की आवाज़ आती।

फिर कुछ पल शांति।

फिर किसी नए समूह के आने से आवाज़ बढ़ जाती।

यहाँ बैठते हुए मुझे लगा कि मंदिर का अनुभव केवल गर्भगृह तक पहुँचकर खत्म नहीं होता।

कभी उसका असली असर बाहर बैठने में आता है।

दर्शन कुछ क्षण का।

ठहराव उससे लंबा।

* * *

मैंने सामने बैठे एक स्थानीय बुजुर्ग से पूछा -

“आप रोज़ आते हैं?”

उन्होंने कहा -

“रोज़ नहीं। जब मन हुआ।”

“बाहर से बहुत लोग आते हैं?”

वह मुस्कुराए।

“आप जैसे?”

“हाँ।”

“बहुत।”

फिर बोले -

“बाहर से आने वाला मंदिर गिनता है। यहाँ का आदमी रास्ते याद करता है।”

मैंने पूछा -

“मतलब?”

“आप बोलोगे कनक भवन देखा, हनुमानगढ़ी देखा। हम बोलेंगे फलाँ गली से गए थे, वहाँ फलाँ दुकान थी, इस मोड़ पर फलाँ रहता था।”

मैं कुछ देर चुप रहा।

यही तो मैं करने की कोशिश कर रहा था।

स्थान को नाम से नहीं, रास्ते से याद करना।

कनक भवन से बाहर

THE CITY IN FULL DAYLIGHT

बाहर निकलते ही धूप का असर तुरंत महसूस हुआ।

सुबह की ठंडी हवा जा चुकी थी।

दीवारों की छायाएँ छोटी होने लगी थीं।

दुकानों पर अब पूरी गतिविधि थी।

एक मिठाई की दुकान में कड़ाह में तेल उबल रहा था। पास के बड़े भगोने में दूध धीरे-धीरे गाढ़ा हो रहा था।

फूलों की दुकान पर सुबह की ताजगी थोड़ी कम हो चुकी थी, लेकिन गेंदे की मालाओं का ढेर अब भी चमकीला था।

एक दुकानदार आवाज़ लगा रहा था -

“प्रसाद ले जाइए।”

दूसरा किसी ग्राहक से पैसे को लेकर बहस कर रहा था।

किसी गली से बंदर तेजी से निकला और छत पर चढ़ गया।

पास वाले ने बिना उसकी तरफ देखे कहा -

“चश्मा संभालो।”

वृंदावन याद आ गया।

मैंने तुरंत चश्मा थैले में रख लिया।

यात्रा कुछ शहरों को आपस में जोड़ देती है।

गलियों में बिना जल्दी के

THE ORDINARY CITY BETWEEN SHRINES

अब मेरा कोई तय समय नहीं था।

अगला स्थान राम की पैड़ी था।

लेकिन वहाँ पहुँचने की जल्दी नहीं थी।

मैं जानबूझकर मुख्य सड़क छोड़कर थोड़ा अंदर की तरफ चलने लगा।

यहाँ भी अयोध्या का दूसरा चेहरा मिला।

कपड़े सूखते हुए।

दरवाज़े पर रखी चप्पलें।

एक छोटे कमरे से सिलाई मशीन की आवाज़।

एक मिस्त्री जमीन पर बैठा किसी मोटरसाइकिल का हिस्सा खोल रहा था।

एक बूढ़ी महिला घर के बाहर मिर्च सुखाने के लिए कपड़ा बिछा रही थी।

एक बच्चा दीवार पर चाक से कुछ लिख रहा था।

उसकी दुनिया में बड़े विवाद नहीं थे।

बस चाक था।

कुछ कदम आगे एक छोटा-सा मंदिर आया।

कोई प्रसिद्ध नाम नहीं।

कोई बड़ी भीड़ नहीं।

दरवाज़े के पास एक आदमी बैठा रामचरितमानस पढ़ रहा था।

मैं दो मिनट रुका।

उसने ऊपर देखा।

मैंने हाथ जोड़ दिए।

उसने भी।

फिर पढ़ना जारी रखा।

मैं आगे बढ़ गया।

यही छोटी जगहें बड़े शहर को जोड़ती हैं।

* * *

धूप अब तेज़ थी।

मैंने बोतल उठाई।

बहुत कम पानी बचा था।

एक छोटी किराने की दुकान से नई बोतल ली।

दुकानदार ने पूछा -

“कहाँ तक?”

“राम की पैड़ी। फिर सरयू।”

“पैदल?”

मैंने हँसते हुए कहा -

“आज सब यही पूछ रहे।”

वह बोला -

“इसलिए पूछ रहे हैं क्योंकि दोपहर होने वाली है।”

उसने अपने ठंडे पानी वाले बक्से की तरफ इशारा किया।

“ठंडा पानी ले जाओ।”

मैंने कहा -

“बहुत ठंडा नहीं।”

उसने सामान्य बोतल निकाल दी।

स्थानीय सलाह कभी-कभी किताबों से पहले पहुँच जाती है।

राम की पैड़ी

WHEN THE CITY SUDDENLY OPENS

कई गलियों और मोड़ों के बाद अचानक शहर खुल गया।

यह परिवर्तन इतना तेज़ था कि मैं सच में कुछ क्षण रुक गया।

अभी तक सामने मकान थे।

दीवारें थीं।

दुकानें थीं।

छज्जे थे।

और अब -

आसमान।

बहुत ज्यादा आसमान।

नीचे लंबी सीढ़ियाँ।

पानी का विस्तृत दृश्य।

पीछे मंदिरों और भवनों की पंक्ति।

खुले स्थान में हवा का चलना भी अलग महसूस होता है।

गलियों में हवा मकानों से टकराकर आती थी।

यहाँ वह सीधे चेहरे तक पहुँच रही थी।

मैं धीरे-धीरे सीढ़ियों की तरफ बढ़ा।

पत्थर गर्म था।

जूते के बावजूद गर्मी महसूस हो रही थी।

कुछ लोग सीढ़ियों पर बैठे थे।

किसी परिवार की तस्वीरें ली जा रही थीं।

दो छोटे बच्चे पानी की तरफ भागे और उनकी माँ ने एक ही आवाज़ में दोनों को वापस बुला लिया।

एक आदमी छाता लगाए बैठा था।

कुछ लोग पूजा कर रहे थे।

कुछ लोग सिर्फ आराम।

राम की पैड़ी को देखकर पहली बार मुझे लगा कि सुबह से चलते हुए शरीर को भी शायद मंज़िल मिल गई है।

* * *

मैं एक सीढ़ी पर बैठ गया।

थैला उतारा।

कंधे तुरंत हल्के लगे।

पानी पिया।

जूते थोड़ा ढीले किए।

और सामने देखा।

पानी पर धूप चमक रही थी।

एक जगह चमक इतनी तेज़ थी कि आँखें टिक नहीं रही थीं।

पास बैठे दो आदमी आपस में किसी जमीन के कागज़ के बारे में बात कर रहे थे।

मैं मन ही मन हँसा।

यह भी तीर्थ-नगर का सच था।

आप सामने धार्मिक दृश्य देख रहे हों और बगल में जमीन का हिसाब चल सकता है।

जीवन रुकता नहीं।

* * *

मेरे पास कुछ दूरी पर सफेद कुर्ता पहने बुजुर्ग बैठे थे।

अखबार मोड़कर रखा हुआ था।

उन्होंने पूछा -

“बहुत चले?”

मैंने कहा -

“सुबह से।”

“कहाँ-कहाँ?”

मैंने बताया।

उन्होंने कहा -

“अभी सरयू जाओ।”

“यही सोच रहा हूँ।”

उन्होंने सामने देखते हुए कहा -

“पहले वाला अयोध्या और था।”

मैंने उनकी तरफ देखा।

उन्होंने खुद बात आगे बढ़ाई -

“छोटा था। लोग कम थे। रास्ते वही थे, पर दबाव कम था।”

मैंने पूछा -

“अच्छा था?”

उन्होंने हँसकर कहा -

“पुरानी चीज़ सबको अच्छी लगती है क्योंकि जवानी भी उसी में होती है।”

बहुत सही जवाब था।

फिर थोड़ा गंभीर होकर बोले -

“बदलाव जरूरी है। लेकिन शहर को बदलते समय उसकी पहचान बची रहे, यह भी जरूरी है।”

मैंने पूछा -

“पहचान क्या है?”

उन्होंने पानी की तरफ इशारा किया।

“मंदिर तो हैं ही। पर ये रास्ते, सरयू, छोटी दुकानें, मोहल्ले, लोग - ये सब।”

फिर मेरी तरफ देखकर बोले -

“केवल बड़ा मंदिर बन जाए तो शहर पूरा नहीं होता।”

मैंने मन में पंक्ति रख ली।

उस समय नोटबुक निकालने का मन नहीं हुआ।

सरयू की ओर

THE WALK TO THE RIVER

राम की पैड़ी से उठना आसान नहीं था।

पैर आराम के बाद फिर चलने से पहले विरोध करते हैं।

मैंने जूते ठीक किए।

थैला कंधे पर डाला।

और सरयू की तरफ चल पड़ा।

अब धूप सिर के ऊपर थी।

सड़क के किनारे जितनी भी छाया मिलती, मैं स्वाभाविक रूप से उसी तरफ चलने लगा।

कभी पेड़.

कभी मकान.

कभी दुकान का छज्जा.

पैदल यात्री धीरे-धीरे छाया पहचानना सीख जाता है।

* * *

सरयू के करीब आते हुए हवा बदल गई।

पहले हल्का-सा ठंडापन महसूस हुआ।

फिर खुला आसमान दिखाई दिया।

फिर नदी।

गंगा के बाद यह दूसरी बड़ी नदी थी जिसके किनारे मैं इस यात्रा में कुछ देर बैठने वाला था।

लेकिन यहाँ अनुभव अलग था।

काशी की गंगा के सामने ऊँचे घाट, पुराने महल, मंदिरों की परतें और नावों की लंबी पंक्ति थी।

यहाँ मेरे सामने दृश्य ज्यादा खुला था।

आसमान नदी पर फैल रहा था।

धूप पानी पर टूटी हुई चाँदी जैसी चमक रही थी।

सीढ़ियाँ नीचे उतरती थीं।

कुछ लोग स्नान कर रहे थे।

एक परिवार किनारे पूजा कर रहा था।

दो लड़के पानी में एक-दूसरे पर छींटे मार रहे थे।

एक बुजुर्ग पुरुष गीले कपड़ों में ऊपर आते हुए धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे।

दूर छोटी नाव दिखाई दी।

हवा में नदी की नमी थी।

और शहर की धूल थोड़ी देर के लिए पीछे छूट गई।

सरयू के सामने

A FEW QUIET MINUTES

मैं बीच की एक सीढ़ी पर बैठ गया।

जूते उतार दिए।

पैरों को थोड़ा आराम मिला।

नीचे पानी तक जाने का मन हुआ, लेकिन पहले कुछ देर वहीं बैठा रहा।

सुबह से मेरे आसपास लगातार आवाज़ रही थी -

घंटियाँ.

लोग.

दुकानदार.

सुरक्षा कर्मी.

बातचीत.

गाड़ियाँ.

और अब नदी के पास आवाज़ें खुलकर फैल रही थीं।

कोई एक आवाज़ सबसे ऊपर नहीं थी।

मैंने सामने देखते हुए सोचा -

वाराणसी में गंगा के सामने मुझे सवाल आते रहे थे।

इतिहास.

धर्म.

मृत्यु.

अग्नि.

पुरानी इमारतें.

यहाँ सरयू के सामने कुछ पूछने का मन नहीं था।

बस बैठना अच्छा लग रहा था।

मैंने नोटबुक निकाली।

पन्ने पर सिर्फ हिन्दी में लिखा -

“गंगा ने सवाल दिए थे।
सरयू के सामने कुछ देर सवाल भी शांत हो गए।”

नोटबुक बंद कर दी।

बस।

* * *

नीचे एक नाव वाला यात्रियों को बुला रहा था।

कुछ देर बाद वह ऊपर आकर मेरे पास बैठ गया।

“नाव?”

“नहीं भाई, आज नहीं।”

“कल?”

“आज ही लखनऊ निकलना है।”

उसने मेरी तरफ देखा।

“फिर जल्दी में हो।”

“थोड़ा।”

“कहाँ-कहाँ गए?”

मैंने पूरा सुबह का रास्ता बताया।

“सब पैदल?”

“हाँ।”

वह हँसा।

“आप शहर देखते कम हो, छोड़ते ज्यादा हो।”

मैंने कहा -

“ये बात मुझे कई लोग बता चुके हैं।”

“इतने लोग बोल रहे तो सही ही बोल रहे होंगे।”

मैं हँस पड़ा।

मैंने उससे पूछा -

“सरयू पर सबसे अच्छा समय?”

उसने कहा -

“सुबह जल्दी या शाम। लेकिन नदी का समय क्या पूछना? जब बैठ सको वही अच्छा।”

फिर खुद ही बोला -

“बस गर्मी में दोपहर को बहादुरी मत दिखाना।”

स्थानीय सलाह में कविता और व्यवहारिकता दोनों थीं।

पुल वाली चाय

THE TEA THAT HAD NO FAMOUS NAME

सरयू से निकलते हुए शरीर अब साफ बता रहा था कि सुबह से कितनी दूरी हो चुकी है।

पैर भारी थे।

कंधे पर छोटा थैला भी बड़ा लगने लगा था।

सूरज मजबूत था।

मैं धीरे चल रहा था।

एक पुल के पास सड़क किनारे छोटी चाय की दुकान दिखाई दी।

ऐसी दुकान जिसे कोई यात्रा-पुस्तिका शायद नाम से न जानती हो।

टिन की छत.

आधा खुला हिस्सा.

दो प्लास्टिक के छोटे स्टूल.

एक लकड़ी की बेंच.

सामने चूल्हे पर केतली.

बगल में दूध का भगोना.

ऊपर रस्सी से लटके बिस्कुट के पैकेट.

मैंने थैला बेंच पर रखा।

“एक चाय।”

दुकानदार ने पूछा -

“कड़क?”

“बहुत कड़क।”

उसने मेरी तरफ देखा।

“चलकर आए हो?”

“सुबह से।”

“तभी।”

चाय बनने लगी।

दूध ऊपर आया।

उसने चम्मच से नीचे किया।

चायपत्ती.

चीनी.

अदरक की हल्की खुशबू.

भाप मेरे चेहरे तक आई।

मुझे उस समय लगा कि यह किसी प्रसिद्ध चाय की दुकान से ज्यादा सही जगह थी।

* * *

गिलास हाथ में आया।

बहुत गरम।

मैंने दोनों हाथों से पकड़ा।

पहला घूँट लेने की जल्दी की।

जीभ जलते-जलते बची।

दुकानदार ने हँसकर कहा -

“अयोध्या जल्दी घूम रहे हो, चाय भी जल्दी पीनी है?”

मैंने कहा -

“आदत खराब है।”

बेंच से सामने पुल का हिस्सा दिखाई दे रहा था।

लोग आते-जाते।

मोटरसाइकिल.

साइकिल.

पैदल श्रद्धालु.

कभी कोई छोटा सामान ढोता वाहन.

और उन सबके पीछे दूर की खुली रोशनी।

मैंने जूते की तरफ देखा।

धूल की परत थी।

सुबह साफ थे।

अब अयोध्या उनके ऊपर दिखाई दे रही थी।

मुझे यह अच्छा लगा।

* * *

पास बैठे दो स्थानीय लोग बिजली के बिल पर बात कर रहे थे।

मैंने उनकी बातचीत में हिस्सा नहीं लिया।

हर जगह बातचीत को साक्षात्कार बनाना जरूरी नहीं।

मैं बस चाय पीता रहा।

कुछ मिनट बाद दुकानदार ने पूछा -

“कहाँ से?”

“महाराष्ट्र।”

उसने कहा -

“बहुत दूर।”

मैंने जवाब दिया -

“पैदल नहीं आया।”

वह हँस पड़ा।

“अच्छा हुआ।”

बस इतना।

सुबह के छोले-कुलचे वाले पाँच लोगों जैसी कोई बड़ी चर्चा नहीं हुई।

और यही स्वाभाविक था।

हर स्थानीय मुलाकात को इतिहास की बातचीत बना देना यात्रा-वृत्तांत को बनावटी कर देता।

कभी आदमी सिर्फ चाय देता है।

आप पैसे देते हो।

दोनों हँसते हैं।

और आप आगे चले जाते हो।

लेकिन स्मृति में वही चाय रह जाती है।

फिर से पैदल

THE LONG WALK BACK

चाय के बाद शरीर में थोड़ी जान वापस आई।

मैंने होटल की दिशा पूछी।

दुकानदार ने रास्ता समझाया।

फिर मुझे देखकर बोला -

“बहुत दूर लगे तो रिक्शा कर लेना।”

मैंने कहा -

“आज नहीं।”

“क्यों?”

“पूरा अयोध्या पैदल।”

उसने सिर हिलाया।

“ठीक है। रात को तेल लगाना पैर में।”

शायद उस दिन की सबसे व्यवहारिक सलाह।

* * *

अब मैं मुख्य धार्मिक रास्तों से थोड़ा हटकर चल रहा था।

यहाँ भी शहर का साधारण जीवन वापस था।

एक दर्जी मशीन चला रहा था।

दो आदमी छाँव में चारपाई पर बैठे थे।

सब्ज़ी के ठेले पर लौकी, आलू, टमाटर।

एक छोटी दवा की दुकान।

एक स्कूल की दीवार।

एक आँगन में बच्चे खेल रहे थे।

एक मोटरसाइकिल के पीछे गैस का सिलेंडर बँधा हुआ।

एक आदमी दरवाज़े के बाहर बाल्टी से अपनी मोटरसाइकिल धो रहा था।

मैंने महसूस किया -

यही अयोध्या का वह हिस्सा है जो किसी बड़े शीर्षक में नहीं आता।

और शायद वही हिस्सा शहर को शहर बनाता है।

मंदिर आपको अयोध्या तक बुलाते हैं।

लेकिन घर, गलियाँ और लोग बताते हैं कि अयोध्या रहती कैसे है।

दोपहर का साधारण खाना

A MEAL FOR TIRED LEGS

होटल पहुँचने से पहले एक छोटे भोजनालय में रुक गया।

अब प्रसिद्ध खाने की कोई खोज नहीं थी।

मुझे बस बैठना था।

दाल.

चावल.

रोटी.

एक सब्ज़ी.

अचार.

दही.

मैंने थाली सामने आते ही खाना शुरू कर दिया।

पास की मेज़ पर दो आदमी किसी दुकान के सामान का हिसाब कर रहे थे।

मालिक काउंटर से आवाज़ लगा रहा था -

“एक रोटी और।”

रसोई से गर्म रोटी आती।

पंखा घूम रहा था, लेकिन गर्मी पूरी तरह नहीं हट रही थी।

मैंने आधा गिलास पानी एक साथ पी लिया।

ऐसे भोजन यात्रा-पुस्तक में चमकदार नहीं लगते।

लेकिन लंबी यात्रा इन्हीं पर चलती है।

हर भोजन कचौड़ी, रबड़ी या प्रसिद्ध चाट नहीं हो सकता।

कभी दाल-रोटी ही सबसे बड़ी राहत लगती है।

होटल की तरफ आखिरी रास्ता

WHEN THE CITY STARTS TO LOOK FAMILIAR

खाने के बाद चलना सबसे कठिन था।

पेट भरा।

धूप तेज़।

पैर पहले ही थके।

मैं धीरे-धीरे होटल की तरफ गया।

अब सुबह देखी कुछ जगहें पहचान में आने लगीं।

एक वही दुकान.

एक वही मोड़.

एक वही दीवार.

एक जगह सुबह बंद shutter अब पूरी तरह खुला था।

मैंने महसूस किया कि पैदल घूमने का सबसे बड़ा लाभ यही है -

शहर आपको दूसरी बार पहचान में आने लगता है।

वाहन में आप जगहों के बीच जाते हैं।

पैदल आप **रास्ते को भी जान लेते हैं।**

* * *

होटल के पास पहुँचते-पहुँचते मेरी चाल सुबह वाली नहीं रही।

अब उत्साह कम और थकान ज्यादा थी।

स्वागत-कक्ष वाला मुझे देखकर हँसा।

“आ गए?”

मैंने कहा -

“हाँ।”

“पूरा पैदल?”

“पूरा।”

“पैर?”

मैंने कहा -

“अभी मेरे खिलाफ हैं।”

वह हँस पड़ा।

मैं सीढ़ियाँ चढ़कर कमरे में पहुँचा।

दरवाज़ा बंद किया।

थैला जमीन पर रखा।

जूते उतारे।

और कुछ क्षण बिस्तर के किनारे बिना हिले बैठा रहा।

जूते उतारने के बाद पैरों में जो राहत आई, वह शायद उस दिन का दूसरा बड़ा दर्शन था।

* * *

मैंने सुबह से पूरा रास्ता याद किया।

अँधेरे में हनुमानगढ़ी।

सीढ़ियाँ।

जागती गलियाँ।

रामलला तक लोहे की घेराबंदी और सुरक्षा।

पंद्रह रुपये के छोले-कुलचे।

महाराष्ट्र का नाम सुनते ही शुरू हुई पाँच अनजान लोगों की बातचीत।

कनक भवन की खुली शांति।

पुरानी गलियों में साधारण घर।

राम की पैड़ी का अचानक खुलता आसमान।

सरयू के सामने बैठी शांति।

और पुल के पास वह बिना नाम की चाय।

प्रसिद्ध स्थान और साधारण पल आपस में मिल चुके थे।

अब तय करना मुश्किल था कि सबसे ज्यादा क्या याद रहेगा।

शायद यही अच्छी यात्रा होती है।

* * *

नीली डायरी मेज़ पर उसी जगह पड़ी थी जहाँ सुबह छोड़कर गया था।

मैंने उसकी तरफ देखा।

हाथ नहीं लगाया।

आज उसका अध्याय नहीं था।

आज कोई रहस्य नहीं चाहिए था।

कोई संकेत नहीं।

कोई संख्या नहीं।

कोई अजनबी आदमी नहीं।

उस दिन अयोध्या अपने आप में काफी थी।

मैंने नोटबुक खोली और आखिरी पंक्तियाँ लिखीं:

**“राम के नाम से अयोध्या पहुँचा था।
लेकिन उसे मंदिरों के बीच की गलियों, पंद्रह रुपये के नाश्ते, थके पैरों और सरयू की हवा की वजह से याद रखूँगा।”**

फिर एक और पंक्ति:

“किसी शहर को सच में देखना हो तो कभी-कभी उसके लिए वाहन छोड़ना पड़ता है।”

नोटबुक बंद की।

अब अगला पड़ाव लखनऊ था।

लेकिन उससे पहले -

थोड़ा आराम।

बहुत सारा पानी।

और शायद सच में पैरों में तेल।

CHAPTER TWELVE

टिकट दिखाइए

TICKET PLEASE

अयोध्या से लखनऊ

Day Four - Afternoon

“रेल रास्ता दिखाती है; बस सड़क के इतना पास ले जाती है कि गाँव की धूल भी यात्रा का हिस्सा बन जाती है।”

अयोध्या को पैदल घूमने का फैसला सुबह बहुत अच्छा लगा था।

दोपहर तक मेरे पैरों की राय अलग थी।

होटल के कमरे में आधा घंटा लेटने के बाद जब उठा, तो जूते पहनते समय ही समझ आ गया कि शरीर ने पूरे दिन की दूरी का हिसाब रखा है।

लेकिन आज आराम का दिन नहीं था।

अगला पड़ाव लखनऊ था।

और इस बार रेल नहीं।

राज्य परिवहन की बस।

मैंने backpack बंद किया। पानी की बोतल भरी। छोटा थैला अंदर रखा। नीली diary भी backpack के बीच सुरक्षित रख दी।

सुबह भर उसने मुझे नहीं बुलाया था।

अच्छा ही था।

अब मुझे सिर्फ बस पकड़नी थी।

* * *

होटल से बाहर निकला।

सुबह जिन गलियों में मैं बिना जल्दी के चल रहा था, अब उन्हीं में सामान का वजन अलग लग रहा था।

छोटा day-bag और पूरा backpack - दोनों में फर्क सिर्फ किलो का नहीं होता।

सुबह शहर देखने वाले पैर अब स्टेशन या बस अड्डा ढूँढने वाले पैर बन चुके थे।

मैंने पहली बार उस दिन स्थानीय सवारी ली।

पूरा Ayodhya पैदल घूमने का नियम पूरा हो चुका था।

अब backpack के साथ hero बनने का कोई पुरस्कार नहीं था।

अयोध्या का बस अड्डा

THE ROAD JOURNEY BEGINS

बस अड्डे के बाहर पहुँचते ही railway station से बिल्कुल अलग प्रकार की अव्यवस्था मिली।

रेलवे में platform number होता है, coach number होता है, electronic board होता है।

बस अड्डे पर पहली नज़र में सब कुछ लोगों की आवाज़ पर चलता हुआ लगता है।

एक बस धीरे-धीरे पीछे जा रही थी और helper हाथ से संकेत कर रहा था।

दूसरी के सामने लोग सामान चढ़ा रहे थे।

तीसरी के दरवाज़े पर conductor आधा बाहर लटककर destination पुकार रहा था।

कहीं चाय.

कहीं केले.

कहीं पानी की bottles.

कहीं newspaper.

Diesel की गंध हवा में स्थायी रूप से मौजूद थी।

Ground पर dust, tyre marks और कहीं-कहीं पानी के गीले patches.

ऊपर से horns.

नीचे से लोगों की आवाज़ें.

और हर दूसरे आदमी का एक ही सवाल:

“कहाँ जाना?”

मैंने एक enquiry counter जैसी खिड़की पर पूछा -

“लखनऊ?”

अंदर बैठे आदमी ने बिना ऊपर देखे हाथ से दूसरी तरफ इशारा किया।

“उधर.”

मैं उधर गया।

वहाँ दो buses थीं।

फिर पूछा।

पहले आदमी ने एक bus बताई।

दूसरे ने दूसरी।

तीसरे ने conductor खोजने को कहा।

रेलवे का blue dot यहाँ इंसानों के रूप में घूम रहा था।

* * *

आखिर एक conductor मिला। कंधे पर टिकट वाला चमड़े का बैग, हाथ में छोटी पर्चियों का बंडल।

मैंने पूछा -

“लखनऊ?”

उसने बस की तरफ इशारा किया।

“यही. बैठो.”

“कब चलेगी?”

उसने मुझे देखा।

“भर जाएगी तो.”

यह timetable का सबसे भारतीय उत्तर था।

मैंने backpack लेकर bus में प्रवेश किया।

सीढ़ियाँ ऊँची लगीं - शायद सुबह की walking के कारण।

अंदर सीटें दो-दो की कतार में थीं। कुछ seat covers घिसे हुए। खिड़कियों के किनारे धूल की पतली परत। ऊपर rod पर कुछ छोटे bags लटके।

पंखे नहीं। हवा का भरोसा खिड़की और गति पर।

मैंने खिड़की वाली सीट चुनी।

Backpack पैरों के बीच रखा।

और पहली बार उस दिन राहत की साँस ली।

अब कुछ देर शहर खुद चलेगा। मुझे नहीं चलना।

स्थानीय यात्रा की पहली सीख:

बस अड्डे पर destination लिखी पट्टी से ज्यादा भरोसा conductor से पुष्टि पर करें. गलत बस में आराम से बैठ जाना सही बस के लिए पाँच मिनट खड़े रहने से ज्यादा महँगा पड़ता है।

खिड़की के पास एक फौजी

A RETIRED SOLDIER ON THE NEXT SEAT

मेरे बगल की seat थोड़ी देर खाली रही।

फिर लगभग साठ वर्ष के एक आदमी चढ़े। मजबूत कद, छोटे कटे सफेद बाल, हल्की मूँछ, हाथ में पुराना canvas bag.

उन्होंने bag ऊपर रखने की कोशिश की। मैंने मदद की।

“धन्यवाद.”

वह बैठे।

कुछ seconds बाद मेरी तरफ देखकर बोले -

“लखनऊ?”

“हाँ.”

“घूमने?”

“हाँ. दस दिन की यात्रा.”

उन्होंने मेरे backpack की तरफ देखा।

“इतने में?”

“कोशिश कर रहा हूँ.”

वह हँसे।

“फौज में होते तो पहले ही दिन route बदलवा देते.”

मैंने पूछा -

“Army?”

“Retired. Subedar Major नहीं, इतना promotion मत दे देना book में,” उन्होंने हँसते हुए कहा। “Subedar से retire हुआ.”

उनका नाम **रघुवीर सिंह** था।

पूर्व सैनिक। मूल घर Awadh के एक गाँव में। अब कभी गाँव, कभी Lucknow में बेटे के पास।

मैंने कहा -

“आपने कैसे पहचान लिया कि route खराब है?”

“चेहरे से. Traveller का चेहरा और जवान का चेहरा दोनों sleep की कमी बता देते हैं.”

मैं हँस पड़ा।

* * *

बस अभी चली नहीं थी। यात्रियों की संख्या बढ़ रही थी।

एक महिला दो बच्चों के साथ आगे बैठीं।

एक college student headphones लगाए।

दो आदमी पीछे sacks जैसी गठरी रख रहे थे।

एक बुजुर्ग अपने हाथ में folded newspaper लिए खड़े रहे जब तक seat नहीं मिली।

Conductor बीच की संकरी जगह से गुजरता हुआ लोगों को आगे बैठने, bag हटाने और seat खाली करने के निर्देश देता रहा।

फिर engine की आवाज़ बदली।

Bus धीरे-धीरे पीछे हुई।

Horn.

एक झटका.

और Ayodhya road journey में बदल गई।

अयोध्या पीछे छूटती है

FROM PILGRIMAGE LANES TO THE HIGHWAY

Bus पहले शहर की सड़कों से धीरे निकली।

खिड़की से वही दुनिया अब अलग ऊँचाई से दिखाई दे रही थी।

सुबह जिन दुकानों के सामने मैं पैदल रुका था, अब वैसी ही दुकानें दो-तीन seconds में पीछे जा रही थीं।

भगवा झंडे.

मंदिरों की छोटी छवियाँ.

चाय की दुकानों पर खड़े लोग.

Cycle-rickshaw.

दोपहर की धूप में सिकुड़ती छाया.

फिर धीरे-धीरे religious market की density कम हुई।

Road के किनारे ordinary workshops आए। Tyre puncture. Welding. Tractor parts. Cement की दुकान. छोटे ढाबे.

शहर का आखिरी हिस्सा हमेशा tourist centre से ज्यादा सच बोलता है।

वहीं city pilgrimage से district town में बदलती है।

फिर मकान दूर होने लगे।

खेत दिखाई दिए।

Road खुली।

बस की गति बढ़ी।

खिड़की से गर्म हवा अंदर आने लगी।

उसमें मिट्टी की गंध थी।

कुछ जगह सूखी.

कुछ जगह खेतों की नमी.

कहीं जलते कचरे या पराली का हल्का smoke.

Train की खिड़की landscape को frame करती है।

Bus की खिड़की उसे almost छूने देती है।

किसी गाँव के बाहर बच्चे सड़क के किनारे खेलते दिखे।

एक tea stall के सामने चार लोग charpai पर बैठे।

Buffaloes पानी के छोटे गड्ढे के पास.

धान या दूसरी फसल के खेतों के बीच narrow tracks.

कहीं ईंट के भट्टे की ऊँची chimney.

कहीं मंदिर का छोटा शिखर पेड़ों के ऊपर.

यह postcard वाला Awadh नहीं था।

यह road वाला Awadh था।

"टिकट दिखाइए"

THE CONDUCTOR'S RHYTHM

Bus highway पर स्थिर हुई तो conductor ने अपना असली काम शुरू किया।

वह aisle में आगे से पीछे आया।

"कहाँ तक?"

"लखनऊ."

उसने fare बताया। मैंने पैसे दिए।

उसकी छोटी मशीन और पर्चियों की आवाज़ bus के engine के साथ मिल गई।

Ticket हाथ में आया।

मैंने तुरंत wallet में नहीं रखा।

कुछ seconds उसे देखता रहा।

इतनी यात्रा में tickets अपनी छोटी biography बनाने लगे थे।

Delhi.

Mathura.

Varanasi.

और backpack में वह पुराना Jaisalmer-Jaipur ticket.

मैंने bus ticket notebook के बीच रख दिया।

Conductor आगे चला गया।

कुछ देर बाद दूसरी तरफ से आवाज़ आई -

"टिकट दिखाइए।"

किसी passenger ने ticket ढूँढते-ढूँढते पूरा purse खाली कर दिया।

Conductor ने patiently wait किया।

फिर बोला -

"चढ़ते समय संभालकर रख लिया करो."

मैंने अपने notebook को थोड़ा दबाकर बंद किया।

Travel में सबसे छोटी चीज़ कभी-कभी सबसे जरूरी proof होती है।

रघुवीर सिंह की फौज

ARMY LIFE WITHOUT THE POSTCARD

रघुवीर सिंह ने पूछा -

"Moscow में क्या करते थे?"

मैंने संक्षेप में बताया और फिर अपनी यात्रा का route।

उन्होंने पूरा route सुनकर कहा -

“Posting list जैसी है.”

मैंने पूछा -

“आप कहाँ-कहाँ रहे?”

उन्होंने कई शहरों, cantonments और सीमावर्ती क्षेत्रों का नाम लिया। कुछ मुझे परिचित थे, कुछ नहीं।

मैंने पूछा -

“सबसे कठिन?”

उन्होंने तुरंत कोई युद्ध-कथा नहीं सुनाई।

बोले -

“Family से दूर रहना.”

मैं थोड़ा चुप रहा।

उन्होंने खिड़की से बाहर देखा।

“लोग Army सुनकर firing सोचते हैं. जवान का बहुत जीवन इंतज़ार भी है. Posting का. छुट्टी का. चिट्ठी का. Phone का. बच्चे बड़े हो रहे, आप कहीं और.”

“बच्चे?”

“दो. बेटा Lucknow में. बेटी शादी के बाद Kanpur side. दोनों कहते हैं अब आराम करो.”

“करते हो?”

वह हँसे।

“फौजी retire होता है, सुबह जल्दी उठना नहीं.”

* * *

मैंने पूछा -

“Discipline की सबसे useful चीज़?”

“समय.”

उन्होंने मेरी तरफ देखा।

“और आपकी यात्रा देखकर लगता है आप समय से दुश्मनी कर रहे.”

मैं हँसा।

“दस दिन हैं.”

“तो दस दिन में जितना हो उतना देखो. दस दिन को बीस मत बनाओ.”

यही बात कई लोग अलग-अलग शब्दों में कह चुके थे।

लेकिन उनके tone में आदेश की आदत थी।

मैंने पूछा -

“Army ने travel सिखाया?”

“Travel नहीं. सामान कम रखना सिखाया. जहाँ जाओ वहाँ पानी पहले देखो, सोने की जगह बाद में.”

“क्यों?”

“प्यासा आदमी दर्शन भी ठीक से नहीं करता.”

यह line शायद pilgrimage guide में होनी चाहिए।

रघुवीर सिंह की बात:
"फौज की कहानी सिर्फ बंदूक नहीं है. दूरी, इंतज़ार, परिवार और अनुशासन भी उतना ही हिस्सा हैं."

हमारी बातचीत politics पर नहीं गई।

मुझे अच्छा लगा।

हर retired soldier को national-security debate में बदलना उतना ही गलत होता जितना हर student को unemployment chapter बनाना।

वह पहले आदमी थे।

फिर सैनिक।

Awadh की सड़क

FIELDS, SMALL TOWNS AND WINDOW DUST

Bus आगे बढ़ती रही।

Road कभी smooth, कभी patchy.

हर speed-breaker पर पूरा compartment एक साथ हल्का-सा ऊपर उठता।

Driver को speed-breaker पहले दिखता या passengers को बाद में महसूस होता - कहना मुश्किल था।

खिड़की के शीशे के नीचे धूल की परत उँगली से line बनाने लायक थी।

मैंने line नहीं बनाई।

बस बाहर देखता रहा।

छोटे कस्बों में highway फिर market बन जाती।

दवा की दुकानें।

लोहे-सामान की दुकानें।

मिठाई की दुकानें।

स्कूल के बोर्ड।

निजी चिकित्सालय।

मोबाइल रिचार्ज।

सड़क के किनारे खड़े साझा टेम्पो।

बस हॉर्न देती हुई भीड़ के बीच निकलती।

एक जगह सब्ज़ी मंडी थी। हरे तिरपाल के नीचे सब्जियाँ। ठेलों के बीच गायें। लोगों के हाथ में कपड़े के थैले।

दूसरी जगह मरम्मत की दुकानों की कतार थी। टायर दीवार पर एक के ऊपर एक रखे थे। एक मिस्त्री ग्रीस लगे हाथ से चाय का गिलास पकड़कर खड़ा था।

फिर कस्बा खत्म।

फिर खेत।

यह क्रम बार-बार दोहराता रहा:

खेत - बाज़ार - घर - खेत.

सड़क यात्रा का संगीत यही था।

* * *

कहीं एक लंबी नहर सड़क के साथ-साथ चली। पानी पर धूप चमक रही थी। किनारे पेड़। एक लड़का साइकिल पर स्कूल बैग के साथ।

कुछ किलोमीटर बाद पेड़ों की shade सड़क पर टूटी हुई पट्टियों जैसी पड़ रही थी। Bus उनके बीच से गुजरती तो खिड़की के अंदर light लगातार बदलती - उजाला, छाया, उजाला, छाया.

रघुवीर सिंह ने बाहर देखते हुए कहा -

“इस belt को train से देखो तो अलग लगता है.”

“बस से बेहतर?”

“बेहतर नहीं. पास.”

Exact word.

Bus landscape के पास थी।

इतनी पास कि कभी दुकान का नाम पढ़ सकते थे।

कभी roadside dust चेहरे तक आती।

कभी गाँव के चूल्हे का smoke window से अंदर.

सड़क किनारे का विराम

TEA, PARATHA AND TEN MINUTES

कुछ समय बाद bus एक roadside ढाबे जैसी जगह पर रुकी।

Conductor ने ऊँची आवाज़ में कहा -

“दस मिनट.”

पूरी bus ने इस वाक्य को अलग-अलग अर्थ में लिया।

कुछ लोग तुरंत उतर गए।

कुछ बैठे रहे।

एक passenger ने पूछा -

“दस पक्का?”

Conductor बोला -

“पंद्रह मत करना.”

मैं और रघुवीर सिंह उतरे।

पैर जमीन पर रखते ही समझ आया कि bus seat ने walking की soreness छिपा रखी थी।

पहले दो steps धीरे पड़े।

फिर शरीर normal हुआ।

* * *

ढाबे के सामने खुला dusty area था। दो-तीन buses और trucks खड़े थे।

एक तरफ handpump.

दूसरी तरफ tea counter.

पीछे मिट्टी और cement का मिला-जुला floor.

तवा लगातार चल रहा था।

प्याज़ और मसाले की smell.

गर्म oil.

चाय की भाप.

Diesel.

Roadside India की perfume list.

मैंने chai और आधा aloo paratha लेने का सोचा।

रघुवीर सिंह ने कहा -

“पूरा लो. आधा खाने वाला bus में भूखा होगा.”

मैंने पूरा लिया।

Paratha steel plate में आया। साथ थोड़ा achar और dahi जैसी छोटी कटोरी।

यह restaurant presentation नहीं था।

लेकिन plate गर्म थी और मैं भूखा।

बस इतना काफी था।

Roadside food:

कड़क चाय + गरम आलू पराठा + थोड़ा अचार.

Bus journey में स्वाद का आधा हिस्सा भूख तय करती है।

पास वाले table पर driver और conductor जल्दी-जल्दी खाना खा रहे थे।

उनके लिए यह break यात्रा का दृश्य नहीं, काम का हिस्सा था।

यही फर्क traveller और transport worker में था।

हम याद बनाएँगे।

वे अगली trip के लिए energy ले रहे थे।

* * *

मैंने हाथ धोए। Backpack bus में seat के नीचे ही था, लेकिन छोटा pouch मैं साथ लाया था।

रघुवीर सिंह ने कहा -

“Bag bus में छोड़ते हो?”

“Main bag heavy है.”

“Valuable?”

“Documents small bag में हैं.”

उन्होंने सिर हिलाया।

“ठीक. Bus बदल जाए तो?”

मैंने पीछे खड़ी तीन almost-similar buses की तरफ देखा।

“फिर problem.”

“Number याद रखो.”

मैंने bus की पहचान दोबारा देखी।

फौजी practical था।

सड़क यात्रा की छोटी बातें

1. ढाबे पर उतरते समय bus की पहचान और parking position याद रखें.
2. Passport, wallet, phone और जरूरी कागज़ हमेशा अपने साथ रखें.
3. Conductor जितना समय बताए, उससे दो मिनट पहले वापस पहुँचना बेहतर है.
4. गर्मी में पानी की bottle खाली होने का इंतज़ार न करें.

एक खुला हुआ ज़िप

A SMALL THING I IGNORED

Bus में वापस चढ़ा तो मेरी seat वैसी ही थी।

Backpack नीचे।

बस एक चीज़ थोड़ी अलग लगी।

ऊपरी zipper पूरी तरह बंद नहीं था।

करीब दो इंच खुला।

मैंने bag उठाकर देखा।

Camera अंदर.

Power bank.

Clothes.

Notebook का दूसरा हिस्सा.

सब दिखाई दे रहा था।

मैंने सोचा शायद सुबह packing में ही ठीक से बंद नहीं किया।

या bus के झटकों में slider थोड़ा खिसक गया।

मैंने zip बंद कर दिया।

बस।

कोई dramatic feeling नहीं हुई।

कोई आदमी suspicious नहीं लगा।

मैंने seat ले ली।

Conductor ने door के पास खड़े होकर count किया।

फिर bus चल पड़ी।

मैंने बाहर देखते हुए उस छोटी बात को भूल गया।

लखनऊ की तरफ बदलता रास्ता

THE CITY BEGINS BEFORE THE CITY

दोपहर धीरे-धीरे ढलने लगी।

सड़क के आसपास बस्तियाँ घनी होने लगीं।

कस्बों के बीच का खाली अंतर छोटा होता गया।

ट्रैक्टरों के साथ कारें ज्यादा।

स्थानीय टेम्पो के साथ बड़ी बसें।

सड़क किनारे की दुकानें बड़ी होने लगीं।

पेट्रोल पंप ज्यादा बार दिखाई देने लगे।

बड़े विज्ञापन-पट।

गोदाम।

स्कूल की इमारतें।

नई बस्तियों के प्रवेश-द्वार।

किसी बड़े शहर का arrival station board से पहले शुरू हो जाता है।

पहले traffic बदलता है।

फिर buildings.

फिर लोगों की speed.

रघुवीर सिंह ने बाहर देखा और कहा -

“अब Lucknow का असर शुरू.”

मैंने पूछा -

“आपको city पसंद है?”

“रहने को? हाँ. Traffic छोड़कर.”

“हर city का यही answer है.”

“इसलिए लोग गाँव की तारीफ city में बैठकर करते हैं.”

मैं हँसा।

* * *

उन्होंने Lucknow के बारे में practical सूची दी:

“Imambara देखना. भूलभुलैया. Residency अगर history में interest है. Hazratganj walk करना. खाना बिना जल्दी.”

“एक दिन.”

उन्होंने मेरी तरफ देखा।

फिर कुछ नहीं कहा।

उनकी चुप्पी judgement से ज्यादा effective थी।

मैंने surrender किया।

“हाँ, पता है.”

वह हँस पड़े।

लखनऊ का पहला दृश्य

ARRIVAL BY ROAD

Ayodhya से Lucknow का सबसे बड़ा फर्क पहली नज़र में scale था।

यातायात का फैलाव बढ़ा।

सड़कों पर ज्यादा पट्टियाँ थीं।

कारों की संख्या बढ़ी।

दूर ऊँचे सड़क-पुल दिखाई देने लगे।

दुकानों के बोर्ड बड़े।

यातायात संकेत।

हेलमेट पहने रोज़ आने-जाने वाले लोग।

दफ्तर के बैग।

साझा ऑटो।

Bus अब छोटे कस्बों वाली बस कम और city traffic का हिस्सा ज्यादा लग रही थी।

खिड़की से आने वाली हवा भी बदल गई।

खेतों की मिट्टी की जगह धुएँ की गंध।

ढाबे की smoke की जगह यातायात का धुआँ।

पेड़ों के बीच road की जगह इमारतों के बीच सड़क।

Awadh खत्म नहीं हुआ था।

उसने शहर का कपड़ा पहन लिया था।

* * *

रघुवीर सिंह उतरने की तैयारी करने लगे।

उनका stop मेरे पहले था।

उन्होंने canvas bag नीचे उतारा।

मैंने पूछा -

“फिर मिलेंगे?”

उन्होंने कहा -

“Travel में यह मत पूछो. मिल गए तो अच्छा.”

फिर हाथ मिलाया।

“और एक सलाह.”

“जी?”

“अगले तीन दिन का route आज रात मत बदलना.”

“क्यों?”

“आपको देखकर लगता है हर शहर में दो जगह extra जोड़ते हो.”

मैं हँसा।

“कोशिश करूँगा.”

“फौज में ‘कोशिश’ answer नहीं होता.”

“ठीक है. नहीं बदलूँगा.”

वह satisfied होकर उतरे।

मैंने window से उन्हें road cross करते देखा।

कुछ seconds बाद crowd में गायब।

एक और stranger यात्रा का हिस्सा बनकर उतर गया।

बस से उतरने के बाद

THE BAG CHECK

मेरी bus आखिर Lucknow के बड़े bus-terminal area में पहुँची।

Engine बंद नहीं हुआ था कि passengers उठने लगे।

ऊपर से bags.

Seat के नीचे से सामान.

Door की तरफ line.

परिचालक फिर आवाज़ दे रहा था -

“सामान देख लो.”

मैंने backpack उठाया।

आज पहली बार वह इतना भारी नहीं लगा।

शायद इसलिए कि पूरा दिन walking नहीं कर रहा था।

बस से नीचे उतरा।

Lucknow की आवाज़ तुरंत घेरने लगी।

Autos.

Rickshaws.

Bus horns.

Vendors.

यात्री अपने रिश्तेदारों को फोन करते हुए।

किसी ने पूछा -

“Hotel?”

मैंने मना किया।

पहले side में खड़े होकर पानी पिया।

फिर habit के अनुसार bag check किया।

पासपोर्ट वाला छोटा थैला।

बटुआ।

कैमरा।

चार्जर।

नीली डायरी।

सब था।

मैंने diary उठाई और एक second के लिए पुराने train ticket वाले page को check किया।

Page था।

टिकट नहीं।

मैंने दोबारा देखा।

फिर backpack की छोटी pocket.

Notebook.

Side compartment.

कपड़ों के बीच.

कुछ नहीं।

वही faded Jaisalmer-Jaipur ticket - जिसके पीछे लिखा था:

10 - 3 - 7 - 1

गायब था।

* * *

मैंने तुरंत कोई conspiracy नहीं बनाई।

संभावनाएँ साधारण थीं।

वाराणसी में कहीं गिरा?

अयोध्या के होटल में रह गया?

बस में पन्ने से निकल गया?

ढाबे के विराम पर बैग की ज़िप खुली थी - लेकिन उससे कुछ साबित नहीं होता।

मैंने blue diary बंद की।

बाकी सब सामान सुरक्षित था।

टिकट पुराना था। उसकी आर्थिक कीमत लगभग शून्य थी।

लेकिन अब तक journey में उसकी value अलग बन चुकी थी।

मैंने नोटबुक में सिर्फ लिखा:

पुराना जैसलमेर-जयपुर टिकट गायब।

फिर नीचे -

पहले होटल पहुँचो।

यह travel था।

हर missing object को उसी minute solve नहीं किया जा सकता।

और Lucknow मेरे सामने था।

मैंने backpack कंधे पर डाला।

सड़क की तरफ बढ़ा।

अगले कुछ घंटे इमामबाड़ा, पुराने दरवाज़ों, कबाब की खुशबू और अवधी शहर के नाम थे।

Ticket की चिंता बाद में।

* * *

CHAPTER THIRTEEN

लखनऊ की भूलभुलैया

THE LABYRINTH OF LUCKNOW

लखनऊ - चौक, हुसैनाबाद और पुराना शहर

Day Four Evening - Day Five Morning

“कुछ शहर अपने दरवाज़ों से पहचाने जाते हैं। लखनऊ में दरवाज़ा पार करते ही भाषा, चाल और समय - तीनों थोड़ा धीमे हो जाते हैं।”

अयोध्या से आने वाली बस ने मुझे लखनऊ में उतारा तो दिन ढलने लगा था।

पहली अनुभूति किसी इमारत की नहीं, फैलाव की थी।

अयोध्या की गलियों के बाद यहाँ सड़कें चौड़ी लग रही थीं। गाड़ियों की संख्या ज्यादा थी। लोगों की चाल में शहर वाला जल्दीपन था, लेकिन उस जल्दीपन के बीच किसी पुराने ढंग की नरमी भी थी।

एक तरफ बसें धुआँ छोड़ रही थीं। दूसरी तरफ चाय वाले के सामने लोग आराम से खड़े थे।

हॉर्न तेज़ थे। बातचीत धीमी।

मैंने बैकपैक ठीक किया और पहले होटल की तरफ निकला।

पुराना जैसलमेर-जयपुर टिकट गायब था, लेकिन मैंने खुद से तय किया था - पहले शहर, बाद में टिकट।

लखनऊ में पहला काम रहस्य सुलझाना नहीं था।

पहला काम था:

शहर की चाल पकड़ना।

* * *

सवारी में बैठते ही चालक ने पूछा -

“किधर?”

मैंने अपने सस्ते होटल का नाम बताया।

उसने पूछा -

“घूमने आए?”

“हाँ।”

“तो बड़ा इमामबाड़ा देखना. भूलभुलैया बिना मार्गदर्शक मत घुसना.”

मैंने हँसकर कहा -

“इतनी जल्दी चेतावनी?”

वह बोला -

“लखनऊ में रास्ता पूछना तहज़ीब है। भूलभुलैया में रास्ता भूलना परंपरा।”

मैंने पहली पंक्ति नोटबुक में लिखने का मन बनाया।

फिर सोचा, होटल पहुँचने दो।

शाम का लखनऊ

THE CITY BEFORE THE MONUMENTS

होटल बहुत साधारण था। छोटा स्वागत-कक्ष, पुरानी सीढ़ियाँ, कमरे में बिस्तर, पंखा, बाल्टी और दीवार पर थोड़ा टेढ़ा आईना.

मेरे लिए बिल्कुल ठीक।

बैकपैक रखते ही मैंने जूते नहीं उतारे।

बस छोटा थैला लिया और बाहर निकल आया।

पूरे दिन बस में बैठने के बाद शरीर चलना चाहता था।

यह विरोधाभास मुझे पसंद आई।

अयोध्या में पैरों ने शिकायत की थी। लखनऊ पहुँचते ही वही पैर बाहर जाने को तैयार थे।

* * *

शाम की हवा में शहर का पुराना हिस्सा धीरे-धीरे खुलता गया।

सड़क के किनारे दुकानें थीं, लेकिन उनकी बनावट आधुनिक बाज़ार जैसी एक सी नहीं थी। कहीं पतली दुकान, कहीं गहरी पुरानी दुकान जिसके अंदर रोशनी कम थी। कहीं ऊपर रिहायशी बालकनी, नीचे दुकान।

किसी बेकरी से मीठी रोटी की खुशबू।

कहीं तवे पर कबाब की खुशबू.

कहीं इत्र.

कहीं पान.

कहीं चाय.

लखनऊ को नाक से भी पढ़ा जा सकता था।

मैं एक चाय की दुकान पर रुका।

दुकानदार ने पूछा -

“पहली बार?”

मैंने कहा -

“चेहरे से इतना साफ दिखता है?”

“आप ऊपर ज्यादा देख रहे हो.”

मैं सच में दुकानों के बोर्ड, बालकनियाँ और पुराने मुखभाग देख रहा था।

स्थानीय आदमी ऊपर कम देखता है। उसे पता होता है वहाँ क्या है।

* * *

चाय के साथ उसने पूछा -

“कल कहाँ?”

“बड़ा इमामबाड़ा.”

“सुबह जाना। धूप से पहले। फिर रूमी दरवाज़ा पैदल देखना।”

“और खाना?”

उसने मुस्कुराकर कहा -

“वह सवाल सही पूछा।”

उसने कई नाम गिना दिए। मैं सब नहीं लिख पाया।

फिर उसने कहा -

“एक चीज़ याद रखो - लखनऊ में प्रसिद्ध खाना ढूँढना आसान है, खाली पेट रहना मुश्किल।”

यह शहर मुझे पसंद आने लगा था।

पहली स्थानीय सलाह:
सुबह विरासत देखने निकलो, दोपहर खाने और गलियों के लिए बचाओ। पुराना लखनऊ तेज़ कार्यक्रम से नहीं खुलता।

सुबह की चौक वाली दिशा

OLD LUCKNOW WAKES DIFFERENTLY

अगली सुबह मैं जल्दी निकल गया।

लखनऊ का सुबह वाला चेहरा शाम से अलग था।

मुख्य सड़क पर यातायात कम था, लेकिन पुराने शहर की ओर हलचल शुरू हो चुकी थी।

दूध की गाड़ियाँ।

साइकिल।

छोटी सामान पहुँचाने वाले ठेले.

दुकानों के आगे पानी छिड़कते लोग.

पहली कड़ाही चढ़ती हुई.

चाय के गिलासों की खनक.

एक मस्जिद से आती अज़ान दूर तक जा रही थी। कहीं मंदिर की घंटी भी सुनाई दी।

शहर अपने अलग-अलग धार्मिक और रोज़मर्रा के सुरों में जाग रहा था।

मैंने एक छोटी दुकान से बन-मक्खन और चाय ली।

दुकानदार ने बन को बीच से काटकर तवे पर सेंका, मक्खन लगाया और प्लेट मेरी तरफ बढ़ा दी।

नाश्ता इतना सादा था कि उसका कोई फोटो लेने लायक दावा नहीं था।

लेकिन गर्म बन, पिघलता मक्खन और मीठी चाय - सुबह की पैदल चलना के लिए काफी थे।

मैंने पूछा -

“बड़ा इमामबाड़ा पैदल?”

उसने कहा -

“हो जाएगा. रास्ता पूछते जाना.”

एक और शहर.

एक और वही निर्देश।

बड़ा इमामबाड़ा - पहली झलक

THE ASAFI IMAMBARA

पुराने शहर के बीच से चलते हुए अचानक बड़े स्थापत्य की पहली झलक हमेशा थोड़ा झटका देती है।

गलियों, दुकानों और छोटे मुखभागs के बाद जब बड़ा इमामबाड़ा सामने आया, तो पहला शब्द मेरे दिमाग में था -

विस्तार।

द्वार से भीतर का दृश्य सड़क से बिल्कुल अलग अनुपात में था।

बाहर शहर सिमटा हुआ थी.

अंदर आसमान खुल गया.

ऊँचे मेहराबें.

लंबा मुखभाग.

दूर तक फैला आँगन.

किनारे धार्मिक इमारतें।

और बीच में आगंतुक धीरे-धीरे छोटे लगने लगे।

मैं कुछ क्षण प्रवेश-द्वार के अंदर ही खड़ा रहा।

आगे बढ़ने की जल्दी नहीं की।

वास्तुकला को समझने का पहला तरीका उसके अनुपात को अपने शरीर से महसूस करना है।

आप कितना छोटा महसूस कर रहे हो?

यह इमारत उसका उत्तर दे रही थी।

* * *

एक अधिकृत मार्गदर्शक पास आया।

“भूलभुलैया?”

मैंने पूछा -

“पहले सभागार.”

उसने सहमति में सिर हिलाया।

“सही. लोग सीधा भूलभुलैया भागते हैं. नीचे का इमामबाड़ा समझे बिना ऊपर सिर्फ भूलभुलैया लगेगा.”

उसका नाम **सलीम** था।

मैंने कहा -

“इतिहास बताना, कहानी अलग बताना.”

वह हँसा।

“पर्यटक हो या परीक्षक?”

“पुस्तक लिख रहा हूँ.”

“फिर दोनों बताऊँगा. बस लिखना कौन-सी इतिहास है, कौन-सी लोककथा.”

मुझे यह आदमी तुरंत पसंद आया।

ऐतिहासिक आधार:
बड़ा इमामबाड़ा नवाब आसफ़-उद-दौला से जुड़ा अठारहवीं सदी का विशाल परिसर है। उत्तर प्रदेश पर्यटन के सार्वजनिक विवरण के अनुसार इसका निर्माण अकाल के समय रोजगार देने के उद्देश्य से भी जोड़ा जाता है। परिसर में आसफ़ी मस्जिद, शाही बावली और ऊपर की प्रसिद्ध भूलभुलैया शामिल हैं।

वह विशाल हॉल

THE HALL THAT CHANGES YOUR VOICE

मुख्य हॉल में प्रवेश करते ही तापमान थोड़ा बदलता महसूस हुआ।

बाहर सुबह की धूप थी। अंदर मोटी दीवारें और ऊँची छत के कारण हवा शांत और ठंडी-सी लगी।

मेरी गर्दन अपने-आप ऊपर उठी।

हॉल की सबसे बड़ी बात सजावट नहीं थी।

उसका खालीपन था।

एक बड़ा खुला आकार, जिसमें आपकी आवाज़ तुरंत अपने आकार का एहसास दिलाती है।

लोग धीरे बोल रहे थे।

फिर भी आवाज़ दूर तक जाती महसूस होती थी।

मैंने हाथ से दीवार नहीं छुई। बस पास जाकर ईंट-पलस्तर की सतह को देखा।

इतनी बड़ी छत को देखते हुए निर्माण-कौशल का सवाल अपने-आप आता है - इसे खड़ा कैसे रखा गया?

सलीम ने ऊपर इशारा किया।

“यही तो खासियत है.”

उसने संरचनात्मक बनावट समझाई - ऊपर के गलियारे और खाली आंतरिक हिस्से किस तरह भार बाँटने में भूमिका निभाते हैं।

मैं तकनीकी बारीकियाँ को पूरी तरह समझने का दावा नहीं कर सकता था।

लेकिन इतना साफ था:

भूलभुलैया केवल पर्यटक-कौशल का खेल नहीं थी; वह इमारत की वास्तुकला से पैदा हुई थी।

* * *

सभागार में कुछ शिया श्रद्धालु सम्मान से खड़े थे।

सलीम की आवाज़ भी वहाँ धीमी हो गई।

उसने कहा -

“यह सिर्फ स्मारक नहीं। धार्मिक जगह भी है। घूमो, लेकिन उसी हिसाब से।”

मैंने सिर हिलाया।

यात्रा में यह बात बार-बार याद रखना जरूरी है।

किसी जगह का ऐतिहासिक महत्व आगंतुक को उसके जीवित धार्मिक अर्थ से ऊपर नहीं रखता।

एक पर्यटक के लिए वास्तुकला.

किसी श्रद्धालु के लिए स्मरण.

दोनों एक ही सभागार में मौजूद थे।

शाही बावली

WATER, SHADOW AND OLD ENGINEERING

मुख्य संरचना से बाहर निकलकर हम शाही बावली की तरफ गए।

यहाँ वातावरण फिर बदल गया।

खुले आँगन की तेज़ रोशनी से नीचे उतरते हुए छायाएँ गहरी होने लगीं।

पत्थर की सीढ़ियाँ.

मेहराबदार रास्ते.

ठंडी दीवारें.

कहीं पानी का गहरा जल.

ऊपर से आने वाली रोशनी पतली धारियों में नीचे गिरती।

ऐसी जगह पर कैमरा अच्छा काम कर सकता है, लेकिन आँख को रोशनी समझने में ज्यादा मज़ा आता है।

सलीम ने एक जगह खड़े होकर बताया कि पुराने समय में बावली जल-व्यवस्था का हिस्सा थी और इसके साथ कई स्थानीय कथाएँ जुड़ी हैं।

फिर खुद जोड़ा -

“कुछ बात अभिलेख में है, कुछ लोग बताते आए हैं. दोनों एक नहीं.”

मैंने कहा -

“आप हर बार इतनी सफाई क्यों देते?”

“क्योंकि मार्गदर्शक अगर कहानी को तथ्य बोल दे तो पर्यटक घर जाकर विद्वान बन जाता है.”

मैं हँस पड़ा।

यह पंक्ति अध्याय में रहने वाली थी।

* * *

बावली के भीतर कदमों की आवाज़ अलग थी।

ऊपर के खुले आँगन में आवाज़ फैलती थी। यहाँ वह पत्थर की सतहों से टकराकर लौटती थी।

कुछ मोड़s में हवा स्पष्ट ठंडी थी।

मैंने सोचा - पुराने शहरों की वास्तुकला मौसम से लड़ती नहीं थी; उसके साथ तालमेल बैठाती थी।

छाया।

मोटी दीवारें।

पानी।

आँगन।

यह सुंदरता के साथ उपयोगिता भी थी।

भूलभुलैया की पहली सीढ़ी

UP INTO THE LABYRINTH

फिर वह हिस्सा आया जिसके लिए अधिकांश आगंतुक सबसे ज्यादा उत्साहित थे।

भूलभुलैया।

ऊपर जाने वाली सीढ़ियाँ शुरू हुईं।

पहले चौड़ी।

फिर संकरी।

फिर रोशनी बदलती हुई.

कुछ गलियारे इतने सीधे कि लगे आसान है।

फिर अचानक दो रास्ते.

फिर तीन.

फिर ऐसा मोड़ जहाँ पीछे मुड़कर भी वही दीवारें दिखें।

मैंने सलीम से कहा -

“मार्गदर्शक के बिना सच में लोग खो जाते?”

“खोना बड़ा शब्द है। घूमते रहते हैं। फिर किसी मार्गदर्शक के समूह में शामिल हो जाते हैं।”

“तो रोज़गार का तरीका बढ़िया है।”

वह हँसा।

“नवाब ने नहीं सोचा होगा।”

* * *

गलियारों की सबसे दिलचस्प चीज़ अँधेरा नहीं था।

रोशनी थी।

कहीं सामने छोटे छेद से तेज़ रोशनी आती।

कहीं ऊपर छोटा रोशनदान.

कहीं पूरी दीवार छाया में.

आप कुछ कदम चलते और दृश्य अनुपात बदल जाता।

छोटे रास्ते अचानक छत पर खुल जाते।

फिर छत से वापस संकरा गलियारा।

शरीर को बार-बार अनुपात ढालना करना पड़ता।

एक क्षण खुला आसमान।

दूसरे क्षण दो दीवारों के बीच कंधे भर चौड़ा गलियारा।

इसीलिए भूलभुलैया सिर्फ दिशा का खेल नहीं थी।

वह स्थान का खेल थी।

भूलभुलैया की यात्रा:
संकरे गलियारे + अचानक खुलती छत + अलग-अलग ऊँचाई + बदलती रोशनी = रास्ता सिर्फ नक्शा से नहीं, शरीर से याद होता है।

दीवार के पार की आवाज़

ACOUSTICS WITHOUT MAGIC

सलीम हमें एक खास जगह पर ले गया।

उसने समूह के एक आदमी को दूसरी तरफ खड़ा किया और धीरे बोलने को कहा।

आवाज़ आश्चर्यजनक रूप से साफ आई।

कुछ लोगों ने तुरंत इसे “गुप्त व्यवस्था” कहा।

सलीम ने हाथ उठाया।

“जादू नहीं. संरचना और ध्वनि-विज्ञान.”

मुझे उसका जवाब पसंद आया।

भारत में पुरानी इमारत के साथ दो गलतियाँ अक्सर होती हैं:

एक - उसे साधारण मानकर उसकी निर्माण-कौशल को कम समझना।

दूसरी - निर्माण-कौशल को इतना रहस्यमय बना देना कि असली कारीगरी गायब हो जाए।

यहाँ रोमांच के लिए अलौकिक व्याख्या की जरूरत नहीं थी।

वास्तुकला अपने-आप में काफी थी।

* * *

एक संकरे गलियारे में सामने से दूसरा समूह आया।

दोनों समूहों को एक-दूसरे से निकलने के लिए दीवारों से सटना पड़ा।

एक बच्चा अपने पिता से बोला -

“पापा, हम खो गए?”

पिता ने कहा -

“मार्गदर्शक है.”

बच्चे ने मार्गदर्शक को देखा।

“अगर मार्गदर्शक खो गया?”

सलीम ने पीछे से कहा -

“फिर मैं नौकरी बदल दूँगा.”

पूरा समूह हँस पड़ा।

छत से लखनऊ

THE OLD CITY FROM ABOVE

कुछ देर बाद गलियारा एक खुली छत पर निकला।

यह पूरे भ्रमण का मेरा प्रिय क्षण था।

नीचे इमामबाड़े का आँगन.

दूर पुराने लखनऊ की छतें।

मीनारें.

गुम्बद.

दूर यातायात.

कहीं पेड़ों की कतार।

कहीं घनी इमारतें.

और उनके बीच शहर की हवा।

ऊपर खड़े होकर रूमी दरवाज़े की दिशा समझ आ रही थी।

ज़मीन से स्मारक अलग-अलग लगते हैं।

ऊपर से वे एक ही ऐतिहासिक परिदृश्य का हिस्सा दिखाई देते हैं।

मैं मुंडेर से उचित दूरी पर खड़ा रहा और कुछ देर नीचे देखता रहा।

छतों की सतहें धूप पकड़ चुकी थीं।

कुछ गुम्बद चमक रहे थे।

पुराने मकानों की छतों पर पानी की टंकियाँ आधुनिक जोड़ की तरह बैठे थे।

इतिहास और वर्तमान सचमुच एक ही दृश्य में थे।

* * *

सलीम ने पूछा -

“तस्वीर नहीं?”

“पहले देख रहा हूँ.”

“अच्छा है. लोग कैमरा में शहर ले जाते हैं, आँख में कम.”

मैंने कहा -

“यह पंक्ति मेरी नहीं है, लेकिन मेरी यात्रा में बार-बार आ रही है।”

उसने कहा -

“फिर सही होगी.”

रूमी दरवाज़ा

A GATE THAT OUTGREW ITS ROAD

इमामबाड़े से निकलकर मैंने रूमी दरवाज़े की तरफ पैदल जाना चुना।

दूरी छोटी थी, लेकिन पैदल चलना जरूरी था।

स्मारक को वाहन की खिड़की से देखने और उसके नीचे खड़े होने में फर्क है।

जैसे-जैसे पास पहुँचा, मेहराब का अनुपात बढ़ता गया।

दूर से वह चित्र जैसा था।

पास से पत्थर-ईंट की बनावट.

और बिल्कुल नीचे - उसका असली अनुपात।

ऊपर सजावटी रूप, आले और परतदार बाहरी रेखा.

नीचे सड़क।

उसके बीच से गुजरता आज का यातायात।

यह विरोधाभास थोड़ा मज़ेदार भी था।

अठारहवीं सदी का भव्य प्रवेश-द्वार और नीचे आज के हॉर्न।

एक आदमी स्कूटर पर फोन पकड़े निकल रहा था।

दूसरी तरफ पर्यटक ऊपर देख रहा था।

वास्तुकला वहीं खड़ी थी।

शहर उसके उपयोग का अर्थ बदल चुका था।

ऐतिहासिक टिप्पणी:
उत्तर प्रदेश पर्यटन के अनुसार रूमी दरवाज़ा नवाब आसफ़-उद-दौला के समय अठारहवीं सदी में बनवाया गया भव्य प्रवेश-द्वार है और पुराना लखनऊ लंबे समय से इसकी पहचान से जुड़ा रहा है।

मैं सड़क के किनारे सुरक्षित जगह खड़ा होकर मेहराब को देखता रहा।

मार्गदर्शक नहीं था।

बस यातायात.

एक पुलिस वाला.

दो पर्यटकs.

और छाया में पानी बेचता आदमी.

मैंने पानी की बोतल ली।

उसने पूछा -

“कहाँ से?”

“महाराष्ट्र.”

“लखनऊ कैसा?”

मैंने कहा -

“अभी तक पेट और वास्तुकला दोनों खुश.”

वह हँस पड़ा।

हुसैनाबाद की तरफ

A ROAD LINED WITH HISTORY

मैं आगे हुसैनाबाद की ओर चला।

यहाँ एक स्मारक खत्म होते ही दूसरा ऐतिहासिक दृश्य शुरू हो जाता था।

गुम्बद।

घंटाघर की दिशा।

पुराने मुखभाग।

धार्मिक इमारतें।

सड़क किनारे के विक्रेता।

कहीं तस्वीर लेने के लिए रुके लोग।

कहीं स्थानीय आदमी बिना ऊपर देखे अपने काम पर.

यह वही फर्क था जो मैंने अयोध्या में महसूस किया था:

आगंतुक स्मारक देखता है।

स्थानीय आदमी उसी स्मारक के पास से दूध लेने निकलता है।

दोनों की शहर एक ही है, लेकिन नक्शा अलग।

* * *

एक छोटी इत्र की दुकान के सामने रुका।

अंदर अलमारियों पर छोटी बोतलें थीं।

दुकानदार ने कागज़ की पट्टी पर हल्की खुशबू लगाकर दी।

“ज्यादा नहीं. पहले सूंघो.”

मैंने पूछा -

“स्थानीय लोग अभी भी इत्र लेते हैं?”

“क्यों नहीं? इत्र आया तो इत्र खत्म थोड़े होगा.”

फिर बोला -

“लखनऊ में नई चीज़ आने का मतलब पुरानी चीज़ का अंत नहीं।”

मैंने उस वाक्य को पूरे शहर पर लागू किया।

नई सड़क.

पुराना दरवाज़ा।

आधुनिक कपड़े।

पुरानी तहज़ीब के किस्से.

नया मोबाइल।

पुराना इत्र.

शहर दो हिस्सों में बँटा नहीं था।

दोपहर का लखनऊ - खाना

AWADH ON A PLATE

इतनी पैदल चलना के बाद दोपहर का खाना कोई वैकल्पिक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं था।

जरूरत थी।

पुराने लखनऊ में खाने की खुशबू रास्ता तय कर सकती है।

एक तरफ तवे पर कबाब.

दूसरी तरफ तंदूर.

कहीं शीरमाल की हल्की मिठास.

कहीं बिरयानी की भाप.

मैंने एक भीड़भरी लेकिन साधारण जगह चुनी।

यहाँ मेज़ छोटी थीं और लोग जल्दी जगह बदल रहे थे।

मैंने गलौटी कबाब, पराठा और साथ में प्याज़-नींबू लिया।

पहला कौर बहुत मुलायम था।

मसाला तेज़ नहीं, परतदार.

पराठे की भरपूरता अलग थी।

मैंने तुरंत समझा कि लखनऊ के खाने को सिर्फ "तीखा" कहना उसके साथ अन्याय है।

यह बनावट का खाना था।

खुशबू का.

धीमी आँच की स्मृति का.

* * *

मेरे सामने बैठा एक युवा दफ्तर का पहचान-पत्र पहने था।

उसने पूछा -

"पहली बार?"

मैंने हँसकर कहा -

"फिर वही."

वह बोला -

"खाने के चुनाव से पता चल गया."

"क्या गलत?"

"गलत नहीं। पर्यटक की पहली पसंद।"

मैं हँसा।

उसका नाम **अदनान** था। पास की एक निजी कंपनी में काम करता था।

मैंने पूछा -

“आप क्या खाते?”

“जो घर में मिलता.”

फिर मुस्कुराकर बोला -

“प्रसिद्ध चीज़ स्थानीय आदमी रोज़ नहीं खाता। मुंबई वाला रोज़ वड़ा पाव खाता है क्या?”

मैंने कहा -

“बात सही थी।”

हमने खाने पर बात की, फिर यातायात पर, फिर किराए पर।

वही क्रम।

पर्यटक स्वाद देखता है। स्थानीय आदमी महीने का बजट।

अदनान ने कहा -

“लखनऊ की तहज़ीब का सबसे ज्यादा नुकसान किसने किया, पता है?”

मैंने सोचा वह राजनीति बोलेगा।

उसने कहा -

“यातायात।”

“कैसे?”

“पहले ‘आप जाइए’ बोलते थे। अब बत्ती हरी हुई तो ‘आप हटिए’।”

मैं जोर से हँसा।

यह शायद पूरे शहर की सबसे सच्ची आधुनिकता की व्याख्या थी।

भूलभुलैया से बाहर, शहर के भीतर

WHAT THE MONUMENT TAUGHT ME

दोपहर के खाने के बाद मैं धीमी चाल पर निकला।

सुबह की स्मारकों की सूची पूरी हो चुकी थी। अब बिना सूची के शहर देखना था।

मैंने महसूस किया कि बड़ा इमामबाड़ा और भूलभुलैया ने लखनऊ को देखने का तरीका दे दिया था।

ऊपर भूलभुलैया में हर मोड़ के बाद नया गलियारा मिलता था।

नीचे शहर में भी वही था।

एक सड़क से पुराना बाज़ार।

पुराने बाज़ार से रिहायशी गली।

गली से मस्जिद।

मस्जिद के सामने चाय की दुकान।

चाय की दुकान के बाद आधुनिक दुकान।

फिर अचानक पुरानी मेहराब।

लखनऊ खुद भी एक भूलभुलैया था।

बस मार्गदर्शक अलग था:

लोग।

* * *

एक छोटी किताबों की दुकान पर पुराने पोस्टकार्ड दिखे।

मैंने कोई नहीं खरीदा।

लेकिन दुकानदार से पूछा -

“पुराना लखनऊ कितना बचा?”

उसने कहा -

“आप इमारत पूछ रहे या आदत?”

मैंने कहा -

“दोनों.”

“इमारतें कम होंगी। आदतें भी कम होंगी। लेकिन खत्म नहीं।”

फिर उसने मुझे बाकी पैसे वापस देते हुए कहा -

“पहले आप.”

मैंने कहा -

“तहज़ीब अभी यहीं है.”

वह हँसा।

पुरानी रेज़िडेंसी की ओर एक छोटा मोड़

A DIFFERENT LAYER OF LUCKNOW

दिन में समय थोड़ा बचा था, इसलिए मैं रेज़िडेंसी की दिशा की दिशा में भी गया।

यहाँ लखनऊ का रंग फिर बदल गया।

इमामबाड़े की नवाबी भव्यता और पुराने शहर की भीड़ पीछे छूट गई थी।

रेज़िडेंसी परिसर के आसपास इतिहास का दूसरा अध्याय था - औपनिवेशिक सत्ता, 1857 की लड़ाई और घेराबंदी की स्मृति।

मैंने इस हिस्से को जल्दी में समेटने की कोशिश नहीं की।

जो कुछ देखा, उसे बस पहली छाप की तरह रखा:

खंडहर.

पेड़.

दीवारों पर समय के निशान.

खुले मैदान।

और उस शांति के भीतर हिंसा की पुरानी स्मृति।

कुछ ऐतिहासिक स्थान आपको तस्वीर लेने से ज्यादा पढ़ने के लिए कहते हैं।

रेज़िडेंसी उन्हीं में से थी।

मैंने तय किया कि इसे पुस्तक में एक लंबा व्याख्यान नहीं बनाऊँगा।

बस इतना कि लखनऊ केवल नवाबों और कबाबों का शहर नहीं है।

यह 1857 की सबसे गहरी शहरी स्मृतियाँ में से एक भी रखता है।

शाम - हज़रतगंज की चाल

A CITY CHANGES CLOTHES

शाम होते-होते मैं हज़रतगंज की तरफ पहुँचा।

यह वैसा पुराना लखनऊ नहीं था जैसा सुबह की गलियों में दिखा था।

यह शहर का दूसरा सार्वजनिक चेहरा था।

दुकानें ज्यादा व्यवस्थित थीं।

पैदल-पथ पर पैदल चलना भीड़.

परिवार.

विद्यार्थी.

दफ्तर से निकलते लोग.

रोशन बोर्ड.

कॉफी, कपड़े, किताबें और सड़क का नाश्ता।

पुराने लखनऊ की खुशबुओं से भरी गलियों के बाद यहाँ सजी हुई चमक ज्यादा थी।

फिर भी कहीं-कहीं भाषा वही थी:

“पहले आप.”

“नहीं, आप.”

कभी सचमुच दिल से।

कभी आदतन.

कभी यातायात में पूरी तरह गायब.

* * *

मैंने चाय की दुकान पर रुककर चाय ली।

पास दो युवक मीडिया और राजनीति पर बहस कर रहे थे।

एक कह रहा था कि टेलीविज़न हर बात को बढ़ा देता है।

दूसरा कह रहा था कि सोशल मीडिया उससे भी खराब है।

मैंने बातचीत में हिस्सा नहीं लिया।

बस सुना।

कल शायद ऐसी ही किसी बातचीत में मुझे उतरना था।

आज नहीं।

आज का दिन वास्तुकला और शहर का था।

रात का नोट

NO CLUE, JUST A CITY

होटल लौटकर मैंने जूते उतारे और बिस्तर पर बैठ गया।

बैकपैक खोला।

नीली डायरी वहीं थी।

पुराना टिकट अब भी गायब था।

मैंने डायरी को बाहर निकाला।

कुछ क्षण देखा।

फिर वापस रख दिया।

ना कोई नया संकेत.

ना कोई संदिग्ध आदमी.

ना कोई छिपा संदेश.

ठीक था।

लखनऊ ने रहस्य के बिना ही दिन भर मेरा पूरा ध्यान माँगा था।

* * *

नोटबुक में लिखा:

बड़ा इमामबाड़ा - अनुपात.

भूलभुलैया - स्थान.

शाही बावली - छाया.

रूमी दरवाज़ा - अनुपात।

पुराना लखनऊ - खुशबू।

खाना - मुलायमपन।

लोग - हास्य।

फिर नीचे हिन्दी में एक पंक्ति:

“लखनऊ की भूलभुलैया से बाहर निकल आया था।
लेकिन शहर की गलियों में भटकना अभी बाकी था।”

अगले दिन का एक नाम नोटबुक में पहले से था:

एक पत्रकार।

लेकिन उससे मिलने से पहले मुझे अच्छी नींद चाहिए थी।

लखनऊ की तहज़ीब अपनी जगह थी।

मेरे पैरों की हालत अपनी।

CHAPTER FOURTEEN

चाय की दुकान पर पत्रकार

THE REPORTER AT THE TEA STALL

लखनऊ - हज़रतगंज से चारबाग की ओर

Day Five - Morning

“खबर और शहर - दोनों को दूर से देखो तो शीर्षक दिखता है; पास जाओ तो लोग।”

लखनऊ की अगली सुबह किसी स्मारक की नहीं थी।

बड़ा इमामबाड़ा, भूलभुलैया, रूमी दरवाज़ा और पुरानी गलियाँ पिछले दिन अपना काम कर चुकी थीं। आज मुझे शहर की वह परत देखनी थी जो दीवारों में नहीं, बातचीत में रहती है।

होटल से निकला तो धूप अभी नरम थी। दुकानों के शटर ऊपर उठ रहे थे। कहीं पानी छिड़का जा रहा था, कहीं झाड़ू लग चुकी थी, कहीं पहली केतली चढ़ गई थी।

मैंने नाश्ता नहीं किया था।

इसलिए सच, राजनीति और मीडिया से पहले मुझे चाय चाहिए थी।

* * *

हज़रतगंज की ओर एक छोटी चाय की दुकान मिली। टिन की छत, लकड़ी का काउंटर, पीछे उबलता दूध, काँच के मर्तबानों में रस्क और बिस्कुट, और किनारे रखी अखबारों की गड्डी।

तीन आदमी खड़े थे। एक बुज़ुर्ग अखबार पढ़ रहा था। एक युवक फोन पर शीर्षक ऊपर-नीचे कर रहा था। तीसरा आदमी तीन अलग अखबारों को बारी-बारी से देख रहा था।

मैंने चाय ली और मज़ाक में उससे पूछा -

“सच किसमें है?”

उसने अखबार से नज़र उठाए बिना कहा -

“तीनों में थोड़ा-थोड़ा। और थोड़ा कहीं नहीं।”

फिर उसने मुझे देखा।

यहीं मेरी मुलाकात **राघव मिश्र** से हुई। इस पुस्तक में वह एक मिश्रित काल्पनिक पत्रकार-चरित्र है - कई ज़मीनी पत्रकारों की आदतों, तर्कों और अनुभवों से गढ़ा गया।

“आप पत्रकार हो?”

THREE PAPERS, ONE CUP OF TEA

मैंने पूछा -

“आप पत्रकार हो?”

वह मुस्कुराया।

“आजकल यह सवाल तारीफ़ है या शिकायत, पहले बताओ।”

“दोनों हो सकता है।”

“तो हाँ।”

उम्र चालीस के आसपास। हल्की दाढ़ी। कंधे पर पुराना झोला। अंदर नोटबुक, मुड़े हुए कागज़ और आवाज़ दर्ज करने का छोटा उपकरण। कोई चमकदार टेलीविज़न वाला रूप नहीं।

मैंने अपना यात्रा-पथ बताया - मॉस्को से दिल्ली, फिर मथुरा, वृंदावन, वाराणसी, अयोध्या और अब लखनऊ।

वह सुनता रहा।

फिर बोला -

“दस दिन में?”

मैंने कहा -

“इस सवाल पर अब शुल्क लेना चाहिए।”

वह हँसा।

“ठीक है। दूसरा सवाल - शहर देख रहे हो या कहानी ढूँढ रहे हो?”

“पहले शहर।”

“अच्छा जवाब।”

“और पत्रकार वाला?”

“कहानी पहले। लेकिन अच्छा पत्रकार शहर को कहानी से बड़ा रहने देता है।”

राघव:
“यात्री कभी-कभी बिना निष्कर्ष के लौट सकता है। पत्रकार को शाम तक कुछ लिखना भी पड़ता है। मुश्किल यहीं शुरू होती है।”

अखबार, फोन और पाँच मिनट की बहस

THE TEA STALL AS A SMALL NEWSROOM

चाय वाले ने दूसरी केतली चढ़ाई। सड़क अब भरने लगी थी। ऑटो, मोटरसाइकिलें, बसें, साइकिलें और पैदल लोग - सब अपनी जगह माँग रहे थे।

बुज़ुर्ग ने अखबार मोड़ा और राघव से कहा -

“आप लोग सही लिखो तो लोग गाली क्यों देंगे?”

राघव हँसा।

“काका, आप रोज़ तीन अखबार पढ़ते हो और तीनों को गाली देते हो।”

बुज़ुर्ग बोले -

“इसीलिए पढ़ता हूँ। तुलना करता हूँ।”

पास वाला युवक फोन से नज़र उठाकर बोला -

“अखबार ही क्यों? फोन पर सब पहले मिल जाता है।”

राघव ने पूछा -

“और सही क्या है, यह कौन बताएगा?”

युवक बोला -

“हम देख लेंगे।”

राघव ने चाय उठाई।

“यही भरोसा सबसे प्यारा भी है और सबसे खतरनाक भी।”

चाय वाला हँस पड़ा।

कुछ ही मिनट में दुकान एक छोटे समाचार-कक्ष जैसी लगने लगी थी - अखबार, फोन, बहस, मज़ाक और कोई भी पूरी तरह संतुष्ट नहीं।

ज़मीन पर खबर कैसी दिखती है

GROUND REPORTING IS MOSTLY WALKING

मैंने पूछा -

“ज़मीनी रिपोर्टिंग असल में कैसी होती है?”

राघव ने कहा -

“ज्यादातर पैदल चलना। इंतज़ार। गलत दरवाज़े पर पहुँचना। कोई मिलने से मना कर दे। कोई इतना बोले कि असली बात निकालनी मुश्किल हो जाए। फिर नोट्स मिलाओ।”

“और कैमरा?”

“कभी। लेकिन अच्छी रिपोर्टिंग का आधा काम कैमरा बंद होने के बाद होता है।”

मैंने वाराणसी और अयोध्या याद किए। हर शहर में वही सीख किसी नए आदमी की ज़ुबान से लौट रही थी:

पहले देखो। फिर दर्ज करो।

राघव ने पूछा -

“अयोध्या में क्या देखा?”

मैंने हनुमानगढ़ी, रामलला तक की कड़ी सुरक्षा, पुरानी गलियाँ, पंद्रह रुपये के छोले-कुलचे और महाराष्ट्र का नाम सुनते ही शुरू हुई बालासाहेब वाली बातचीत बताई।

उसने ध्यान से सुना।

“अब एक शीर्षक बनाओ।”

मैंने कहा -

“अयोध्या में महाराष्ट्र का जुड़ाव?”

“और बाकी दिन?”

“गायब।”

“यही समस्या है। तेज़ राजनीतिक बात सबसे जल्दी शीर्षक बनती है। लेकिन उसी शहर में चाय वाला, दुकानदार, सुरक्षा-कर्मी, बूढ़ा श्रद्धालु, सुबह का रास्ता, खाने की कीमत - सब पीछे चले जाते हैं।”

मैंने कहा -

“लेकिन वह राजनीतिक बातचीत सच में हुई थी।”

“बिल्कुल। उसे दबाना बेईमानी है। उसे पूरे शहर की आवाज़ बना देना भी बेईमानी है।”

“एक आदमी की तेज़ बात उद्धरण बन सकती है। लेकिन पाँच शांत लोगों को छोड़कर केवल वही पंक्ति ले गए, तो बिना झूठ बोले भी गलत तस्वीर बना सकते हो।”

हिन्दू पहचान और आसान खाँचे

IDENTITY DOES NOT FIT INTO TWO BOXES

मैंने उससे सीधा सवाल पूछा -

“हिन्दू विषयों को मीडिया निष्पक्ष तरीके से दिखाता है?”

उसने तुरंत हाँ या ना नहीं कहा।

“मीडिया एक आदमी नहीं है। हजारों संस्थाएँ, पत्रकार, मालिक, संपादक और भाषाएँ हैं। एक उत्तर कैसे दूँ?”

“रुझान?”

“टकराव बिकता है।”

वह कुछ क्षण रुका।

“कई बार हिन्दू धार्मिक स्मृति को सिर्फ राजनीति कहकर खारिज करना गलत है। अयोध्या जैसे विषय में करोड़ों लोगों की वास्तविक आस्था और ऐतिहासिक स्मृति है। उसे समझे बिना रिपोर्टिंग सतही होगी।”

फिर उसने दूसरा पक्ष जोड़ा -

“लेकिन हर मुसलमान को किसी पुराने ऐतिहासिक विवाद के विरोधी खेमे में खड़ा करना भी उतना ही सतही है। सामान्य आदमी नौकरी करता है, किराया देता है, बच्चों की फीस सोचता है। उसे टेलीविज़न बहस का प्रतीक बना देना भी सच को छोटा करना है।”

मैंने कहा -

“अपनी हिन्दू पहचान बोलने में मुझे कोई समस्या नहीं लगती। लेकिन आज के सामान्य मुसलमान को पुराने शासकों का उत्तराधिकारी मानकर दोष देना भी सही नहीं।”

राघव ने सिर हिलाया।

“यही बात मुश्किल है। टेलीविज़न को दो साफ खाने चाहिए - पक्ष में या विरोध में। ज़मीन की सच्चाई अक्सर बीच में होती है।”

पास वाला विद्यार्थी हमारी बात सुन रहा था।

उसने कहा -

“सोशल मीडिया पर तो सबको बोलने का मौका है।”

राघव ने पूछा -

“और जाँच कौन करेगा?”

विद्यार्थी कुछ क्षण चुप रहा।

राघव मुस्कुराया।

“पुराने समय के द्वारपाल गलत हो सकते थे। लेकिन सारे द्वार हटा दो तो झूठ भी उतनी ही आसानी से भीतर आता है।”

एक पुराना टिकट और एक साधारण सलाह

NOT EVERY MARK IS A CODE

बातों-बातों में मैंने उसे नीली डायरी का पूरा रहस्य नहीं बताया। बस इतना कहा कि एक पुरानी डायरी मिली है, उसके बीच से जैसलमेर-जयपुर का पुराना टिकट गायब हो गया, और उसमें कुछ जगहों के नाम तथा अजीब-से अंक लिखे हैं।

राघव ने पत्रकार की तरह उत्साहित होकर “षड्यंत्र” नहीं कहा।

उसने पूछा -

“लिखावट कैसी है?”

“पुरानी। कहीं बहुत साफ, कहीं जल्दी में लिखी हुई।”

“और तुम्हें क्यों लगता है अंक कोई संकेत हैं?”

मैंने कहा -

“क्योंकि समझ नहीं आ रहे।”

वह हँसा।

“यही तो सबसे आसान जाल है। जो समझ न आए, उसे code मान लो।”

“तो क्या हो सकता है?”

“कुछ भी साधारण - तारीख, फाइल संख्या, रजिस्टर प्रविष्टि, ट्रेन का उल्लेख, कमरे का नंबर, पुराने दफ्तर की shorthand. रेलवे, सरकारी दफ्तर, इंजीनियर - सब लोग अपने तरीके से छोटे नोट लिखते हैं। पहले साधारण अर्थ खत्म करो, फिर रहस्य बनाना।”

मैंने उसकी तरफ देखा।

यह पहली बार था जब किसी ने डायरी को रहस्यमय वस्तु नहीं, कामकाजी नोटबुक की तरह देखने को कहा था।

राघव की सलाह:

“जिस चीज़ का अर्थ नहीं समझते, उसे गुप्त संकेत मानना आसान है। असली जाँच पहले यह पूछती है - क्या इसका कोई साधारण दफ्तर वाला अर्थ हो सकता है?”

मैंने डायरी उसे नहीं दिखाई।

वह भी माँगने नहीं लगा।

मुझे यह बात पसंद आई।

चाय की दुकान से बाहर

A REPORTER DOES NOT SIT FOR LONG

राघव ने घड़ी देखी।

“मुझे कैसरबाग की ओर जाना है। चलोगे?”

मैंने हाँ कहा।

अब लखनऊ पूरी तरह जाग चुका था। यातायात संकेतों पर कतारें थीं। फुटपाथ कहीं साफ थे, कहीं दुकानों और खड़ी गाड़ियों के बीच गायब।

राघव तेज़ नहीं चलता था, लेकिन रुकता बहुत था।

एक पोस्टर पढ़ना।

पान वाले से दो शब्द।

एक फोटोकॉपी की दुकान पर नमस्ते।

एक अखबार बेचने वाले से पूछना - “आज देर कैसे?”

मैंने पूछा -

“ये सब स्रोत हैं?”

“कुछ। कुछ सिर्फ लोग।”

“फर्क?”

“हर मिलने वाले को स्रोत बना दोगे तो रिश्ता नहीं बचेगा। कभी-कभी आदमी सिर्फ आदमी होता है।”

यह पत्रकारिता से ज्यादा जीवन की बात थी।

दीवार पर राजनीति

POSTERS, POWER AND CERTAINTY

एक मोड़ पर राजनीतिक पोस्टरों की कई परतें थीं। कुछ नए, कुछ फटे, कुछ आधे ढँके। नीचे वाले पोस्टर का चेहरा बचा था और ऊपर वाले का नारा।

मैंने कहा -

“यह भी खबर है?”

राघव बोला -

“यह अभिलेख है।”

फिर हँसकर जोड़ा -

“चुनाव खत्म हो जाए, दीवार कुछ दिन तक याद रखती है कि कौन कितना बड़ा दिखना चाहता था।”

मैंने पूछा -

“आप निजी तौर पर किस तरफ?”

वह मुस्कुराया।

“मुझे किसी एक दल से कम, हर बात पर पूर्ण निश्चितता जताने वालों से ज्यादा समस्या है।”

“मजबूत सरकार?”

“जरूरी हो सकती है। मजबूत राज्य और जवाबदेह राज्य विरोधी नहीं हैं।”

“सांस्कृतिक पहचान?”

“वैध है। लेकिन पहचान जितनी मजबूत हो, जिम्मेदारी उतनी ही मजबूत होनी चाहिए।”

मैंने कहा -

“मेरा मानना है हिन्दू पहचान को लेकर संकोची होने की जरूरत नहीं। लेकिन ताकत का मतलब नफ़रत नहीं।”

राघव ने कहा -

“फिर वही लिखो। बस दूसरे आदमी को हास्यास्पद पात्र मत बनाना।”

राजनीतिक स्वर 3 - राघव:
सांस्कृतिक पहचान, मजबूत शासन और सार्वजनिक व्यवस्था महत्वपूर्ण हो सकते हैं; लेकिन तथ्य-जाँच, जवाबदेही और सामान्य नागरिक की गरिमा उतनी ही जरूरी हैं। यह चरित्र का दृष्टिकोण है, पुस्तक का अंतिम फैसला नहीं।

गलत वीडियो का तीन मिनट

VERIFY BEFORE YOU SHARE

हम एक फोटोकॉपी की दुकान के बाहर रुके थे जब राघव के फोन पर संदेश आया।

उसने एक छोटा वीडियो देखा। उसमें भीड़ थी, नारेबाज़ी थी और ऊपर बहुत आत्मविश्वासी दावा लिखा था।

मैंने पूछा -

“क्या हुआ?”

“कुछ हुआ भी हो सकता है, कुछ नहीं भी।”

उसने दो फोन किए। एक स्थानीय संपर्क को, दूसरा उस इलाके को जानने वाले आदमी को।

कुछ मिनट बाद बोला -

“पुराना वीडियो लगता है। आज का बताकर फैल रहा है।”

“सुधार लिखोगे?”

“दफ्तर भेजूँगा। लेकिन झूठा वीडियो सुधार से ज्यादा चलेगा।”

उसने फोन जेब में रख लिया।

न कोई नाटकीय बड़ी खबर। न पुलिस दौड़ी। न भीड़ हमारे सामने थी।

बस तीन मिनट।

लेकिन उन्हीं तीन मिनट में मीडिया की पूरी बहस व्यावहारिक हो गई - वीडियो सही हो सकता है, तारीख गलत; तारीख सही, स्थान गलत; दृश्य सही, ऊपर लिखा दावा गलत।

“जाँच उबाऊ लगती है। इसलिए जरूरी है।”

रास्ते की पूरी-सब्ज़ी

REPORTING ALSO NEEDS BREAKFAST

कैसरबाग की ओर बढ़ते हुए एक मोड़ पर गरम पूरी-सब्ज़ी की खुशबू ने हमारी बातचीत रोक दी।

राघव ने पूछा -

“नाश्ता किया?”

“चाय।”

“वह नाश्ता नहीं।”

हम रुक गए।

स्टील की प्लेट में गरम पूरियाँ, आलू की सब्ज़ी और थोड़ा अचार आया। पीछे कड़ाही में तेल लगातार उबल रहा था। सड़क पर बसें, ऑटो और रिक्शे चल रहे थे।

राघव ने पहली पूरी तोड़ते हुए कहा -

“ज़मीनी रिपोर्टिंग की दूसरी सीख - समय पर जो अच्छा मिल जाए, खा लो।”

मैंने कहा -

“सेवानिवृत्त फौजी ने भी कुछ ऐसा ही कहा था।”

“फौज और पत्रकारिता में समानताएँ कम ढूँढना।”

“दोनों मैदान में जाते हैं।”

“बस। वहीं रुक जाओ।”

मैं हँस पड़ा।

पत्रकार की सबसे खतरनाक गलती

THE STORY YOU WANT TO BE TRUE

मैंने उससे पूछा -

“पत्रकार की सबसे खतरनाक गलती?”

उसने बिना सोचे कहा -

“वह कहानी जिसे तुम पहले से सच मानना चाहते हो।”

मैं चुप रहा।

“अगर मैं पहले तय करके निकलूँ कि सरकार असफल है, तो हर गड्ढा सबूत लगेगा। अगर पहले तय कर लूँ कि सरकार पूर्ण है, वही गड्ढा किसी और की गलती हो जाएगा।”

“तो तटस्थ कैसे?”

“हर बार तटस्थ होना संभव नहीं। निष्पक्ष होना जरूरी है।”

“फर्क?”

“तटस्थता कभी-कभी कहती है दोनों पक्ष बराबर हैं। निष्पक्षता पूछती है किस दावे के पास कितना सबूत है।”

मैंने नोटबुक निकाली।

राघव ने कहा -

“अब लेखक जाग गया?”

“यह लिखना पड़ेगा।”

“संदर्भ भी लिखना।”

मैंने वाराणसी में सार्वजनिक मेसोनिक इतिहास वाली अपनी मुलाकात का छोटा हिस्सा बताया।

उसने रुचि से सुना।

“देखो, यही चीज़ आलसी रिपोर्टिंग में दो तरह बिकेगी - गुप्त संस्था या harmless club. दोनों आसान खाँचे हैं। बेहतर तरीका है - सार्वजनिक अभिलेख पढ़ो, सदस्य से पूछो, जितना सत्यापित हो उतना लिखो।”

मैंने सोचा, नीली डायरी के साथ भी शायद यही करना चाहिए।

चारबाग की ओर

THE CITY CHANGES CLOTHES

दोपहर से पहले हमारी राह अलग होने वाली थी। राघव को दूसरी दिशा जाना था और मुझे चारबाग की तरफ लौटना था।

हमने एक साइकिल-रिक्शा रोका।

राघव ने किराया पूछा और धीरे से कहा -

“मोलभाव करो, बेइज़्ज़ती नहीं।”

रिक्शा चला।

धीमी रफ़्तार में शहर फिर पास आ गया। दुकानों की कतार, पुराने मकानों के नीचे नए बोर्ड, स्कूल वैन, फलों का ठेला, मंदिर का झंडा, दूर मस्जिद का गुम्बद, कहीं सरकारी दीवार, कहीं निजी विज्ञापन।

लखनऊ हर कुछ मिनट में कपड़े बदल रहा था।

राघव रास्ते में उतरने लगा।

मैंने पूछा -

“फिर मिलेंगे?”

वह हँसा।

“यात्रा में यह मत पूछो।”

मैंने कहा -

“एक सेवानिवृत्त सूबेदार ने भी यही कहा था।”

“अच्छे लोगों की सलाह दोहराती है।”

उसने हाथ मिलाया।

“और एक बात - अपनी कहानी में खुद को नायक कम बनाना।”

“क्यों?”

“क्योंकि शहर तुमसे बड़ा है।”

वह एक गली में मुड़ा और कुछ ही क्षण में भीड़ में खो गया।

स्टेशन इलाके का अपना मिज़ाज

CHARBAGH

चारबाग के करीब आते ही शहर का रंग फिर बदल गया।

होटल के बोर्ड बढ़ गए। सस्ते लॉज, यात्रा एजेंसियाँ, फोटोकॉपी, खाने की दुकानें, कुली, ऑटो, पानी की बोतलें और ऐसे यात्री जिनके चेहरे पर शहर से ज्यादा अगली ट्रेन लिखी थी।

फुटपाथ पर सूटकेस थे। भोजनालयों में जल्दी-जल्दी खाना खाया जा रहा था। हर दूसरी दुकान किसी यात्री की छोटी जरूरत का उत्तर थी - ताला, चप्पल, चार्जर, पानी, चाय, सस्ता कमरा।

मुझे स्टेशन के पास कमरा लेना अधिक व्यावहारिक लगा।

पहले होटल ने ज्यादा किराया बताया। दूसरे ने कमरा दिखाने से पहले पहचान-पत्र माँगा। तीसरे की सीढ़ियाँ संकरी थीं, लेकिन कमरा साफ था।

स्वागत-कक्ष वाले ने रजिस्टर आगे किया।

“एक रात?”

“हाँ।”

मैंने नाम दर्ज किया।

उसने हुक से चाबी उतारी। पीतल की छोटी पट्टी पर संख्या लिखी थी:

307

मैंने उसे देखा।

कोई रहस्यमय संगीत नहीं बजा। कोई बत्ती नहीं झपकी। बस तीसरी मंज़िल का एक सस्ता कमरा।

“लिफ्ट?”

वह हँसा।

“सीढ़ी।”

मैंने बैकपैक कंधे पर ठीक किया।

असल चिंता संख्या 307 नहीं थी।

असल चिंता थी - सुबह से चलने के बाद तीसरी मंज़िल।

रात की नोटबुक

NO NEW CLUE, JUST A BETTER QUESTION

कमरे में पहुँचकर मैंने जूते उतारे। पंखा ऊपर घूम रहा था। खिड़की से स्टेशन की दूर की आवाज़ें आती थीं - हॉर्न, ऑटो, किसी गाड़ी का इंजन, गलियारे में बाल्टी रखे जाने की आवाज़।

मैंने नोटबुक खोली।

राघव की बातें कुछ पंक्तियों में लिखीं:

एक उद्धरण शहर नहीं होता।

निष्पक्षता = दावे और सबूत का सही वजन।

वीडियो से पहले तारीख और स्थान।

पहचान को समझो, दुश्मन मत गढ़ो।

और जो समझ न आए, उसे तुरंत code मत मानो।

आखिरी पंक्ति पर मैं रुका।

नीली डायरी बैकपैक में थी।

मैंने उसे बाहर नहीं निकाला।

लेकिन पहली बार मेरे मन में एक नया सवाल था:

क्या मैं रहस्य ढूँढ रहा हूँ जहाँ शायद सिर्फ किसी पुराने आदमी के कामकाजी नोट हैं?

यह कोई उत्तर नहीं था।

लेकिन शायद सही सवाल पहली बार मिला था।

मैंने बत्ती बंद कर दी।

कल सुबह कमरा 307, कुछ पुराने कागज़ और प्रयागराज की तैयारी मेरा इंतज़ार कर रहे थे।

CHAPTER FIFTEEN

कमरा 307

ROOM 307

लखनऊ - चारबाग

Day Five - Evening to Early Morning

“कभी रहस्य किसी छिपे दरवाज़े में नहीं मिलता। कभी वह वही चीज़ होती है जिसे आप कई दिनों से गलत नज़र से पढ़ रहे होते हैं।”

कमरा 307 तक पहुँचने के लिए मुझे तीन मंज़िल सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं।

पहली मंज़िल तक बैकपैक ठीक लगा।

दूसरी पर कंधा भारी हुआ।

तीसरी पर मुझे चाय वाले, फौजी और होटल वाले - तीनों की सलाह एक साथ याद आई:

सामान कम रखो।

गलियारा संकरा था। दीवार का पलस्तर कुछ जगह उखड़ा हुआ। छत पर एक पीली बत्ती। दरवाज़ों पर पीतल के छोटे अंक।

303.

305.

और आखिर में -

307

मैंने चाबी घुमाई।

दरवाज़ा थोड़ा अटककर खुला।

अंदर कोई गुप्त नक्शा नहीं था।

कोई रहस्यमय आदमी नहीं।

कोई दीवार अपने-आप नहीं खुली।

एक लोहे का पलंग था। सफेद चादर, जिस पर दो तह की लकीरें अभी दिखाई दे रही थीं। एक लकड़ी की मेज़। प्लास्टिक की कुर्सी। ऊपर पंखा, जिसकी आवाज़ हर तीसरे चक्कर पर हल्की बदलती थी।

और खिड़की के बाहर चारबाग की दूर की हलचल।

असल में कमरा 307 का सबसे बड़ा रहस्य पहले दस मिनट में यही था कि bathroom की बाल्टी कहाँ रखी है।

* * *

मैंने बैकपैक नीचे रखा।

जूते उतारे।

पानी पिया।

और बिना किसी काम के पाँच मिनट बिस्तर पर सीधा लेट गया।

नीचे सड़क से हॉर्न आ रहे थे। कहीं किसी बस का भारी इंजन। बीच-बीच में रेलगाड़ी की दूर की सीटी। गलियारे में किसी ने चप्पल घसीटी।

स्टेशन के आसपास के होटल कभी पूरी तरह शांत नहीं होते।

वहाँ रात भी यात्रा की आवाज़ में सोती है।

नीली डायरी फिर मेज़ पर

THE NOTEBOOK I HAD BEEN READING WRONG

मैंने बैकपैक खोला।

पासपोर्ट वाला छोटा थैला, कपड़े, कैमरा, चार्जर - सब अपनी जगह थे।

नीली डायरी नीचे दब गई थी।

उसे बाहर निकाला और मेज़ पर रख दिया।

पुराना जैसलमेर-जयपुर टिकट अब भी गायब था।

मैंने एक बार फिर वह पन्ना देखा जहाँ टिकट रखा रहता था। कागज़ पर उसके लंबे समय तक दबे रहने की हल्की आयताकार छाप बची हुई थी।

बस छाप।

टिकट नहीं।

पहले कुछ दिन मैं इस डायरी को एक रहस्य की किताब की तरह पढ़ रहा था।

हर संख्या मुझे संकेत लगती।

हर शहर किसी अगले दरवाज़े का नाम।

हर पुरानी तस्वीर शायद किसी छिपी कहानी का हिस्सा।

लेकिन राघव की एक बात दिमाग में घूम रही थी:

"जिस कहानी को तुम पहले से सच मानना चाहते हो, वही सबसे बड़ी गलती बन सकती है।"

मैंने डायरी फिर शुरू से खोली।

इस बार clue नहीं ढूँढा।

बस handwriting देखी।

* * *

पहले ही पन्नों में कुछ बात अलग दिखी।

कई शहरों के नाम के नीचे छोटे-छोटे माप लिखे थे।

कहीं किसी पुराने भवन के सामने:

"मुख्य मेहराब - अनुमानित चौड़ाई..."

कहीं:

"उत्तर की दीवार में पुरानी ईंट अलग प्रकार की।"

कहीं स्टेशन के पास:

"पुराना पुल - नया हिस्सा बाद में जोड़ा गया लगता है।"

कहीं एक छोटा हाथ से बनाया रेखाचित्र।

वह कलात्मक रेखाचित्र नहीं था।

सीधी रेखाएँ। अनुपात। खंभे। दूरी। कभी तीर। कभी किनारे पर सवाल।

मैंने एक पन्ना उलटा।

फिर एक और।

फिर तीसरा।

मुझे पहली बार लगा -

यह आदमी चीज़ों को यात्री की तरह कम, अभियंता की तरह ज्यादा देखता था।

रेलवे की भाषा जैसी लिखावट

LINES, MEASUREMENTS AND STATIONS

कुछ पन्नों पर शहर नहीं, स्टेशन पहले लिखे थे।

स्टेशन के नीचे तारीख जैसा कुछ।

फिर निरीक्षण जैसी छोटी सूची।

“प्लेटफॉर्म का पुराना भाग.”

“लोहे की छत - नया रंग.”

“पूर्व दिशा की पुरानी इमारत.”

“पुल के नीचे पत्थर का काम.”

“रेलवे कॉलोनी में पुराना बंगला - फोटो लेना.”

मैंने कई बार ट्रेन यात्रा की थी, लेकिन ऐसा लिखना मेरी आदत नहीं थी।

मैं स्टेशन पर चाय, भीड़, आवाज़ और लोगों को देखता था।

यह आदमी स्टेशन की हड्डियाँ देख रहा था।

कहाँ पुराना पत्थर खत्म होकर नया सीमेंट शुरू होता है।

कहाँ लोहे की बनावट बदली है।

कहाँ किसी भवन का इस्तेमाल बदल गया होगा।

ऐसी नज़र पेशे की आदत से आती है।

मैंने नोटबुक खोली और लिखा:

डायरी का मालिक - शायद रेलवे से जुड़ा अभियंता?

प्रश्नचिह्न जानबूझकर लगाया।

राघव की training एक दिन में असर करने लगी थी।

अभी कोई प्रमाण नहीं था।

काशी वाले पन्ने की दूसरी पढ़ाई

KASHI WITHOUT A SECRET CODE

मैं उस पन्ने पर पहुँचा जहाँ एक शब्द अकेला लिखा था:

KASHI

पहली बार देखने पर वह नाटकीय लगा था।

जैसे किसी ने destination नहीं, आदेश लिखा हो।

अब आसपास के छोटे शब्द पढ़े।

एक किनारे पर लगभग मिटा हुआ:

“पुराना स्टेशन क्षेत्र...”

नीचे किसी भवन का छोटा नक्शा।

दूसरे किनारे:

“घाट - सूर्योदय में प्रकाश की दिशा.”

और फिर:

“पुरानी तस्वीर - Brother's Door.”

मैं कुर्सी पर थोड़ा सीधा बैठ गया।

Varanasi में मिली वही तस्वीर।

पुराना दरवाज़ा।

ऊपर सार्वजनिक रूप से पहचाना जाने वाला Square-and-Compasses जैसा Masonic चिन्ह।

और पीछे अंग्रेज़ी में लिखा:

THE BROTHER'S DOOR

मैं खुद Freemason था।

पहले मुझे लगा था कि diary owner शायद किसी secret Masonic trail के पीछे था।

लेकिन अब पन्नों को साथ रखकर देखने पर दूसरा अर्थ निकल रहा था।

वह आदमी पुराने railway buildings की तरह पुराने Masonic buildings भी document कर रहा था।

वास्तुकला।

सार्वजनिक इतिहास।

पुरानी तस्वीरें.

शायद उस भाईचारे से उसका अपना संबंध भी।

बस।

कोई गुप्त तिजोरी नहीं।

कोई छिपा अनुष्ठान नहीं।

किसी पुराने शहर की एक और संस्था, जिसकी इमारत और इतिहास उसे रुचिकर लगते थे।

“Brother” सिर्फ तस्वीर पर नहीं था

A SMALL PATTERN BECOMES VISIBLE

मैंने आगे के पन्ने पलटे।

कुछ जगह नाम के पहले सिर्फ एक छोटा “Br.” लिखा था।

Br. S.

Br. Mehta.

Br. Rao.

कहीं:

“शाम - लॉज भवन का बाहरी हिस्सा।”

कहीं:

“सार्वजनिक वर्षगाँठ पुस्तिका लेना।”

कहीं:

“सदस्यों में पुराने रेलकर्मी - पूछना।”

मैं कुछ देर पन्ने पर उँगली रखे रहा।

यह पहली बार था जब अभियंता वाला अनुमान और मेसन वाला अनुमान एक ही आदमी में मिलने लगे।

भारतीय रेल में काम करने वाला कोई पुराना अभियंता.

जिसे heritage buildings में रुचि थी.

और जो खुद Freemason भी हो सकता था.

उसकी नौकरी की तैनातियों ने उसे शहर दिए होंगे।

Freemasonry ने शायद कुछ पुराने भाइयों, इमारतों और अभिलेखों तक पहुँच दी होगी - सार्वजनिक ऐतिहासिक सामग्री तक, न कि किसी गुप्त अनुष्ठान तक।

और retirement के बाद उसने शायद इन सबको एक साथ लिखना शुरू किया होगा।

मैंने फिर question mark लगाया।

फिर एक और।

रहस्य खत्म नहीं हुआ था।

बस उसकी प्रकृति बदल रही थी।

पहला नया अनुमान:

डायरी किसी अपराध की नहीं, संभवतः एक सेवानिवृत्त रेलवे अभियंता और Freemason की विरासत-यात्रा शोध डायरी थी।

---

10 - 3 - 7 - 1

MAYBE NOT A CODE

अब सबसे पुरानी समस्या सामने थी।

10 - 3 - 7 - 1

मैंने इसे इतने दिन संकेत-क्रम माना था कि दिमाग अपने-आप उसी दिशा में जाता था।

चार संख्या.

किसी ताले का क्रम?

किसी कमरे का?

किसी नक्शे की स्थिति का?

लेकिन engineer वाला angle सामने आने के बाद एक साधारण possibility भी थी:

यह किसी काम का संदर्भ हो सकता है।

किसी रजिस्टर का।

किसी रेखाचित्र का।

किसी तारीख की टूटी हुई लिखावट।

किसी फाइल के चार हिस्से।

या बस चार अलग नोट।

मैंने उस संख्या को नोटबुक में फिर लिखा।

इस बार बीच में बड़ी रेखाएँ नहीं लगाईं।

सिर्फ:

10 3 7 1

अचानक उसका चेहरा बदल गया।

रहस्य वही था.

लेकिन शायद विराम-चिह्न हमने खुद जोड़ दिए थे।

कभी-कभी clue नहीं बदलता।

पढ़ने वाला बदलता है।

कमरा 307 में कोई गुप्त खाना नहीं

THE ROOM REFUSES TO BECOME A THRILLER

इतना सोचने के बाद इंसान खुद को भी थोड़ा मज़ाक में देखने लगता है।

मैंने कमरे की मेज़ की दराज़ खोली।

अंदर होटल का पुराना भोजन-पर्चा, एक टूटी कलम और दो माचिस की खाली डिब्बियाँ थीं।

बस।

मैंने पलंग के नीचे देखा।

एक चप्पल थी। अकेली।

मैंने cupboard खोला।

दो प्लास्टिक के हैंगर।

अगर कोई रोमांचक उपन्यास लिख रहा होता तो यहाँ नक्शा मिल जाता।

मुझे एक अकेली चप्पल मिली।

मैं हँसा।

कमरा 307 ने साफ कर दिया:

कहानी डायरी में है, होटल के फर्नीचर में नहीं।

* * *

मैंने स्वागत-कक्ष में फोन किया।

“चाय मिलेगी?”

नीचे से जवाब आया -

“कमरे में नहीं. नीचे.”

कमरा रहस्य नहीं दे रहा था।

चाय भी नहीं।

मैं नीचे उतर गया।

चारबाग की रात

STATION LIGHTS, CHEAP FOOD AND PASSING PEOPLE

होटल के बाहर शाम रात में बदल चुकी थी।

चारबाग का इलाका दिन से ज्यादा चमकीला लग रहा था।

छोटे होटल के बोर्ड.

दवा की दुकान.

फोटोकॉपी.

मोबाइल चार्जर और ताले बेचती दुकान.

चाय.

पूरी-सब्ज़ी.

बिरयानी.

यात्रियों के लिए प्लास्टिक के छोटे पानी के डिब्बे।

हर चीज़ तेज़ उपयोग के लिए।

लोग यहाँ शहर देखने नहीं, कहीं जाने के लिए थे।

किसी के हाथ में बड़ा सूटकेस।

किसी के सिर पर गठरी.

एक परिवार बच्चों को संभालते हुए सड़क पार कर रहा था।

दो लड़के स्टेशन की दिशा पूछ रहे थे।

एक आदमी लगातार फोन पर कह रहा था:

“हाँ, पहुँच गया। अभी नहीं, स्टेशन के बाहर हूँ।”

स्टेशन इलाके में "पहुँच गया" का अर्थ भी कई स्तर का होता है।

* * *

मैं एक छोटी चाय की दुकान पर रुका।

चाय वाला उम्र में पचास से ऊपर होगा। मोटा चश्मा। सफेद बनियान के ऊपर आधी बाँह की कमीज़।

उसने पूछा -

"ऊपर वाले होटल में?"

"हाँ."

"तीसरी मंज़िल?"

"हाँ."

"Lift नहीं है."

"यह जानकारी मुझे मिल चुकी।"

वह हँसा।

पास दो रेलकर्मियों जैसे दिखने वाले लोग चाय पी रहे थे। उनमें से एक के हाथ में खाने का डिब्बा था, दूसरे के कंधे पर गहरा थैला।

मैंने उनकी बातचीत नहीं सुनी, लेकिन diary के pages याद आ गए।

रेलवे किसी यात्री के लिए सफ़र है।

किसी दूसरे के लिए रोज़ की नौकरी।

और शायद उस नीली diary के मालिक के लिए दोनों एक ही जीवन थे।

एक बूढ़ा रेलकर्मी

A SMALL CONVERSATION, NOT A REVELATION

चाय वाला मेरे सामने cup रख ही रहा था कि बगल के stool पर बैठे बुजुर्ग ने मेरी notebook देखी।

“लेखक?”

मैंने कहा -

“अभी traveller.”

“दोनों में फर्क?”

“लेखक बाद में झूठ बोल सकता है कि उसे सब याद था.”

वह हँस पड़े।

नाम **शिवकुमार** बताया। रेलवे से सेवानिवृत्त लिपिक।

मैंने डायरी नहीं दिखाई।

सिर्फ पूछा -

“पुराने रेलवे अभियंता मैदानी नोट्स रखते थे?”

उन्होंने कहा -

“क्यों नहीं? अलग-अलग लोग अलग रखते। निरीक्षण, माप, रेखाचित्र, निजी डायरी - सब।”

“Personal travel notes भी?”

“रेलवे वाला यात्रा को नौकरी से अलग कहाँ कर पाता? तैनाती भी यात्रा, ड्यूटी भी यात्रा, छुट्टी भी ट्रेन।”

यह जवाब डायरी के मालिक पर लगभग बिल्कुल बैठता हुआ लग रहा था।

लेकिन मैंने खुद को रोका।

एक सेवानिवृत्त लिपिक की सामान्य बात प्रमाण नहीं थी।

मैंने पूछा -

“बहुत लोग विरासत में रुचि रखते थे?”

उन्होंने कहा -

“कुछ लोग रखते। पुरानी इमारत देखेंगे, पुल देखेंगे, स्टेशन बदल गया तो पुरानी तस्वीर बचाकर रखेंगे। नौकरी खत्म हो जाती है, आदत नहीं।”

फिर चाय का घूँट लिया।

“आप किसको ढूँढ रहे?”

मैंने कहा -

“अभी किसी को नहीं. बस एक पुरानी डायरी समझने की कोशिश।”

उन्होंने सिर हिलाया।

“नाम मिलेगा तो railway colony में पूछना आसान होगा. बिना नाम भारत बहुत बड़ा है.”

सही बात।

मेरे पास अभी डायरी थी।

मालिक का नाम नहीं।

नाम कहाँ है?

THE MOST OBVIOUS QUESTION ARRIVES LATE

कमरे में लौटते हुए वही सवाल दिमाग में था:

नाम कहाँ है?

इतने दिन मैंने diary पढ़ी।

शहर ढूँढे।

संख्या देखी।

तस्वीर देखी।

लेकिन पहला practical सवाल बहुत देर से आया:

डायरी किसकी थी?

पहले पन्ने पर नाम नहीं।

पीछे नहीं।

कोई address नहीं।

किसी पन्ने पर पूरा हस्ताक्षर नहीं।

शायद जानबूझकर नहीं।

शायद डायरी का पहला पन्ना कभी था ही नहीं।

मैंने जिल्द ध्यान से देखी।

सामने के आवरण के बाद पहला कागज़ बाकी पन्नों से थोड़ा खुरदरा था।

जैसे एक पन्ना कभी फटा हो।

यह नया clue नहीं था।

यह पुरानी नोटबुक का साधारण सच था।

पुरानी नोटबुक में पन्ने फटते हैं।

बस अगर उसी पन्ने पर नाम हो तो समस्या बड़ी हो जाती है।

* * *

मैंने बचे हुए पन्नों में हस्ताक्षर ढूँढे।

कुछ शुरुआती अक्षर मिले:

R.K.

कहीं:

RKS

लेकिन ये owner के initials थे या किसी व्यक्ति के - पता नहीं।

एक जगह नीचे हल्की पेंसिल में:

“R. sahib से old bridge photo लेना.”

तो R शायद owner नहीं।

फिर एक page:

“S.K. - retired P.Way?”

फिर कोई प्रश्नचिह्न।

नाम का जंगल खुलने लगा।

मैंने diary बंद कर दी।

शिवकुमार सही थे:

बिना नाम भारत बहुत बड़ा है।

प्रयागराज का पहला स्पष्ट निशान

THE NEXT CITY IS NOT A SECRET

मैंने अगले दिन के यात्रा-कागज़ निकालने के लिए बैकपैक खोला।

तभी diary के बीच से एक पतली folded slip नीचे गिरी।

मैं कुछ क्षण उसे देखता रहा।

यह कोई छिपा हुआ पुराना परचा नहीं था।

सादा कागज़।

शायद किसी पुराने कागज़ी पैड से फाड़ा गया।

उस पर पाँच शब्द:

“इलाहाबाद - रेल पुल - संगम - पुरानी कॉलोनी”

नीचे:

“Hanuman मंदिर - सुबह.”

और सबसे नीचे एक नाम आधा:

“S. Tiw...”

मैंने कागज़ को मेज़ पर सीधा किया।

यह पहली बार था जब अगला शहर diary और मेरे तय मार्ग दोनों में साफ मिला।

लेकिन इसमें भी कोई thrill नहीं था।

Prayagraj मैं वैसे भी जा रहा था।

डायरी का मालिक भी कभी गया था।

बस अब मैं उसके notes को उसी शहर में पढ़ सकता था।

यही काफी था।

अगला शहर:

प्रयागराज - संगम, पुराने रेल क्षेत्र और शायद “S. Tiw...” नाम का कोई पुराना संदर्भ।

नींद से पहले एक साफ तस्वीर

THE MYSTERY BECOMES A PERSON

रात काफी हो चुकी थी।

मैंने diary के सारे खुले pages बंद किए।

मेज़ साफ की।

पानी की bottle पलंग के पास रखी।

फोन चार्ज पर लगाया।

अलार्म लगाया।

और बत्ती बंद करने से पहले एक बार नीली diary को देखा।

अब वह मुझे पहले जैसी नहीं लग रही थी।

पहले:

एक अजीब वस्तु।

एक अज्ञात मालिक।

किसी मार्ग का रहस्य।

अब:

शायद एक बूढ़ा अभियंता।

रेलवे की नौकरी।

हर तैनाती से बचाए नोट्स।

पुरानी buildings.

स्टेशन।

पुल।

मंदिर।

Freemasonry की सार्वजनिक विरासत।

और retirement के बाद शायद एक किताब लिखने की कोशिश।

यह तस्वीर अभी अनुमान थी।

लेकिन पहली बार रहस्य के पीछे आदमी दिखाई देने लगा था।

और आदमी किसी संकेत-क्रम से ज्यादा दिलचस्प था।

सुबह चारबाग

BACK TO THE RAILS

अलार्म से कुछ मिनट पहले आँख खुल गई।

कमरे में नीली-सी सुबह की रोशनी थी।

पंखा अब भी वही तीसरे चक्कर वाली आवाज़ कर रहा था।

मैं उठा।

नहाया।

कपड़े बदले।

डायरी को बैकपैक के बीच रखा - अब पहले से थोड़ा ज्यादा सावधानी से।

स्वागत-कक्ष पर चाबी लौटाई।

नीचे वाला लड़का आधी नींद में रजिस्टर देख रहा था।

उसने पूछा -

“307 ठीक था?”

मैंने कहा -

“हाँ। बस लिफ्ट नहीं थी।”

वह मुस्कुराया।

“वो 307 की गलती नहीं.”

सही था।

* * *

बाहर सुबह की हवा रात से ठंडी थी।

चारबाग station की तरफ जाते हुए चाय की दुकानें फिर जल चुकी थीं।

पहली चाय बन रही थी।

कुछ लोग प्लेटफॉर्म की दिशा में तेज़ चल रहे थे।

कुली लाल कपड़ों में काम पर लग चुके थे।

एक परिवार सड़क किनारे सामान गिन रहा था:

“तीन थैले?”

“चार।”

“छोटा वाला?”

“बच्चे के पास।”

रेल यात्रा हर सुबह हजारों छोटे हिसाबों से शुरू होती है।

मैंने चाय ली।

दो biscuit.

और station की ओर चल पड़ा।

आज Lucknow पीछे छूटना था।

अगला पड़ाव:

प्रयागराज।

वहाँ संगम था।

परीक्षाओं की तैयारी करता एक नया भारत था।

और अब शायद उस सेवानिवृत्त रेलवे अभियंता की कहानी का एक थोड़ा साफ पन्ना भी।

CHAPTER SIXTEEN

गंगा गोमती एक्सप्रेस

GANGA GOMTI EXPRESS

लखनऊ - चारबाग से प्रयागराज

Day Six - Morning to Afternoon

“यात्रा में गलत रास्ता हमेशा सड़क पर नहीं मिलता। कभी-कभी वह हमारे अपने दिमाग में बनता है।”

सुबह जब मेरी आँख खुली तो कमरे 307 का पंखा अब भी वही तीसरे चक्कर वाली आवाज़ निकाल रहा था।

एक पल के लिए मुझे समझ नहीं आया कि मैं किस शहर में हूँ। फिर खिड़की के बाहर से आती रेल की लंबी सीटी ने याद दिलाया - लखनऊ। चारबाग। तीसरी मंज़िल। और नीचे उतरते समय वही बैकपैक, जो हर सुबह मुझे यह समझाता था कि यात्राएँ सामान से नहीं, कंधों से मापी जाती हैं।

मैंने मोबाइल देखा। अलार्म बंद हो चुका था। शायद मैंने नींद में बंद किया था, क्योंकि मुझे उसका बजना याद नहीं था। यह मेरे साथ अक्सर होता है। मैं रात में पाँच अलार्म लगाता हूँ और सुबह उस आदमी पर शक करता हूँ जिसने उन्हें बंद किया होता है। वह आदमी हमेशा मैं ही निकलता हूँ।

चेहरा धोकर मैंने बैग समेटा। कैमरा, चार्जर, कपड़े, पासपोर्ट वाला छोटा थैला, नीली डायरी। कमरे की चाबी मेज़ पर रखी, बैग पीठ पर डाला और दरवाज़ा खींचकर बंद कर दिया।

फिर तीन सेकंड बाद जेब टटोली।

चाबी अंदर थी।

मैं बंद दरवाज़े को देखता रहा।

गलियारे में सफाई करने वाला लड़का झाड़ू लेकर खड़ा था। उसने मुझे देखा, फिर दरवाज़े को, फिर मुझे।

“साहब, चाबी अंदर?”

मैंने सम्मान बचाने की आखिरी कोशिश की। “हाँ... जानबूझकर।”

वह हँसा नहीं। बस बोला, “रिसेप्शन से दूसरी ले आइए।”

उसका न हँसना ज्यादा अपमानजनक था।

* * *

चारबाग की सुबह

BREAKFAST BEFORE THE TRAIN

नीचे सड़क पर सुबह पूरी तरह खुल चुकी थी। होटल के सामने ऑटो वालों की छोटी पंक्ति थी। दूध के डिब्बे लेकर साइकिलें निकल रही थीं। दो दुकानों के शटर आधे खुले थे। चारबाग स्टेशन की तरफ जाते लोगों की चाल में वही जल्दी थी जो स्टेशन के आसपास हर शहर में दिखाई देती है - कोई भाग नहीं रहा होता, फिर भी सब थोड़ा तेज चलते हैं।

मैंने होटल की चाबी लौटाई। रिसेप्शन वाला वही आदमी था जिसने पिछली रात कमरा दिया था। उसने चाबी देखते ही कहा, “अंदर रह गई थी?”

मैंने पूछा, “आपको कैसे पता?”

“ऊपर वाले लड़के ने फोन कर दिया था।”

मेरी प्रतिष्ठा मुझसे पहले नीचे पहुँच चुकी थी।

स्टेशन जाने से पहले मैंने नाश्ता करने का फैसला किया। चारबाग के पास एक छोटी दुकान पर बड़े लोहे के कड़ाह में तेल धीरे-धीरे काँप रहा था। बगल में खस्ता तले जा रहे थे। सामने स्टील की थाली में आलू की सब्ज़ी, ऊपर हरे धनिए के टुकड़े और लाल मिर्च के तेल की पतली परत। दूसरी तरफ जलेबी का घोल कपड़े की नली से गोल-गोल तेल में गिर रहा था।

मैंने एक खस्ता लिया। दुकानदार ने उसे उँगलियों से हल्का दबाकर बीच से खोला और उसमें गर्म आलू की सब्ज़ी डाल दी। ऊपर हरी चटनी, थोड़ा मीठा, और अंत में एक चम्मच ऐसी लाल चटनी जिसका रंग देखकर मुझे सावधान हो जाना चाहिए था।

मैं नहीं हुआ।

पहला कौर शानदार था। खस्ता बाहर से इतना कुरकुरा कि दाँत लगते ही पतली परतें टूटकर थाली में गिरीं। अंदर मसालेदार दाल की खुशबू थी। आलू नरम, गर्म और हल्के खट्टे। हरी चटनी ने ताजगी दी। फिर लाल चटनी आई।

करीब पाँच सेकंड तक कुछ नहीं हुआ।

छठे सेकंड पर मेरी जीभ ने शिकायत दर्ज कराई।

दसवें सेकंड पर माथे पर पसीना आया।

दुकानदार ने पूछा, “तीखी है?”

मैंने आँखों में आए पानी को सुबह की हवा पर डालने की कोशिश की। “नहीं, बढ़िया है।”

वह मुस्कराया। “और डाल दूँ?”

“इतनी भी बढ़िया नहीं है।”

उसने हँसते हुए मेरे सामने मीठी दही रख दी। दही ठंडी थी, हल्की मीठी, और लाल मिर्च की आग को धीरे-धीरे पीछे धकेल रही थी। उसके बाद गरम जलेबी खाई। बाहर की पतली परत चिपचिपी और कुरकुरी, अंदर गर्म चाशनी। मसाले के बाद वह मिठास लगभग दवा जैसी लगी।

चाय मैंने अलग से ली - और हमेशा की तरह ज्यादा चीनी वाली। चायवाले ने पहली चम्मच डालकर पूछा, “बस?”

मैंने कहा, “एक और।”

वह रुका।

“थोड़ी और।”

उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मेरी मेडिकल रिपोर्ट बाद में उसे ही पढ़नी हो। फिर चम्मच डाल दी।

मीठी, तेज, दूध वाली चाय। सुबह के स्टेशन से पहले मुझे यही चाहिए था।

प्लेटफॉर्म और पुराना टिकट

THE MISSING TICKET RETURNS

चारबाग की इमारत बाहर से जितनी पहचान वाली लगती है, उसके भीतर पहुँचते ही हर स्टेशन की दुनिया शुरू हो जाती है - घोषणाएँ, लोहे के पहियों की आवाज़, सामान खींचते लोग, प्लेटफॉर्म टिकट की खिड़की, चाय, पानी, अख़बार, बच्चों की आवाज़ और किसी न किसी को ढूँढती आँखें।

मेरी ट्रेन प्रयागराज की तरफ जाने वाली थी। मैंने जानबूझकर ट्रेन नंबर अपने नोट में नहीं लिखा था। इस यात्रा में मैं समय, प्लेटफॉर्म और सीट जरूर लिखता था, लेकिन हर चीज़ को संग्रहालय का लेबल नहीं बनाना चाहता था।

प्लेटफॉर्म पर पहुँचकर मैंने बैग नीचे रखा और पहचान-पत्र निकालने के लिए अंदर की छोटी जेब खोली। ज़िप कुछ दिनों से अटक रही थी। उँगली डालकर कपड़े की तह सीधी की तो नीचे कुछ सख्त लगा।

मैंने खींचा।

एक पुराना, मोड़ा हुआ कागज़ बाहर आया।

मैंने उसे देखा।

जैसलमेर - जयपुर।

वही पुराना टिकट।

कुछ सेकंड तक मैं चुप खड़ा रहा। फिर हँसी आ गई।

जिस टिकट के गायब होने पर मैंने बस, होटल, रास्ता, दूसरे यात्रियों और अपनी याददाश्त पर अलग-अलग शक किया था, वह मेरे बैग की फटी अंदरूनी सिलाई के पीछे जाकर बैठा था।

कोई उसे चुरा कर नहीं ले गया था।

कोई मुझे संकेत नहीं दे रहा था।

कोई मेरा पीछा नहीं कर रहा था।

मेरे बैग की सिलाई खराब थी।

मैंने टिकट हथेली पर रखकर धीरे से कहा, “बहुत बड़ा रहस्य था तुम।”

बगल में बैठे आदमी ने मेरी तरफ देखा।

मैंने टिकट वापस डायरी में रख दिया।

अब पहली बार मुझे उस पर लिखे 10 - 3 - 7 - 1 देखकर बेचैनी नहीं हुई। चार संख्या थीं। बस। उनका अर्थ हो सकता था। शायद कोई अर्थ न भी हो।

राघव की बात फिर याद आई - कहानी को पहले तय मत करो, वरना हर चीज़ उसी कहानी का प्रमाण बनने लगती है।

* * *

ट्रेन प्लेटफॉर्म पर लगी तो लोग दरवाज़े की तरफ बढ़े। मैं भी बढ़ा, फिर एक बुज़ुर्ग महिला को चढ़ने के लिए जगह देने के चक्कर में पीछे हुआ, और पीछे होते हुए मेरे बैकपैक ने एक आदमी के पेपर कप वाली चाय को हल्का धक्का दे दिया।

चाय बच गई। मेरी जान भी।

“भाई साहब, बैग भी टिकट लेकर चलता है क्या?” उसने कहा।

मैंने माफी माँगी।

कोच में मेरी सीट ऊपर की थी। बैग पहले चढ़ाया, फिर खुद। ऊपर बैठते ही मैं सीधा हुआ और सिर पंखे के नीचे लोहे की जाली से टकरा गया।

नीचे से किसी ने कहा, “आराम से।”

मैंने ऊपर से जवाब दिया, “अब जानकारी मिल गई है।”

दो मिनट बाद नीचे वाली सीट खाली हुई तो मैं वहीं आ बैठा। मैंने तय किया कि आज का बाकी सफर गुरुत्वाकर्षण के साथ सहयोग में किया जाएगा।

सौरभ तिवारी

AN EXAM STUDENT AND A COMMON SURNAME

मेरे सामने वाली सीट पर लगभग बाईस-तेईस साल का लड़का बैठा था। पतला चेहरा, आँखों के नीचे हल्की थकान, बैग में दो मोटी किताबें, एक पारदर्शी फाइल और पानी की बोतल। ट्रेन चलने से पहले ही उसने किताब खोल ली।

कवर पर बड़े अक्षरों में सामान्य अध्ययन लिखा था।

मैंने पूछा, “परीक्षा?”

उसने किताब से नज़र उठाई। “हाँ। कई।”

“कई मतलब?”

“जो निकल जाए वही अपनी।”

मैं हँसा। उसने भी हल्की मुस्कान दी।

कुछ देर बाद बात शुरू हुई। उसका नाम था -

सौरभ तिवारी।

नाम सुनते ही मेरी उँगलियाँ अनजाने में बैग की तरफ गईं। नीली डायरी के एक कागज़ पर लिखा था:

“S. Tiw...”

मैंने सौरभ को देखा। फिर अपने दिमाग को।

दिमाग ने तुरंत कहानी बनाने की कोशिश की: तिवारी। प्रयागराज। वही ट्रेन। वही शहर। शायद...

मैंने खुद को बीच में रोका।

सौरभ ने पूछा, “क्या हुआ?”

“कुछ नहीं। आपका नाम बहुत common है।”

उसने भौंह उठाई। “धन्यवाद?”

मैं हँस पड़ा। “मतलब बुरा नहीं था।”

“तिवारी हूँ, सर। उत्तर प्रदेश में तीन स्टेशन चल जाइए, कोई न कोई मिल जाएगा।”

यही जवाब शायद मुझे चाहिए था।

कभी-कभी एक साधारण वाक्य किसी रहस्य की हवा निकाल देता है।

सौरभ प्रतापगढ़ के पास के कस्बे से था, प्रयागराज में कमरा लेकर तैयारी करता था। कभी रेलवे की भर्ती, कभी कर्मचारी चयन, कभी राज्य की परीक्षा। उसके मोबाइल में अलग-अलग चैनलों के नोट्स, परीक्षा तिथियों की स्क्रीनशॉट, और ऐसे संदेश थे जिनमें हर तीसरा व्यक्ति लिखता था - “इस बार vacancy पक्की।”

“घर वाले क्या कहते हैं?” मैंने पूछा।

“पहले कहते थे पढ़ो। अब कहते हैं कब तक पढ़ोगे।”

उसने यह बात मुस्कराकर कही, पर मुस्कान आधी थी।

“और तुम?”

“मैं कहता हूँ एक साल और।”

“हर साल?”

“हर साल।”

हम दोनों हँसे।

फिर वह थोड़ा गंभीर हुआ। “असल दिक्कत पढ़ाई नहीं है। दिक्कत यह है कि आप दो-तीन साल में अपनी उम्र दूसरों से compare करने लगते हो। कोई दोस्त नौकरी में, कोई शादी कर रहा, कोई बाहर चला गया। आप वही किताब लेकर बैठे हो।”

खिड़की के बाहर लखनऊ धीरे-धीरे पीछे जा रहा था। मकानों की लगातार दीवारें टूटीं, फिर खुले हिस्से आए। कहीं ईंट के भट्टे, कहीं खेत, कहीं छोटे प्लेटफॉर्म जिन पर तीन मिनट के ठहराव में पूरा जीवन दिखाई देता था।

मैंने कहा, “मॉस्को में भी यही है। बस तुलना के फोटो अलग होते हैं।”

“आप वहाँ क्या करते हैं?”

मैंने अपनी नौकरी के बारे में बताया। उसने पहले शहर के तापमान के बारे में पूछा, फिर वेतन के बारे में। यह क्रम भारत में काफी स्वाभाविक है।

“इतनी ठंड में लोग काम कैसे करते हैं?”

“हीटर की मदद से।”

“और बाहर?”

“बाहर इंसान अपनी गलतियों पर सोचता है।”

वह हँसा। “मैं एक बार जाना चाहता हूँ।”

“पहले परीक्षा निकालो, फिर बिना परीक्षा के भी दुनिया बड़ी है।”

उसने किताब बंद की। “यही बात घर पर मत बोल देना।”

खिड़की के बाहर उत्तर प्रदेश

FIELDS, CROSSINGS AND SMALL STATIONS

ट्रेन ने गति पकड़ी। खिड़की के शीशे पर धूल की पतली परत थी, फिर भी बाहर का रंग साफ था। हरे खेतों के बीच कहीं-कहीं पानी चमकता। मिट्टी की सड़कें रेल लाइन के समानांतर कुछ दूर चलतीं और अचानक किसी गाँव की तरफ मुड़ जातीं। बिजली के खंभे नियमित अंतराल पर पीछे भागते।

छोटे स्टेशन आते। प्लेटफॉर्म पर पीले बोर्ड। दो-तीन बेंच। एक नल। लाल शर्ट वाला कुली कभी दिखाई देता, कभी नहीं। चाय बेचने वाला हर स्टेशन पर अलग चेहरा था, लेकिन आवाज़ लगभग एक जैसी।

“चाय... चाय...”

एक जगह ट्रेन थोड़ी देर रुकी। मैंने नीचे उतरकर चाय लेने की सोची। सौरभ ने कहा, “दूर मत जाइएगा।”

मैंने कहा, “मैं experienced traveller हूँ।”

उसने बिना मुस्कराए मेरी तरफ देखा। शायद मेरे सिर के पंखे से टकराने वाला दृश्य उसके दिमाग में था।

मैं दो कदम नीचे गया। चाय ली। फिर सामने गरम समोसे दिखे। समोसा लिया। दुकानदार ने चटनी डाली। मैंने कैमरा निकालकर एक फोटो ली। दूसरा angle लिया। प्लेटफॉर्म की पीली पट्टी के साथ तीसरा।

पीछे सीटी हुई।

सौरभ दरवाज़े से बोला, “Experienced traveller!”

मैंने कैमरा बैग में ठूँसा और चाय हाथ में लेकर चढ़ा। चाय का आधा हिस्सा मेरे हाथ पर गिरते-गिरते बचा।

सीट पर पहुँचकर समोसा खाया। फोटो खींचते-खींचते वह थोड़ा ठंडा हो चुका था। फिर भी बाहर की परत कुरकुरी थी। अंदर आलू, धनिया, साबुत धनिए की खुशबू और हल्की सौंफ। चटनी मीठी-खट्टी।

सौरभ ने कहा, “खाना पहले खाया जाता है या फोटो?”

“Travel writer बनने का नुकसान है। खाना पहले camera खाता है।”

“फिर आपको cold food writer लिखना चाहिए।”

मैंने उसे आधा समोसा दे दिया। आलोचना बंद कराने का सबसे पुराना तरीका।

* * *

डायरी को तीसरी बार, पर पहली बार ठीक से

THE FREEMASON THEORY ENDS

सौरभ फिर अपनी किताब में लग गया। मैं खिड़की के पास बैठा रहा। कुछ देर बाद मैंने नीली डायरी निकाली।

इस बार मेरा उद्देश्य किसी clue को पकड़ना नहीं था। उल्टा - मैं देखना चाहता था कि पिछले दिनों मैंने क्या-क्या जबरदस्ती जोड़ा था।

वाराणसी में पुरानी तस्वीर।

THE BROTHER'S DOOR.

कुछ पन्नों पर Br.

रेखाओं से बना एक चिन्ह, जो मुझे Square-and-Compasses की याद दिला गया था।

और क्योंकि मैं खुद Freemason था, मैंने बाकी खाली जगह अपने अनुभव से भर दी थी।

यह बहुत मानवीय गलती थी। शायद इसी वजह से खतरनाक भी। जो चीज़ हमें पहले से परिचित होती है, हम उसे अनजान जगहों पर भी पहचानने लगते हैं।

मैंने डायरी के बीच के पन्ने फिर खोले। कई जगह Br. के बाद संख्या थी।

Br. 14

Br. 22

Br. - south side

एक पन्ने के बीच में छोटा कागज़ दबा था जिसे मैं पहले शायद सिर्फ पीछे से देख चुका था। कागज़ पर पुराने ढंग की अंग्रेज़ी में एक लाइन थी:

Bridge Inspection - Br. No. 22 - east approach

मैंने उसे दो बार पढ़ा।

फिर Br. वाले पुराने पन्ने देखे।

Brother नहीं।

Bridge.

इतना साधारण कि मुझे अपनी पिछली theory पर हल्की शर्म आई।

एक और पन्ने में वही कोण जैसा चिन्ह बना था जो मुझे Masonic प्रतीक जैसा लगा था। इस बार उसके पास छोटी लिखावट दिखाई दी:

"कोण जाँच - compass / set square."

मैंने उँगली से उस निशान की रेखा छुई।

वह कोई गुप्त पहचान नहीं थी।

वह एक अभियंता की drawing थी।

वाराणसी के lodge में जिन पुराने सार्वजनिक नामों और सूचियों को मैंने देखा था, उनमें भी इस डायरी के संभावित मालिक का कोई साफ मेल नहीं मिला था। उस समय मैंने इसे “रिकॉर्ड अधूरा होगा” कहकर छोड़ दिया था। अब समझ आया - शायद रिकॉर्ड नहीं, मेरी theory गलत थी।

THE BROTHER'S DOOR वाली तस्वीर अभी भी थी। पर केवल एक caption किसी आदमी को Freemason नहीं बनाता। हो सकता है वह किसी स्थानीय नाम, किसी मज़ाक, दो जुड़ी मेहराबों, किसी परिवार या सिर्फ उसके अपने दिए शीर्षक का संदर्भ रहा हो। मेरे पास उसके आगे कुछ नहीं था।

और सबसे महत्वपूर्ण बात - पूरी डायरी में एक भी जगह साफ शब्दों में lodge, Freemason, Grand Lodge, initiation या membership जैसी कोई बात नहीं थी।

मैंने अपनी छोटी नोटबुक निकाली। एक लाइन लिखी:

डायरी के मालिक का Freemasonry से संबंध - मेरी गलतफहमी। समाप्त।

लाइन लिखकर अजीब राहत मिली।

रहस्य कम हुआ था, लेकिन कहानी बेहतर हो गई थी।

क्योंकि अब डायरी का मालिक किसी secret order का आदमी नहीं था। वह शायद बस एक रेलवे अभियंता था जिसे पुल, स्टेशन, पुरानी इमारतें, शहर और यात्राएँ पसंद थीं।

एक ऐसा आदमी जो नौकरी के दौरान देश देखता रहा, फिर शायद retirement के बाद उन्हीं नोटों को किसी किताब में बदलना चाहता था।

यानी वह मेरे लिए कम mysterious और ज्यादा इंसान हो गया था।

सौरभ ने किताब से नज़र उठाई। “क्या लिख रहे हैं?”

मैंने कहा, “एक गलत theory खत्म कर रहा हूँ।”

“परीक्षा में negative marking वाली?”

“जीवन वाली।”

उसने सिर हिलाया। “उसमें कटऑफ ज्यादा कठिन है।”

नौकरी, तैयारी और घर का फोन

WHAT A COMPETITIVE EXAM COSTS

दोपहर की तरफ रोशनी तेज हुई। कोच में लोग थोड़े सुस्त पड़ गए। कोई सीट पर पैर मोड़कर सो रहा था। किसी बच्चे को उसकी माँ खिड़की से बाहर पेड़ गिनवा रही थी। ऊपर वाली बर्थ पर एक आदमी फोन पर लगातार कह रहा था कि “बस पहुँचने वाला हूँ”, जबकि हम अभी काफी दूर थे। भारतीय यात्रा में “बस पहुँचने वाला हूँ” समय की इकाई नहीं, भावनात्मक आश्वासन है।

सौरभ का फोन बजा। स्क्रीन पर “माँ” लिखा था। उसने उठाया।

“हाँ… ट्रेन में हूँ… हाँ, खा लिया… नहीं, बाहर का नहीं…”

उसने मेरी तरफ देखा। उसके हाथ में अभी समोसे का कागज़ था।

मैंने हँसी रोकने के लिए खिड़की की तरफ देखा।

“हाँ, पहुँचकर फोन करूँगा।”

फोन रखने के बाद मैंने पूछा, “बाहर का नहीं?”

“कुछ बातें माँ को सच बताने से समाज को कोई लाभ नहीं होता।”

“यह ethical philosophy किस किताब में है?”

“Competitive exam के बाहर वाली।”

उसने बताया कि पिता छोटी दुकान चलाते हैं। एक बहन की पढ़ाई चल रही है। प्रयागराज में चार लड़के मिलकर कमरा लेते हैं। सुबह पुस्तकालय, दोपहर coaching, शाम test series या self-study। महीने की रकम तय है। अगर किसी महीने form ज्यादा निकल आएँ तो खाना थोड़ा साधारण हो जाता है।

“कितने form भरते हो?”

“इतने कि कभी लगता है job से पहले application filling में experience certificate मिल जाना चाहिए।”

उसकी बात मजाक थी, लेकिन उसमें थकान थी।

हमने सरकारी नौकरी के आकर्षण पर बात की - स्थिरता, परिवार का भरोसा, छोटे शहरों में सम्मान, pension की पुरानी कल्पना जो नई पीढ़ी तक कहानियों की तरह पहुँचती है। फिर contract jobs, private sector, migration और शहर बदलने की मजबूरी पर।

मैंने कोई आसान सलाह नहीं दी। “Passion follow करो” कह देना ऐसे लड़के को अक्सर क्रूर मजाक होता है जिसके घर की मासिक गणना बहुत साफ हो।

मैंने बस पूछा, “अगर नौकरी का दबाव न होता तो क्या करते?”

सौरभ ने कुछ देर सोचा। “शायद geography पढ़ाता। मुझे maps अच्छे लगते हैं।”

उसने अपनी किताब के पीछे भारत का नक्शा दिखाया। नदियाँ, पर्वत, मिट्टी, सिंचाई, औद्योगिक क्षेत्र। कुछ जगह छोटे रंगीन निशान।

“फिर पढ़ाओ,” मैंने कहा। “Job निकलने के बाद भी।”

“पहले job निकल जाए।”

उसने वही वाक्य कहा जो शायद उसके जीवन का refrain था।

एक नाम, जो clue नहीं था

S. TIW... MEANS ALMOST NOTHING

मैंने उसे डायरी नहीं दिखाई, लेकिन उस अधूरे नाम की बात सामान्य ढंग से पूछी।

“मान लो किसी पुराने कागज़ पर सिर्फ ‘S. Tiw...’ लिखा मिले। प्रयागराज में किसी आदमी को ढूँढना हो तो?”

सौरभ ने तुरंत कहा, “मत ढूँढिए।”

“इतना बुरा?”

“S से नाम शुरू होने वाले तिवारी? सौ मिल जाएँगे। सुरेश, संजय, शिव, शरद, सतीश, सुनील, सुधीर, सौरभ...”

“सौरभ?”

“देखिए, एक तो सामने बैठा है।”

मैं हँसा।

“अगर address, department, year, कुछ और हो तो बात है,” उसने कहा। “वरना surname के पीछे भागते रहिए।”

मैंने सिर हिलाया।

यह शायद इस यात्रा में दूसरी बार था जब एक ordinary आदमी ने mystery को mystery बनने से रोक दिया था।

मैंने डायरी के कागज़ पर लिखे “इलाहाबाद - रेल पुल - संगम - पुरानी कॉलोनी” को याद किया। वहाँ कम से कम जगहें थीं। आदमी का अधूरा नाम नहीं।

मैंने तय किया कि प्रयागराज पहुँचकर पहले शहर देखूँगा। संगम। पुराना इलाका। सुबह का मंदिर। अगर रास्ते में रेलवे की पुरानी कॉलोनी का मौका मिला तो देख लूँगा।

लेकिन S. Tiw... की खोज में शहर नहीं खोऊँगा।

* * *

दोपहर का खाना

A STEEL BOX, PICKLE AND TRAIN APPETITE

करीब दोपहर में कोच में खाने की अलग-अलग खुशबू फैलने लगी। किसी ने घर का पराठा निकाला। कहीं अचार खुला। किसी पैकेट से नमकीन की खुशबू आई। ट्रेन में खाना केवल पेट की चीज़ नहीं होता; पूरा डिब्बा धीरे-धीरे अलग-अलग घरों की रसोई में बदल जाता है।

सौरभ ने स्टील का छोटा डिब्बा निकाला। दो सूखी आलू की पूरियाँ जैसी मुड़ी रोटियाँ, आलू-जीरा की सब्ज़ी और आम का अचार।

“माँ ने दिया?” मैंने पूछा।

“हाँ। और फोन पर कहा बाहर का मत खाना।”

“तुमने अभी समोसा...”

“वह academic exception था।”

मैंने स्टेशन से लिया अपना पैक खोला - पूड़ी और आलू की सब्ज़ी। सौरभ ने मेरा पैक देखा, फिर अपना।

“आप experienced traveller कम, आलू researcher ज्यादा लग रहे हैं।”

मेरे पैक की पूड़ियाँ थोड़ी नरम हो चुकी थीं, लेकिन सब्ज़ी अच्छी थी। टमाटर का हल्का खट्टापन, जीरा, हरी मिर्च, ऊपर धनिया। तेल ज्यादा था पर ट्रेन के खाने में वह भी कभी-कभी स्वाद का हिस्सा बन जाता है। सौरभ के घर वाले अचार का छोटा टुकड़ा ज्यादा प्रभावी था - सरसों के तेल की तेज खुशबू, मेथी, नमक, सूखी लाल मिर्च।

उसने आधा अचार मेरी थाली में डाल दिया।

मैंने कहा, “यह रिश्वत है?”

“आपने समोसा दिया था। हिसाब बराबर।”

हमने खाना खाया। बाहर खेत चलते रहे।

रेलवे अभियंता का चेहरा

NO SECRET ORDER, JUST A LIFE OF ROUTES

खाना खाने के बाद सौरभ सो गया। उसकी किताब खुली रह गई। मैं खिड़की से बाहर देखता रहा और डायरी का मालिक पहली बार मेरे दिमाग में बिना किसी रहस्यमय रोशनी के दिखाई दिया।

शायद वह भी ऐसी ही ट्रेनों में बैठा होगा। कभी duty पर। कभी transfer में। कभी छुट्टी में। शायद reservation नहीं मिला होगा। शायद inspection trolley पर गया होगा। शायद स्टेशन की चाय को खराब कहा होगा और अगले स्टेशन पर फिर वही चाय पी होगी।

उसकी नोटबुक में bridge number होना बिल्कुल स्वाभाविक था। पुराने स्टेशन भवनों की माप भी। रेलवे कॉलोनियों के बंगले। मेहराब। पत्थर का काम। मंदिर। शहर की गलियाँ।

और retirement के बाद शायद उसने उन नोटों को फेंका नहीं। उन्हें व्यवस्थित करने की कोशिश की। फोटो जोड़ता गया। टिकट रखता गया। पुराने कागज़ों पर शहरों के नाम।

हो सकता है वह किताब लिखना चाहता हो।

हो सकता है सिर्फ अपने लिए लिख रहा हो।

दोनों ही बातें किसी गुप्त संस्था से ज्यादा सुंदर थीं।

मैंने महसूस किया कि mystery की चाह ने मुझे उस आदमी से दूर कर दिया था। मैं symbol खोज रहा था; वह शायद पुल की ईंट देख रहा था। मैं code पढ़ रहा था; वह शायद mileage या drawing reference लिख रहा था।

इसमें एक छोटी विडंबना थी। Freemasonry ने मुझे symbolism को ध्यान से देखना सिखाया था; उसी वजह से मैंने वहाँ भी symbolism खोज लिया जहाँ शायद सिर्फ engineering notation था।

गलती Freemasonry की नहीं थी। मेरी थी।

मैंने नोटबुक में दूसरी लाइन लिखी:

पहचान हमेशा प्रमाण नहीं होती। परिचित चिन्ह सबसे जल्दी धोखा देते हैं।

फिर डायरी बंद कर दी।

इस विषय पर अब और कुछ नहीं था।

* * *

प्रयागराज करीब था

THE CITY BEGINS BEFORE THE STATION

दोपहर ढलने लगी तो कोच में हलचल वापस आई। लोग बैग नीचे उतारने लगे। किसी ने जूते पहने। कोई फोन पर बोला, “हाँ, अब सच में पहुँचने वाले हैं।”

सौरभ जागा, बाल हाथ से ठीक किए और खिड़की से बाहर देखकर बोला, “अब ज्यादा नहीं।”

शहर अक्सर स्टेशन बोर्ड से पहले शुरू हो जाता है। रेल लाइन के किनारे मकान बढ़ते हैं। दीवारों पर coaching के विज्ञापन। छोटे workshop। मोटरसाइकिलें। पुल के नीचे से गुजरती सड़कें। कपड़े सुखाते घर। दूर कहीं मंदिर का शिखर। कहीं नई इमारत के बगल में पुरानी दीवार।

प्रयागराज का नाम आते ही मेरे दिमाग में सबसे पहले संगम था। फिर वह पुराना नोट - रेल पुल, संगम, पुरानी कॉलोनी।

लेकिन इस बार मैंने क्रम नहीं बनाया।

शहर पहले।

नोट बाद में।

ट्रेन धीमी हुई। प्लेटफॉर्म पास आया। सौरभ ने बैग उठाया। उसका बैग मेरे बैग से आधा था और शायद उसमें मुझसे ज्यादा उपयोगी चीज़ें थीं।

“कहाँ रुकेंगे?” उसने पूछा।

मैंने बजट होटल वाला इलाका बताया।

“ठीक है। सुबह संगम जल्दी जाइएगा। धूप से पहले अच्छा लगता है।”

“तुम चलोगे?”

उसने किताब उठाई। “मेरी संगम से अभी मुलाकात exam निकलने के बाद होगी।”

“इतना कठोर मत बनो।”

“Sunday को कभी-कभी जाता हूँ।”

हम उतरे। प्लेटफॉर्म पर भीड़ फैल गई।

जाते-जाते उसने कहा, “और S. Tiwari मत ढूँढने लगिएगा।”

मैंने कहा, “आज से नहीं।”

“अच्छा है। वरना मुझे भी पकड़ लेते।”

वह भीड़ में चला गया। कुछ सेकंड में उसकी पीठ दूसरे बैगों और लोगों में गायब हो गई।

यात्रा में कुछ लोग इतने कम समय के लिए मिलते हैं कि बाद में उनका चेहरा धुंधला पड़ जाता है, लेकिन एक वाक्य याद रहता है।

सौरभ का मेरे लिए वह वाक्य था:

“जो निकल जाए वही अपनी।”

शायद नौकरी के लिए कहा था। शायद जीवन पर भी लागू होता था।

स्टेशन के बाहर

GUAVA, RICKSHAWS AND A NEW CITY

स्टेशन से बाहर निकला तो आवाज़ों का नया घेरा शुरू हुआ। ऑटो। ई-रिक्शा। होटल वाले। “संगम?” पूछते ड्राइवर। सड़क के किनारे फल के ठेले। एक ठेले पर कटे हुए अमरूद पर नमक-मिर्च छिड़की जा रही थी।

मैंने एक अमरूद लिया। दुकानदार ने चार मोटे टुकड़े किए, ऊपर काला नमक और लाल मिर्च डाली। फल कुरकुरा था, हल्की मिठास और बीच में वह खास दानेदार बनावट जो अमरूद को सेब जैसा नहीं होने देती। काला नमक आते ही स्वाद अचानक ज्यादा गहरा हो गया। मिर्च हल्की थी - सुबह की खस्ता वाली आग के बाद यह लगभग सभ्य लगी।

मैंने दूसरा टुकड़ा उठाया और कैमरा निकाला।

फिर खुद ही कैमरा वापस रख दिया।

आज कम से कम एक चीज़ गर्म या ताज़ी रहते हुए खा लेनी चाहिए थी।

ई-रिक्शा वाले ने पूछा, “कहाँ?”

मैंने होटल का आधा नाम बताया।

वह बोला, “वो सिविल लाइंस वाला?”

मैंने confidence से कहा, “हाँ।”

दस मिनट बाद मुझे लगा कि मैंने शायद बिना जाने confidence का इस्तेमाल कर दिया है। मोबाइल पर पिन देखा। होटल दूसरी दिशा में था।

“भैया, शायद दूसरा वाला।”

ड्राइवर ने आईने में देखा। “आपने सिविल लाइंस कहा था।”

“मैंने ‘हाँ’ कहा था। अंतर है।”

वह हँस पड़ा। “अब घूमकर चलते हैं।”

यात्रा में कई बार गलत रास्ता आदमी नहीं चुनता। वह बस किसी और के सवाल पर बहुत जल्दी ‘हाँ’ बोल देता है।

* * *

होटल साधारण था। कमरा छोटा, लेकिन साफ। खिड़की से सामने की सड़क दिखती थी। मैंने बैग नीचे रखा, जूते उतारे और इस बार चाबी जेब में रखने के बाद ही दरवाज़ा बंद किया। सुधार संभव है।

नीली डायरी मेज़ पर रखी। पुराना टिकट फिर उसके अंदर था।

मैंने “इलाहाबाद - रेल पुल - संगम - पुरानी कॉलोनी” वाला पर्चा बाहर निकाला। नीचे वही अधूरा नाम:

S. Tiw...

मैं मुस्कराया।

आज सुबह होता तो शायद उसे सौरभ से जोड़ देता।

अब वह बस अधूरा नाम था।

मैंने पर्चा वापस रखा।

कल सुबह संगम जाना था। बड़े हनुमान जी का मंदिर देखना था। शहर को पैरों से थोड़ा पढ़ना था। अगर समय मिला तो पुराने रेलवे इलाके की तरफ भी जाना था।

और Freemasonry?

डायरी के मामले में वह अध्याय बंद हो चुका था।

लेकिन मेरी अपनी यात्रा में, पुराने lodges और इतिहास में मेरी दिलचस्पी अभी खत्म नहीं हुई थी। दोनों चीज़ों को एक समझना ही मेरी पहली गलती थी।

मैंने कमरे की बत्ती बंद की, फिर तुरंत चालू की।

चाय पीने बाहर जाना था।

यात्रा में दर्शन और इतिहास अपनी जगह हैं।

लेकिन शाम की मीठी चाय भी एक अनुशासन है।

* * *

अगला पड़ाव - संगम।

CHAPTER SEVENTEEN

संगम की सुबह

MORNING AT THE SANGAM

प्रयागराज

Day Six - Dawn to Night

"किसी शहर को समझने के लिए उसका इतिहास पढ़ना जरूरी है। लेकिन उससे पहले उसकी सुबह सुनना ज्यादा जरूरी है।"

सुबह पाँच बजे से कुछ पहले मेरी आँख खुली। कमरे की खिड़की के बाहर सड़क अभी पूरी तरह जागी नहीं थी, लेकिन शहर नींद से बाहर आ चुका था। कहीं दूर से किसी मोटरसाइकिल की आवाज़ आई, फिर दूध के डिब्बों की हल्की खनखनाहट, फिर किसी चायवाले का बर्तन मेज़ से टकराया।

मैंने मोबाइल देखा। चार अलार्म में से केवल दूसरा सुन पाया था। पहले को नींद में बंद कर चुका था। तीसरा और चौथा मेरी प्रतिष्ठा बचाने के लिए अब भी तैयार खड़े थे।

बिस्तर से उठते ही सबसे पहले मैंने कमरे की चाबी उठाकर जेब में रखी। लखनऊ का कमरा 307 मुझे शिक्षित कर चुका था। फिर दो कदम चला, वापस आया और जेब दोबारा टटोली।

चाबी थी।

यात्रा आदमी को आध्यात्मिक कम और सावधान ज्यादा बनाती है।

नीली डायरी मेज़ पर पड़ी थी। मैंने उसे बैग में रखा, लेकिन आज उसे खोलने की कोई जल्दी नहीं थी। आज संगम जाना था। फिर बड़े हनुमान जी। उसके बाद शहर को थोड़ा पैदल देखना था। अगर समय मिला तो पुराने रेलवे इलाके की तरफ निकलूँगा।

और शाम में मेरी अपनी एक अलग योजना थी - Freemasonry से जुड़ी, लेकिन नीली डायरी से नहीं। यह अंतर मैंने पिछली ट्रेन में बड़ी मेहनत से सीखा था।

* * *

मीठी चाय और गलत चप्पल

THE DAY STARTS BADLY, WHICH IS NORMAL

होटल के बाहर एक छोटा चाय का ठेला जल चुका था। पीली रोशनी में भाप उठ रही थी। दूध को लंबे समय तक उबालने से किनारों पर मलाई की पतली तह बन गई थी। चायवाले ने अदरक कूटी, चायपत्ती डाली और पूछा, “चीनी?”

मैंने कहा, “थोड़ी ज्यादा।”

उसने एक चम्मच डाली।

मैंने कहा, “और।”

दूसरी।

मैंने कप की तरफ देखा। “थोड़ी और।”

वह रुका। “साहब, चाय पीनी है या मिठाई?”

“दोनों का बजट एक ही कप में रखिए।”

उसने हँसते हुए आधी चम्मच और डाल दी। चाय तेज थी, अदरक की गर्मी जीभ पर अलग महसूस होती थी और दूध की भारी मिठास उसके पीछे बैठी थी। सुबह की हल्की ठंड में वह कप हाथ में पकड़ना भी अच्छा लग रहा था।

संगम जाने के लिए ई-रिक्शा लिया। ड्राइवर का नाम सोनू था। उसने पूछा, “पहली बार?”

“हाँ।”

“तो सूरज निकलने से पहले पहुँच जाइए। बाद में भीड़ बढ़ेगी।”

सड़कें अभी खुली थीं। कुछ जगह सफाई चल रही थी, कहीं मंदिर की घंटी, कहीं मस्जिद से आती सुबह की आवाज़, कहीं दूध और सब्ज़ी की गाड़ियाँ। शहर का यह समय मुझे हमेशा पसंद है - जब दुकानों के बोर्ड मौजूद होते हैं लेकिन दुकानदार नहीं, ट्रैफिक लाइट जलती है लेकिन सड़क खाली होती है, और बड़े शहर कुछ मिनट के लिए छोटे लगते हैं।

संगम क्षेत्र के पास पहुँचकर मैंने जूते एक स्टॉल पर रखे। लड़के ने नंबर वाली पर्ची दी। दर्शन और नदी की तरफ जाने से पहले मैं दो कदम चला, फिर पैर की तरफ देखा।

मेरे दाएँ पैर में अपनी चप्पल थी। बाएँ में किसी और की।

मैं वापस लौटा।

लड़के ने मुझे आते देखा और कुछ कहे बिना नीचे झुक गया। “ये आपकी है।”

मैंने पूछा, “आपको कैसे पता?”

“क्योंकि दूसरी वाली अभी एक अंकल ढूँढ रहे हैं।”

पीछे से आवाज़ आई, “भाई साहब, मेरी चप्पल...”

मैंने तुरंत बदल दी।

मैंने सोचा था दिन की शुरुआत संगम से होगी। शुरुआत footwear exchange से हुई।

संगम

WHERE THE CITY OPENS INTO WATER

नदी के पास आते ही शहर की आवाज़ बदल गई। सड़क का शोर पीछे रह गया। सामने खुला आकाश था, पानी था, नावें थीं, दूर-दूर तक लोग थे, लेकिन जगह फिर भी खुली लग रही थी। किसी घाट पर मंत्रोच्चार था, कहीं परिवार फोटो खिंचवा रहा था, कहीं कोई चुप बैठा था।

सुबह की रोशनी अभी पूरी सुनहरी नहीं हुई थी। पानी पर धूसर-नीली चमक थी। छोटी नावों के रंग उस शांत सतह पर ज्यादा साफ दिखाई दे रहे थे - लाल किनारा, नीला तख्ता, कहीं पीला नाम, कहीं उखड़ा हुआ रंग।

एक नाविक ने आवाज़ दी, “संगम चलेंगे?”

मैंने दाम पूछा। उसने संख्या बताई। मैंने तुरंत कम बोल दिया। उसने दूसरी संख्या कही। मैंने तीसरी। पाँच मिनट bargaining हुई और अंत में मुझे लगा कि मैंने अच्छा सौदा कर लिया।

नाव में बैठने के बाद बगल के आदमी ने वही दूरी लगभग कम दाम में तय की थी।

मैंने नाविक से पूछा, “भैया, मुझे tourist rate मिला?”

वह हँसा। “आपने खुद तय किया है।”

यह सबसे मजबूत तर्क था।

नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ी। चप्पू पानी में जाता, हल्का प्रतिरोध महसूस होता, फिर पीछे निकलते समय पानी की पतली धार टूटती। आसपास दूसरी नावें थीं। कुछ में बुज़ुर्ग, कुछ में बच्चे, कुछ में ऐसे यात्री जिनके चेहरे पर पूरी रात की ट्रेन की थकान साफ थी।

नाविक का नाम रामजी था। मैंने उससे पूछा कि वह कब से नाव चला रहा है। उसने कहा, “बचपन से पानी देख रहे हैं। काम बाद में शुरू किया।”

उसने कोई लंबा दर्शन नहीं दिया। उसने किराया, मौसम, भीड़, नाव की मरम्मत और बच्चों की पढ़ाई की बात की। मुझे यही अच्छा लगा। नदी के बीच भी आदमी की जिंदगी फीस, लकड़ी, पेट्रोल और स्कूल के समय से बनी रहती है।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़े, हवा थोड़ी ठंडी हुई। सूरज की पहली स्पष्ट किरणों ने पानी पर लंबी चमकीली पट्टी बना दी। कुछ पक्षी पानी के ऊपर नीचे उड़ रहे थे। दूर से घंटियों और लाउडस्पीकर की आवाज़ एक साथ आती और हवा में टूट जाती।

रामजी ने उस दिशा की तरफ इशारा किया जहाँ लोग संगम मानकर स्नान और पूजा कर रहे थे। मैंने कैमरा निकाला, फिर कुछ देर कैमरा नीचे कर दिया। हर दृश्य फोटो माँगता नहीं है। कुछ जगह आँख को अपना काम अकेले करने देना चाहिए।

मेरे सामने एक परिवार पूजा कर रहा था। पिता बच्चों को संभाल रहे थे, माँ फूलों की छोटी थाली पकड़ रही थी, दादी पानी को दोनों हथेलियों से उठाकर माथे तक ला रही थीं। उनमें कोई नाटकीयता नहीं थी। बस एक पुरानी क्रिया थी जिसे वे अपने ढंग से निभा रहे थे।

मैं नाव के किनारे बैठा रहा। यात्रा में मेरे लिए धार्मिक जगहों का अर्थ केवल architecture नहीं होता। लोग वहाँ क्या लेकर आते हैं - डर, कृतज्ञता, उम्मीद, आदत, परिवार की परंपरा - वह भी जगह का हिस्सा है।

रामजी ने पूछा, “नहाएँगे?”

मैंने पानी की तरफ देखा। “आज नहीं।”

“ठंड लग रही?”

“सच बोलूँ?”

“हाँ।”

“हाँ।”

वह हँसा। “ईमानदार आदमी हैं।”

मैंने कहा, “इतनी सुबह जितना संभव है।”

* * *

बड़े हनुमान जी

DARSHAN AFTER THE RIVER

नाव से लौटकर मैं बड़े हनुमान जी के मंदिर की तरफ गया। आसपास सुबह अब तेज हो चुकी थी। फूल-माला की दुकानें खुली थीं। सिंदूर की चमक, गेंदे के पीले-नारंगी फूल, प्रसाद की छोटी थालियाँ, अगरबत्ती की गंध और मिट्टी में मिला पानी - सब मिलकर एक अलग वातावरण बना रहे थे।

जूते इस बार मैंने ध्यान से उतारे और पर्ची जेब में रखी। फिर जेब टटोली। पर्ची थी।

मंदिर के भीतर भीड़ थी, लेकिन सुबह की भीड़ में एक तरह की दिशा होती है। लोग धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं, हाथ जोड़ते हैं, कोई बच्चे को उठाता है, कोई प्रसाद संभालता है। मैं भी उसी प्रवाह में आगे बढ़ा।

लेटे हुए हनुमान जी का दर्शन करते समय मेरा पहला ध्यान मूर्ति की मुद्रा पर गया। इस तरह का रूप देखने का अनुभव खड़े हुए सामान्य मंदिर-विग्रह से अलग है। आसपास लोगों की आवाज़ें थीं, पुजारी निर्देश दे रहे थे, कोई राम-नाम बोल रहा था, लेकिन बीच में कुछ क्षण ऐसे मिले जब मैं सिर्फ सामने देखता रहा।

मैंने कोई इच्छा-सूची नहीं बनाई। यात्राओं में मेरी प्रार्थनाएँ छोटी हो गई हैं। सुरक्षित रास्ता। परिवार ठीक रहे। दिमाग सही रहे। और अगर संभव हो तो अगली ट्रेन न छूटे।

बाहर निकलते समय प्रसाद लिया। एक बुज़ुर्ग ने पूछा, “कहाँ से?”

मैंने कहा, “अभी तो मॉस्को से आया हूँ, घर भारत ही है।”

उन्होंने दो सेकंड मुझे देखा। “वहाँ हनुमान मंदिर है?”

मैंने जितना जानता था उतना बताया। फिर उन्होंने मौसम पूछा। फिर वही सवाल जो लगभग हर कोई पूछता था - “इतनी ठंड में रहते कैसे हो?”

मैंने कहा, “कमरे के अंदर रहकर।”

वे हँसे। “ठीक जवाब है।”

मंदिर से निकलते समय जूते लेने पहुँचा। इस बार सही जोड़ी मिली। मैंने लड़के को पर्ची दी। वह मुझे पहचान गया था। बोला, “इस बार दोनों आपके हैं।”

“प्रगति हो रही है।”

कचौड़ी, सब्ज़ी और अमरूद

PRAYAGRAJ ON A STEEL PLATE

दर्शन के बाद भूख अचानक याद आई। पास की गली में एक दुकान पर कचौड़ियाँ निकल रही थीं। कड़ाही का तेल सुबह से गर्म था और हर नई कचौड़ी डालते ही सतह कुछ सेकंड के लिए उफन जाती। दुकानदार लकड़ी की लंबी कलछी से उन्हें दबाता, छोड़ता, फिर पलटता। धीरे-धीरे वे फूलकर सुनहरी हो जातीं।

मैंने दो लीं। स्टील की छोटी थाली में पहले आलू की पतली सब्ज़ी डाली गई - हल्दी का रंग, टमाटर की खटास, कहीं-कहीं हरी मिर्च, ऊपर धनिया। उसके बाद कचौड़ी रखी गई। साथ में थोड़ी सूखी मसालेदार आलू की परत और खट्टी चटनी।

पहली कचौड़ी तोड़ते ही अंदर से अजवाइन और मसाले की गर्म गंध निकली। बाहरी हिस्सा कुरकुरा था, लेकिन इतना मोटा नहीं कि चबाते-चबाते थक जाएँ। आलू की सब्ज़ी ने उसे तुरंत नरम किया। एक ही कौर में कुरकुरापन, गरम मसाला और हल्की खटास आई।

दुकानदार ने पूछा, “मिर्च?”

लखनऊ की सुबह मुझे याद थी। मैंने कहा, “संतुलित।”

उसने मेरी तरफ देखा। “कम?”

“हाँ, यही हिंदी शब्द है।”

बगल वाले आदमी ने हँस दिया।

खाने के बाद मैंने मीठी लस्सी ली। ऊपर मलाई की मोटी तह थी। गिलास ठंडा, दही गाढ़ी, चीनी साफ महसूस होती थी। मेरी पसंद के हिसाब से यह लगभग आदर्श थी। इतनी मीठी कि किसी nutritionist को दूर से बेचैनी हो जाए।

आगे बढ़ा तो अमरूद के ठेले दिखे। प्रयागराज में अमरूद देखकर बिना खाए निकलना मुझे गलत लगा। एक बड़ा, हल्का पीला-हरा अमरूद कटवाया। चाकू अंदर जाते समय वह कुरकुरा आवाज़ करता था। नमक और काली मिर्च की हल्की परत डाली गई।

पहला टुकड़ा सख्त-कुरकुरा, फिर धीरे-धीरे मीठा। बीच के बीजों में हल्की दानेदार बनावट। नमक ने मिठास को और साफ कर दिया। मैंने कैमरा निकाला।

फिर खुद से कहा, “पहले खा।”

मेरी आत्म-सुधार प्रक्रिया जारी थी।

* * *

पुरानी रेलवे कॉलोनी

A SKETCH FINDS ITS BUILDING

दोपहर से पहले मैं पुराने रेलवे इलाके की तरफ निकला। यह किसी detective की तरह clue chase करना नहीं था। नीली डायरी के पर्चे पर बस तीन जगहें लिखी थीं - रेल पुल, संगम, पुरानी कॉलोनी। संगम देख चुका था। शहर में समय था, तो कॉलोनी देखना स्वाभाविक था।

ई-रिक्शा वाले को मैंने इस बार पूरा पता दिखाया। पिछले दिन की “हाँ” वाली गलती दोहराने का मन नहीं था। उसने मोबाइल स्क्रीन देखा, बोला, “ठीक है,” और चल पड़ा।

सड़कें बदलती गईं। चौड़ी सड़क से पुराना इलाका, फिर रेलवे की दीवारें, छोटे मकान, पुराने पेड़, कुछ जगह नए निर्माण के बीच बची हुई पुरानी संरचनाएँ। ऐसी कॉलोनियों में एक खास चीज़ होती है - समय एक साथ कई दशकों में दिखाई देता है। एक तरफ नया रंग, दूसरी तरफ पुरानी ईंट, तीसरी तरफ खिड़की पर नया कूलर और ऊपर छत की वही पुरानी ढलान।

मैंने डायरी निकाली। उसमें एक छोटा rough sketch था - लंबा बरामदा, तीन मेहराब, एक तरफ सीढ़ी, पीछे पानी की टंकी जैसा आकार।

करीब पंद्रह मिनट घूमने के बाद मुझे एक पुरानी इमारत मिली जिसकी सामने की रेखाएँ उस sketch से मिलती थीं। बिल्कुल नहीं, लेकिन इतना कि मैं रुक गया।

मैंने तुरंत excitement को लगाम दी। शहरों में तीन मेहराब और बरामदा unique fingerprint नहीं होते।

फिर भी मैंने sketch और building को साथ देखकर फोटो लिया।

पास ही चारपाई पर बैठे एक बुज़ुर्ग ने पूछा, “किसका फोटो?”

मैंने कहा, “पुरानी building अच्छी लगी।”

“रेलवे का पुराना quarter-office था कभी। अब आधा इस्तेमाल, आधा खाली।”

उनका नाम जगदीश प्रसाद था। रेलवे में बिजली विभाग में काम कर चुके थे। मैं उनके पास बैठ गया। डायरी दिखाने से पहले मैंने सामान्य बात की - पुराने quarter, repair, engineers की field books, bridge inspections।

उन्होंने कहा, “पहले लोग छोटी hardbound diary रखते थे। site पर जो देखा, dimension, defect, सब लिखते। बाद में office में बड़ा register बनता।”

मैंने पूछा, “पुरानी buildings के sketch भी?”

“जिसको आदत हो, बनाता था। इंजीनियर लोग तो ज्यादा।”

मैंने नीली डायरी का एक non-personal page दिखाया - केवल माप और sketch वाला।

उन्होंने चश्मा ठीक किया। “हाँ, field note जैसा है। लेकिन किसका है, इससे नहीं पता चलेगा।”

मैंने “S. Tiw...” वाला पर्चा नहीं दिखाया। अब मैं common surname को passport की तरह इस्तेमाल नहीं करना चाहता था।

जगदीश जी ने पुरानी railway life पर बात की। postings, quarters, बच्चों का school बदलना, छुट्टियों में pass, maintenance season, गर्मियों में track और bridge work, बारिश में inspection। उनके लिए railway केवल train नहीं थी; पूरा ecosystem था जिसमें परिवार भी transfer होते थे।

“हमारे बच्चे पूछते थे घर कहाँ है,” उन्होंने कहा, “हम बोलते थे जहाँ quarter मिला।”

उनकी पत्नी भीतर से चाय लेकर आईं। कप छोटा था। मैंने पहला घूंट लिया और थोड़ा चौंका। चीनी कम थी।

जगदीश जी ने पूछा, “ठीक है?”

मैंने ईमानदारी से कहा, “बहुत अच्छी है। बस मैं चीनी ज्यादा पीता हूँ।”

उन्होंने भीतर आवाज़ लगाई, “अरे, इनके लिए चीनी लाना!”

मैंने तुरंत कहा, “नहीं-नहीं, रहने दीजिए।”

एक छोटी कटोरी आ गई।

मैंने एक चम्मच डाली। फिर आधी और।

जगदीश जी बोले, “इतनी चीनी में railway का rust भी निकल जाए।”

हम दोनों हँसे।

डायरी के बारे में उनसे कोई बड़ा उत्तर नहीं मिला। और मुझे अच्छा लगा कि नहीं मिला। उन्होंने बस उस आदमी को plausible बना दिया - कोई engineer जो चलते-फिरते नोट लिखता था, पुरानी इमारतें देखता था, शायद काम खत्म होने के बाद भी शहर को देखता रहता था।

मैंने building के सामने कुछ मिनट और बिताए। sketch शायद इसी जगह का था। शायद नहीं। फर्क अब उतना जरूरी नहीं था।

एक छोटा पुल और कोई code नहीं

NUMBERS CAN JUST BE NUMBERS

कॉलोनी से निकलते समय मैंने एक पुराने maintenance board पर संख्याएँ देखीं - section, span, drawing number, inspection date। अलग-अलग चौखानों में अंक थे। उन्हें देखकर फिर 10 - 3 - 7 - 1 याद आया।

पहले मैं ऐसे किसी board को देखकर चार संख्याओं को जोड़ देता। अब नहीं।

मैंने diary में लिखा:

संख्या का होना code होने का प्रमाण नहीं है। रेलवे में हर चीज़ किसी न किसी संख्या से भरी रहती है।

इतना लिखकर पन्ना बंद किया।

नीली डायरी की mystery अब thriller नहीं थी। वह एक आदमी की अधूरी travel-working notebook थी। मुझे शायद आगे उसका नाम मिलेगा, शायद नहीं। लेकिन उसकी राहें भारत के कई शहरों में बिखरी थीं, और फिलहाल यही पर्याप्त था।

* * *

दोपहर की थाली और एक गलत शब्द

LUNCH, LANGUAGE AND CONFIDENCE

दोपहर में मैं एक साधारण भोजनालय में घुसा। बाहर बोर्ड पर “पूड़ी-सब्ज़ी, दाल, चावल, रायता” लिखा था। अंदर स्टील की मेज़ें, दीवार पर पंखा और एक कोने में पानी का मटका।

मैंने थाली मँगाई। दाल में जीरे और लहसुन का तड़का था। ऊपर लाल मिर्च का तेल पतली रेखा की तरह तैर रहा था। चावल भाप छोड़ रहे थे। आलू-टमाटर की सब्ज़ी थोड़ी खट्टी, थोड़ा मीठी, और तेल के बावजूद हल्की लगी। साथ में खीरा-प्याज़ और आम का अचार।

वेटर ने पूछा, “रसा और दूँ?”

मैंने स्थानीय शब्द को गलत समझा और आत्मविश्वास से कहा, “नहीं, मीठा बाद में।”

वह रुका। “रसा... सब्ज़ी का।”

मेरे सामने बैठे दो लड़के हँसने लगे।

मैंने कहा, “हाँ, वही। मैं test कर रहा था।”

वेटर बोला, “आप fail हो गए।”

मैं भी हँस पड़ा। उसने थोड़ा और रस डाल दिया।

खाने के बाद मैंने दही लिया। फिर बाहर से छोटी कुल्हड़ वाली चाय - ज्यादा चीनी। अब तक मुझे लगने लगा था कि इस यात्रा में लोग मेरी जगह से पहले मेरी sugar preference याद रखेंगे।

मेरी अपनी जिज्ञासा

A LODGE ARCHIVE, SEPARATE FROM THE DIARY

दोपहर बाद मैं सिविल लाइंस की तरफ गया। वाराणसी में मिले एक Brother ने मुझे प्रयागराज में एक पुराने lodge के archival reading room के बारे में बताया था। यह नीली डायरी से अलग था। साफ अलग। मैंने अपने नोट में भी लिखा था:

आज का lodge visit = मेरी निजी Masonic-history curiosity. Diary से कोई संबंध नहीं.

पुरानी इमारत बाहर से शांत थी। कोई रहस्यमय किला नहीं। साधारण compound, पुराना facade, नाम-पट्ट, भीतर लकड़ी की अलमारी और दीवारों पर पुराने portraits तथा charity events की तस्वीरें। मैंने पहचान और guest verification पूरी की। मुझे reading room तक सीमित access मिला।

वहाँ मेरी मुलाकात Brother अरविंद मेहता से हुई, जो पुराने papers व्यवस्थित करने में मदद करते थे। उम्र लगभग साठ के आसपास। बोलने में धीमे, कागज़ छूते समय बहुत सावधान।

उन्होंने कहा, “पुराने documents में सबसे बड़ा खतरा दीमक नहीं, imagination है।”

मैं हँसा। “मैं अभी ट्रेन में उसी बीमारी का इलाज करवा कर आया हूँ।”

मैंने उन्हें diary वाली अपनी गलत Freemason theory का संक्षिप्त किस्सा बताया - बिना मालिक की निजी बातें खोले। उन्होंने मुस्कराकर कहा, “Mason को हर compass Mason नहीं बनाता।”

“अब समझ गया।”

“अच्छा है। कुछ लोगों को तीस साल लगते हैं।”

Reading room में lodge की सार्वजनिक गतिविधियों के पुराने record, charity subscriptions, commemorative booklets, colonial-era correspondence की copies और स्वतंत्रता-पूर्व दशकों की कई फाइलें थीं। अधिकांश चीज़ें उतनी ही सामान्य थीं जितनी किसी पुराने संस्थान की files होती हैं - बैठक की तारीख, building repair, relief fund, किसी सदस्य की मृत्यु पर condolence, scholarship, अस्पताल के लिए donation।

फिर अरविंद जी ने एक पतला archival box निकाला। ऊपर हाथ से लिखा था:

CIVIC RELIEF & PASSAGE - 1938-1947

PRIVATE HISTORICAL PAPERS - COPY SET

उन्होंने स्पष्ट कहा, "यह पूरा institutional archive नहीं है। कुछ papers बाद में private collections से आए। provenance हर page पर समान नहीं है।"

मैंने सिर हिलाया। यही बात documents को और दिलचस्प बनाती थी - और ज्यादा सावधानी भी माँगती थी।

स्वतंत्रता आंदोलन की छिपी परत

THE FICTIONAL PAPERS OF 1942

पहले कुछ पत्र अंग्रेज़ी में थे। भाषा औपचारिक, लेकिन विषय सामान्य lodge correspondence से अलग। एक जगह "relief", "passage", "legal assistance" और "rail movement" बार-बार आया।

एक copy पर तारीख 1942 की थी। उसमें लिखा था कि कुछ lodges के बीच एक internal network बना था जो गिरफ्तार किए गए राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं के परिवारों को धन, वकील और सुरक्षित यात्रा उपलब्ध कराने में मदद करता था। दूसरी sheet में railway timings और inspection routes के बीच ऐसे संकेत थे जिनसे कुछ लोगों को पुलिस movement से पहले बाहर निकालने की योजना बनती थी।

मैंने अरविंद जी की तरफ देखा।

उन्होंने कहा, "कहानी बहुत बड़ी मत बना देना।"

"लेकिन ये तो बड़ा है।"

"अगर genuine chain मानें, तब भी समझो - fraternity का पूरा हर सदस्य एक जैसा नहीं सोचता था। British members भी थे, Indian members भी। कुछ papers ऐसा संकेत देते हैं कि कुछ lodges ने institution के नाम पर नहीं, बल्कि lodge network के भरोसे पर coordination किया।"

मैंने एक और page पढ़ा। उस पर लाल pencil से लिखा था:

No public record. Relief must move through trusted Brothers. Railway passage to be arranged before the arrests.

मेरी रीढ़ में हल्की ठंडक दौड़ी। यह movie वाली ठंडक नहीं थी। वह feeling थी जो किसी पुराने कागज़ पर अचानक किसी बड़े इतिहास की छोटी operational line पढ़ने से आती है।

अगली file में printers का उल्लेख था। एक page पर दो शहर, तीन initials और "night press" लिखा था। दूसरे पर "families first"। तीसरे पर warning कि lodge premises के भीतर political discussion का record न बने, लेकिन बाहर trusted network काम जारी रखे।

इन fictional archival papers की दुनिया में Freemasons केवल सहानुभूति नहीं दे रहे थे; कुछ lodges अपने network का इस्तेमाल स्वतंत्रता आंदोलन की hidden logistics के लिए कर रहे थे।

मैंने पूछा, "अगर ये इतना संगठित था तो बाहर क्यों नहीं आया?"

अरविंद जी ने कंधे उचकाए। "Secret work का सबसे सफल हिस्सा वही होता है जिसका credit कोई नहीं लेता। और पुराने institutions अपनी respectable history में messy politics कम लिखते हैं।"

मैंने यह बात नोट की, लेकिन साथ में एक और line भी:

दस्तावेज़ दिलचस्प हैं। इतिहास का अंतिम फैसला नहीं।

मुझे conspiracy पसंद थी, लेकिन पिछली गलती ताज़ा थी। इस बार excitement और proof के बीच दूरी रखनी थी।

L.O.

THE ORDER OF THE HIDDEN LIGHT

Box के आखिरी हिस्से में कुछ pages अलग थे। कागज़ का रंग भी थोड़ा अलग। एक report के margin पर केवल दो अक्षर बार-बार आए:

L.O.

पहले मैंने सोचा कोई lodge abbreviation होगा। फिर एक typed note मिला:

L.O. approaches are not to be entertained.
Their methods are incompatible with Masonic obligation and civic liberty.

मैं रुक गया।

“L.O.?”

अरविंद जी ने box के भीतर से एक copy निकाली। “यही चीज़ लोगों को ज्यादा आकर्षित करती है।”

उस page पर पूरा नाम था:

ORDO LUX OCCULTA
THE ORDER OF THE HIDDEN LIGHT

नाम पढ़ते ही उसका अर्थ खुद सामने आ गया - छिपी हुई रोशनी का आदेश। भाषा ऐसी थी जो enlightenment का दावा करती थी, लेकिन report का tone hostile था।

कागज़ों में L.O. को किसी धार्मिक या supernatural cult की तरह नहीं, बल्कि प्रभाव और नियंत्रण चाहने वाले बंद network की तरह दिखाया गया था। wealthy intermediaries, व्यापारिक संपर्क, information खरीदना, political groups को अलग-अलग तरफ से funding offer करना, और जहाँ लाभ हो वहाँ ideological language बदल देना।

एक memo में लिखा था कि L.O. के लोग freedom movement के भीतर घुसकर उसे support नहीं, steer करना चाहते थे - ऐसे निर्णयों की तरफ जहाँ बाद में आर्थिक और राजनीतिक influence हासिल किया जा सके।

Freemason network वाले papers में इसके उलट जोर था - relief, passage, legal help, local autonomy। इसलिए दोनों के बीच friction बढ़ा।

एक page पर हाथ से बनाया symbol था।

एक खुली आँख जैसी आकृति। उसके पीछे आधा सूर्य। नीचे तीन छोटी किरणें। outer line पूर्ण circle नहीं थी; ऊपर एक छोटा break था।

उसके नीचे लिखा था:

Do not confuse their borrowed geometry with ours.

मैंने symbol को देर तक देखा। उसमें जानबूझकर ऐसे geometric hints थे जो किसी unfamiliar observer को Masonic imagery की याद दिला सकते थे। शायद यही उद्देश्य था - पुरानी fraternal language borrow करना, लेकिन अर्थ बदल देना।

मैंने पूछा, “ये group सच में कितना बड़ा था?”

अरविंद जी ने जवाब देने से पहले file बंद कर दी। “इतना कि कुछ papers में नाम आया। उससे ज्यादा मैं नहीं कहूँगा।”

“आज भी?”

वह मुस्कराए नहीं। “पुराने symbol का आज दिखना और पुरानी संस्था का आज होना, दोनों अलग बातें हैं। यह distinction याद रखना।”

मैंने तुरंत लिखा:

पहचान हमेशा प्रमाण नहीं होती। यह lesson आज दूसरी बार.

पिछली बार यह line railway diary के लिए थी। इस बार अपने लिए।

* * *

एक छोटा औपचारिक क्षण

BROTHERHOOD WITHOUT THE THEATRE

Reading room से बाहर निकलते समय lodge hall का दरवाज़ा खुला था। अंदर अगले सप्ताह होने वाले एक charity programme की तैयारी चल रही थी। कुर्सियाँ सीधी की जा रही थीं, पुराने framed symbols साफ किए जा रहे थे, और एक मेज़ पर scholarship forms रखे थे।

अरविंद जी ने मुझे एक पुराने commemorative gavel की कहानी सुनाई। किसने दिया, किस वर्ष building repair हुआ, किस flood relief में members ने योगदान किया। यह सब L.O. की file से बिल्कुल अलग दुनिया थी। शायद इसी contrast ने उस file को ज्यादा प्रभावशाली बनाया।

मैंने उनसे कहा, “लोग बाहर से शायद lodge को केवल symbols से देखते हैं।”

“और अंदर वाले कभी-कभी paperwork से,” उन्होंने कहा।

मैं हँसा। “Conspiracy में paperwork कम sexy होता है।”

“इसलिए असली organizations में ज्यादा होता है।”

हमने साधारण Brotherly greeting की, मैंने धन्यवाद कहा और बाहर निकल आया। कोई secret chamber नहीं खुला। कोई password नहीं बोला गया। मेरी जेब में बस notebook थी जिसमें दो नए अक्षर लिखे थे - L.O.

शाम का प्रयागराज

CHAAT, TRAFFIC AND A CITY RETURNING TO ITSELF

शाम तक शहर का रंग बदल चुका था। सुबह का खुला नदी वाला आकाश अब सड़कों, दुकानों, हॉर्न, कॉलेज के छात्रों, दफ्तर से लौटते लोगों और ठेलों में बँट गया था।

मैंने पैदल चलना शुरू किया। एक चाट वाले के सामने भीड़ थी। आलू टिक्की तवे पर सिक रही थी। बाहर की सतह भूरी और कुरकुरी, अंदर नरम आलू। ऊपर दही, मीठी इमली की चटनी, हरी चटनी, भुना जीरा, लाल मिर्च और सेव जैसी कुरकुरी परत।

मैंने प्लेट ली। पहला कौर एक साथ बहुत कुछ था - गरम टिक्की, ठंडी दही, मीठी इमली, धनिए की ताजगी और चाट मसाले की तेज खुशबू। कुछ व्यंजन स्वाद को क्रम में देते हैं। चाट एक साथ हमला करती है।

मैंने फोटो लेने के लिए प्लेट उठाई। angle ढूँढते-ढूँढते पास वाली मेज़ पर अपनी मीठी चाय रख दी। फोटो लिया, टिक्की खाई, फिर पाँच मिनट बाद चाय ढूँढने लगा।

चाट वाला बोला, “वो सामने आपकी होगी?”

दूसरी मेज़ पर एक आदमी मेरी चाय को संदेह से देख रहा था।

मैंने जाकर कहा, “माफ कीजिए, ये मेरी है।”

उसने कप मेरी तरफ सरकाया। “हमने सोचा कोई प्रसाद रख गया।”

मैंने cup उठाया। “चीनी देखकर लग भी सकता है।”

वह हँस पड़ा।

मुझे लगा दिन पूरा हो गया है। सुबह गलत चप्पल, दोपहर गलत शब्द, शाम गलत मेज़। consistency भी एक गुण है।

डायरी और L.O. - दो अलग रास्ते

NO FORCED CONNECTION

होटल लौटकर मैंने बैग खोला। एक तरफ नीली डायरी। दूसरी तरफ मेरी अपनी notebook।

नीली डायरी में railway engineer की दुनिया थी - पुल, स्टेशन, measurements, colonies, शहर, मंदिर, टिकट।

मेरी notebook में आज पहली बार L.O. था - Freemasonry से जुड़े fictional independence-era archival papers का एक rival group।

मैंने दोनों को एक-दूसरे से दूर रखा। सचमुच भी और दिमाग में भी।

किसी कहानी में दो रहस्य हों तो इंसान उन्हें जोड़ना चाहता है। शायद इसलिए कि एक बड़ी कहानी दो छोटी कहानियों से ज्यादा satisfying लगती है। लेकिन जिंदगी हमेशा satisfying नहीं होती। कभी-कभी दो चीज़ें बस दो चीज़ें होती हैं।

मैंने नीली डायरी खोली। Jaisalmer-Jaipur वाला पुराना ticket सामने था। अब उसका अर्थ सरल था - किसी पुराने यात्री की यात्रा।

मैं भी कुछ दिनों में जयपुर जाने वाला था।

बस इतना।

मैंने खुद को चेतावनी दी कि इस coincidence को तीसरा secret network मत बना देना।

* * *

जयपुर की टिकट

THE LONG ROUTE AHEAD

रात को मैंने अगले लंबे रेल सफर की तैयारी की। बैग हल्का करने की कोशिश की और हमेशा की तरह असफल रहा। मैंने तीन चीज़ें निकालीं, फिर चार वापस रख दीं।

कपड़ों के बीच charger मिला जिसे मैं सुबह से ढूँढ रहा था। कैमरे की अतिरिक्त battery जुराब के अंदर मिली। यह मैंने खुद रखी थी, ताकि "safe रहे।" समस्या यह थी कि मैं अपने ही safe places भूल जाता था।

नीचे होटल reception पर पानी लेने गया। receptionist ने पूछा, "कल निकलेंगे?"

"हाँ, जयपुर।"

"सीधा?"

"रेल जितना सीधा ले जाए।"

वापस कमरे में आकर मैंने मोबाइल पर route देखा। लंबा सफर था। ऐसे सफर मुझे पसंद हैं। एक शहर धीरे-धीरे खत्म होता है, दूसरा तुरंत शुरू नहीं होता। बीच में कई घंटे ऐसे होते हैं जहाँ आदमी किसी जगह का resident नहीं, बस passenger होता है।

मैंने alarm लगाए। इस बार चार। पाँचवाँ लगाने लगा, फिर खुद पर विश्वास करने का फैसला किया।

तीन सेकंड बाद पाँचवाँ भी लगा दिया।

बत्ती बंद करने से पहले notebook खोली। आज की आखिरी line लिखी:

सुबह संगम ने शहर खोला। दोपहर railway ने diary को साधारण बनाया। शाम lodge archive ने इतिहास को असाधारण। दोनों को मिलाना नहीं है।

फिर नीचे छोटा सा लिखा:

L.O. - Ordo Lux Occulta.

मैंने notebook बंद कर दी।

मुझे उस समय नहीं पता था कि कुछ दिन बाद जयपुर में, किसी ऐसी जगह के सामने जहाँ मैं conspiracy खोजने गया ही नहीं था, वही अधूरा circle, वही eye और वही तीन rays फिर दिखाई देंगे।

लेकिन अभी नहीं।

अभी मुझे सोना था।

सुबह ट्रेन थी।

और मेरे अनुभव में सबसे वास्तविक conspiracy हमेशा alarm और नींद के बीच चलती थी।

* * *

अगला पड़ाव - प्रयागराज से जयपुर की लंबी रेल-यात्रा।

CHAPTER EIGHTEEN

रेल की खिड़की से भारत

INDIA THROUGH THE TRAIN WINDOW

प्रयागराज से जयपुर

Day Six - Night to Day Seven Evening

"लंबी रेलयात्रा में शहर एक-दूसरे से अचानक नहीं बदलते। पहले मिट्टी का रंग बदलता है, फिर बोली, फिर खाने की खुशबू - और बहुत बाद में स्टेशन का बोर्ड।"

प्रयागराज स्टेशन पर ट्रेन आने से पहले प्लेटफॉर्म की हवा में वह बेचैनी थी जो हर लंबी यात्रा से कुछ मिनट पहले बनती है। कोई पानी भर रहा था। कोई बच्चे को उठा रहा था। कोई टिकट तीसरी बार देख रहा था।

आखिरी काम मैं कर रहा था।

मैंने टिकट देखा। फोन देखा। प्लेटफॉर्म बोर्ड देखा। फिर टिकट दोबारा देखा।

पास बैठे आदमी ने कहा, “भाई साहब, अभी भी वही ट्रेन है।”

मैंने टिकट जेब में रख लिया। “मुझे भरोसा ट्रेन पर है। अपने ऊपर कम है।”

वह हँसा।

दिन भर संगम, मंदिर, पुरानी गलियाँ, रेलवे कॉलोनी, पुल और धूप के बाद शरीर अब इस बात से खुश था कि अगले कई घंटे उसे सिर्फ एक सीट पर बैठना है। मेरे पैरों ने इसे छुट्टी मान लिया था।

नीली डायरी बैग के भीतर थी, मगर आज रात मैंने उसे खोलने का इरादा नहीं किया। पिछला दिन काफ़ी था। अब रेल को रेल की तरह देखना था।

ट्रेन आने से ठीक पहले

PLATFORM FOOD, NO PHILOSOPHY

मैंने प्लेटफॉर्म पर हल्का खाना लेने का फैसला किया। “हल्का” शब्द यात्रा में बहुत लचीला होता है। सामने समोसे तले जा रहे थे, बगल में पूड़ी-सब्ज़ी, और उससे आगे चाय की भाप।

पहले मैंने तय किया - सिर्फ चाय।

फिर समोसा देखा।

फिर प्लेट पर गरम आलू की सब्ज़ी देखी।

पाँच मिनट बाद मेरे हाथ में चाय, एक समोसा और छोटी प्लेट पूड़ी-सब्ज़ी थी।

आत्म-नियंत्रण का प्रयोग स्थगित कर दिया गया था।

पूड़ी ताज़ी थी, किनारों पर हल्की कुरकुरी और बीच में नरम। आलू की सब्ज़ी पतली, जीरे और हींग की खुशबू वाली, ऊपर हरी मिर्च के छोटे टुकड़े। समोसे का बाहरी हिस्सा थोड़ा ज्यादा तला हुआ था, मगर अंदर का आलू गरम, धनिया और साबुत मसालों से भरा।

चायवाले ने पूछा, “चीनी?”

मैंने कहा, “ज्यादा।”

उसने दो चम्मच डाल दीं।

मैं संतुष्ट था। प्रयागराज ने मेरे बारे में सूचना रेलवे नेटवर्क को भेज दी थी शायद।

मैंने चाय का कप बगल के लोहे के खंभे पर रखा और कैमरे से प्लेटफॉर्म की एक फोटो लेने लगा। Announcement हुई। लोग उठे। मैंने बैग उठाया और ट्रेन की तरफ बढ़ गया।

करीब बीस कदम बाद हाथ खाली लगा।

चाय।

मैं वापस भागा। कप वहीं था। चायवाला मुझे दूर से देख रहा था।

“फोटो में चाय आ गई?” उसने पूछा।

“नहीं।”

“तो असली भी छोड़ गए।”

मैंने कप उठाया और आधी ठंडी हो चुकी मीठी चाय एक ही बार में खत्म की।

यात्रा-लेखन का एक और सिद्धांत स्पष्ट हुआ: जो आदमी हर चीज याद रखना चाहता है, वह अपनी चीजें सबसे ज्यादा भूलता है।

डिब्बे का छोटा संसार

A NIGHT TRAIN BUILDS A TEMPORARY NEIGHBOURHOOD

ट्रेन आई तो प्लेटफॉर्म अचानक गति में बदल गया। जो लोग दस मिनट से स्थिर थे, सब एक साथ अपने-अपने coach की दिशा में चल पड़े। मैं भी भीड़ के साथ चला।

पहले coach number देखा। फिर दरवाज़े पर चढ़ा। अंदर पहुँचकर seat number देखा।

गलत coach।

मैं एक पल खड़ा रहा। सामने बैठे परिवार ने मेरी टिकट की तरफ देखा। एक किशोर लड़के ने कहा, “अगला है।”

“मुझे पता था।”

उसकी माँ मुस्कराईं। “तो यहाँ क्यों आए?”

“रास्ता जाँचने।”

मेरी dignity लगातार public transport पर test हो रही थी।

दो coaches जोड़ते लोहे के हिस्से से गुजरकर सही जगह पहुँचा। सीट नीचे वाली थी। इस बार ऊपर के पंखे से सिर टकराने का कोई अवसर नहीं था। मैंने इसे व्यक्तिगत जीत माना।

सामने की सीट पर लगभग चालीस वर्ष का आदमी छोटा suitcase और कपड़े का sample bag लेकर बैठा था। उसके पास फोन charger, एक calculator और छोटा diary-type order book था। नाम मनोज खंडेलवाल। वह electrical fittings और छोटे hardware का व्यापार करता था, अलग-अलग शहरों में दुकानदारों से मिलना उसका नियमित काम था।

ऊपर berth पर लगभग पचास साल की महिला और उनकी कॉलेज जाने वाली बेटी थीं। वे आगरा के आगे किसी रिश्तेदारी से लौट रही थीं और जयपुर तक जा रही थीं। लड़की का नाम नंदिनी था।

Side lower पर एक दुबला-सा युवक headphones लगाए बैठा था। बाद में पता चला - इरफान, होटल में काम करता है, कुछ महीने उत्तर प्रदेश में रहा था, अब राजस्थान लौट रहा था।

कुल मिलाकर डिब्बा किसी planned discussion panel जैसा नहीं था। अच्छा था। वास्तविक compartment पहले seating arrangement बनता है, विचारधारा बाद में आती है।

ट्रेन चलने लगी। प्लेटफॉर्म की रोशनी खिड़की के बाहर पीछे गई। लोग धीरे-धीरे अपनी सीटों पर settle हुए। बैग नीचे, पानी ऊपर, चादर बाहर, slippers सीट के नीचे।

मैंने backpack की chain लगाई।

मनोज ने पूछा, “बहुत लंबा tour है?”

“दस दिन का था।”

“था?”

“अब Jaipur में थोड़ा समय बढ़ सकता है।”

“यात्रा का budget बढ़ाना आसान है, छुट्टी बढ़ाना मुश्किल।”

“मैंने पहले budget की चिंता नहीं की।”

“फिर आप businessman नहीं हैं।”

“ये diagnosis सही है।”

रात की पहली बातचीत

WORK THAT LIVES ON THE ROAD

ट्रेन शहर से बाहर निकली तो बाहर अंधेरा था। कभी किसी कस्बे की लाइट, कभी level crossing, कभी दूर खेतों के बीच एक अकेला बल्ब। खिड़की रात में landscape कम दिखाती है, reflection ज्यादा। काँच में हमारा पूरा compartment लौटकर दिखाई दे रहा था।

मनोज ने order book खोली। कुछ आंकड़े लिखे, phone में फोटो देखे, फिर बंद कर दिया।

मैंने पूछा, “हर हफ्ते travel?”

“लगभग। कभी दो दिन, कभी पाँच।”

“थकते नहीं?”

“थकान से business बंद नहीं होता।”

फिर उसने खुद थोड़ा समझाया। उसके लिए train tourism नहीं थी। यह showroom और ग्राहक के बीच की सड़क थी। छोटे कस्बों में दुकानदारों से मिलना, payment follow-up, नए samples दिखाना, पुराने orders की शिकायत सुनना।

“Online से फर्क पड़ा?” मैंने पूछा।

“बहुत। लेकिन हर चीज online नहीं होती। दुकानदार चेहरा जानता है तो पैसा देर से भी देता है, पर देता है। Screen relationship नहीं संभालती।”

उसने suitcase पर हाथ मारा। “मेरे आधे ग्राहक दस साल से वही हैं। पहले पिता से मिलते थे, अब बेटा shop संभालता है।”

मैंने सोचा - भारत की बहुत-सी अर्थव्यवस्था train timetable से नहीं, लोगों के भरोसे और उधार की छोटी notebooks से चलती है।

मनोज ने मुझसे Moscow के बारे में पूछा। सबसे पहले weather। फिर rent। तीसरा सवाल - “वहाँ Indian खाना मिलता है?”

“मिलता है।”

“अच्छा?”

“कभी-कभी bill देखकर India की याद ज्यादा आती है।”

वह हँसा। “तो असली taste price में है।”

यह बातचीत economy पर lecture नहीं बनी। बीच में चाय वाला आया और पूरी गंभीरता टूट गई।

“चाय!”

मनोज ने दो लीं। मेरी तरफ एक बढ़ाई।

मैंने पहला घूंट लिया और चेहरा थोड़ा गिरा।

“क्या हुआ?”

“चीनी कम है।”

वह बोला, “आपके लिए syrup अलग चाहिए।”

डिब्बे में मेरी reputation जल्दी बन रही थी।

घर का डिब्बा खुलता है

FOOD SHARED WITHOUT CEREMONY

करीब नौ बजे ऊपर berth वाली महिला ने steel tiffin खोला। पहले पराठे निकले। फिर सूखी आलू-मिर्च की सब्ज़ी। छोटी डिब्बी में आम का अचार। एक में गुड़ के छोटे टुकड़े।

उनकी बेटी नंदिनी ने कहा, “मम्मी, इतना कौन खाएगा?”

माँ ने पहले उसकी plate बनाई, फिर मनोज की तरफ देखा। “लेंगे?”

मनोज ने बिना औपचारिकता के आधा पराठा ले लिया।

फिर मेरी तरफ। “आप?”

मैंने कहा, “मैं प्लेटफॉर्म पर खाना खा चुका हूँ।”

उन्होंने कहा, “तो थोड़ा खा लो।”

इस argument का कोई legal defence नहीं होता। मैंने आधा पराठा लिया।

घी की हल्की खुशबू थी। पराठा ठंडा हो चुका था लेकिन नरम। आलू की सूखी सब्ज़ी में सौंफ, लाल मिर्च और अमचूर की खटास थी। अचार तेज नमकीन, सरसों के तेल की साफ सुगंध वाला। आखिरी में छोटा-सा गुड़ का टुकड़ा लिया। उसकी मिट्टी जैसी गहरी मिठास ने मसाले के बाद स्वाद बदल दिया।

मैंने कहा, “Train food से बेहतर है।”

माँ ने तुरंत कहा, “Train food क्यों खाओ जब घर से ला सकते हो?”

यह वाक्य लाखों भारतीय रेलयात्राओं का unofficial constitution हो सकता था।

नंदिनी जयपुर में पढ़ती थी। उसने पूछा, “आप Jaipur पहली बार?”

“हाँ।”

“कितने दिन?”

मैंने कहा, “पहले एक दिन था।”

“एक दिन में कुछ नहीं होगा।”

मनोज ने बीच में कहा, “ये दस दिन में पूरा India कर रहे हैं।”

नंदिनी ने मुझे देखा। “फिर आप जगहें देखते हो या attendance लगाते हो?”

मैंने कुछ सेकंड जवाब नहीं दिया।

उसने बिल्कुल सही जगह चोट की थी।

“इसलिए शायद Jaipur में attendance कम, stay ज्यादा होगा,” मैंने कहा।

“अच्छा है।”

उसने अपनी माँ से कहा, “देखा, मैंने एक tourist सुधार दिया।”

रेलयात्रा का भोजन

घर का पराठा, अचार, गुड़, प्लेटफॉर्म की चाय और स्टेशन का समोसा - लंबी ट्रेन में क्षेत्रीय स्वाद सिर्फ pantry से नहीं आता। यात्रियों के tiffin खुद छोटे नक्शे होते हैं।

बर्थ बनती है, बातचीत सो जाती है

THE COACH AFTER TEN

रात बढ़ी तो सीटें बिस्तर बनने लगीं। Chain की आवाज़, लोहे के berth उठना, चादरें फैलना, bottle को ऐसी जगह रखना कि रात में पैर न लगे। कोई toothbrush लेकर washroom गया, कोई phone पर आखिरी call कर रहा था।

मैंने जूते सीट के नीचे रखे और socks बदलने का फैसला किया। एक sock बैग से निकला, दूसरा नहीं। पाँच मिनट खोजा। कपड़ों की पूरी तह बिगाड़ दी।

मनोज नीचे से देख रहा था।

“क्या खोया?”

“Sock।”

“एक?”

“दूसरा मेरे पास है। इसीलिए समस्या है।”

आखिर दूसरा sock कैमरा pouch के पीछे मिला। मुझे याद नहीं था मैंने वहाँ क्यों रखा था। शायद किसी सुबह packing करते समय दिमाग ने नया filing system बनाया था।

Side berth पर इरफान ने headphones उतारकर कहा, “भाई, आपका bag Netflix series है। हर episode में कुछ निकलता है।”

मैं हँस पड़ा।

Lights dim हुईं। मैं lower berth पर लेटा। ट्रेन का rhythm शरीर के नीचे लगातार महसूस होता रहा - जोड़ पर हल्का झटका, फिर smooth movement, फिर दूर horn।

नींद आने से पहले मैंने phone खोला। ऊपर Shristi Joshi का message था।

“Jaipur कब पहुँच रहे हो exactly? इस बार ‘लगभग’ मत लिखना.”

मैं मुस्कराया। उसे मेरे समय बताने के तरीके से पुरानी शिकायत थी। Moscow में पिछले दो-तीन साल में हम कई बार Indian gatherings, cafés और common friends के बीच मिले

थे। वह वहाँ medicine पढ़ रही थी; मैं नौकरी करता था। हम इतने परिचित थे कि वह मेरी आदतों पर बिना भूमिका के टिप्पणी कर सकती थी, और इतने दूर कि कभी यह तय नहीं हुआ कि हमारी दोस्ती की सीमा कहाँ है।

मैंने train का अनुमानित arrival time भेजा। तुरंत reply आया:

“Hotel पहुँचकर message करना. Station मत रुकना. मैं आऊँगी.”

मैंने लिखा, “इतनी तकलीफ़ क्यों? Café बता देना, मैं पहुँच जाऊँगा.”

कुछ देर typing दिखा। फिर गायब। फिर सिर्फ दो शब्द आए:

“बस message करना.”

मैंने इसे Joshi का usual practical tone समझा, phone airplane mode में रखा और आँखें बंद कर लीं।

रात के स्टेशन

LIGHT, DARKNESS, LIGHT AGAIN

लंबी ट्रेन में नींद पूरी तरह आपकी नहीं रहती। कोई स्टेशन उसे उधार ले जाता है, कोई vendor, कोई passenger उतरते समय bag खींचता है।

पहली बार आँख एक बड़े station की तेज सफेद रोशनी से खुली। बाहर लोग उतर रहे थे। नाम पढ़ने से पहले train चल पड़ी।

दूसरी बार किसी ने नीचे से पूछा, “भाई साहब, charger आपका है?”

मैंने आधी नींद में कहा, “हाँ।”

“Phone नहीं लगा है।”

मैंने देखा। Charger socket में था, cable हवा में। Phone तक पहुँच ही नहीं रही थी।

मैंने धन्यवाद कहा और cable लगा दी।

तीसरी बार आँख खुली तो बाहर platform पर दूध की बड़ी cans उतारी जा रही थीं। रात लगभग सुबह की तरफ झुक चुकी थी।

मैं नीचे उतरा नहीं। Train के door से कुछ seconds बाहर देखा। ठंडी हवा आई। Platform पर चाय की पहली kettle चढ़ चुकी थी। दूर किसी बच्चे के रोने की आवाज़। एक आदमी shawl में लिपटा bench पर सो रहा था।

रात के स्टेशन किसी शहर का introduction नहीं देते। वे बस इतना बताते हैं कि वहाँ भी लोग जाग रहे हैं।

सुबह खिड़की में आती है

THE LANDSCAPE CHANGES BEFORE THE LANGUAGE DOES

सुबह पूरी तरह तब खुली जब मैं उठकर खिड़की के पास बैठा। बाकी compartment अभी आधा सोया था। नंदिनी ऊपर blanket में, उसकी माँ चुपचाप बैठी थीं। मनोज ने आंखें खोलीं, फिर तुरंत बंद कर लीं। इरफान phone पर समय देखकर करवट बदल गया।

बाहर का दृश्य रात से बिल्कुल अलग था। खुली धरती, खेत, छोटे गाँव, बिजली के खंभे। कहीं सरसों जैसी पीली पट्टी, कहीं गेहूँ की हरी कतारें, कहीं खाली भूरी जमीन। दूर पेड़ों की रेखा।

कुछ घंटे पहले प्रयागराज की हवा में नदी की नमी थी। अब landscape धीरे-धीरे सूखा महसूस होने लगा था। यह अचानक रेगिस्तान नहीं था। बस रंगों में थोड़ा कम गाढ़ापन, खेतों के बीच ज्यादा खुली मिट्टी, पेड़ों के बीच लंबी दूरी।

मैंने notebook में लिखा:

“भूगोल station board से पहले बदल जाता है।”

एक छोटा स्टेशन आया। पीला board खिड़की के सामने से गुजरा। चाय वाला दौड़ता हुआ coach के पास आया।

“चाय! गरम चाय!”

मैं नीचे उतरने के लिए उठा। मनोज ने आँख खोली। “Train कितनी देर?”

“पता नहीं।”

“तो मत उतरना।”

मैंने कहा, “बस door तक।”

Experience मुझे थोड़ा सिखा चुका था। इस बार समोसा देखने के बाद भी platform पर दूर नहीं गया। दरवाज़े से चाय ली।

चायवाले ने sugar पहले से डाल रखी थी। मैंने चखा।

कम।

मैंने पूछा, “चीनी है?”

वह छोटी डिब्बी आगे बढ़ाने लगा। Train हिली। मैंने जल्दी से दो चम्मच डालने की कोशिश की। पहली cup में गई। दूसरी आधी मेरी उँगलियों पर।

दरवाज़े से अंदर आते समय नंदिनी नीचे उतर चुकी थी। उसने मेरी उँगलियों पर चीनी देखी।

“चाय पी रहे हो या प्रसाद चढ़ा रहे हो?”

मैंने tissue ढूँढा। “System थोड़ा mobile था।”

नाश्ता बदलता है

FROM SAMOSA TO KACHORI

कुछ देर बाद एक बड़े junction पर train ज्यादा देर रुकी। अब पूरा compartment जाग चुका था। Platform पर नाश्ते की अलग-अलग आवाज़ें थीं। कहीं poha, कहीं kachori, कहीं bread-omelette, कहीं दूध।

मैंने kachori ली। दुकानदार ने पूछा, “प्याज़ वाली?”

मैंने नाम ठीक से नहीं सुना और confidence से कोई दूसरा शब्द बोल दिया।

वह हँस पड़ा। “भैया, कचौड़ी है, आपने तो नई dish बना दी।”

नंदिनी पीछे खड़ी थी। “पहले बोलना सीखो, फिर review लिखना।”

कचौड़ी मोटी और कुरकुरी थी। अंदर प्याज़, मसाला, थोड़ी तीखी लाल मिर्च और धनिए की खुशबू। साथ में पतली आलू की सब्ज़ी नहीं, बल्कि खट्टी-मीठी चटनी और सूखी मसालेदार भरावन का स्वाद ज्यादा प्रमुख था। पहला bite लेते ही pastry जैसी परतें टूटकर हथेली पर गिरीं।

मिर्च धीरे आई। पहले प्याज़ की मिठास, फिर मसाले की गरमी। मैंने इस बार extra chutney नहीं माँगी। Lucknow ने मुझे civilized बना दिया था।

चाय के साथ कचौड़ी heavy थी, मगर लंबी ट्रेन में breakfast का calorie accounting कोई नहीं करता।

मनोज ने कहा, “अब Rajasthan शुरू समझो।”

मैंने बाहर देखा। “Board ने तो अभी नहीं कहा।”

“खाना पहले बता देता है।”

यह line मुझे पसंद आई।

इरफान की वापसी

A WORKER GOING HOME

नाश्ते के बाद इरफान ने headphones जेब में रखे और बाहर देखने लगा। बातचीत अपने-आप शुरू हुई। वह राजस्थान के एक छोटे कस्बे से था, hospitality काम के लिए अलग-अलग शहरों में गया था। कुछ महीने प्रयागराज के एक होटल में काम किया, उससे पहले दिल्ली। अब जयपुर में एक नए hotel में joining थी।

“घर कितना दूर?” मैंने पूछा।

“Jaipur से फिर बस।”

“घर के पास काम नहीं?”

“काम है, पैसे कम।”

उत्तर सरल था।

उसने बताया कि hotel industry में shift का समय बदलता रहता है। शादी-ब्याह season में काम ज्यादा, festival पर घर जाना मुश्किल। Guest हमेशा holiday पर होता है, staff अक्सर सबसे ज्यादा काम पर।

“आप traveller लोग room छोड़ते समय क्या सबसे ज्यादा भूलते हो?” मैंने पूछा।

वह हँसा। “Charger।”

मैंने तुरंत अपना charger देखा।

“दूसरा?”

“Bathroom में कपड़े। फिर key।”

मनोज हँसा। “Key इनके chapter में हो चुका।”

मैंने पूछा, “आप दोनों मेरी biography कब से लिख रहे?”

इरफान बोला, “आप खुद material दे रहे।”

यात्रा में strangers बहुत जल्दी आपके छोटे habits पकड़ लेते हैं, क्योंकि train में privacy सिर्फ curtain जितनी होती है।

इरफान ने फिर serious होकर कहा, “Hotel में बाहर से लोग city देखने आते हैं। हमें city का वह हिस्सा दिखता है जिसमें sheets, kitchen, laundry, check-in, complaint है। कभी छुट्टी में घूमने निकलो तो वही जगह अलग लगती है।”

मैंने कहा, “शायद हर tourist city के दो versions होते हैं।”

“दो नहीं, बहुत।”

उसने फिर headphones लगा लिए। बात खत्म। कोई conclusion नहीं। यही ठीक था।

रेल की गति से बदलती धरती

FIELDS, LOW HILLS AND DRIER LIGHT

दोपहर की तरफ landscape ने फिर रूप बदला। खेतों के बीच मिट्टी ज्यादा दिखाई देने लगी। कहीं पत्थरीले टुकड़े, कहीं दूर नीची पहाड़ियाँ, कहीं झाड़ियाँ जो उत्तर प्रदेश की घनी हरियाली से अलग थीं।

सूरज तेज था। खिड़की से आती रोशनी अब सफेद और कठोर लग रही थी। छोटे station के platform पर लोग सिर पर कपड़ा रखकर चलते। पानी के नल के पास भीड़ थोड़ी ज्यादा दिखती।

कई गांवों में घरों के रंग अलग थे - मिट्टी के हल्के tones, कहीं नीला दरवाज़ा, कहीं गुलाबी दीवार, कहीं छत पर पानी की टंकी। सड़कें rail line को कुछ किलोमीटर साथ देतीं, फिर अचानक मुड़ जातीं।

एक जगह ऊँटगाड़ी दूर सड़क पर दिखाई दी। मैंने camera जल्दी निकाला। Focus होने तक वह बिजली के खंभे के पीछे चली गई। दूसरी photo में सिर्फ खंभा आया।

नंदिनी ने देखा। “क्या photo लिया?”

“ऊँट।”

उसने screen देखी। “ये pole है।”

“ऊँट pole के पीछे है।”

“तो photo का title रखना - संभावित ऊँट।”

मैंने फोटो delete नहीं की। शायद मज़ाक के लिए काम आए।

Train की खिड़की travel को cinematic बनाती है, लेकिन camera अक्सर late पहुँचता है। आँख ने जो देखा, photo ने सिर्फ उसका afterthought पकड़ा।

दोपहर का स्टेशन और गलत change

BARGAINING WHERE THERE IS NOTHING TO BARGAIN

एक station पर ट्रेन कुछ देर रुकी। मैं पानी लेने उतरा। सामने छाछ, पानी, नमकीन और छोटे packets थे। मैंने एक bottle और नमकीन लिया। दुकानदार ने कुल रकम बताई।

मैंने आदत से कहा, “थोड़ा कम?”

वह मुझे देखता रहा। “MRP है।”

“हाँ… मैं बस देख रहा था आप जाग रहे हैं।”

उसने बिना मुस्कराए पैसे लिए।

मैंने बड़ा नोट दिया। उसने change लौटाया। Train की सीटी सुनकर मैं जल्दी में चढ़ गया। Seat पर पहुँचकर change गिना। मुझे लगा दस रुपये कम हैं।

मैं दरवाज़े की तरफ जाने लगा। Train चल चुकी थी।

फिर pocket की दूसरी तरफ हाथ गया। वहाँ वही दस रुपये का coin था जो मैंने सुबह रखा था।

मनोज ने पूछा, “क्या हुआ?”

“कुछ नहीं।”

“किस पर शक किया?”

“अभी officially किसी पर नहीं।”

वह बोला, “पहले अपनी pockets की inquiry कर लिया करो।”

यह advice नीली diary पर भी लागू हो सकती थी।

डायरी सिर्फ दो पन्ने

JAIPUR AS A WORK NOTE, NOT A CLUE

दोपहर की सुस्ती में बाकी यात्री थोड़ा चुप हो गए। मैं खिड़की से हटकर बैठा और नीली diary निकाली। सिर्फ इसलिए कि Jaipur के बारे में उस engineer ने क्या लिखा था, देख लूँ।

अब मैं diary को रहस्य की तरह नहीं खोलता था। किसी पुराने traveller की field notebook की तरह खोलता था।

एक पन्ने पर लिखा था:

“जयपुर - स्टेशन का मुखभाग - पुराना शहर - जल व्यवस्था - वेधशाला की रेखाएँ।”

नीचे कुछ measurements थे। किसी पुरानी building की खिड़की का rough sketch। एक जगह लिखा:

“रंग से पहले अनुपात देखो।”

मैं मुस्कराया। Jaipur को “Pink City” कहने से पहले वह आदमी दीवार का अनुपात देख रहा था। Engineer आखिर engineer ही रहता है।

पुराने Jaisalmer-Jaipur ticket को मैंने फिर देखा। 10 3 7 1 की numbers वही थीं। अब कोई urgency नहीं थी। उन्हें meaning मिले या न मिले, दोनों संभव थे।

मैंने ticket वापस रखा और diary बंद कर दी।

मैंने diary वापस रख दी। आज पुरानी लिखावट से ज्यादा खिड़की के बाहर बदलती धरती दिलचस्प थी।

एक बच्चा और नक्शा

THE WINDOW SEAT CHANGES OWNERS

अगले station से एक परिवार थोड़ी दूरी के लिए चढ़ा। लगभग आठ साल का बच्चा हमारी window seat को देखकर वहीं खड़ा हो गया। उसकी माँ ने कहा, “बेटा, uncle बैठे हैं।”

मैंने जगह बना दी। “आओ।”

वह तुरंत खिड़की से बाहर देखने लगा। उसके हाथ में छोटी school notebook थी जिसमें भारत का map बना था। शायद homework।

उसने पूछा, “हम Rajasthan में हैं?”

मैंने कहा, “अब शायद हाँ।”

उसकी माँ ने मेरी तरफ देखा। “शायद?”

मैंने phone map खोला। “हाँ, हैं।”

बच्चे ने कहा, “आपको पता नहीं?”

“मैं traveller हूँ, geography teacher नहीं।”

उसने map में Rajasthan पर उँगली रखी। “मैं बता दूँ?”

“Please।”

अगले दस मिनट वह मुझे राज्य की shape, Jaipur की approximate जगह, Jaisalmer किस तरफ है, सब समझाता रहा। कुछ सही, कुछ उसकी imagination।

नंदिनी ऊपर से सुन रही थी। बोली, “अब आपकी guide upgrade हो गई।”

बच्चे ने पूछा, “आप Jaipur में क्या देखोगे?”

मैंने forts, old city, food कहा।

“Hawa Mahal?”

“हाँ।”

“ऊँट?”

“अगर pole के पीछे से निकला तो।”

उसे joke समझ नहीं आया। बाकी सब हँसे।

राजस्थान का पहला पूरा स्वाद

KACHORI, MIRCHI AND THICK TEA

दोपहर बाद एक लंबे halt पर platform का खाना पूरी तरह अलग mood में था। कचौड़ी के साथ बड़े हरे मिर्च के तले हुए पकौड़े जैसे snacks, दही, नमकीन और मोटी दूध वाली चाय।

मैंने mirchi वाला snack देखा। दुकानदार ने कहा, “ले लो, ज्यादा तीखा नहीं।”

यह sentence मैंने पहले भी कई जगह सुना था और हर बार अलग परिणाम मिला था।

फिर भी लिया।

बाहर बेसन की मोटी परत थी, हल्की कुरकुरी। अंदर बड़ी हरी मिर्च, बीच में आलू-मसाला। पहला bite surprisingly mild था। मैंने confidence में दूसरा बड़ा bite लिया। वहाँ बीजों का पूरा परिवार मेरा इंतज़ार कर रहा था।

आँखों में पानी आया।

दुकानदार ने पूछा, “तीखा?”

मैंने पुराना जवाब देने की कोशिश की - “नहीं।”

आवाज़ थोड़ी टूट गई।

नंदिनी ने bottle आगे की। “आपको हर शहर में proof देना जरूरी है कि मिर्च से नहीं डरते?”

“मैं scientific consistency रखता हूँ।”

मनोज बोला, “Result हर बार same है।”

मैंने दही लिया। ठंडा दही और मसाले की आग का combination तुरंत राहत नहीं देता, लेकिन उम्मीद देता है।

फिर चाय। गाढ़ी, दूध ज्यादा, रंग गहरा, ऊपर पतली मलाई। चीनी इस बार पर्याप्त थी। मुझे पहली बार किसी vendor से extra sugar माँगने की जरूरत नहीं पड़ी।

मैंने कहा, “ये लोग मुझे समझते हैं।”

इरफान बोला, “Rajasthan welcome।”

जयपुर करीब आता है

THE COMPARTMENT STARTS PACKING EARLY

जब destination करीब आने लगी तो compartment का behaviour फिर बदल गया। जो लोग घंटों तक फैलकर बैठे थे, सब compact होने लगे। चादरें fold, bottles ढूँढो, charger निकालो, bag zip करो, ticket check।

मैंने सबसे पहले charger निकाला। इरफान ने देखा।

“Progress।”

फिर shoes पहने। दोनों अपने थे।

“और progress।”

मैंने backpack उठाया। इस बार कोई cup नहीं छोड़ा था।

“आज बहुत successful day है,” मैंने कहा।

मनोज बोला, “Station उतरने दो, फिर certificate देंगे।”

बाहर शहर का फैलाव बढ़ रहा था। पहले scattered मकान, फिर colonies, workshops, road traffic, और धीरे-धीरे dense urban landscape। कहीं दूर पहाड़ी की outline, कहीं रंगे हुए मकान, कहीं flyover के नीचे traffic।

Jaipur का पहला impression postcard वाला नहीं था। कोई fort खिड़की के सामने अचानक नहीं आया। पहले शहर की सामान्य outskirts आईं - जैसे हर शहर पहले अपना कामकाजी चेहरा दिखाता है, tourist face बाद में।

मुझे यही पसंद था।

नंदिनी की माँ ने बचा हुआ गुड़ का एक छोटा टुकड़ा मेरी तरफ बढ़ाया। “रख लो।”

मैंने लिया।

मनोज ने अपना card दिया। “कभी hardware पर chapter लिखो तो फोन करना।”

मैंने कहा, “आपको डर नहीं कि मैं rate गलत लिख दूँगा?”

“Rate बदलते रहते हैं। आदमी सही लिखना।”

यह वाक्य notebook में जाने लायक था।

इरफान ने हाथ मिलाया। “Hotel key मत भूलना।”

“पूरी train को पता है क्या?”

“अब हाँ।”

जयपुर स्टेशन

ARRIVAL, THIS TIME SOMEONE ALREADY KNOWS

Train धीमी हुई। Platform की लंबी छत, signs, luggage, चाय के stalls और उतरने के लिए पहले से दरवाज़े पर खड़े लोग खिड़की में आने लगे। फिर final jerk और train रुक गई।

मैंने backpack कंधे पर डाला। इस बार charger socket में नहीं छोड़ा था, दोनों shoes मेरे थे, और चाय का कोई cup खंभे पर नहीं पड़ा था।

मनोज ने कहा, “अब certificate मिल सकता है।”

इरफान ने हाथ मिलाया। “Hotel की key संभालना।”

“ये बात Lucknow से Jaipur कैसे पहुँची?”

“आप खुद लेकर आए।”

मैं हँसते हुए नीचे उतर गया।

Platform पर गर्म हवा थी। रात की लंबी रेलयात्रा एकदम खत्म नहीं हुई थी; शरीर अब भी हल्के-हल्के हिलते coach जैसा महसूस कर रहा था। बाहर निकलते यात्रियों के बीच मैं कुछ क्षण रुका। ऊपर station board था - Jaipur.

Phone network लौटते ही तीन messages आए। दो सामान्य। तीसरा Shristi का:

“उतर गए?”

मैंने लिखा, “हाँ।”

उसका reply इतनी जल्दी आया कि शायद phone हाथ में ही था।

“Hotel पहुँचो. Address भेजना.”

मैंने बस thumbs-up भेजा। मुझे यह नहीं सूझा कि कोई आदमी किसी casual acquaintance के arrival पर इतने ठीक समय phone क्यों देख रहा होगा। उस समय मेरा ध्यान auto वालों पर था।

स्टेशन से सस्ता होटल

THE CITY BEFORE THE POSTCARD

बाहर auto drivers की वही परिचित chorus शुरू हो गई - hotel, Sindhi Camp, old city, Hawa Mahal. मैंने budget hotel का नाम बताया।

पहले driver ने rate कहा। मैंने कम किया। उसने मना किया। दूसरा आया। तीसरे ने वही rate कहा जो पहले ने कहा था, मगर मैंने फिर bargaining की। आखिर मैं जिस रकम पर बैठा वह पहले rate से शायद दस रुपये कम थी।

मैंने इसे victory माना।

Driver ने mirror में देखा। “दस रुपये के लिए पाँच मिनट लगाए।”

“Principle।”

“Petrol principle पर नहीं मिलता।”

मैं चुप हो गया। Jaipur ने पहले fifteen minutes में economics पढ़ा दी थी।

Station area पीछे छूटा। शहर postcard की तरह शुरू नहीं हुआ। पहले चौड़ी सड़कें, buses, workshops, दुकानों की कतार, scooters, office-going traffic और गर्म हवा। फिर कहीं-कहीं गुलाबी रंग की लंबी walls और पुरानी façade की झलक। दूर पहाड़ी की धुंधली outline।

मैंने camera निकाला। Auto हल्का उछला और frame में building की जगह किसी scooter वाले का helmet आ गया।

Driver ने कहा, “पहले hotel पहुँच जाओ, Jaipur भाग नहीं रहा।”

यह line मैंने पहले भी अलग-अलग शहरों में अलग लोगों से सुनी थी। शायद मेरी itinerary सच में राष्ट्रीय चिंता बन चुकी थी।

कमरा और एक संदेश

TWENTY MINUTES

Hotel साधारण था - reception पर wooden counter, ऊपर संकरी सीढ़ियाँ, room में bed, chair, fan, छोटा bathroom और खिड़की से सामने की building की दीवार। Budget travel की विश्वसनीय luxury: दरवाज़ा बंद हो, bathroom साफ हो, charger लगे - बाकी शहर बाहर है।

मैंने bag bed पर रखा। नहाया। कपड़े बदले। Camera battery लगाई। Passport pouch अंदर रखा। नीली diary bag की नीचे वाली तह में चली गई। आज उसे साथ घूमाने का मन नहीं था।

Phone उठाया और Shristi को hotel location भेज दी।

Reply:

“20 min.”

मैंने लिखा, “तुम सच में आ रही हो?”

“हाँ.”

“Café बता देती.”

इस बार reply थोड़ा देर से आया:

“पता है.”

बस इतना।

मुझे लगा शायद मैंने कुछ अजीब कहा। फिर मैंने सोचा - नहीं, Joshi हमेशा short replies देती है।

यह निष्कर्ष सुविधाजनक था। सही था या नहीं, उस समय मैंने जाँचने की कोशिश नहीं की।

नीचे उतरते समय मैं दूसरी मंज़िल पर गलत corridor में मुड़ गया। एक door के सामने पहुँचकर key लगाने ही वाला था कि number देखा - 204. मेरा room 304 था।

पीछे सफाई वाला लड़का खड़ा था।

“Sir, एक floor ऊपर।”

मैंने कहा, “मैं बस layout समझ रहा था।”

उसने सिर हिलाया। Jaipur में मेरी credibility तेजी से बन रही थी।

नीचे एक बाइक खड़ी थी

SHRISTI JOSHI, JAIPUR

Hotel के बाहर निकला तो सड़क पर traffic सामान्य था। दो autos, एक delivery bike, सामने chai की दुकान और थोड़ा आगे एक motorcycle किनारे लगी थी।

Shristi helmet उतार रही थी।

पहली चीज जो मैंने notice की वह उसका चेहरा नहीं, उसकी मुस्कान थी - Moscow में मिलने वाली उसकी सामान्य, आधी मुस्कान से खुली हुई। मुझे देखते ही वह दो कदम तेज चली, फिर जैसे खुद को याद आया कि जल्दी किस बात की है, चाल सामान्य कर ली।

“Finally,” उसने कहा।

“इतना dramatic क्या है? Train ही थी।”

“तुम्हारी train थी. इसलिए भरोसा कम था।”

“मैं सही शहर में उतर गया।”

“अभी check करना पड़ेगा।”

उसने मुझे ऊपर से नीचे देखा - backpack नहीं था, camera था, बाल train और shower के बीच किसी समझौते में थे।

“थके हुए लग रहे हो।”

“तारीफ़ के लिए धन्यवाद।”

“मैं doctor बनने वाली हूँ. Observation free है।”

वह Moscow में medicine पढ़ रही थी और यह बात कभी-कभी conversation में ऐसे इस्तेमाल करती जैसे provisional medical licence पहले ही मिल चुका हो।

मैंने bike की तरफ देखा। पीछे दूसरा helmet था।

“ये मेरे लिए?”

“नहीं, किसी random tourist के लिए लाई हूँ।”

“बहुत सेवा भाव है।”

उसने helmet मेरी तरफ बढ़ाया। “पहनो।”

मैंने कहा, “तुम्हें आने की जरूरत नहीं थी. मैं खुद आ जाता।”

उसकी मुस्कान एक पल के लिए कम हुई। बहुत छोटा पल। उसने helmet की strap ठीक करते हुए कहा, “मुझे पता है कि तुम खुद आ सकते हो।”

फिर उसने आँख उठाई। “चलना है?”

“चलो।”

मुझे लगा शायद उसे मेरा वाक्य पसंद नहीं आया। कारण समझ नहीं आया।

दो हेलमेट और तीन दिन

SHE HAD ALREADY MADE A PLAN

Bike पर बैठते समय camera sling और helmet strap ने मिलकर मेरे गले के आसपास knot बना दिया। मैं दो मिनट उससे लड़ता रहा।

Shristi ने पीछे मुड़कर कहा, “Moscow से इतने साल बाद भी basic coordination नहीं आया?”

“यह equipment conflict है।”

“हाँ. इंसान निर्दोष है।”

आखिर strap सही हुई। उसने bike start की। Jaipur पहली बार windshield और auto की जगह खुले helmet से सामने आया। गर्म हवा सीधे चेहरे पर। Traffic के बीच scooters का flow। सड़क किनारे मिठाई, कपड़ा, jewellery, mobile shops। दूर पुरानी दीवारों के रंग।

मैंने पूछा, “कहाँ?”

“पहले café।”

“फिर?”

“फिर देखते हैं।”

Signal पर bike रुकी। उसने phone holder में map नहीं, notes app खोली हुई थी। ऊपर heading दिखी:

“JAIPUR - 3 DAYS”

मैंने पढ़ने की कोशिश की। उसने तुरंत screen lock कर दी।

“List बनाई है?”

“तुम्हें अकेला छोड़ दूँ तो तीस मिनट में wrong gate से Amer पहुँच जाओगे।”

“मेरी reputation बहुत खराब है।”

“Earned है।”

“तीन दिन पूरे free हो?”

“हाँ।”

“Lucky timing।”

उसने सामने signal देखा। “हाँ. बहुत lucky।”

आखिरी दो शब्दों का tone थोड़ा अलग था। मैं उस समय समझ नहीं पाया। Signal green हुआ और bike आगे निकल गई।

कैफ़े में वही पुरानी चीनी

MOSCOW, REMEMBERED IN JAIPUR

Café old city की तरफ जाने वाले रास्ते से थोड़ा हटकर था। Modern glass front, अंदर ठंडी हवा, wooden tables और coffee grinder की आवाज़। कोई royal décor नहीं। Shristi शायद जानबूझकर ऐसी जगह लाई थी जहाँ पहले बैठकर बात की जा सके।

हम counter तक पहुँचे। मैं menu देखने लगा। उसने मुझसे पहले order दिया।

“एक cold coffee, कम sweet. और इनके लिए masala chai - extra sugar।”

मैंने उसकी तरफ देखा। “तुम्हें अभी भी याद है?”

“क्या?”

“Extra sugar।”

“Moscow में हर दूसरी chai पर complain करते थे कि ‘ये dessert क्यों नहीं है?’ भूलना मुश्किल है।”

“मैंने ऐसा नहीं कहा।”

“शब्द अलग होंगे. भावना यही थी।”

वह हँसी।

मैंने उसे कुछ क्षण देखा। दो-तीन साल से हम Moscow में एक-दूसरे को जानते थे। पहले common Indian group में, फिर कभी university side की coffee, कभी किसी festival gathering, कभी अचानक metro के बाहर। हमेशा कुछ देर की बातचीत। हमेशा अगली बार मिलने की vague बात। कभी अगली बार जल्दी नहीं आया।

लेकिन उसे मेरी chai याद थी।

मैंने कहा, “तुम्हारी memory dangerous है।”

उसने straw के wrapper को उँगली से मोड़ते हुए कहा, “Selective है।”

मैंने इसे joke माना।

Chai आई। सच में extra sweet। अदरक हल्की, इलायची साफ, दूध गाढ़ा। मैंने पहला sip लिया।

“Perfect।”

Shristi ने cup की तरफ नहीं, मेरी तरफ देखा। “मुझे पता था।”

उसने तुरंत अपनी coffee उठाई, जैसे वाक्य बहुत साधारण था।

दो-तीन साल की अधूरी बातचीत

SOME FRIENDSHIPS STAY IN THE SAME PLACE FOR A LONG TIME

बात Moscow से शुरू हुई। उसकी classes, hospital postings, exams, Indian students का छोटा social circle, मेरी नौकरी, Russian winter, और वे शामें जब minus temperature में पाँच मिनट बाहर खड़े रहना भी philosophical बना देता है।

“तुम India आते हो तो गायब हो जाते हो,” उसने कहा।

“इस बार दस दिन का route है।”

“मैं route की बात नहीं कर रही।”

मैंने उसकी तरफ देखा। “फिर?”

वह दो सेकंड चुप रही। फिर menu का corner सीधा किया। “कुछ नहीं. तुम्हारे messages का reply speed भी route जैसा है।”

“काम रहता है।”

“मुझे पता है।”

उसने मुस्कराने की कोशिश की, मगर इस बार मुस्कान पूरी नहीं बनी।

मैंने topic बदलकर पूछा, “तुम्हारा MBBS कैसा चल रहा?”

उसने जवाब दिया। बिल्कुल normal. मैंने उस छोटे pause का कोई अलग अर्थ नहीं निकाला। मैं उस समय अगली बात सुन रहा था।

कुछ देर बाद उसने अचानक पूछा, “Train में दोस्त बने?”

“हाँ. एक businessman, hotel worker, एक student - Nandini. उसने कहा मैं travel नहीं, attendance लगा रहा हूँ।”

Shristi का हाथ straw पर रुका। “Nandini?”

“हाँ, Jaipur की student।”

“अच्छा।”

बस एक शब्द।

फिर उसने coffee का sip लिया। “उसने सही कहा।”

“तुम भी उसके side?”

“मैं किसी के side नहीं।”

“Tone तो है।”

“Medical observation है।”

मैं हँस पड़ा। वह भी मुस्कराई, मगर आधा second देर से।

गुलाबी दीवारों के बीच पहली शाम

HAWA MAHAL SIDE, WITHOUT RUSHING

Café से निकले तो Shristi ने कहा, “आज monuments खत्म करने की कोशिश मत करना. सिर्फ शहर देखो।”

“तुम भी वही national conspiracy में हो?”

“कौन-सी?”

“हर शहर में कोई मुझे slow होने को कहता है।”

“क्योंकि तुम fast नहीं हो. तुम बस जल्दी में confused हो।”

मैंने protest किया। उसने helmet पहन लिया और सुनने का नाटक बंद कर दिया।

हम old city की तरफ गए। traffic dense हुआ। façade का गुलाबी-terracotta रंग लगातार दिखने लगा। दुकानों पर textiles, lac bangles, mojari, jewellery, मसाले, tourist सामान। ऊपर पुरानी खिड़कियाँ और jharokha, नीचे modern boards। सड़क पर auto, bikes, pedestrians और बीच-बीच में गाय।

Shristi traffic में local confidence से निकल रही थी। मैं पीछे बैठा हर turn पर city को पकड़ने की कोशिश करता।

Hawa Mahal के सामने उसने bike थोड़ी दूर park की। हम पैदल आए। शाम की रोशनी façade पर नरम पड़ चुकी थी। छोटी-छोटी खिड़कियों की repetition दूर से pattern लगती थी; पास आने पर हर opening अलग shadow बनाती।

मैं camera निकालकर पीछे हटते हुए angle खोज रहा था।

“पीछे auto है,” Shristi ने कहा।

मैं एकदम रुका। Auto वाला horn मार रहा था।

“तुम travel करते हो या situations collect करते हो?” उसने कहा।

मैंने camera नीचे किया। “ये line नई है?”

“नहीं. बस finally sentence मिल गया।”

वह line अगले तीन दिनों में कई बार लौटने वाली थी।

प्याज़ कचौड़ी, मिर्च और उसका हँसना

JAIPUR TASTES BETTER WHEN SOMEONE KNOWS WHERE TO STOP

थोड़ा आगे उसने एक दुकान के सामने bike रोकी। मैंने board पढ़ने की कोशिश की और dish का नाम गलत उच्चारित कर दिया।

Shristi ने तुरंत सुधारा।

“मुझे पता था,” मैंने कहा।

“तो गलत क्यों बोला?”

“Local pronunciation test।”

“हाँ. दुकानदार का test था कि हँसे या नहीं।”

प्याज़ कचौड़ी हाथ में आते ही बाकी argument खत्म हो गया। बाहर की परत गरम और इतनी कुरकुरी कि हल्का दबाते ही पतली flakes टूटतीं। अंदर प्याज़ का गहरा मसाला, सौंफ की हल्की मिठास, धनिया, लाल मिर्च और कहीं-कहीं काली मिर्च की तेज चुभन। साथ की खट्टी-मीठी चटनी ने गर्म मसाले को थोड़ा गोल किया, फिर हरी चटनी ने उसे दोबारा तेज कर दिया।

मैंने दुकानदार से कहा, “थोड़ी और हरी।”

Shristi ने मेरी तरफ देखा। “Lucknow से कुछ नहीं सीखा?”

“आज अलग experiment है।”

दूसरे bite के बाद आँखों में पानी आया।

वह हँसी नहीं रोक पाई। “तुम्हें हर शहर में proof देना जरूरी है?”

मैंने पानी लिया। “Scientific consistency।”

“Result भी consistent है।”

उसने अपने tissue का packet मेरी तरफ बढ़ाया। पहले से खुला हुआ। जैसे उसे पता था यह जरूरत आने वाली है।

“ये भी Moscow से याद था?” मैंने पूछा।

“नहीं. ये आज पाँच मिनट पहले predict किया था।”

एक shortcut जो shortcut नहीं था

SHE LETS HIM LEAD ONCE

हम bazaar की गलियों में पैदल चले। एक जगह मैंने map देखा और कहा, “इधर से निकले तो जल्दी main road आएगी।”

Shristi ने screen देखी। “Sure?”

“Hundred percent।”

“चलो।”

दस मिनट बाद हम एक छोटी गली से निकलकर लगभग वहीं पहुँचे जहाँ से शुरू हुए थे।

मैंने आसपास देखा। “Interesting।”

“बहुत।”

“Map ने...”

“Map ने कुछ नहीं किया।”

“तुम्हें पता था?”

“पहले turn पर।”

“फिर रोका क्यों नहीं?”

वह कुछ सेकंड मुझे देखती रही। “देखना था तुम कब मानोगे कि रास्ता गलत है।”

“Research?”

“पुराना research।”

उसकी आवाज़ हल्की थी, मगर शब्द अजीब तरह से सिर्फ गलियों के बारे में नहीं लगे। मैं फिर भी हँस दिया।

उसने नजर हटा ली और आगे चल पड़ी।

कुछ कदम बाद मैंने बराबर पहुँचकर कहा, “ठीक है, guide तुम।”

“पहले से मैं ही थी।”

रात की मीठी चाय

A SMALL THING SHE DOES NOT NEED TO ASK

शाम गहरी हुई तो हम सड़क किनारे चाय पर रुके। दुकान बड़ी नहीं थी - steel counter, उबलता दूध, अदरक कूटने की आवाज़, पीछे biscuits के jars।

चायवाले ने पूछा, “चीनी?”

मैं बोलता उससे पहले Shristi ने कहा, “इनकी ज्यादा।”

“कितनी ज्यादा?”

वह मेरी तरफ देखे बिना बोली, “आप normal डालो, फिर एक चम्मच और।”

मैंने कहा, “तुमने मेरी medical history collect कर रखी है?”

“Medical history नहीं. bad habits।”

चाय गरम थी, दूध वाली, अदरक साफ, ऊपर हल्की मलाई और मेरे लिए पर्याप्त मीठी। सड़क की धूल और शाम की थकान के बाद वह कप unusually अच्छा लगा।

Shristi ने अपने cup में चीनी कम रखी थी।

मैंने पूछा, “इतने साल Moscow में मिलने के बाद Jaipur में proper घूमना पड़ रहा है।”

“Moscow में तुम्हारे पास हमेशा कोई काम होता था।”

“तुम्हारे exams होते थे।”

“हाँ।”

वह cup की rim देखती रही। फिर बोली, “कभी-कभी समय होता भी है. बस लोग पूछते नहीं।”

मैंने सहजता से कहा, “अब तीन दिन हैं।”

उसने मेरी तरफ देखा। इस बार मुस्कान धीरे आई। “हाँ. अब तीन दिन हैं।”

होटल के बाहर

A GOODBYE THAT IS ONLY FOR TONIGHT

वह मुझे रात में hotel वापस छोड़ने आई। Bike रुकी। मैंने helmet उतारा और strap से फिर camera sling उलझ गई।

“तुम इसे रोज कैसे manage करते हो?” उसने पूछा।

“Talent।”

“Concern।”

मैंने helmet उसे दिया। “कल तुम busy हो तो मैं city bus से निकल जाऊँगा. तुम पूरा दिन मत खराब करना।”

उसने helmet लेते-लेते हाथ रोक लिया।

“खराब?”

“मतलब... तुम्हारा अपना plan होगा।”

“मैंने कहा ना, तीन दिन free हूँ।”

“हाँ, lucky timing।”

वह दो seconds चुप रही। वही phrase जो मैंने दोपहर में कहा था।

“हाँ,” उसने धीरे कहा, “बहुत lucky।”

फिर tone सामान्य कर लिया। “कल आठ बजे नीचे रहना।”

“इतनी सुबह?”

“Amer जाना है. और तुम आठ का मतलब आठ-पैंतालीस मत समझना।”

“मैं punctual हूँ।”

उसने मुझे देखा।

“ठीक है,” मैंने कहा, “मैं कोशिश करता हूँ।”

वह bike start करने लगी, फिर बंद कर दी। “Room पहुँचकर message कर देना।”

मैंने hotel के entrance की तरफ देखा। “यहीं तो है।”

“पता है।”

“फिर?”

“बस कर देना।”

“ठीक।”

वह चली गई। मैं reception तक पहुँचा। Phone vibrate हुआ।

“ऊपर पहुँच गए?”

मैंने हँसकर लिखा, “हाँ, doctor.”

कुछ seconds तक screen पर typing... दिखा। फिर गायब हो गया।

आखिर नया message आया:

“कल 8. Sweet chai बाद में.”

मैंने thumbs-up भेजा और room की तरफ चल पड़ा।

उस रात मुझे बस इतना लगा कि Moscow की एक पुरानी दोस्त Jaipur में बहुत अच्छी guide निकली है।

कभी-कभी कहानी में सबसे slow आदमी narrator खुद होता है।

CHAPTER NINETEEN - A

आमेर की सुबह

AMER IN THE MORNING

जयपुर - पहला पूरा दिन

Jaipur - Day One of the A/B/C Arc

“कुछ शहर नक्शे से खुलते हैं। कुछ किसी ऐसे इंसान के साथ, जिसे रास्ते आपसे पहले याद हों।”

सुबह सात बजकर पचपन मिनट पर मैं होटल के नीचे था।

यह बात अपने-आप में दर्ज करने लायक थी।

पिछली रात Shristi ने आठ बजे नीचे रहने को कहा था और साथ में यह भी जोड़ दिया था कि मेरे लिए आठ का मतलब शायद आठ-पैंतालीस होता है। मुझे लगा था कि आज उसे गलत साबित करना जरूरी है।

Reception के सामने खड़ा होकर मैंने घड़ी दो बार देखी। फिर शीशे में अपनी शक्ल देखी। फिर बाहर सड़क पर।

सात बजकर सत्तावन मिनट पर एक bike आकर रुकी।

Shristi ने helmet उतारा। बाल पीछे किए। मुझे पहले से नीचे खड़ा देखकर कुछ क्षण ऐसे देखा जैसे किसी clinical test का unexpected result मिल गया हो।

“तुम?”

“मैं।”

“नीचे?”

“हाँ।”

“आठ से पहले?”

“मैंने सोचा Jaipur को अच्छे impression से शुरू करना चाहिए।”

उसने phone निकालकर समय देखा। “Screenshot लेना चाहिए।”

“इतना भी rare नहीं हूँ।”

“Moscow में तीन साल के data कुछ और कहते हैं।”

उसने दूसरा helmet मेरी तरफ बढ़ाया। मैं पहनने लगा तो strap camera की sling में फँस गई। मैंने दो बार खींचा। sling और कस गई।

Shristi ने bike का stand लगाया। “रुको।”

वह सामने आई, strap अलग किया, फिर helmet की buckle पकड़कर बोली, “तुम हर चीज़ को problem क्यों बना लेते हो?”

“Content।”

“तुम travel नहीं करते।” उसने buckle बंद की। “तुम situations collect करते हो।”

पिछली शाम वाली line वापस आ गई थी। शायद अब वह स्थायी होने वाली थी।

* * *

जयपुर की सुबह, बाइक की पिछली सीट से

THE CITY BEFORE THE TOURIST DAY

Bike चल पड़ी। सुबह की हवा रात से ठंडी थी। सड़कें अभी पूरी तरह नहीं भरी थीं। दूध की गाड़ियाँ, स्कूल की बसें, चाय की पहली भीड़, दुकान के आधे उठे shutter, सफाई करते कर्मचारी, मंदिर के बाहर फूल की छोटी दुकानें - शहर tourism से पहले अपने रोज़ के काम में था।

मैं पीछे बैठा इमारतें देख रहा था। गुलाबी रंग एक जैसा नहीं था। कहीं नया paint तेज था, कहीं पुरानी दीवार धूप और धूल से हल्की पड़ चुकी थी। balconies, छोटे झरोखे, modern boards, wires, scooters - Jaipur किसी preserved set की तरह नहीं, इस्तेमाल होते शहर की तरह सामने था।

Shristi ने पीछे बिना देखे पूछा, “ठंड लग रही?”

“Moscow से आया हूँ।”

“Jaipur में यही answer हर मौसम में नहीं चलेगा।”

“अभी तो चल रहा है।”

Bike एक signal पर रुकी। उसने mirror से मेरी तरफ देखा। “पानी लिया?”

मैंने backpack थपथपाया। “हाँ।”

“Sunscreen?”

“मैं fort देखने जा रहा हूँ या dermatology round पर?”

“दो घंटे बाद मत बोलना कि धूप ने धोखा दिया।”

“तुम्हें याद है Moscow में भी तुम यही...”

“तुम gloves भूलते थे।”

मैं चुप हुआ।

सच में भूलता था। अक्सर। और कई बार उसके bag में एक extra pair निकल आता था। उस समय मुझे लगता था medical students शायद emergency के लिए दुनिया की हर चीज़ साथ रखते हैं।

Signal खुल गया।

मैंने पूछा, “तुम्हें मेरी सारी खराब habits ही याद हैं?”

उसने थोड़ा accelerator बढ़ाया। “अच्छी वाली कम हैं।”

आवाज़ में हँसी थी। जवाब में कुछ और भी था या नहीं, मैं तय नहीं कर पाया। फिर सड़क खुल गई और मेरा ध्यान सामने पहाड़ियों की तरफ चला गया।

नाश्ता पहले, किला बाद में

KACHORI, SWEET TEA AND A VERY BAD CHILLI DECISION

Amer की तरफ जाने से पहले Shristi ने bike एक पुरानी-सी नाश्ते की दुकान के पास रोक दी। दुकान इतनी photogenic नहीं थी कि travel brochure में आए, लेकिन कड़ाही की आवाज़ और गरम तेल की खुशबू ने उसे मेरे लिए तुरंत important बना दिया।

सामने कचौड़ियाँ फूली हुई निकल रही थीं। एक दूसरी tray में प्याज़ की filling वाली कचौड़ियाँ थीं। पास आलू की सब्ज़ी, हरी चटनी, मीठी सौंठ और तली हुई हरी मिर्च।

Shristi ने पूछा, “क्या खाओगे?”

“Local जो भी है।”

“यह dangerous sentence है।”

“मैं prepared हूँ।”

उसने दुकानदार से दो plates मँगाईं। मेरी plate में कचौड़ी तोड़ी गई। अंदर से मसालेदार प्याज़ की भाप निकली - हल्की मिठास, भुने मसाले, सौंफ और मिर्च की गर्म गंध। ऊपर आलू की पतली सब्ज़ी डाली गई, फिर हरी चटनी की धार और मीठी सौंठ। बाहर की परत crisp थी लेकिन पूरी तरह सूखी नहीं; अंदर प्याज़ का मसाला गरम और थोड़ा नम। पहले कौर में मिठास, खट्टापन और मसाला एक साथ आया।

मैंने कहा, “ये serious breakfast है।”

“तुम्हारे railway समोसे से better?”

मैंने उसकी तरफ देखा। “तुमने chapter पढ़ा कब?”

“तुमने भेजा था।”

“पूरा?”

“नहीं, सिर्फ spelling mistakes गिन रही थी।”

मैंने plate पर रखी तली मिर्च उठा ली।

Shristi ने तुरंत कहा, “वो मत...”

मैंने काट लिया।

उसने sentence पूरा नहीं किया। बस मुझे देखती रही।

पहले दो seconds ठीक थे। तीसरे पर मिर्च ने अपना परिचय दिया। पाँचवें पर आँखें पानी बनाने लगीं। मैंने बिना expression बदले चबाने की कोशिश की।

“कैसी?” उसने पूछा।

“बहुत balanced।”

“तुम रो क्यों रहे?”

“Jaipur emotional कर रहा है।”

वह इतनी जोर से हँसी कि दुकानदार भी मुस्करा दिया।

चाय आई। दुकानदार ने चीनी पूछी।

Shristi ने कहा, “इनकी ज्यादा।”

“फिर?” मैंने कहा।

“हाँ, फिर। तुम बदलते नहीं हो।”

“तुम्हें याद बहुत रहता है।”

उसने अपना cup उठाया। “कुछ चीज़ें भूलती नहीं।”

मैंने इसे सामान्य memory वाला जवाब समझा और चाय पीने लगा।

चाय दूध वाली, इलायची की हल्की खुशबू के साथ और मेरी पसंद के मुताबिक noticeably मीठी थी। कचौड़ी के मसाले और मिर्च के बाद मिठास ने जीभ को वापस civilized अवस्था में लाया।

Food memory - Jaipur morning: प्याज़ कचौड़ी की असली ताकत सिर्फ crisp shell नहीं थी; अंदर का गरम प्याज़-मसाला, खट्टी-मीठी चटनी और साथ की मीठी चाय मिलकर पूरा स्वाद बनाते थे। और तली मिर्च को बहादुरी की परीक्षा समझना मेरी गलती थी।

जल महल के सामने पाँच मिनट

A STOP THAT WAS NOT ON MY LIST

नाश्ते के बाद हम फिर निकले। शहर पीछे छूटते-छूटते सामने पानी खुला और बीच में जल महल की शांत आकृति दिखाई दी। सुबह की रोशनी अभी कठोर नहीं हुई थी। पानी पर हल्की चमक थी, दूर पहाड़ियों का रंग धूल और धूप के बीच मुलायम लग रहा था।

Shristi ने बिना पूछे bike रोक दी।

“तुम्हारी list में है?”

“Photo level पर।”

“तो पाँच minute।”

हम railing के पास खड़े हो गए। कबूतर, कुछ tourists, सुबह walk करते लोग, चाय और पानी बेचने वाले। सामने palace पानी के बीच अलग अनुपात में था - इतना पास कि साफ दिखे, इतना दूर कि छूने की इच्छा बेकार हो।

मैंने camera निकाला। तीन photos लिए। चौथा लेने लगा तो Shristi ने कहा, “एक ही building है।”

“Light बदल रही है।”

“तीन seconds में?”

“Professional matter।”

वह मेरी तरफ नहीं, camera की screen की तरफ झुकी। उसका कंधा मेरे कंधे से लगा। मैं photo zoom करके देखता रहा। वह कुछ क्षण वहीं रही, फिर खुद पीछे हट गई।

“ठीक है,” उसने कहा, “अब Amer।”

मैंने camera बंद किया। मुझे बस इतना लगा कि पाँच minute सच में पाँच से ज्यादा हो गए थे।

आमेर की पहली दीवार

FORT, HILL AND SCALE

Amer की तरफ बढ़ते हुए शहर का texture बदल गया। सड़क पहाड़ियों के साथ मुड़ने लगी। दूर ऊँचाई पर किलेबंदी की लंबी रेखाएँ पहाड़ी की contour पकड़ती दिखीं। नीचे पानी, ऊपर दीवारें, बीच में पुराना settlement और modern traffic - Rajasthan का postcard सामने था, लेकिन horn और धूल उसे वास्तविक रख रहे थे।

मैं bike से उतरकर कुछ क्षण ऊपर देखता रहा।

“अब क्या?” Shristi ने पूछा।

“Scale।”

“Scale?”

“Photo में छोटा लगता है।”

“हर चीज़ camera में छोटी लगती है।” उसने helmet लिया। “कुछ लोग छोड़कर।”

मैंने पूछा, “कौन?”

“तुम्हारा backpack।”

वह आगे चल दी।

प्रवेश की तरफ चढ़ते हुए stone surface सुबह की धूप पकड़ने लगी थी। रास्ते पर अलग-अलग तरह के लोग थे - families, school-age बच्चे, foreign tourists, local guides, couples, बुज़ुर्ग, photographers। किसी की गति तेज, किसी की आधी। Fort दूर से एक mass था; पास जाकर वह gates, courtyards, ramps, walls, windows और shadows में टूटने लगा।

Shristi जगहों के नाम बताती जा रही थी, लेकिन guide की तरह लगातार बोल नहीं रही थी। कहीं खुद रुकती, कहीं मुझे देखने देती। यह फर्क मुझे अच्छा लगा।

“तुम पहले कितनी बार आई हो?”

“School trip, cousins, relatives, फिर friends।”

“तो bored नहीं होती?”

“आज नहीं।”

मैंने उसकी तरफ देखा। वह सामने gate की तरफ देख रही थी।

“क्यों?”

“आज guide हूँ।”

“ये तो punishment है।”

“हाँ,” उसने कहा, “कुछ punishments लोग खुद choose करते हैं।”

मैं हँसा। उसने नहीं। फिर उसने sunglasses ठीक किए और आगे बढ़ गई।

* * *

पहले बड़े courtyard में पहुँचकर मुझे जगह की सबसे अच्छी बात खुलापन लगी। नीचे से चढ़ते समय दीवारें आसपास थीं; अंदर आते ही आकाश अचानक बड़ा हो गया। पत्थर की जमीन, ऊँची दीवारें, entrance के decorative details, लोग छोटे-छोटे समूहों में बिखरे हुए।

मैं कभी ऊपर architecture देखता, कभी नीचे floor pattern, कभी किसी doorway की छाया।

Shristi ने कहा, “तुम सीधे चल भी सकते हो?”

“चल रहा हूँ।”

“Zig-zag को चलना नहीं कहते।”

मैं एक carved doorway की तरफ गया। उसने मेरे phone से मेरी photo ले ली।

“अरे, बताना तो।”

“बताऊँगी तो pose करोगे।”

“मैं naturally photogenic हूँ।”

“इसी confidence पर research हो सकती है।”

उसने photo मुझे नहीं दिखाई। phone अपने पास रखा, फिर दो कदम बाद याद आया कि phone मेरा है और वापस दे दिया।

“Photo?” मैंने पूछा।

“बाद में।”

“क्यों?”

“बस।”

मैंने shoulder उचकाया।

उसने शायद राहत की छोटी साँस ली। या मुझे ऐसा बाद में याद आया।

शीश महल की रोशनी

WHEN DECORATION BECOMES LIGHT

Fort के भीतर जिस हिस्से ने मुझे सबसे ज्यादा धीमा किया, वह शीशे के छोटे decorative काम वाला भाग था। दूर से surface pattern लगता था; पास जाकर छोटे reflective pieces, floral forms और geometry एक साथ दिखते। कम रोशनी में भी कुछ हिस्से चमक पकड़ लेते थे।

मैंने camera उठाया, फिर नीचे कर दिया।

“Photo नहीं?” Shristi ने पूछा।

“ले रहा हूँ। पहले आँख से।”

“Improvement।”

“तुम मुझे बहुत खराब समझती थीं Moscow में?”

उसने तुरंत जवाब नहीं दिया।

“खराब नहीं।”

“फिर?”

“Busy।”

“Job थी।”

“मुझे पता है।”

“तुम भी पढ़ाई में busy थीं।”

“हाँ।”

वह decorative wall को देखने लगी। “फिर भी कुछ लोग time निकाल लेते हैं।”

मैंने कहा, “तुम निकालती थीं। तुम्हारे exams के बीच भी।”

उसने मेरी तरफ देखा। शायद वह किसी और जवाब की उम्मीद कर रही थी।

मैंने आगे जोड़ दिया, “Medical students का time management अच्छा होता है।”

उसके चेहरे की हल्की मुस्कान एकदम छोटी हो गई।

“हाँ,” उसने कहा। “यही होगा।”

वह आगे बढ़ गई।

मैं दो seconds वहीं खड़ा रहा। मुझे लगा शायद मैंने कोई बात गलत कही। लेकिन कौन-सी, समझ नहीं आया।

गलत समूह

THE GUIDE I DID NOT HIRE

एक संकरे passage में मैं दीवार की detail photograph करने के लिए रुक गया। Shristi आगे किसी courtyard की तरफ चली गई। मैंने दो photos लिए और सामने चलते लोगों के group के पीछे हो लिया।

Guide architecture समझा रहा था। मैं सुनते-सुनते उनके साथ एक मोड़ मुड़ गया। फिर दूसरा।

करीब पाँच minute बाद guide ने पूछा, “आप हमारे group के साथ हैं?”

मैंने आसपास देखा।

Shristi कहीं नहीं।

“Technically अब हूँ।”

Group में दो लोग हँस पड़े। मैं वापस मुड़ा। phone निकाला। तीन missed calls।

मैंने call किया।

“कहाँ हो?” उसकी आवाज़ सीधी थी।

“बस... architecture follow कर रहा था।”

“Location भेजो।”

“मैं आ जाता हूँ।”

“तुम अभी किसी और guide के साथ घूम रहे हो और मुझे बोल रहे हो तुम आ जाओगे?”

उस line में irritation थी, लेकिन उसके नीचे कुछ ऐसा भी था जिसे मैंने उस समय सिर्फ concern समझा।

मैं वापस courtyard में पहुँचा तो वह एक pillar के पास खड़ी थी। arms folded।

“मिल गया?”

“हाँ।”

“नया group कैसा था?”

“Informative।”

“Good. मैं घर जा रही हूँ, वही लोग Jaipur दिखा देंगे।”

मैंने हँसकर कहा, “Jealous guide?”

उसने मेरी तरफ देखा। एक second ज्यादा लंबा।

“बहुत funny।”

वह मुड़ी। मैं उसके पीछे गया।

“Sorry।”

“किस बात का?”

“तुम wait कर रही थीं।”

उसके कदम धीमे हुए। “हाँ।”

बस इतना।

फिर उसने कहा, “और वैसे भी, तुम situations collect करते हो।”

इस बार line में हँसी वापस थी।

ऊपर से दिखता आमेर

A VIEW THAT MAKES PEOPLE QUIET

किले के ऊँचे हिस्से से नीचे देखते हुए पुरानी बस्ती, पानी, सड़क और पहाड़ एक ही frame में आ गए। नीचे traffic छोटे moving dots जैसा लग रहा था। दूर तक dry hills की परतें थीं। हवा नीचे शहर से साफ और हल्की तेज थी।

हम parapet से थोड़ी दूरी पर खड़े रहे।

मैंने कहा, “Moscow में ऐसी height से city अलग लगती है। वहाँ lines straight हैं। यहाँ सब terrain follow करता है।”

Shristi ने पूछा, “Moscow miss करते हो?”

“कुछ चीज़ें।”

“क्या?”

“Metro. Winter की पहली snow. रात की light. काम के बाद की quiet walk.”

“लोग?”

“कुछ।”

“कुछ मतलब?”

मैंने सोचा। “जो वहाँ routine का हिस्सा बन गए।”

उसने नीचे देखा। “Routine छोड़ने पर पता चलता है कौन हिस्सा था।”

मैंने कहा, “तुम philosopher कब से हो गई?”

“जब से तुम traveller हुए।”

मैं हँसा। उसने भी, लेकिन उसकी हँसी थोड़ी देर से आई।

हवा तेज हुई। उसके बाल चेहरे पर आए। उसने पीछे किए। फिर अचानक पूछा, “तुम वापस Moscow कब जा रहे हो?”

मैंने तारीख बताई।

“सीधे काम?”

“Almost।”

“और फिर वही schedule?”

“हाँ। क्यों?”

“ऐसे ही।”

उसने phone निकाला और landscape की photo लेने लगी।

कभी-कभी “ऐसे ही” बहुत मेहनत से बोला गया वाक्य होता है। उस समय मुझे यह बात नहीं पता थी।

दोपहर की राजस्थानी थाली

DAL BAATI, GATTE AND TOO MUCH GHEE

Fort से निकलते-निकलते भूख तेज हो चुकी थी। Shristi ने कहा कि tourist café में sandwich खाने का कोई अर्थ नहीं है। मैंने बिना विरोध के helmet पहन लिया।

हम एक ऐसे भोजनालय पहुँचे जहाँ menu बड़ा था, लेकिन उसने सीधे राजस्थानी थाली मँगाई।

Steel की बड़ी plate में छोटी कटोरियाँ आईं - dal, gatte की सब्ज़ी, ker-sangri, दही, लहसुन की चटनी, थोड़ा अचार, churma और साथ में गरम baati। ऊपर से ghee अलग छोटी कटोरी में।

मैंने baati हाथ में ली। बाहर firm और भुनी हुई, अंदर सूखी परतदार गर्माहट। Shristi ने उसे तोड़कर dal डालने को कहा। मैंने dal डाली। फिर ghee।

“इतना?” उसने पूछा।

“थोड़ा।”

“तुमने आधी कटोरी डाल दी।”

“Local experience।”

पहला कौर rich था - dal का earthy स्वाद, baati की roasted गंध और ghee की भारी softness। अच्छा बहुत था, लेकिन तुरंत समझ आया कि यह खाना हल्के हाथ का नहीं है। Gatte की सब्ज़ी में बेसन के टुकड़े मसालेदार gravy में थे; texture थोड़ा dense, gravy खट्टी-मसालेदार। Ker-sangri ने taste पूरी तरह बदल दिया - सूखा, तीखा, हल्का खट्टा, मसालों में पका desert produce, जो सामान्य सब्ज़ी जैसा बिल्कुल नहीं लगा।

फिर मैंने लाल लहसुन chutney ज्यादा ले ली।

Shristi ने मेरी plate देखी। “सुबह वाली मिर्च से कुछ सीखा?”

“Different department।”

तीस seconds बाद मैंने दही उठाई।

वह चुपचाप मुस्कराती रही।

Churma आख़िर में आया। घी और गेहूँ की crumbly मिठास, बीच-बीच में इलायची। मसालेदार भोजन के बाद वह dessert से ज्यादा reset button लगा। मैंने दूसरा spoon लिया।

“तुम्हें मीठा सच में बहुत पसंद है,” उसने कहा।

“तुम्हें अभी पता चला?”

“नहीं।”

उसने यह इतना जल्दी कहा कि मैं हँस पड़ा।

वह भी हँसी, फिर plate में churma की तरफ देखने लगी।

Food note: Dal-baati को सिर्फ “dal और bread” समझना उसके texture को खो देना है। baati का roasted, थोड़ा dry crumb dal और ghee को सोखता है; gatte की मसालेदार gravy, ker-sangri की तीखी-सूखी गहराई और मीठा churma एक ही meal में Rajasthan की अलग-अलग दिशाएँ खोलते हैं।

दोपहर का धीमा हिस्सा

WHEN A TRIP STOPS FEELING LIKE A CHECKLIST

खाने के बाद हम तुरंत अगले monument की तरफ नहीं भागे। शायद ghee ने शरीर को लोकतांत्रिक तरीके से निर्णय लेने पर मजबूर कर दिया था।

एक छोटी shaded जगह पर हम बैठ गए। सामने सड़क से traffic जा रहा था। किसी दुकान में brass items चमक रहे थे। एक बच्चा cold drink की crate खिसका रहा था। हवा में धूल थी, लेकिन shade में गर्मी manageable थी।

मैंने कहा, “आज Jaigarh भी कर सकते हैं।”

Shristi ने मुझे देखा। “कर सकते हैं।”

“लेकिन?”

“कुछ नहीं।”

“तुम्हारा ‘कुछ नहीं’ suspicious है।”

“तुम्हारे पास तीन दिन हैं। पहले दिन ही सब खत्म क्यों करना?”

यह बात इतनी simple थी कि मुझे जवाब नहीं मिला। मेरी पूरी यात्रा speed पर बनी थी - Delhi से Mathura, Mathura से Vrindavan, रात की train, सुबह का city, फिर अगला connection। पहली बार कोई मुझे route की नहीं, pace की सलाह दे रहा था।

“ठीक है,” मैंने कहा। “आज कम।”

“कम नहीं। ठीक।”

“Difference?”

“तुम्हें तीसरे दिन समझ आएगा।”

मैंने पानी पिया। उसने मेरे हाथ से bottle ली, खुद एक sip लिया, फिर जैसे उसे याद आया कि उसने पूछा भी नहीं।

“Sorry।”

“Bottle national resource है।”

वह मुस्कराई। “Moscow में भी तुम यही बोलते थे।”

“कब?”

“एक बार Arbat side... तुम bottle भूल गए थे।”

मुझे vague सा scene याद आया - ठंडी शाम, snow के किनारे, एक café से बाहर निकलते हम कुछ भारतीय students, और Shristi का scarf। तारीख नहीं। details नहीं।

उसे शायद सब याद था।

“तुम्हारी memory disturbingly good है।”

“Selective,” उसने कहा।

वही शब्द। वही tone।

पन्ना मीना की सीढ़ियाँ

GEOMETRY, SHADE AND ANOTHER WRONG ASSUMPTION

दोपहर के बाद उसने मुझे एक stepwell की तरफ ले जाने का फैसला किया। रास्ता fort के बड़े courtyards से अलग था - narrow lanes, local houses, छोटे मंदिर, दुकानों के सामने बैठे लोग। Tourist movement था, लेकिन rhythm कम तेज।

सीढ़ियों का geometric pattern ऊपर से देखते ही camera खुद हाथ में आ गया। repeated triangles, उतरती lines, light और shadow की alternating shapes।

मैं edge से सुरक्षित दूरी पर खड़ा होकर frame बना रहा था।

Shristi ने कहा, “अब खाना ठंडा नहीं हो सकता, इसलिए आराम से photo लो।”

“तुम criticism carry करके चलती हो?”

“Emergency kit।”

मैंने angle बदलने के चक्कर में दूसरी तरफ जाने वाला रास्ता पकड़ लिया। दो मिनट बाद एक बंद section के सामने खड़ा था। पीछे से उसकी आवाज़ आई।

“Shortcut?”

मैंने मुड़कर कहा, “Exploration।”

“Same thing?”

“Writer के लिए।”

“चलो, explorer।”

वापस आते समय उसने अचानक मेरा हाथ पकड़कर एक uneven stone से बचाया। grip दो seconds से कम रही। उसने तुरंत छोड़ दिया।

“नीचे देख लिया करो।”

“मैं architecture देख रहा था।”

“हाँ। जमीन भी architecture का हिस्सा है।”

उसका tone सामान्य था। उसने आगे चलना शुरू कर दिया।

मैंने बस अपने जूते देखे और सोचा कि सच में नीचे देखना चाहिए था।

* * *

एक सवाल जो मैं फिर गलत समझा

SHE ASKS ONE THING, I ANSWER ANOTHER

शाम की तरफ लौटते समय traffic बढ़ चुका था। Bike धीरे चल रही थी। एक लंबी red light पर हम रुके। सामने cars की line। बगल में auto। हवा अब गरम और exhaust से भारी थी।

Shristi ने helmet के भीतर से थोड़ा जोर से पूछा, “तुम्हारी life में कोई है?”

मैंने ठीक से नहीं सुना। “क्या?”

उसने दोबारा कहा, “कोई है? मतलब... Moscow में।”

Signal अभी red था।

मैंने सहजता से कहा, “बहुत लोग हैं। Office वाले, दोस्त...”

वह कुछ seconds चुप रही।

“मैं attendance नहीं पूछ रही थी।”

“ओह।”

अब मुझे सवाल समझ आया।

“नहीं। ऐसा कुछ नहीं।”

उसने सामने देखा। “अच्छा।”

बस एक शब्द।

मैंने पूछा, “तुम्हारा?”

Signal green हो गया।

“चलें?” उसने कहा।

Bike आगे बढ़ गई।

मैंने सोचा traffic में conversation अधूरी रह गई। उसने दोबारा वह topic नहीं खोला।

शाम की चाय और एक छोटी शिकायत

NOT EVERYTHING IS ABOUT BEING A GOOD GUIDE

शहर की तरफ लौटते हुए हम एक छोटी tea place पर रुके। इस बार मैं order देने गया।

“दो chai. मेरी extra sugar.”

पीछे से Shristi बोली, “मेरी normal।”

“मुझे पता है।”

उसने हल्का सिर उठाया। “तुम्हें?”

“कल से सीख रहा हूँ।”

उसने cup लेते हुए कहा, “Progress।”

हम बाहर खड़े होकर चाय पीने लगे। सड़क पर शाम का traffic था। सूरज नीचे जा रहा था और buildings की दीवारों पर रंग थोड़ा गर्म हो गया था।

मैंने कहा, “तुम genuinely बहुत अच्छी guide हो। Moscow से कोई आएगा तो तुम्हारा number दे दूँगा।”

उसके cup का movement एक क्षण को रुक गया।

“ज़रूर,” उसने कहा। “Travel agency खोल लेती हूँ।”

“Business model।”

“हाँ।”

जवाब छोटा था।

मैंने सोचा शायद वह थक गई है।

कुछ देर हम चुप रहे। फिर मैंने पूछा, “कल कहाँ?”

उसने cup नीचे किया। “तुम सच में कल भी मेरे साथ घूमना चाहते हो?”

मैं हँसा। “अरे, तुमने तीन दिन का contract किया है।”

वह मुझे देखती रही।

“Contract,” उसने दोहराया।

“हाँ।”

उसके चेहरे पर मुस्कान आई, लेकिन आँखों तक पूरी नहीं पहुँची। “ठीक है। Contract।”

मैंने उस समय इसे मज़ाक समझा।

गोविंद देव जी की ओर

EVENING WITHOUT A CAMERA

Hotel लौटने से पहले उसने कहा कि अगर मैं बहुत थका नहीं हूँ तो शहर के एक जीवित धार्मिक हिस्से को देखना चाहिए - ऐसा Jaipur जो सिर्फ forts और façades से नहीं बनता।

मैं तैयार था।

शाम के समय मंदिर की तरफ जाने वाले लोगों की movement बढ़ रही थी। families, बुज़ुर्ग, young लोग, बच्चे। आसपास दुकानों पर फूल, प्रसाद, पानी, छोटी धार्मिक वस्तुएँ। हवा में घी, अगरबत्ती और street food की mixed smell।

मैंने camera bag में रहने दिया।

Shristi ने notice किया। कुछ कहा नहीं।

भीड़ में वह मेरे आगे चल रही थी। एक जगह movement अचानक तेज हुई तो उसने पीछे हाथ बढ़ाकर मेरी wrist पकड़ ली, जैसे यह reflex हो। crowd निकलने तक छोड़ा नहीं। फिर हाथ हटा लिया।

“खो मत जाना,” उसने कहा।

“मैं fort में एक बार...”

“एक बार?”

“ठीक है।”

Darshan का समय brief था, लेकिन atmosphere अलग। आवाज़ें, folded hands, movement, devotion, और बीच में शहर की रोज़ की familiarity। मेरे लिए यह tourist stop नहीं था। Shristi के लिए तो बिल्कुल नहीं। वह कुछ देर चुप रही।

बाहर निकलते समय मैंने पूछा, “तुम यहाँ अक्सर आती हो?”

“जब घर होती हूँ, कभी-कभी।”

“आज क्यों लाईं?”

उसने कहा, “तुम Jaipur पूरा देखना चाहते थे।”

“हाँ।”

“तो सिर्फ दीवारें क्यों दिखाऊँ?”

यह जवाब मुझे पसंद आया।

रात का हल्का खाना

WHEN THE DAY ENDS WITH SOMETHING SWEET

Lunch इतना भारी था कि रात को पूरा dinner अपराध लगता। हम एक छोटी जगह पर रुके जहाँ गरम दूध, कुल्हड़ वाली chai, मिठाइयाँ और हल्के snacks थे।

Shristi ने कहा, “तुम मीठा खाओगे ही।”

“तुम doctor हो, रोकना चाहिए।”

“मैं आज duty पर नहीं हूँ।”

हमने एक मिठाई share की - चाशनी में डूबी, ऊपर हल्का सूखा मेवा। मैं पहला piece जल्दी उठा गया।

“Of course,” उसने कहा।

“क्या?”

“कुछ नहीं।”

“फिर suspicious कुछ नहीं।”

उसने दूसरा piece लिया। “तुम Moscow में भी dessert पहले खत्म करते थे।”

“हम इतने meals साथ कब खाए?”

वह मेरी तरफ देखने लगी।

“तुम्हें नहीं याद?”

मैंने दिमाग लगाया। Indian café, एक Diwali gathering, एक birthday, शायद university canteen के पास।

“कुछ।”

उसने मुस्कराकर कहा, “हाँ. कुछ।”

वह बात वहीं खत्म हो गई, लेकिन उसके बाद उसने मिठाई का आखिरी छोटा टुकड़ा नहीं लिया। plate मेरी तरफ खिसका दी।

होटल के बाहर दूसरी रात

A PAUSE LONGER THAN THE CONVERSATION

रात तक मेरे पैरों को Amer की चढ़ाई याद आने लगी थी। Shristi ने मुझे फिर hotel के सामने छोड़ा।

मैंने helmet उतारा। इस बार sling में नहीं फँसा।

“देखा?” मैंने कहा। “Learning curve।”

“Proud of you।”

मैंने helmet लौटाया। “आज मज़ा आया।”

“बस?”

“बहुत मज़ा आया।”

“Better।”

मैंने कहा, “कल आराम करना हो तो बता देना। पूरा दिन मेरे साथ घूमकर थक गई होगी।”

उसने मेरी तरफ देखा। इस बार कोई joke तुरंत नहीं आया।

“तुम्हें लगता है मैं मजबूरी में घूम रही हूँ?”

“नहीं, मतलब... तुम छुट्टी पर हो।”

“और?”

“और तुम्हारा अपना time है।”

वह कुछ कहना चाहती थी। मैं साफ देख सकता था। होंठ खुले, फिर बंद। उसने helmet handle पर टाँग दिया।

“ठीक है,” उसने आखिर कहा। “कल मेरा अपना time है।”

मैंने सिर हिलाया। “Good।”

उसने हल्की हँसी छोड़ी, जिसमें amusement कम था। “और मैं उसका क्या करूँगी, वो भी मैं decide कर लूँगी।”

“Fair।”

“कल नौ बजे।”

“आठ नहीं?”

“आज तुमने punctuality का quota पूरा कर लिया।”

वह bike start करने लगी। फिर रुककर बोली, “Room पहुँचकर message।”

“कल भी?”

“हाँ, कल भी।”

मैंने मज़ाक में salute किया। “Yes, doctor।”

वह चली गई।

मैं reception से ऊपर आया। कमरे की key इस बार pocket में थी - progress का दूसरा प्रमाण।

Phone निकाला। मैंने लिखा:

Reached. Thanks, guide.

Message delivered हुआ। कुछ seconds बाद typing दिखाई दिया। फिर गायब। फिर वापस।

आखिर reply आया:

“कल ‘guide’ मत बोलना।”

मैंने पूछा:

“फिर क्या बोलूँ?”

Typing फिर शुरू हुई। काफी देर तक।

फिर सिर्फ आया:

“Shristi ठीक है।”

मैंने smile emoji भेज दिया।

Phone side में रखा और जूते उतारने लगा।

उस रात मुझे लगा कि शायद उसे “guide” वाला joke पसंद नहीं आया।

असल वजह समझने में मैं अभी भी काफी पीछे था।

* * *

नीली डायरी - सिर्फ दो मिनट

THE JOURNEY STAYS BIGGER THAN THE MYSTERY

सोने से पहले मैंने backpack खोला। नीली diary दिखी।

दिन भर वह लगभग याद ही नहीं आई थी।

मैंने इसे अच्छी बात माना।

एक Jaipur वाला पुराना field-note फिर दिखा - किसी पुराने भवन की माप, एक line, architecture की छोटी observation। कोई नया code नहीं। कोई Freemason connection नहीं। कोई dramatic clue नहीं।

मैंने diary बंद कर दी।

आज Jaipur ने खुद को किसी दूसरे आदमी की notebook के जरिए नहीं, अपनी सड़कों, पहाड़ियों, खाने, भीड़ और एक पुरानी दोस्त की bike के जरिए दिखाया था।

यात्रा को यही रहना चाहिए था।

CHAPTER NINETEEN - B

गुलाबी शहर के भीतर

INSIDE THE PINK CITY

जयपुर - दूसरा दिन

Jaipur - Day Two of the A/B/C Arc

“किसी शहर के साथ दूसरा दिन अक्सर जगहों से कम, साथ चल रहे इंसान से ज्यादा याद रहता है।”

सुबह नौ बजने में सात मिनट थे जब नीचे से message आया:

“मैं पहुँच गई। इस बार नीचे आने में तीन साल मत लगाना।”

मैंने phone देखा और हँस पड़ा।

कल रात उसने साफ कहा था कि आज नौ बजे। मैंने आठ-पचपन पर shoes पहन लिए थे। उसके बावजूद कमरे की key ढूँढने में दो मिनट गए, camera battery एक बार फिर check की, फिर bag बंद किया, फिर दोबारा खोला क्योंकि sunglasses अंदर रह गए थे।

नीचे पहुँचा तो Shristi bike के पास खड़ी थी। Helmet handle पर था। दूसरे हाथ में दो छोटे paper cups।

“चाय?” मैंने पूछा।

“तुम्हारे लिए।”

“इतनी सुबह सेवा?”

“सुबह नौ बजे को तुम इतनी सुबह बोल रहे हो?”

उसने cup आगे किया।

पहला sip लिया। दूध वाली गरम चाय। और चीनी मेरी usual सीमा से भी थोड़ा ऊपर।

मैंने उसकी तरफ देखा। “Extra?”

“तुम्हारी normal।”

“मेरी medical file maintain कर रही हो?”

“अगर करती तो sugar कम लिखती।”

“फिर ज्यादा क्यों?”

वह helmet पहनने लगी। “क्योंकि तुम्हें यही पसंद है।”

जवाब इतना सीधा था कि उसके बाद मुझे कुछ clever नहीं मिला। मैंने चाय खत्म की और दूसरा helmet पहन लिया।

आज strap पहली कोशिश में बंद हो गई।

Shristi ने देखा। “Progress जारी है।”

“तीन दिन Jaipur में रहूँगा तो civilized हो जाऊँगा।”

“इतना optimistic मत बनो।”

* * *

पुराने शहर की तरफ

RIDING INTO THE PINK CITY

पहले दिन हम पहाड़ियों और Amer की तरफ निकले थे। दूसरे दिन Shristi ने bike शहर के भीतर मोड़ी।

Traffic सुबह से ही बढ़ रहा था। कहीं school vans, कहीं delivery scooters, कहीं सामान से भरे छोटे commercial vehicles, कहीं cycle पर दूध के cans। पुराने शहर की तरफ बढ़ते हुए सड़क के दोनों किनारों पर façades का रंग एक परिवार का लगा, लेकिन कोई दो दीवारें बिल्कुल एक जैसी नहीं थीं। नई पुताई चमकीली थी। पुरानी सतह पर धूप, धूल और बरसों के मौसम ने रंग को मुलायम कर दिया था।

ऊपर झरोखे, नीचे दुकानों के board। कहीं jewellery, कहीं कपड़ा, कहीं footwear, कहीं चाय। सड़क का architectural rhythm हर तीसरे second horn से टूटता और फिर वापस जुड़ जाता।

Shristi ने signal पर पूछा, “आज plan पता है?”

“Hawa Mahal. City Palace. Jantar Mantar. Market. Food.”

“बस?”

“और तुम्हारा hidden exam जिसमें तुम check करोगी कि मैं खोता कितनी बार हूँ।”

“वो continuous assessment है।”

Signal green हुआ।

Bike आगे बढ़ी।

मैंने पीछे से कहा, “वैसे तुमने तीन दिन का पूरा route कब बनाया?”

उसने जवाब देने से पहले थोड़ा समय लिया। “जब तुमने बताया था Jaipur आ रहे हो।”

“इतने पहले?”

“किसी को तो planning करनी थी।”

“मैं भी planning करता हूँ।”

“तुम connections plan करते हो। दिन नहीं।”

यह criticism accurate था। मैंने विरोध नहीं किया।

हवा महल - सड़क के उस पार

FIVE STOREYS, HUNDREDS OF WINDOWS, ONE VERY BUSY ROAD

Hawa Mahal की पहली पूरी झलक मुझे चलते vehicle से नहीं, सड़क के दूसरी तरफ खड़े होकर मिली।

सुबह की धूप façade पर तिरछी थी। ऊपर उठती गुलाबी-लाल सतह में छोटे-छोटे झरोखे इतने दोहराव के साथ थे कि पहली नज़र में पूरी इमारत एक बड़ी जाली जैसी लगी। फिर आँख detail पकड़ने लगी - छोटी openings, projecting forms, सफेद outlines, ऊपर की पतली रेखाएँ और नीचे सड़क का बिल्कुल आधुनिक शोर।

Postcard में सड़क नहीं आती। Reality में उसके सामने buses, autos, scooters, pedestrians, vendors और लगातार horn थे। वही contrast मुझे अच्छा लगा। Monument किसी empty stage पर नहीं था; शहर उसके सामने रोज अपना काम कर रहा था।

मैंने camera उठाया। एक photo। दूसरी। फिर थोड़ा पीछे गया।

Shristi ने कहा, “Road देखो।”

“देख रहा हूँ।”

मैं frame ठीक करते-करते एक कदम और पीछे हुआ।

उसने backpack की strap पकड़कर मुझे अपनी तरफ खींच लिया। उसी समय एक scooter पीछे से निकल गया।

“तुम photo लेते समय survival बंद कर देते हो?”

“मैं line के अंदर था।”

“तुम line की तरफ जा रहे थे।”

“Difference technical है।”

उसने strap छोड़ी नहीं। दो seconds बाद जैसे उसे खुद महसूस हुआ, हाथ हटाया।

“Camera नीचे।”

“जी।”

“और road cross करते समय मेरी बात सुनना।”

“जी, doctor।”

उसने मुझे देखकर आँखें संकरी कीं। “आज guide भी मत बोलना, doctor भी मत बोलना।”

“तो नाम?”

“कल बताया था।”

“Shristi।”

“Good।”

उसका चेहरा एकदम हल्का हुआ। इतनी छोटी बात पर क्यों, मैंने नहीं सोचा।

* * *

पास पहुँचने पर façade का scale बदल गया। दूर से जो pattern था, करीब से वह हवा, रोशनी और privacy के वास्तु-विचार की तरह लगने लगा। छोटी openings के पीछे से बाहर देखने का विचार अपने-आप आता था। ऊपर की ओर देखते-देखते गर्दन पीछे गई और sunglasses नीचे खिसक गए।

Shristi ने कहा, “तुम हर monument को ceiling की तरह क्यों देखते हो?”

“ऊपर detail है।”

“और नीचे लोग हैं।”

नीचे सच में एक बुज़ुर्ग मुझे बचाकर निकले। मैंने side ली।

“Point taken।”

कुछ देर बाद हम भीतर के रास्तों से ऊपर की तरफ बढ़े। संकरी ramps, छोटे openings, courtyard glimpses और बाहर के शहर के बदलते frames। एक window से market का रंग दिखता, दूसरी से सड़क की movement। हवा कुछ जगह साफ महसूस होती थी, कुछ जगह crowd उसे गर्म कर देता।

मैं एक झरोखे के सामने रुका। बाहर traffic एक miniature mechanical river जैसा था।

Shristi मेरे बगल में आई।

“Moscow की याद?” उसने पूछा।

“नहीं।”

“आज पहली बार?”

“हाँ। वहाँ window से mostly straight roads दिखती थीं। यहाँ हर frame में कुछ टेढ़ा है।”

“तुम्हें टेढ़ी चीजें पसंद हैं?”

“शायद।”

“समझ में आता है।”

“क्या?”

“कुछ नहीं।”

मैंने उसकी तरफ देखा। वह बाहर देखने लगी थी।

मिर्ची बड़ा और मेरी दूसरी गलती

I HAD LEARNED NOTHING FROM YESTERDAY

Hawa Mahal से बाहर निकलते ही खाने की खुशबू ने itinerary में अपना अधिकार माँगा। एक छोटी दुकान पर गरम मिर्ची बड़े निकल रहे थे। मोटी हरी मिर्च के भीतर मसालेदार भरावन, बाहर बेसन की परत, सीधे तेल से उठती भाप।

Shristi ने कहा, “यह मत कहना कि तुम spice handle कर लोगे।”

“मैंने कल training ली है।”

“कल तुम दही ढूँढ रहे थे।”

“Recovery भी skill है।”

हमने एक-एक लिया। बाहर की बेसन परत crisp थी। भीतर मिर्च नरम होकर अपनी raw sharpness खो चुकी थी, लेकिन filling में आलू, मसाले और हल्का खट्टापन था। पहले bite में स्वाद surprisingly balanced लगा। मैंने victory वाली नज़र से Shristi को देखा।

“देखा?”

उसने कहा, “दूसरा bite लो।”

दूसरे में seed वाला हिस्सा आया।

मैं तुरंत चुप हो गया।

उसने पानी आगे कर दिया।

“तुम पहले से ready क्यों रहती हो?”

“Experience।”

“मेरे साथ?”

उसने bottle मेरी तरफ थोड़ी और बढ़ाई। “ज्यादातर।”

मैं पानी पीने लगा। वह मुस्कराती रही।

फिर उसने पास की मिठाई की दुकान से एक छोटा piece घेवर का लिया। चाशनी की हल्की चमक, जालीदार crisp structure, ऊपर थोड़ी मलाई। उसने half तोड़ा और मेरी तरफ किया।

“Spice के बाद तुम्हारी medicine।”

“Doctor बोलने नहीं देती, treatment पूरा देती हो।”

“खाओ।”

घेवर का texture मिर्ची बड़े के बिल्कुल उलट था - हल्का crisp, syrup से नम, ऊपर मलाई की softness। मिठास मेरे taste के हिसाब से बिल्कुल सही लगी।

मैंने दूसरा छोटा टुकड़ा देखा।

उसने plate मेरी तरफ कर दी। “ले लो।”

“तुम?”

“मुझे पता था।”

“क्या?”

“कि तुम दूसरा लोगे।”

Food memory - old Jaipur: गरम मिर्ची बड़ा और उसके तुरंत बाद मीठा घेवर - एक तरफ बेसन, मिर्च और मसाले की गर्मी; दूसरी तरफ चाशनी, crisp जाली और मलाई की ठंडक। किसी शहर को स्वाद से याद करना हो तो contrast अक्सर single dish से ज्यादा काम करता है।

जंतर मंतर

STONE, SHADOW AND THE TEMPTATION TO INVENT A MYSTERY

Jantar Mantar में प्रवेश करते ही मेरे दिमाग ने पहले architecture नहीं, geometry पढ़ी।

ऊँची inclined surfaces, curves, arcs, lines और छाया। यहाँ building की familiar भाषा कम थी; instruments जैसे जमीन से बड़े होकर उठे हों। सफेद और हल्के stone surfaces पर सूरज की sharp shadow किसी drawing की ink line जैसी दिखती थी।

मैं एक structure के सामने काफी देर खड़ा रहा।

Shristi ने पूछा, “अब क्या decode कर रहे हो?”

“कुछ नहीं।”

“चेहरा वही है जो blue diary में numbers देखते समय होता था।”

मैंने उसकी तरफ देखा। “तुम्हें diary के बारे में इतना कब बताया?”

“कल dinner पर। आधा।”

“मैं इतना बोलता हूँ?”

“कभी-कभी।”

मैंने पत्थर की shadow की तरफ देखा। “पहले होता तो इसमें भी कोई code ढूँढ लेता।”

“अब?”

“अब line को line रहने दे रहा हूँ।”

“Improvement number two।”

“आज बहुत progress हो रही है।”

“Jaipur discharge summary अच्छी होगी।”

हम दोनों हँसे।

यहाँ diary का Freemason वाला पुराना भ्रम एक second के लिए याद आया, लेकिन उसी second खत्म भी हो गया। कोई symbol chase करने की इच्छा नहीं हुई। सामने की geometry अपने वास्तविक purpose के साथ ज्यादा interesting थी।

मैंने notebook में लिखा:

हर geometric shape code नहीं होती। कुछ सिर्फ mathematics होती हैं - और वही काफी है।

Shristi ने पढ़ लिया। “Finally।”

“Privacy?”

“Notebook इतनी बड़ी handwriting में मत लिखो।”

* * *

एक पुरानी chat

MOSCOW, SCROLLED BACK TWO YEARS

Jantar Mantar के एक shaded हिस्से में हम कुछ देर बैठे। गर्मी बढ़ चुकी थी। Shristi phone में कोई पुरानी photo ढूँढ रही थी। उसने दावा किया था कि Moscow में मेरे पास यही black backpack था और मैं insist कर रहा था कि पुराना backpack अलग था।

“Proof है,” उसने कहा।

“Court में admissible?”

“देखो।”

वह chat में ऊपर scroll करने लगी। Photos के बीच messages तेजी से गुजर रहे थे। फिर उसने गलत जगह touch कर दिया और screen कुछ पुरानी बातचीत पर रुक गई।

दो साल से ज्यादा पुरानी तारीख।

उसका message:

Free ho? Coffee?

नीचे मेरा जवाब अगले दिन सुबह का था:

Sorry. Office got crazy yesterday.

मैंने हँसकर कहा, “मैं बहुत खराब reply करता था।”

उसने screen नहीं हटाई। “था?”

“अब better हूँ।”

वह ऊपर scroll कर गई। दूसरी तारीख।

फिर उसका message:

“आज Indian café?”

मेरा जवाब तीन घंटे बाद:

“आज नहीं हो पाएगा, weekend?”

Weekend की बातचीत screen पर नहीं थी।

मैंने कहा, “तुम काफी बार plan बनाती थीं।”

“हम्म।”

“और मैं cancel करता था।”

“हम्म।”

“Sorry।”

उसने अब phone lock कर दिया। “इतने साल बाद apology का interest नहीं मिलता।”

“Principal amount?”

“वो भी doubtful है।”

उसने joke किया, लेकिन आँखें मेरे ऊपर नहीं थीं।

मैंने कहा, “अब तीन दिन तुम्हारे plans follow कर रहा हूँ। Debt clear?”

वह मेरी तरफ मुड़ी।

कुछ क्षण बोली नहीं।

“तुम्हें सच में लगता है मैं हिसाब बराबर कर रही हूँ?”

मैंने हँसते हुए कहा, “नहीं, बस मज़ाक।”

वह भी मुस्कराई। “हाँ। मज़ाक।”

फिर backpack वाली photo उसने आखिर ढूँढ ली।

Backpack वही था।

वह जीत गई।

सिटी पैलेस की ओर

COURTYARDS, GATES AND PEOPLE WHO KEEP LOOKING UP

City Palace area की तरफ बढ़ते हुए tourist density बढ़ी, लेकिन पुराने शहर का रोजमर्रा भी साथ चलता रहा। Ticket counters, guides, families, foreign groups, school children, पानी की bottles, umbrellas, और बीच-बीच में local लोग जो इस पूरे spectacle के बीच अपने काम से निकल रहे थे।

अंदर courtyards का अनुभव Amer से अलग था। Amer hill और fortification की भाषा बोलता था; यहाँ रंग, gates, proportions और ceremonial spaces ज्यादा सामने आए। एक courtyard से दूसरे में जाते समय light बदलती। कहीं खुली धूप, कहीं shaded passage, कहीं painted detail के सामने crowd धीमा।

मैं doors के रंग और symmetry में अटक गया। Shristi लोगों को देख रही थी।

“तुम architecture देखती नहीं?” मैंने पूछा।

“देखती हूँ।”

“अभी?”

“अभी तुम्हें देख रही हूँ कि फिर किसी group के साथ मत निकल जाना।”

“एक बार हुआ।”

“कल।”

“Technically previous day।”

“Case fresh है।”

एक family photo लेने के लिए मुझे phone दे गई। मैंने चार photos लिए, एक vertical, एक wide, फिर वापस किया। Shristi ने पूछा, “तुम strangers की photo इतनी patience से लेते हो, अपनी क्यों खराब?”

“मैं subject नहीं, photographer हूँ।”

“Convenient।”

फिर उसने अपना phone एक passerby को दिया और कहा, “हमारी एक photo?”

मैंने उसकी तरफ देखा।

“क्या?”

“कुछ नहीं।”

हम side by side खड़े हुए। मैं सामान्य distance पर था। Photographer ने हाथ से इशारा किया, “थोड़ा पास।”

Shristi आधा कदम मेरी तरफ आई। उसका shoulder मेरे arm से लगा। Photo हुई।

Phone वापस मिला। उसने photo screen पर देखी और बिना comment किए favorite mark कर दी।

“मुझे भेजना,” मैंने कहा।

“देखेंगे।”

“फिर वही?”

“कुछ photos पहले मेरे पास रहेंगी।”

मैंने इसे उसकी photography possessiveness समझा।

बाज़ार में उतरता शहर

TEXTILES, LAC, LEATHER AND TOO MANY THINGS TO TOUCH

दोपहर बाद हम पुराने bazaar की तरफ पैदल निकले। Bike एक जगह park करके छोड़ दी गई। यहाँ Jaipur monument से market में बदल गया।

दुकानों से कपड़े बाहर तक लटके थे - printed cotton, bright dupattas, turbans, quilts, छोटे bags। दूसरी तरफ mojari की rows। कहीं lac bangles गर्मी में चमकतीं। कहीं metal handicrafts। कहीं blue-and-white ceramic pieces। बीच की सड़क पर auto और scooters किसी invisible permission से निकलते रहे।

हवा में एक साथ कई smells थीं: गरम धूल, leather, incense, frying snacks, perfume और कहीं से आती मीठी चाशनी। दुकानदार की आवाजें traffic के साथ competition में थीं।

मैं हर दूसरी चीज हाथ में उठाता और वापस रखता।

Shristi ने कहा, “कुछ खरीदना भी है?”

“Research।”

“तुम्हारी research दुकानवालों को nervous कर रही है।”

एक छोटे stationery-handicraft stall पर मुझे hand-printed cover वाली notebook पसंद आई। कागज़ मोटा था, cover पर geometric floral pattern।

दुकानदार ने कहा, “पाँच सौ।”

मैंने तुरंत कहा, “तीन सौ।”

Shristi side में खड़ी हो गई।

दुकानदार बोला, “चार सौ पचास final।”

मैंने कहा, “तीन सौ पचास।”

उसने कहा, “चार सौ बीस।”

मैंने थोड़ी देर serious चेहरा बनाया। “चार सौ।”

“ठीक।”

मैंने victory वाली नज़र से Shristi को देखा।

वह notebook के पीछे लगी छोटी sticker की तरफ इशारा कर रही थी।

MRP: ₹399.

मैंने sticker देखा। फिर दुकानदार।

वह पूरी professional शांति से खड़ा था।

Shristi ने कहा, “Congratulations. Bargaining में एक रुपया lose किया।”

मैंने दुकानदार को ₹399 दिए।

वह बोला, “Sir, चार सौ ही दे दो, change नहीं है।”

Shristi अब हँसी रोक नहीं पाई।

“तुम travel नहीं करते...”

“मत बोलो।”

“...तुम situations collect करते हो।”

“Copyright मेरा है अब।”

लाख की चूड़ियों वाली दुकान

A QUESTION FROM A SHOPKEEPER

थोड़ा आगे lac bangles की एक छोटी दुकान थी। अंदर गर्म light में रंग और तेज दिख रहे थे। लाल, हरा, पीला, नीला, पत्थर और छोटे mirror-like decorations। पीछे कारीगर की जगह पर गर्म करने का छोटा setup था।

Shristi रुकी। उसने कोई dramatic interest नहीं दिखाया, बस एक tray उठाकर देखने लगी।

मैं artisan से पूछने लगा कि lac को shape कैसे देते हैं। उसने सरल भाषा में heat, rolling, रंग और decoration समझाया। उसकी उँगलियाँ काम करते-करते भी रुकती नहीं थीं।

मैंने notebook में दो lines लिखीं।

दुकानदार ने Shristi की तरफ देखा, फिर मेरी तरफ। “Madam के लिए ले लो, Jaipur की याद रहेगी।”

मैंने सहजता से कहा, “ये खुद choose कर लेगी। मुझे size भी नहीं पता।”

Shristi ने tray में उँगली घुमाई।

दुकानदार मुस्कराया। “Size पूछकर पता कर लो।”

मैंने कहा, “नहीं भाई, ये मेरी friend है। Choice इसकी better है।”

“हाँ,” Shristi ने कहा। “Friend।”

उसकी आवाज़ सामान्य थी, लेकिन उसने tray वापस रख दी।

मैंने पूछा, “कुछ पसंद नहीं आया?”

“बहुत हैं।”

“तो ले लो।”

“नहीं।”

“क्यों?”

“बस।”

हम बाहर निकल आए।

कुछ कदम बाद मैंने कहा, “तुमने suddenly mood क्यों change किया?”

“Mood change नहीं हुआ।”

“हुआ।”

“तुम doctor हो?”

“आज बोलने नहीं दिया।”

वह मुस्कराई, लेकिन हल्का। “फिर diagnosis मत करो।”

मैंने बात छोड़ दी।

* * *

एक कारीगर की मेज़

THE CITY IS ALSO MADE BY HAND

Market की चमक के बीच मुझे सबसे ज्यादा देर एक छोटे workshop-like हिस्से में लगी जहाँ block-printing के wooden blocks रखे थे। कुछ पुराने, किनारों पर रंग जमा हुआ; कुछ नए और साफ। एक आदमी कपड़े पर repeat pattern दिखा रहा था।

उसका नाम महेश था। उसने बताया कि pattern की सुंदरता सिर्फ block में नहीं, repeat की accuracy में है। एक print थोड़ा तिरछा हो तो अगली पूरी line उससे प्रभावित होती है। रंग की consistency, कपड़े की tension, block पर pressure - सब हाथ की आदत से आता है।

मैंने पूछा, “Machine से आसान नहीं?”

उसने कहा, “आसान है। वही चीज नहीं है।”

यह जवाब मुझे पसंद आया।

Shristi एक तरफ folded fabrics देख रही थी। मैंने एक muted blue printed scarf उठाया। बहुत bright नहीं, simple pattern।

“ये अच्छा है?” मैंने पूछा।

“तुम्हारे लिए?”

“मैं scarf पहनूँगा तो Moscow तक खबर जाएगी।”

“तो किसके लिए?”

मैंने कहा, “पता नहीं। बस अच्छा लगा।”

उसने कपड़ा हाथ में लिया। fingertips से print देखा। “अच्छा है।”

मैंने दुकानदार से pack करने को कहा।

Shristi ने पूछा, “किसको दोगे?”

“देखेंगे।”

उसने मेरी तरफ एक क्षण देखा। फिर दूसरी तरफ देखने लगी।

मुझे लगा शायद उसे भी pattern पसंद था।

कुछ मिनट बाद दुकान से निकलते समय मैंने packet उसकी तरफ बढ़ा दिया।

“लो।”

वह सच में रुक गई। “क्यों?”

“तीन दिन unpaid guide service।”

उसका चेहरा तुरंत बदल गया - पहले surprise, फिर कुछ नरम, फिर मेरी आखिरी line पर हल्का flatten।

“Guide फिर?”

“अरे... मतलब thank you।”

उसने packet लिया। “Thank you।”

“पसंद है ना?”

“हाँ।”

“तो फिर expression ऐसा क्यों?”

“कैसा?”

“जैसे prescription गलत लिख दी।”

वह हँसी। इस बार सच में। “तुम हर चीज़ खराब करके फिर ठीक भी कर देते हो।”

“Talent।”

उसने packet अपने bag में बहुत सावधानी से रखा। बाकी market में खरीदी छोटी चीज़ों के साथ नहीं; अलग inner pocket में।

दोपहर का राजस्थानी खाना - इस बार हल्का

BAJRA, DAL, BUTTERMILK AND GARLIC

पहले दिन की dal-baati अभी भी शरीर की memory में थी, इसलिए आज हमने ऐसा खाना चुना जिसमें Rajasthan का स्वाद रहे, लेकिन lunch के बाद हमें stretcher की जरूरत न पड़े।

एक साधारण भोजनालय में बाजरे की रोटी, पंचमेल dal, थोड़ा ker-sangri, लहसुन की chutney, प्याज़, दही और छाछ मिली।

बाजरे की रोटी गेहूँ की roti से ज्यादा मोटी और थोड़ी crumbly थी। गर्म रहते हुए हाथ से तोड़ने पर हल्की earthy, roasted smell आई। Dal में अलग-अलग दालों का texture पूरी तरह smooth नहीं था; कहीं दाना बचा हुआ, कहीं creamy हिस्सा। ऊपर घी की पतली चमक।

लहसुन chutney तीखी थी, लेकिन कल और आज की पिछली गलतियों के बाद मैंने इस बार आधा चम्मच लिया।

Shristi ने plate देखी। “Maturity।”

“मैं सीखता हूँ।”

“Slow।”

“फिर वही?”

“फिर वही।”

छाछ ठंडी, हल्की नमकीन, ऊपर भुना जीरा। बाहर की गर्मी के बाद पहला sip शरीर को तुरंत शांत करता महसूस हुआ।

मैंने कहा, “ये रोज़ मिल जाए तो Moscow में survive कर लूँ।”

“Minus ten में छाछ?”

“Indoor।”

“तुम्हें हर चीज का loophole मिल जाता है।”

मैंने उसका glass देखा। उसने आधी छाछ छोड़ी थी।

“नहीं पीनी?”

“तुम पी लो।”

“तुम्हें कैसे पता मैं...”

“Because you always finish mine।”

मैं रुक गया।

“Moscow में?”

“हाँ।”

“मुझे याद नहीं।”

उसने spoon से dal मिलाई। “मुझे है।”

वह बस इतनी बात थी। फिर हम खाना खाते रहे।

Food note: बाजरे की रोटी का स्वाद उसकी texture में है - हल्की दानेदार, earthy और घी या dal के साथ नरम होती हुई। पंचमेल dal की गहराई, लहसुन chutney की सीधी गर्मी और ठंडी छाछ मिलकर भारी lunch के बिना regional character देती है।

“घर कब आ रही हो?”

THE CALL SHE KEPT SHORT

Lunch के बीच Shristi का phone बजा। Screen पर “Maa” था। उसने call उठाई।

“हाँ, माँ।”

दूसरी तरफ से आवाज़ इतनी तेज नहीं थी कि शब्द सुनूँ, लेकिन tone सवाल वाला था।

“अभी old city में हूँ।”

Pause.

“हाँ, उसी के साथ।”

उसने मेरी तरफ नहीं देखा।

“Moscow वाला।”

फिर pause.

“नहीं, शाम तक।”

एक और pause.

“माँ...” उसने थोड़ा धीमे कहा, “बस दोस्त है।”

उस line के बाद उसने पानी उठाया।

“हाँ। ठीक है। बाद में।”

Call खत्म हुई।

मैंने हँसकर पूछा, “Interrogation?”

“Normal mother।”

“मेरी reputation घर तक?”

“तुम्हारा existence।”

“Difference important है।”

“बहुत।”

उसने phone face-down रखा।

मैंने कहा, “अगर घर जाना हो तो चलो, बाकी मैं घूम लूँगा।”

उसका हाथ spoon पर रुक गया।

“तुम मुझे हर दो घंटे में exit क्यों offer करते हो?”

“मैं बस... तुम्हारा time खराब नहीं करना चाहता।”

“अगर खराब होता तो आती?”

“नहीं।”

“तो फिर?”

मैंने shoulder उचकाया। “ठीक है। Exit बंद।”

वह कुछ seconds मुझे देखती रही। फिर बहुत हल्की smile आई। “Good।”

* * *

गलत मतलब वाला एक सवाल

SHE TRIES AGAIN

दोपहर की धूप थोड़ी नरम होने लगी थी। हम bazaar की shaded side से चल रहे थे। कहीं ऊपर कपड़े की awning, कहीं balcony की shadow।

Shristi ने अचानक पूछा, “तुम्हें कभी लगता है कि कोई चीज बहुत देर तक same जगह अटकी रहे तो उसे नाम दे देना चाहिए?”

मैंने आसपास देखा। “Traffic?”

वह रुक गई।

मैंने हँसते हुए कहा, “क्या?”

“कुछ नहीं।”

“फिर कुछ नहीं?”

“हाँ।”

“तुम Jaipur में बहुत philosophical हो जाती हो।”

उसने आगे चलना शुरू किया। “तुम Moscow में भी बहुत literal थे।”

“ये compliment है?”

“बिल्कुल नहीं।”

मैंने दो कदम बाद पूछा, “क्या अटका है?”

उसने सामने traffic की तरफ इशारा किया। “वही। Traffic।”

मैंने मान लिया।

उसने मेरी तरफ देखे बिना सिर थोड़ा हिलाया, जैसे खुद पर हँस रही हो।

एक फोटो, दो interpretations

WHAT SHE SAVED AND WHAT I NOTICED

हम एक tea-lassi place पर बैठे। गर्मी के कारण Shristi ने lassi ली। मैंने chai। दुकानदार ने sugar पूछी। इससे पहले कि मैं बोलूँ, उसने कहा, “ज्यादा।”

“अब shopkeepers भी जानने लगे हैं।”

“तुम्हारी legacy।”

उसने phone निकाला और सुबह वाली हमारी City Palace photo खोली।

“अच्छी है,” मैंने कहा।

“हम्म।”

“भेजो।”

“अभी?”

“Photo का shelf life होता है?”

उसने मुझे भेज दी।

मेरे phone पर notification आई। मैंने खोली। वही photo। हम दोनों camera की तरफ देख रहे थे, shoulders touch करते हुए।

“ठीक है,” मैंने कहा। “मैं बहुत tired लग रहा हूँ।”

उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मैंने painting देखकर frame की dust पर comment कर दिया हो।

“तुम्हें इसमें यही दिखा?”

“और क्या?”

वह कुछ बोलने लगी, फिर lassi का straw उठाया। “कुछ नहीं।”

“आज तुम्हारा ‘कुछ नहीं’ count बहुत high है।”

“तुम्हारी वजह से।”

“मैंने क्या किया?”

वह हँसी। “Exactly।”

मैं समझा नहीं।

मॉस्को की पहली मुलाकात

BEFORE JAIPUR, BEFORE THE BIKE

शायद उसी photo की वजह से बात Moscow की पहली मुलाकात पर चली गई।

दो-ढाई साल पहले एक छोटे Indian gathering में हम पहली बार properly मिले थे। मैं वहाँ किसी colleague के साथ गया था। Shristi अपने medical university के दो दोस्तों के साथ। बाहर बर्फ थी, अंदर coats का pile और मसाला chai की smell।

मुझे उस शाम का broad frame याद था। उसे details।

“तुमने grey sweater पहना था,” उसने कहा।

“मेरे पास तीन grey sweaters हैं।”

“उसमें sleeve पर छोटा cut था।”

मैंने उसे देखा। “ये creepy level memory है।”

“तुमने खुद बताया था कि office chair में फँसा था।”

“मुझे ये भी याद नहीं।”

“मुझे पता है।”

उसने हँसकर कहा, लेकिन line में शिकायत की बहुत पतली layer थी।

फिर उसने पहली chai की बात बताई। मुझे बिना पूछे extra sugar डालते देखकर उसने सोचा था कि मैं शायद गलती कर रहा हूँ। मैंने दूसरी spoon भी डाल दी थी।

“तभी याद हो गया?” मैंने पूछा।

“हाँ।”

“Sugar?”

“हाँ।”

वह कुछ और कह सकती थी। नहीं कहा।

हमारी friendship उस gathering के बाद messages, occasional cafés, Indian events और कभी-कभी walks में बनी थी। बहुत regular नहीं। बहुत दूर भी नहीं। महीनों में कभी ज्यादा बात, कभी कम। वह exam में busy, मैं काम में। बीच का कोई नाम तय नहीं हुआ। शायद हमने कोशिश भी नहीं की।

मैंने chai खत्म की।

Shristi अपनी lassi के glass पर condensation की line उँगली से मिटा रही थी।

“दो साल बहुत जल्दी निकल गए,” मैंने कहा।

उसने कहा, “कुछ चीज़ों के लिए जल्दी।”

“और कुछ के लिए?”

“बहुत धीरे।”

मैंने सोचा वह medical school की बात कर रही है। Exams सच में लंबे लगते होंगे।

* * *

एक पर्यटक और पाँच मिनट की चुप्पी

A VERY SMALL CHANGE IN HER VOICE

Market से निकलते समय एक solo traveller ने मुझसे English में पूछा कि Hawa Mahal की तरफ जाने का रास्ता कौन-सा है। वह शायद Europe से थी, हाथ में folded map और camera। मैंने direction समझाई। उसने पूछा कि क्या मैं local हूँ।

मैंने कहा, "No, just travelling."

"Solo?"

मैंने Shristi की तरफ इशारा किया, जो थोड़ी दूरी पर पानी ले रही थी। "Not today."

Traveller ने मुस्कराकर कहा, "Lucky you. Local guide?"

मैंने हँसकर कहा, "Old friend."

उसने thanks कहा और चली गई।

Shristi वापस आई। उसने मुझे पानी दिया।

"क्या पूछ रही थी?"

"Hawa Mahal।"

"और?"

"बस।"

"काफी लंबी direction थी।"

"मैं detail में समझाता हूँ।"

"हाँ, मुझे पता है।"

हम आगे चले। उसके replies अगले पाँच मिनट छोटे रहे।

मैंने पूछा, "थक गई?"

"नहीं।"

"घर?"

“नहीं।”

“फिर?”

“कुछ नहीं।”

मैंने तय किया कि शायद गर्मी थी।

दो turns बाद उसने खुद एक joke किया और mood वापस normal हो गया। उस समय मैंने इसे ordinary fluctuation माना।

सड़क किनारे कुल्हड़ लस्सी

COLD, THICK AND ALMOST A MEAL

शाम से पहले हमने एक और lassi ली, इस बार कुल्हड़ में। ऊपर मलाई की मोटी परत, नीचे ठंडी, thick दही जैसी consistency। यह drink कम और spoon के बिना खाई जाने वाली चीज ज्यादा लगी। हल्की इलायची, मिठास साफ लेकिन तीखी नहीं।

मैंने आधी खत्म कर कहा, “ये lunch के बाद illegal होना चाहिए।”

Shristi ने कहा, “तुमने ही कहा था local food deep में try करना है।”

“Deep में जा रहा हूँ।”

“Physically भी।”

मैंने stomach की तरफ देखा। “कल से light।”

“तुम हर meal के बाद यही बोलते हो।”

“Moscow में?”

“हाँ।”

“फिर memory।”

“फिर वही।”

उसने कुल्हड़ खत्म किया और मेरा भी हाथ से लेकर side में रख दिया।

“चलो।”

“कहाँ?”

“एक जगह जहाँ बैठकर तुम पाँच मिनट बिना camera के रहोगे।”

“ये medical experiment है?”

“हाँ।”

पुराने शहर की छत

EVENING ABOVE THE TRAFFIC

वह मुझे एक rooftop café जैसी जगह पर ले गई जहाँ से पुराने शहर की छतें और दूर Hawa Mahal side की outline दिखाई देती थी। नीचे road का शोर था, लेकिन ऊपर पहुँचते-पहुँचते वह एक background hum बन गया।

सूरज नीचे जा रहा था। दीवारों का pink tone गर्म होकर orange की तरफ झुक रहा था। छतों पर water tanks, satellite dishes, कबूतर, drying clothes और दूर monument silhouettes - postcard और ordinary life एक ही horizon में।

हम railing से थोड़ा पीछे बैठ गए।

मैंने camera निकाला।

Shristi ने हाथ आगे किया। “पाँच minute।”

मैंने camera वापस रखा। “ठीक।”

पहला minute हम चुप रहे।

दूसरे में नीचे traffic देखा।

तीसरे में उसने पूछा, “Jaisalmer कब निकलोगे?”

“कल के बाद। रात की bus या जो connection ठीक बैठा।”

“एक दिन और रुक सकते हो?”

सवाल casual tone में था, लेकिन उसने सामने नहीं देखा।

मैंने तुरंत itinerary दिमाग में खोली। “मुश्किल है। Jaisalmer, फिर वापसी Jaipur, फिर Gujarat. पूरा chain shift होगा।”

“हम्म।”

“क्यों? कुछ खास रह गया?”

उसने मेरी तरफ देखा।

काफी देर तक।

“हाँ,” उसने कहा।

“क्या?”

वह मुस्कराई, लेकिन बहुत हल्का। “Jaipur बड़ा है।”

“वापस तो आना है मुझे।”

“कुछ घंटों के लिए।”

“फिर Moscow में मिलेंगे।”

उसने नीचे सड़क देखी। “हाँ। Moscow में।”

मैंने समझा matter solved है।

उसने शायद नहीं समझा।

* * *

पाँच minute पूरे होने के बाद भी मैंने camera नहीं निकाला। हवा थोड़ी बेहतर थी। ऊपर से traffic की लाल-पीली lights धीरे-धीरे बढ़ रही थीं।

Shristi ने अपने bag से वही blue printed scarf निकाला जो मैंने उसे दिया था।

“अभी?” मैंने पूछा।

“देख रही हूँ।”

उसने उसे गर्दन पर loosely रखा। रंग उसके कपड़ों से match नहीं कर रहा था, फिर भी उसने उतारा नहीं।

“अच्छा है,” मैंने कहा।

“तुमने choose किया।”

“बस pattern।”

उसने मेरी तरफ देखा। “हाँ। बस pattern।”

फिर कुछ देर बाद हवा बढ़ी तो उसने scarf ठीक किया।

वह उसे उस शाम घर तक पहने रही।

मीठा आखिर में

A DESSERT SHE DID NOT NEED TO ASK ABOUT

रात में नीचे उतरते हुए उसने पूछा नहीं कि मिठाई खानी है या नहीं। सीधे एक छोटी sweet shop पर bike रोकी।

“तुम्हें कैसे पता?” मैंने कहा।

“इतिहास।”

हमने गर्म दूध के साथ छोटी मिठाई ली। दूध गाढ़ा, ऊपर मलाई की पतली layer, हल्की केसर जैसी खुशबू। मिठाई crumbly और बहुत मीठी थी। मुझे पसंद आई।

Shristi ने अपना आधा piece मेरी plate में रख दिया।

“तुम नहीं खाओगी?”

“तुम खाओ।”

“कल भी last piece मुझे दिया था।”

“तुमने notice किया?”

“हाँ।”

उसके चेहरे पर जो छोटी चमक आई, वह इतनी तेज और इतनी जल्दी गायब हुई कि मुझे लगा शायद मैंने imagine किया।

“Progress number three,” उसने कहा।

“मैंने मिठाई notice की है, तुम्हें नहीं।”

मैं joke कर रहा था।

वह नहीं हँसी।

एक second। दो।

फिर उसने आँखें नीचे कीं और बोली, “मुझे पता है।”

इस बार मुझे साफ लगा कि line गलत जगह लगी।

“अरे, मेरा मतलब...”

“छोड़ो।”

“Shristi...”

वह cashier की तरफ मुड़ी। “Bill दे दो।”

मैंने पैसे देने चाहे। उसने रोका नहीं।

बाहर आते समय वह normal थी, लेकिन पहले जितनी नहीं।

Bike पर लौटती चुप्पी

THE CITY MOVES, THE CONVERSATION DOES NOT

Hotel लौटते समय Jaipur की रात पूरी तरह खुल चुकी थी। दुकानों की रोशनी, traffic, कहीं wedding procession की दूर की आवाज़, कहीं चाय की दुकान पर अब भी भीड़।

मैं पीछे बैठा था। Shristi सामान्य speed से चला रही थी।

हमने करीब दस मिनट कुछ नहीं कहा।

मैंने दो बार conversation शुरू करने की सोची। दोनों बार horn या traffic ने convenient excuse दे दिया।

एक signal पर bike रुकी।

मैंने कहा, “उस joke के लिए sorry।”

उसने mirror में देखा। “कौन-सा?”

“वही। मिठाई वाला।”

“कोई बात नहीं।”

“तुम hurt हुई?”

उसने सामने देखा। Signal red था।

“तुम हर बात इतनी देर से क्यों समझते हो?”

मैंने जवाब देने से पहले पूछा, “कौन-सी बात?”

उसने आँखें बंद करके एक छोटी साँस छोड़ी।

Signal green हो गया।

“Exactly,” उसने कहा और bike आगे बढ़ा दी।

मैं पीछे बैठा उस एक word का मतलब निकालता रहा।

कोई clear answer नहीं मिला।

होटल के बाहर - दूसरा दिन खत्म

ONE SENTENCE SHE ALMOST FINISHED

Hotel के सामने bike रुकी। मैंने helmet उतारा। इस बार कोई joke नहीं किया।

Shristi ने engine बंद नहीं किया। शायद जल्दी जाना था। फिर उसने खुद engine बंद कर दिया।

“कल कितने बजे?” मैंने पूछा।

“तुम बताओ।”

“तुम्हारा Jaipur है।”

“और तुम्हारा trip।”

“आठ?”

“ठीक।”

मैंने कहा, “आज अच्छा था। बहुत।”

“कल से ज्यादा?”

“Different।”

“Diplomatic।”

“सच।”

वह helmet की strap उँगली से घुमा रही थी। फिर बोली, “तुम्हें पता है, Moscow में मैं कई बार सोचती थी कि...”

वह रुक गई।

मैं इंतज़ार करता रहा।

“कि?”

उसने मेरी तरफ देखा। वही लंबा pause।

“कि तुम्हारी timing बहुत खराब है।”

मैं हँसा। “ये तो established fact है।”

वह भी हँसी, लेकिन उसके चेहरे पर हल्की थकान थी जो पूरे दिन चलने से नहीं आई लगती थी।

“Room पहुँचकर message,” उसने कहा।

“मैं सामने हूँ।”

“फिर भी।”

“ठीक।”

मैंने दो कदम hotel की तरफ लिए। फिर पीछे मुड़ा।

वह अभी गई नहीं थी। मुझे ही देख रही थी।

मैंने हाथ हिलाया। उसने तुरंत नजर दूसरी तरफ की और helmet पहन लिया।

मैं reception में चला गया।

* * *

कमरे में पहुँचकर मैंने message भेजा:

“Reached. आज bargaining class बहुत useful थी।”

Reply तुरंत आया:

“₹399 वाली notebook संभालकर रखना।”

मैंने लिखा:

“₹400. Change नहीं मिला.”

उसने laughing emoji भेजा। फिर दूसरा message:

“Scarf अच्छा है.”

मैंने reply किया:

“Good. Guide fee settled.”

तीन dots आए। गायब हुए। फिर आए।

काफी देर बाद सिर्फ:

“कल guide मत बोलना.”

मैंने forehead पर हाथ रखा।

कल भी यही गलती की थी।

मैंने लिखा:

“Sorry. Shristi.”

इस बार reply आया:

“Better :)”

मैंने phone side पर रख दिया।

Table पर blue diary पड़ी थी। मैंने उसे देखा, फिर नहीं खोला।

आज किसी पुराने engineer, किसी code या किसी lodge की जरूरत नहीं थी।

Jaipur का दूसरा दिन मेरे पास already बहुत कुछ छोड़ गया था - pink façades, stone shadows, bazaar की गर्मी, मिर्ची बड़ा, घेवर, ₹399 वाली bargaining, printed scarf, और कई ऐसे जवाब जिनका आधा हिस्सा शायद मैं सुन ही नहीं पा रहा था।

तीसरे दिन की छोटी सूची

ALBERT HALL, A SYMBOL, AND WHATEVER COMES AFTER

सोने से पहले Shristi का एक आखिरी message आया:

“कल थोड़ा slow. Albert Hall side, फिर देखते हैं.”

मैंने लिखा:

“Done. No checklist.”

उसने सिर्फ एक thumbs-up नहीं भेजा।

एक छोटा heart नहीं।

एक smile भी नहीं।

बस:

“Good night. Extra sugar वाले traveller.”

मैंने जवाब दिया:

“Good night, Shristi.”

Phone उल्टा रखकर light बंद की।

बाहर Jaipur का traffic धीरे-धीरे कम हो रहा था।

तीसरा दिन अभी बाकी था।

और मुझे तब तक सिर्फ इतना पता था कि Albert Hall देखना है।

जो चिन्ह वहाँ मेरा इंतज़ार कर रहा था, उसका Jaipur से संबंध कितना था और मेरी अपनी पुरानी पढ़ाई से कितना - यह सवाल अगले दिन उठना था।

लेकिन उससे पहले सुबह थी। Bike थी। Shristi थी।

और शायद वही इस शहर का सबसे लगातार हिस्सा बन चुकी थी।

CHAPTER NINETEEN C

अल्बर्ट हॉल की शाम

EVENING AT ALBERT HALL

जयपुर - तीसरा दिन

Jaipur - Day Three

"कभी किसी शहर की सबसे यादगार चीज़ वह नहीं होती जिसे देखने आप निकले थे, बल्कि वह व्यक्ति होता है जो रास्ते भर आपके साथ था।"

तीसरे दिन मेरी आँख अलार्म से नहीं, फोन की रोशनी से खुली।

स्क्रीन पर एक संदेश था।

नीचे आओ। चाय ठंडी हो रही है।

मैंने समय देखा।

आठ बजने में सात मिनट थे।

कल रात तय हुआ था कि Shristi आठ बजे आएगी। उसने सात मिनट पहले पहुँचकर मेरी समय-पालन की पूरी प्रतिष्ठा पर व्यक्तिगत हमला कर दिया था।

मैंने जवाब लिखा -

दो मिनट।

फिर खुद ही हँसा। भारत में "दो मिनट" और रूस में "अभी निकल रहा हूँ" एक ही परिवार के वाक्य हैं।

चेहरा धोया, कैमरा उठाया, छोटा बैग कंधे पर डाला और कमरे का दरवाज़ा बंद किया। पाँच कदम बाद वापस लौटा।

चाबी अंदर मेज़ पर रह गई थी।

कल के मुकाबले आज प्रगति यह थी कि दरवाज़ा लॉक करने से पहले याद आ गया।

* * *

होटल के बाहर Shristi अपनी बाइक के पास खड़ी थी। एक हाथ में हेलमेट, दूसरे में दो कागज़ी कप।

उसने मुझे आते देखा तो पहले घड़ी देखी, फिर मेरी तरफ।

"दो मिनट?"

"सात ही हुए।"

"मैंने संदेश सात मिनट पहले भेजा था।"

"तो technically मैं समय पर हूँ।"

उसने एक कप मेरी तरफ बढ़ाया।

पहला घूंट लेते ही मुझे समझ आ गया कि इसमें सामान्य इंसानी मात्रा से ज़्यादा चीनी है। बिल्कुल मेरी पसंद की।

"Extra sugar," मैंने कहा।

"मुझे पता है।"

"मॉस्को से याद है?"

"तुम हर तीसरे दिन वही शिकायत करते थे कि यहाँ लोग coffee को punishment क्यों पीते हैं। भूलना मुश्किल था।"

मैंने कप देखा। "इतनी detail याद रखना थोड़ा suspicious है।"

वह हेलमेट पहनते हुए बोली, "तुम्हारी आदतें subtle नहीं हैं।"

और बात वहीं खत्म कर दी।

तीसरे दिन की कोई सूची नहीं

NO CHECKLIST FOR THE LAST JAIPUR DAY

पहले दो दिन लगभग पूरा Jaipur घूमते हुए भी Shristi ने तीसरे दिन के लिए कोई लिखी हुई सूची नहीं भेजी थी।

मैंने बाइक पर बैठते हुए पूछा, "आज plan क्या है?"

"पहले नाश्ता।"

"उसके बाद?"

"देखेंगे।"

"तुम, जो कल हर जगह का समय जानती थीं, आज देखेंगे?"

उसने बाइक start की। "आज तुम timetable मत बनाओ। रात को बस पकड़नी है, उससे पहले शहर को थोड़ा बिना दौड़ाए देखो।"

मुझे याद आया कि आज रात मेरी Jaisalmer की sleeper bus थी। तीन दिन पहले Jaipur केवल एक पड़ाव था। अब निकलने का समय पहली बार schedule की line नहीं, थोड़ा असुविधाजनक तथ्य लग रहा था।

मैंने यह बात नहीं कही।

Shristi ने शायद कुछ नहीं पूछा, लेकिन rear-view mirror में उसकी आँख एक क्षण के लिए मेरी तरफ आई और वापस सड़क पर चली गई।

* * *

सुबह की Jaipur हवा पिछले दो दिनों की दोपहर से नरम थी। दुकानों के shutter उठ रहे थे। दूध के डिब्बे वाली मोटरसाइकिलें, स्कूल की बसें, सड़क धोते दुकानदार, मंदिर से आती घंटियों की आवाज़ और चौराहों पर जल्दी-जल्दी बढ़ता यातायात।

बाइक पर शहर का अनुभव कार से अलग था। हवा सीधे चेहरे पर आती। किसी मिठाई की दुकान से घी की खुशबू तीन सेकंड के लिए मिलती और अगले मोड़ पर पेट्रोल के धुएँ में खो जाती। सड़क के किनारे फूल दिखते, फिर अचानक बस का हॉर्न आपको दर्शन से वापस वर्तमान में ले आता।

एक signal पर Shristi ने पीछे देखे बिना पूछा, "नींद हुई?"

"हाँ।"

"झूठ।"

"इतनी आसानी से?"

"मॉस्को में भी जब कम सोते थे तो दाहिनी आँख थोड़ी छोटी लगती थी।"

मैंने तुरंत mirror में खुद को देखने की कोशिश की।

"अब सड़क देखो," उसने कहा।

"मैं पीछे बैठा हूँ।"

"इसलिए ही कह रही हूँ। तुम कभी-कभी पीछे बैठकर भी traffic में contribution दे देते हो।"

मैं हँस पड़ा।

फिर मुझे देर से ध्यान आया - उसे मेरी आँख तक याद थी।

मैंने उस विचार को सुबह की हवा में छोड़ दिया।

नाश्ता जो उसने पहले ही चुन लिया था

BREAKFAST SHE HAD ALREADY DECIDED

हम पुराने शहर की भीड़ से थोड़ा हटकर एक छोटी दुकान पर रुके। सामने बड़े तवे पर मोटी बाजरे की रोटियाँ सेंकी जा रही थीं। बगल में लोहे की कड़ाही में गाढ़ी सब्ज़ी, और एक स्टील के डिब्बे में सफेद मक्खन की मोटी परत।

मैंने पूछा, "यह breakfast है?"

Shristi ने कहा, "आज tourist breakfast नहीं।"

दुकानदार ने हमारे सामने बाजरे की गर्म रोटी रखी। सतह पर छोटे-छोटे भूरे दाग, किनारे थोड़ा असमान, बीच से मोटी। ऊपर घी डाला तो रोटी ने उसे तुरंत सोख लिया। साथ गट्टे की हल्की मसालेदार सब्ज़ी, दही और लाल लहसुन की चटनी।

पहला टुकड़ा हाथ से तोड़ते ही बाजरे की रोटी गेहूँ की रोटी से अलग लगी - थोड़ी भुरभुरी, ज्यादा मिट्टी जैसी सुगंध, घी मिलने पर भारी लेकिन comforting। गट्टे की सब्ज़ी में बेसन के टुकड़े नरम थे, लेकिन पूरी तरह घुले नहीं। मसाले में धनिया और दही की खटास पीछे से आती।

फिर लहसुन की चटनी।

कल mirchi bada के बाद मुझे सावधान होना चाहिए था।

मैंने फिर वही गलती की।

एक अच्छी चम्मच सीधे रोटी पर।

Shristi ने मेरी प्लेट देखी। "इतनी मत -"

मैं खा चुका था।

पहले लहसुन। फिर सूखी लाल मिर्च। फिर वह गर्मी जो जीभ से शुरू होकर नाक के पीछे तक पहुँची।

मैंने तुरंत दही लिया।

Shristi ने बिना दया के पूछा, "अच्छी है?"

"बहुत।"

"और डाल दूँ?"

"तुम और Lucknow वाला दुकानदार एक ही प्रशिक्षण संस्थान से हो क्या?"

वह इतनी जोर से हँसी कि सामने बैठा बुज़ुर्ग भी मुस्कराने लगा।

फिर उसने मेरी तरफ पानी बढ़ाया। हँसी पहले, पानी बाद में। Jaipur friendship protocol.

खाने के बीच उसने पूछा, "Jaisalmer की bus कितने बजे है?"

मैंने समय बताया।

"Bag hotel में ही है?"

"हाँ।"

"Power bank?"

"शायद आधा।"

"शायद मतलब?"

"देखा नहीं।"

उसने अपने bag से छोटा power bank निकालकर मेज़ पर रख दिया।

"यह रखो।"

"तुम्हारा?"

"मेरे पास दूसरा है।"

"तुमने extra लेकर रखा था?"

"तुम्हें जानते हुए? हाँ।"

मैंने उसे देखा।

वह दही में रोटी तोड़ रही थी, जैसे इस जवाब में कुछ भी unusual न हो।

"इतनी planning?"

"तीन दिन में तुम्हारा phone दो बार दस प्रतिशत से नीचे गया है। Pattern समझना मुश्किल नहीं था।"

मुझे लगा वह बात केवल battery की कर रही है। शायद कर भी रही थी।

मोती डूंगरी की तरफ

A QUIETER MORNING NEAR MOTI DUNGRI

नाश्ते के बाद उसने बाइक Moti Dungri की तरफ मोड़ दी। शहर के इस हिस्से में सुबह का traffic अलग था - श्रद्धालु, फूल-माला की दुकानें, नारियल, छोटे प्रसाद packet, और रोज़मर्रा के दफ्तर जाने वाले लोग उसी सड़क का हिस्सा।

हमने जूते उतारे। Shoe stand पर मैंने token जेब में रखा और दो कदम बाद फिर check किया।

Shristi ने पूछा, "क्या खोया?"

"कुछ नहीं।"

"फिर जेब क्यों?"

"Token।"

"तुम्हें चीज़ खोने से ज्यादा चीज़ खोने की कल्पना पसंद है।"

"Experience से सीखता हूँ।"

"तुम experience से सीखते होते तो कल mirchi दोबारा नहीं खाते।"

यह तर्क मजबूत था।

भीतर हमने सामान्य श्रद्धालुओं की तरह दर्शन किया। मैं धार्मिक स्थानों पर कैमरा लेकर घूमने की आदत से बचता था; कुछ जगहों पर स्मृति photo से बेहतर काम करती है।

बाहर निकलते समय shoe stand के सामने समान रंग की कई चप्पलें पड़ी थीं। मैंने एक जोड़ी की तरफ हाथ बढ़ाया।

Shristi ने तुरंत कहा, "वो तुम्हारी नहीं हैं।"

"कैसे पता?"

"तुम्हारी वाली का left strap थोड़ा घिसा है।"

मैंने अपनी असली चप्पल देखी। सच।

"तुम मेरे shoes भी observe करती हो?"

उसने मेरी तरफ बिना भाव के देखा। "तीन दिन से वही पहनकर घूम रहे हो। Sherlock बनने की जरूरत नहीं।"

मैंने हँसकर बात छोड़ दी।

उसने भी।

लेकिन मेरी चप्पल का घिसा strap उसे मुझसे पहले दिख गया था।

* * *

पास की सड़क पर हमने कुछ देर पैदल चलना चुना। Jaipur को केवल pink facades और forts में बाँधना आसान है, लेकिन शहर का बड़ा हिस्सा ऐसे ही ordinary stretches में मिलता है - clinic, coaching centre, juice stall, pharmacy, stationery shop, scooter repair, छोटे पेड़, धूप में खड़ी bikes और लोगों के अपने काम।

Shristi medicine की पढ़ाई के बारे में बोलने लगी। Moscow में उसके lecture, anatomy की शुरुआती थकान, hospital postings को लेकर anxiety, language की practical मुश्किलें, और घरवालों का वही सवाल - "कब तक पूरा होगा?"

मैंने पूछा, "तुम्हें Jaipur miss होता है?"

"कभी बहुत। कभी नहीं।"

"अच्छा diplomatic answer।"

"नहीं। Moscow में रहो तो Jaipur याद आता है। Jaipur आओ तो Moscow की independence याद आती है।"

"और बीच में?"

उसने मेरी तरफ देखा। "बीच में कुछ लोग याद आते हैं।"

मैंने सोचा वह Moscow के Indian friends की बात कर रही है।

"हाँ, group भी काफी scattered हो गया है," मैंने कहा।

उसके चेहरे की छोटी-सी नरमी उसी क्षण वापस neutral हो गई।

"हाँ," उसने कहा, "group।"

हम कुछ कदम चुप चले।

मुझे लगा शायद उसने किसी खास दोस्त का नाम लेना चाहा था और मैंने topic generic कर दिया।

मैंने पूछा, "किसकी बात कर रही थीं?"

"अब किसी की नहीं।"

"अच्छा।"

उसने सिर हिलाया। "Exactly."

उस समय मुझे उस शब्द का मतलब फिर समझ नहीं आया।

दोपहर का राजस्थान

KER SANGRI, GATTE AND A SLOWER TABLE

दोपहर के लिए उसने एक साधारण राजस्थानी भोजनालय चुना। Tourist-heavy सजावट नहीं। दीवार पर menu, स्टील की मेज़ें, घूमते पंखे और दोपहर के office crowd का शोर।

हमने थाली की जगह अलग-अलग चीजें मंगाईं ताकि taste समझ सकें।

केर-सांगरी। गट्टे की सब्ज़ी। बाजरे की रोटी। पंचमेल दाल। लहसुन की चटनी - जिसे देखकर मैंने इस बार सम्मान से दूरी रखी। छाछ। थोड़ा गुड़।

केर-सांगरी पहली नज़र में glamorous dish नहीं थी। गहरे भूरे-हरे रंग की पतली सांगरी, छोटे केर, मसाले और तेल की चमक। लेकिन पहला कौर लेते ही उसका पूरा character खुला - हल्की खटास, नमकीनपन, सूखी मरुस्थलीय सामग्री का chewy texture, और मसाले का ऐसा स्वाद जो gravy पर निर्भर नहीं था।

मैंने कहा, "यह desert food जैसा feel करता है।"

Shristi ने कहा, "क्योंकि है। पानी कम, preservation important. Rajasthan का खाना geography से अलग नहीं समझोगे।"

गट्टे की सब्ज़ी सुबह से अलग थी - gravy गाढ़ी, मसाले ज्यादा rounded, बेसन के टुकड़े अंदर तक flavor ले चुके थे। पंचमेल दाल में अलग-अलग दालों का texture पूरी तरह एक नहीं हुआ था; कहीं नरम, कहीं हल्का bite। ऊपर घी की खुशबू। बाजरे की रोटी के साथ वह खाना धीरे खाने वाला था। जल्दी में खाओ तो भारी, समय लेकर खाओ तो पूरा संतुलन समझ आता।

छाछ मिट्टी के कुल्हड़ में नहीं, स्टील के गिलास में आई। ऊपर भुना जीरा। ठंडी, नमकीन, मसाले के बाद जीभ को साफ करती हुई।

मैंने food photo लेने के लिए प्लेट को थोड़ा खिसकाया। फिर दूसरी तरफ। फिर रोटी के ऊपर light ठीक करने की कोशिश की।

Shristi ने खाना शुरू कर दिया।

"रुको, एक photo।"

"तुम लो। मेरा खाना गर्म है।"

"बस दस second।"

"तुम्हारे दस second में मेरी पूरी medical degree निकल जाएगी।"

मैंने आखिर photo ली।

जब खाया तो मेरी रोटी सच में थोड़ी ठंडी हो चुकी थी।

Shristi ने पूछा, "कैसी?"

"अच्छी।"

"Cold food writer।"

मैं रुक गया।

"यह line Saurabh ने train में कही थी। मैंने तुम्हें कब बताया?"

"कल रात।"

"मुझे याद नहीं।"

"मुझे है।"

वह छाछ पीती रही।

तीन दिनों में यह वाक्य कई रूपों में लौट रहा था।

मुझे है।

खाने के बाद bill आया। मैंने पैसे निकाले। Shristi ने कहा, "आज मैं।"

"क्यों?"

"क्योंकि तीन दिन में तुमने हर बार कोशिश की है।"

"तो आज भी करूँगा।"

"तुम्हारी बस की ticket, hotel, Jaisalmer, सब बाकी है।"

"और तुम student हो।"

वह एक क्षण चुप हुई। "मैं तुम्हारे साथ खाना खिला सकती हूँ।"

मैंने उसके tone में कुछ ऐसा सुना जो पैसे से संबंधित नहीं था।

मैंने wallet वापस रख दिया। "ठीक। Next time मेरी।"

उसने bill उठाते हुए पूछा, "Next time कहाँ?"

"Moscow?"

उसने सिर थोड़ा झुकाया। "हाँ। अगर वहाँ मिलने का time निकाल लिया तो।"

"अरे, मिलेंगे।"

"तुम हर बार यही कहते हो।"

वह cashier की तरफ चली गई।

मुझे अचानक दो साल के कई unread या देर से reply किए messages याद आए। कुछ weekends जब उसने पूछा था, "coffee?" और मैंने office का बहाना किया था। कुछ बार मैं सच में busy था। कुछ बार बस lazy।

मैंने पहली बार उन छोटी बातों को chronology में रखा।

फिर वह वापस आई और मैंने कुछ नहीं कहा।

राम निवास बाग की दोपहर

RAM NIWAS GARDEN BEFORE THE MUSEUM

दोपहर उतरने लगी तो हम Ram Niwas Garden की तरफ पहुँचे। Albert Hall का मुख्य façade दूर से ही पेड़ों और खुले क्षेत्र के पार दिखाई देने लगा।

पिछले दो दिनों में Jaipur ने मुझे किले की ऊँचाई, bazaar की संकरी गति और pink city की लगातार वास्तुकला दिखाई थी। यहाँ scale फिर बदल गया। खुला बाग, पेड़ों के बीच रास्ते, कबूतरों की आवाज़, परिवार, बच्चे, कुछ पर्यटक, कुछ लोग बस छाँव में बैठे हुए।

Albert Hall सामने से किसी एक शैली में आसानी से बंद नहीं होता। मेहराबें, छतरियाँ, projecting balconies, पत्थर की सजावट और कई स्तरों वाली façade - आँख एक जगह टिके तो दूसरी detail बुलाती।

मैंने camera निकाला।

Shristi ने कहा, "आज खाना ठंडा नहीं होगा, जितनी photo लेनी है ले लो।"

मैंने wide shot लिया। फिर side से। फिर थोड़ी दूरी बदली।

एक परिवार ने मुझे उनका group photo लेने को कहा। मैंने कैमरा उनसे लिया और चार तस्वीरें लीं।

फिर एक couple ने भी कहा।

फिर दो students।

Shristi थोड़ी दूर खड़ी देखती रही।

जब तीसरा phone मैंने वापस किया तो वह बोली, "तुम्हारा नया काम मिल गया।"

"Public service।"

"हाँ, Jaipur tourism department तुम्हें honor करेगा।"

"Jealous? तुम्हारी भी photo ले दूँ।"

उसने मेरी तरफ देखा। एक सेकंड। दो।

"मेरी photo के लिए मुझे line में लगना पड़ेगा?"

मैं हँसा। "VIP हो।"

"अच्छा। याद रखना।"

उसने यह मज़ाक में कहा, पर आवाज़ का आखिरी हिस्सा थोड़ा धीमा था।

* * *

मैंने उसकी कुछ तस्वीरें लीं। पहले वह camera-conscious थी, फिर पाँचवीं photo तक भूल गई कि lens उसकी तरफ है। वह façade की detail देख रही थी, hair पीछे कर रही थी, किसी बच्चे को रास्ता दे रही थी, फिर मुझसे कुछ कहकर हँसी।

वही तस्वीर मुझे सबसे अच्छी लगी।

"दिखाओ," उसने कहा।

मैंने screen उसकी तरफ की।

वह कुछ क्षण चुप रही। "Send करना।"

"हाँ।"

"आज।"

"इतना भरोसा नहीं?"

"Experience।"

मैंने वहीं भेज दी।

उसका phone vibrate हुआ। उसने तुरंत photo खोली, कुछ देर देखी और screen बंद कर दी।

मैंने पूछा, "ठीक है?"

"बहुत।"

फिर उसने धीरे से कहा, "तुम कभी-कभी चीज़ें अच्छी देख लेते हो।"

"कभी-कभी?"

वह मुस्कराई। "कभी-कभी।"

उसके शब्दों में camera से बड़ी बात थी, लेकिन मैं तब तक frame के exposure पर सोच रहा था।

संग्रहालय के भीतर

ALBERT HALL - OBJECTS, ROOMS AND WRONG GROUPS

भीतर जाते ही बाहर की धूप और museum की नियंत्रित छाया के बीच आँखों को कुछ समय लगा। गलियारों में अलग-अलग प्रकार की वस्तुएँ, शिल्प, धातु, चित्र, पुराने decorative pieces, कपड़ा, हथियारों और कला से जुड़े displays - हर room Jaipur से बड़ी दुनिया की ओर खुलता था।

मैं museum को तेजी से "complete" करने के mood में नहीं था। तीसरे दिन Shristi का असर था या अपनी थकान, पता नहीं। मैं एक showcase के सामने जितनी देर चाहूँ उतनी देर खड़ा रहा।

किसी चीज़ का नाम पढ़ता। उसकी material देखता। फिर आसपास लोगों की reaction।

Shristi अक्सर दो कदम आगे जाकर रुक जाती। मुझे hurry नहीं करती।

कभी मैं उसके पास पहुँचता तो वह पूछती, "क्या देख रहे थे?"

मैं बताता।

कभी वह किसी object पर रुकती और मैं wait करता।

एक अजीब सहज rhythm बन गई थी - साथ, लेकिन लगातार conversation की जरूरत नहीं।

यही शायद पुराने परिचय और नई नज़दीकी के बीच का सबसे सही हिस्सा था। Silence awkward नहीं था।

* * *

एक room से निकलते समय मैं एक guide की आवाज़ सुनकर उसके पीछे चल पड़ा। वह architecture के बारे में कुछ बता रहा था। मुझे interesting लगा।

दो मिनट बाद मैंने देखा कि Shristi मेरे साथ नहीं है।

मैंने पीछे देखा। नहीं।

Phone निकाला। Message:

कहाँ हो?

मैंने जवाब दिया:

यहीं।

उसका reply:

यह museum है। "यहीं" location नहीं होती।

मैंने आसपास देखा। जिस group के साथ मैं चल रहा था, उनके सभी लोगों के गले में एक ही रंग के visitor tags थे। मेरे पास नहीं।

मैं गलत tour group के साथ पिछले पाँच मिनट से घूम रहा था।

मैं वापस corridor में आया। Shristi सामने खड़ी थी, हाथ बाँधे हुए।

वह कुछ नहीं बोली।

मैंने कहा, "Guide अच्छा था।"

"तुम travel नहीं करते।"

मैंने sentence पूरा किया, "Situations collect करता हूँ।"

"अब तुम्हें line याद हो गई।"

"तीन दिन में repetition हुआ है।"

वह मुस्कराई। "मुझे लगा था कम से कम museum में तुम्हें खोना मुश्किल होगा।"

"मैं लोगों के साथ चला गया।"

"यही तो चिंता है।"

वह sentence हँसते हुए बोली, लेकिन अगले कुछ कदम उसने मेरी sleeve हल्के से पकड़े रखी - शायद भीड़ के कारण। शायद इसलिए कि मैं फिर wrong group में न चला जाऊँ।

मैंने कारण दूसरा ही माना।

एक bench पर थोड़ी देर बैठे। पैरों को आराम चाहिए था। Shristi ने bag से पानी निकाला।

"तुम्हें headache तो नहीं?"

"नहीं।"

"पक्का?"

"क्यों?"

"सुबह कम सोए, फिर धूप, camera, कम पानी। Moscow में ऐसे ही होता था।"

मैंने पानी लिया। "तुम मेरी medical file रखती हो क्या?"

"नहीं।"

वह मुस्कराई। "बस कुछ cases याद रह जाते हैं।"

उसने तुरंत दूसरी तरफ देखना शुरू कर दिया।

मैंने पानी पिया।

सफेद packet

THE SALT THAT ALMOST BECAME SUGAR

Museum के भीतर घूमते-घूमते हम café जैसी छोटी जगह पर रुके। मैंने चाय ली। Counter पर sugar और salt के छोटे सफेद sachets लगभग एक जैसे रखे थे।

मैं बात करते-करते एक packet उठाकर चाय के ऊपर फाड़ने ही वाला था कि Shristi ने मेरी कलाई पकड़ ली।

"रुको।"

"क्या?"

उसने packet मेरी उँगलियों से लिया। सामने छोटा नीला शब्द लिखा था - SALT.

मैंने दूसरी तरफ sugar के packet देखे।

"मैं check कर रहा था," मैंने कहा।

"हाँ। शरीर sodium tolerate करता है या नहीं।"

"Medical experiment।"

"तुम Moscow में survive कैसे कर गए, यह research topic होना चाहिए।"

वह हँस रही थी, लेकिन उसकी उँगलियाँ अभी भी मेरी कलाई के पास थीं। उसे एहसास हुआ तो उसने हाथ पीछे कर लिया।

फिर खुद sugar के दो packet मेरी चाय में डाल दिए।

मैंने तीसरे की तरफ हाथ बढ़ाया।

उसने कहा, "बस।"

"मेरी chai है।"

"तुम्हारी pancreas भी तुम्हारी है। थोड़ा respect।"

"Doctor बनते ही control शुरू?"

उसने packet मेरी तरफ सरका दिया। "करो। मुझे क्या।"

मैंने उसकी expression देखी और तीसरा packet वापस रख दिया।

"देखा?" उसने कहा। "कभी-कभी signal समझ लेते हो।"

"Sugar का।"

उसने आँखें बंद कीं। "हाँ. Sugar का।"

उस moment पर वह genuinely थोड़ी निराश लगी।

मैंने पूछा, "क्या हुआ?"

"कुछ नहीं।"

इस यात्रा में "कुछ नहीं" कई बार किसी पूरी बातचीत से ज्यादा भरा हुआ वाक्य निकला था।

एक पुराना चिन्ह

A SYMBOL I HAD SEEN ONLY ON PAPER

Museum से बाहर निकलते समय शाम अभी पूरी नहीं हुई थी। धूप का रंग नरम हो चुका था और façade की छाया गहरी होने लगी थी। हम Ram Niwas Garden की तरफ धीरे चले।

मैंने camera bag में रख दिया। अब बस देखना था।

फिर मेरी नज़र museum के सामने की दिशा में, एक नीची पुरानी stone boundary के decorative हिस्से पर अटक गई।

पहले वह सामान्य geometric motif लगा। Jaipur में इतने patterns देखने के बाद आँख हर चीज़ में symmetry ढूँढने लगती है।

लेकिन मैं दो कदम पीछे गया।

फिर करीब।

एक छोटा वृत्त। भीतर eye जैसा लंबा आकार। उसके पीछे तीन पतली rays. नीचे टूटी हुई vertical line।

मैंने उसे पहले देखा था।

पत्थर पर नहीं।

कागज़ पर।

Varanasi के एक पुराने lodge archive में नहीं - उससे जुड़ी बाद की छोटी ऐतिहासिक file में, जहाँ औपनिवेशिक समय की कुछ private correspondences की copies रखी थीं। वहाँ दो letters में केवल initials थे:

L.O.

और एक margin sketch - लगभग यही eye, rays और टूटी line।

उस fictional archive की कहानी मेरे दिमाग में एकदम वापस आई: स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कुछ Masonic lodges द्वारा गुप्त सहायता नेटवर्क चलाने के दावे, और उनके सामने एक अलग closed order जिसका उल्लेख hostile, coercive और power-seeking group की तरह किया गया था।

नाम बाद में एक faded line पर मिला था:

ORDO LUX OCCULTA

द ऑर्डर ऑफ द हिडन लाइट

मैंने उस समय file को historical curiosity की तरह लिया था। कोई investigation नहीं। कोई certainty नहीं। खासकर इसलिए कि old documents में rumor, belief और fact अक्सर एक ही folder में पड़े मिलते हैं।

और अब Jaipur में वही जैसा चिन्ह सामने था।

Shristi दो कदम आगे जा चुकी थी। उसने मुड़कर देखा।

"क्या हुआ?"

"कुछ देखा।"

वह वापस आई। "क्या?"

मैंने stone detail की तरफ इशारा किया।

"यह?"

"हाँ।"

"क्या है?"

मैं कुछ क्षण चुप रहा।

पिछले दिनों में मैंने numbers को code समझा था। Bridge को Brother पढ़ा था। Engineering mark को Masonic sign. अपनी pattern-seeking की कीमत मैं already दे चुका था।

मैंने phone निकाला। पुरानी notes में वह sketch ढूँढा। पूरा नहीं मिला। केवल अपने notebook की एक photo - rough lines.

पत्थर और sketch similar थे। Identical? शायद नहीं।

"एक पुराने document में ऐसा निशान देखा था," मैंने कहा।

"Freemason वाला?"

"नहीं. एक दूसरे fictional order का reference था। L.O."

"और यहाँ क्यों है?"

"पता नहीं। शायद है ही नहीं। शायद मैं फिर वही गलती कर रहा हूँ।"

वह कुछ देर stone को देखती रही।

"Photo लोगे?"

"हाँ। बस record के लिए।"

मैंने एक photo ली। Zoom नहीं। कोई dramatic angle नहीं।

फिर phone pocket में रख दिया।

Shristi ने पूछा, "अंदर पता करेंगे?"

मैंने museum की तरफ देखा।

"नहीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि हर familiar shape clue नहीं होती। और आज मेरे पास Jaipur का आखिरी दिन है।"

वह मुझे देखती रही।

"Good," उसने कहा। "कम से कम एक चीज़ तो सीख रहे हो।"

पहचानना और पीछा करना दो अलग बातें हैं।

हम आगे चल दिए। पीछे वह चिन्ह वहीं रह गया।

न कोई आदमी बाहर आया। न कोई गाड़ी पीछे लगी। न कोई secret door खुला।

शहर ने रहस्य को exactly उतनी जगह दी जितनी उसे चाहिए थी - एक छोटी बेचैनी, बस।

रोशनी में अल्बर्ट हॉल

WHEN THE BUILDING CHANGES AFTER SUNSET

हम थोड़ी देर garden में रहे। जैसे-जैसे दिन का उजाला कम हुआ, Albert Hall का character बदलता गया। दिन में पत्थर की detail दिखती थी; शाम में silhouette और रोशनी। छतरियाँ dark outline बनने लगीं। arches के भीतर contrast बढ़ा। आसपास परिवारों की संख्या भी बढ़ गई। बच्चे कबूतरों के पीछे भाग रहे थे। लोग सड़क किनारे photos ले रहे थे।

मैंने फिर camera नहीं निकाला।

Shristi ने पूछा, "अब photo नहीं?"

"Camera खा चुका। अब आँख की बारी।"

"Progress।"

हम एक bench पर बैठे। हमारे सामने museum था। पीछे शहर का traffic लगातार चल रहा था।

कुछ मिनट कोई बात नहीं हुई।

तीन दिनों में हमने शायद पहली बार इतनी देर बिना किसी अगले stop के साथ बैठना चुना था।

वह अपने phone पर photo scroll कर रही थी। Amer. Hawa Mahal. Bazaar. मेरी bargaining वाली notebook. उसकी bike. Food. कुछ random street shots.

फिर उसने मेरी एक photo खोलकर मुझे दिखाई।

मैं किसी दुकान के बाहर chai पकड़े खड़ा था, camera दूसरी तरफ। मुझे पता भी नहीं था उसने photo ली थी।

"ये कब?"

"कल।"

"बिना बताए?"

"Natural photo।"

"Delete करने का अधिकार?"

"नहीं।"

"Democracy?"

"Jaipur jurisdiction में नहीं।"

मैं हँसा।

उसने phone वापस नहीं रखा। Photo को कुछ सेकंड और देखती रही। फिर screen lock की।

मैंने पूछा, "इतनी अच्छी है?"

"ठीक है।"

"बस ठीक?"

"बहुत सवाल करते हो।"

उसने नजर museum की तरफ कर ली।

* * *

कुछ देर बाद उसने पूछा, "Moscow वापस कब?"

मैंने बाकी route बताया। Jaisalmer, फिर Jaipur लौटना, Gujarat, Surat, Jalgaon, और उसके बाद आगे का अपना plan।

"मतलब फिर weeks निकल जाएँगे," उसने कहा।

"शायद।"

"और फिर office।"

"हाँ।"

"और फिर तुम message का reply तीन दिन बाद करोगे।"

मैंने हँसकर कहा, "इतना भी बुरा नहीं हूँ।"

वह मेरी तरफ मुड़ी।

"हो।"

हँसी नहीं।

मैं थोड़ा सीधा बैठा। "Seriously?"

"कभी-कभी।"

"तो बोल दिया करो।"

उसने बहुत हल्की मुस्कान दी। "मैं बोलती हूँ।"

"कब?"

वह कुछ seconds मुझे देखती रही।

"Exactly," उसने कहा।

फिर उठ खड़ी हुई। "चलो. तुम्हारी बस miss करवाई तो blame मुझे मिलेगा।"

मैं भी उठा।

उस conversation का कोई साफ conclusion नहीं था।

लेकिन पहली बार मुझे लगा कि शायद मैं जिन messages को casual समझता रहा, वे उसके लिए casual नहीं रहे होंगे।

यह विचार आया, फिर मैंने उसे कोई नाम नहीं दिया।

मीठा, बहुत मीठा

RABRI, MILK AND THE LAST JAIPUR EVENING

वापसी से पहले हमने एक छोटी मिठाई की दुकान पर रुकने का फैसला किया। Shristi ने कहा, "तीन दिन Jaipur घूमकर बिना properly rabri खाए जा रहे हो।"

मैंने विरोध नहीं किया।

चौड़ी कड़ाही में दूध लंबे समय से पकता हुआ गाढ़ा हो चुका था। किनारों पर जमी मलाई बार-बार खुरचकर भीतर मिलाई जा रही थी। Rabri छोटे कुल्हड़ में आई - सफेद नहीं, हल्की मलाईदार beige, ऊपर पतली मलाई की तह, कुछ केसर की लकीरें और कटे पिस्ते।

पहला चम्मच ठंडा, गाढ़ा और almost chewy था। दूध का स्वाद condensed होने के कारण मीठा केवल चीनी से नहीं, खुद पकने से भी गहरा लगा। बीच-बीच में मलाई की परत जीभ पर अलग texture देती।

मैंने कहा, "यह dangerous है।"

"क्यों?"

"एक और खा सकता हूँ।"

"तुम्हें extra sugar वाली chai के बाद भी डर नहीं लगता।"

"Life short है।"

"Pancreas shorter मत करना।"

मैं हँसा।

दुकानदार ने गर्म दूध भी offer किया। ऊपर मलाई और हल्का इलायची। मैंने आधा glass लिया। गर्म दूध का dense sweetness और ठंडी rabri का contrast अजीब तरह से satisfying था।

Shristi ने अपनी rabri आधी छोड़ दी।

"नहीं पसंद?"

"पसंद है।"

"फिर?"

"बस हो गया।"

मैंने उसका कुल्हड़ अपनी तरफ खींच लिया।

वह मुस्कराई। "मुझे पता था।"

"इसलिए छोड़ी?"

उसने जवाब नहीं दिया।

बस spoon मेरी तरफ सरका दिया।

किसी relationship को समझने के लिए कभी बड़े gestures की जरूरत नहीं होती। कभी-कभी आधी rabri भी काफी information रखती है।

मुझे तब यह line नहीं सूझी। बाद में सूझी।

होटल वापस

THE BAG, THE BUS AND TIME RUNNING OUT

होटल पहुँचते समय रात पूरी हो चुकी थी। Shristi ने बाइक entrance पर रोकी।

"कितना time?"

मैंने phone देखा। "काफी है।"

"तुम्हारे हिसाब से?"

"Actual भी।"

"Bag ले आओ। मैं छोड़ दूँगी bus point तक।"

"अरे, मैं auto ले लूँगा। तुम तीन दिन से -"

उसने sentence बीच में काट दिया। "मैं छोड़ दूँगी।"

"तुम्हें घर late होगा।"

"मुझे पता है।"

"Sure?"

उसने helmet उतारा। "तुम हर बार मुझे जाने का option क्यों देते रहते हो?"

मैं रुक गया।

"मतलब?"

"कुछ नहीं। Bag ले आओ।"

उसका tone कठोर नहीं था। बस थका हुआ। जैसे वही बात तीसरे दिन नहीं, बहुत पहले से समझाने की कोशिश चल रही हो।

मैं reception में चला गया।

* * *

कमरे में बैग उठाते समय मैंने mirror में खुद को देखा। तीन दिनों की धूल, धूप, कम नींद और लगातार घूमने की थकान साफ थी।

मेज़ पर blue diary पड़ी थी। मैंने उसे bag में रखा।

Albert Hall के सामने वाला L.O. symbol याद आया।

फिर Shristi का "मैं छोड़ दूँगी" उससे ज्यादा जोर से याद आया।

अजीब था। कुछ दिन पहले एक geometric mark मेरा पूरा ध्यान पकड़ लेता। आज वह दूसरे नंबर पर था।

मैं नीचे आया।

Shristi ने backpack देखकर कहा, "इतना ही?"

"पूरी दुनिया।"

"और चाबी?"

मैंने जेब टटोली।

नहीं।

उसने आँखें बंद कर लीं।

मैंने कहा, "Reception पर दे दी।"

वह दो seconds चुप रही, फिर हँसी। "एक दिन तुम मुझे heart attack दोगे।"

"Medical practice मिल जाएगी।"

"चुप बैठो।"

रात की बाइक और अधूरी बातें

THE RIDE TO THE SLEEPER BUS

Backpack के साथ बाइक पर बैठना romantic cinema नहीं होता। Practical problem होता है। Bag पीछे खिंचता है, straps हवा में हिलते हैं और हर speed-breaker पर spine अपने निर्णयों की समीक्षा करती है।

Shristi ने कहा, "Bag थोड़ा ऊपर रखो।"

"फिर balance?"

"मुझे पकड़ लो।"

वह sentence बहुत normal तरीके से बोली।

मैंने उसका shoulder हल्के से पकड़ा ताकि bag stable रहे।

कुछ seconds बाद उसने कुछ नहीं कहा, लेकिन speed थोड़ी धीमी कर दी।

शहर रात में हमारे पीछे चलता रहा - रोशन दुकानें, traffic signals, कहीं शादी की lights, कहीं बंद shutter, कहीं देर तक खुला tea stall।

तीन दिन का Jaipur छोटे-छोटे दृश्य बनकर याद आने लगा। Café. Amer की सुबह. Jal Mahal. गलत shortcut. Hawa Mahal. Jantar Mantar. Bazaar. ₹399 वाली notebook. Extra sugar chai. Rabri. Albert Hall.

और उन सब के बीच Shristi लगभग हर frame में थी।

एक signal पर bike रुकी। उसने पूछा, "Moscow पहुँचकर बताओगे?"

"हाँ।"

"मैं पूछ नहीं रही कि पहुँच गए या नहीं।"

"फिर?"

उसने mirror में मेरी तरफ देखा।

"कुछ नहीं।"

Signal green हुआ।

Bike चल पड़ी।

मुझे लगा मैं फिर कोई प्रश्न एक सेकंड देर से समझा हूँ।

* * *

Bus boarding point पर पहले से लोग जमा थे। कुछ बड़े suitcase के साथ, कुछ blankets, कुछ families, कुछ solo travellers. Sleeper buses की रात का अपना माहौल होता है - आधे लोग अभी यात्रा शुरू कर रहे होते हैं, आधे पहले से थके हुए लगते हैं।

मैंने ticket phone पर check किया। Shristi ने बिना पूछे bus number और operator name देख लिया।

"Seat?"

मैंने बताया।

"Upper?"

"हाँ।"

वह हँसी। "Fan से सिर मत मारना।"

"Bus में fan वहाँ नहीं होगा।"

"तुम्हें कोई alternative मिल जाएगा।"

हम सड़क के किनारे कुछ दूरी पर खड़े रहे। Bus अभी लगी नहीं थी। हमारे पास पहली बार पूरा दिन खत्म होने के बाद भी कुछ मिनट थे जिनका कोई activity नहीं था।

मैंने कहा, "Thanks. Seriously. तीन दिन... बहुत अच्छे थे।"

"मुझे पता है।"

"Confidence।"

"तुम्हारा चेहरा बता देता है।"

"और तुम्हारा?"

वह मेरी तरफ देखती रही।

"मेरा क्या?"

"तुम्हें भी अच्छा लगा?"

उसने इतना धीरे साँस छोड़ी कि मुझे लगा शायद मैं फिर obvious सवाल पूछ रहा हूँ।

"हाँ," उसने कहा। "बहुत।"

फिर तुरंत जोड़ दिया, "Jaipur अच्छा है।"

मैंने हँसकर कहा, "हाँ, city की बात कर रहा था।"

वह मुस्कराई। इस बार मुस्कान थोड़ी अजीब थी - जैसे राहत भी, निराशा भी।

Bus दूर से आती दिखाई दी।

Shristi ने कहा, "फिर से वही मत करना।"

"क्या?"

"Disappear।"

"मैं कहाँ disappear होता हूँ?"

"Moscow में कभी-कभी weeks तक।"

"Office होता है।"

"मुझे पता है।"

"तो?"

वह कुछ बोलने लगी। रुकी।

"बस... इस बार message तुम करना।"

मैंने कहा, "करूँगा।"

"Promise मत करना। बस करना।"

"ठीक।"

उसने सिर हिलाया।

Bus सामने आकर रुकी। लोग bags उठाने लगे। Driver और helper ने compartments खोले।

मैंने backpack ठीक किया।

"चलता हूँ," मैंने कहा।

"हाँ।"

मैंने हाथ बढ़ाया।

उसने मेरी तरफ देखा, फिर हाथ मिलाया।

Handshake एक second ज्यादा चला या मुझे लगा - कहना मुश्किल है।

फिर उसने हाथ छोड़ दिया।

"Take care," उसने कहा।

"तुम भी।"

मैं bus की तरफ दो कदम गया।

पीछे से आवाज़ आई।

"Extra sugar traveller।"

मैं मुड़ा।

वह अपने bag से वही छोटा power bank निकालकर मेरी तरफ दिखा रही थी।

"तुम ले जाना भूल गए।"

मैं वापस आया।

"देखा? इसलिए चाहिए था।"

मैंने power bank लिया। "तुम नहीं होती तो क्या करता?"

उसने जवाब देने में हल्की देर की।

"यही तो सोचती हूँ कभी-कभी।"

फिर तुरंत बोली, "अब जाओ। Bus निकल जाएगी।"

मैं हँसते हुए वापस चला गया।

उसका पहला वाक्य मेरे दिमाग में थोड़ा देर से पहुँचा।

ऊपर वाली sleeper

JAIPUR FALLS BEHIND

मेरी sleeper ऊपर थी। मैंने bag व्यवस्थित किया, shoes नीचे रखे, phone charge पर लगाया - Shristi के power bank से - और पर्दा थोड़ा खुला छोड़ा।

बाहर वह अभी भी खड़ी थी।

मैंने phone निकाला। Message भेजा:

Bus में बैठ गया।

Reply तुरंत आया:

मुझे दिख रहा है।

मैंने बाहर देखा। वह नीचे सड़क पर मेरी bus की खिड़कियों की तरफ देख रही थी, जबकि मेरी sleeper का glass dark था और शायद उसे मैं साफ दिखाई भी नहीं दे रहा था।

मैंने लिखा:

अब घर जाओ। Late हो रहा है।

तीन dots आए।

गायब हुए।

फिर message:

बस निकलने दो।

मैंने phone हाथ में ही रखा।

Engine की आवाज़ बदली। Bus धीरे-धीरे आगे बढ़ी।

मैंने पर्दे के gap से बाहर देखा। Shristi वहीं खड़ी थी। Helmet हाथ में। दूसरी बाँह bag के strap पर।

Bus ने मोड़ लिया। वह frame से बाहर चली गई।

Phone vibrate हुआ।

Jaisalmer पहुँचकर message करना। खुद से।

मैंने जवाब लिखा:

हाँ doctor.

फिर सोचा, delete किया।

लिखा:

करूँगा, Shristi.

Send.

* * *

Jaipur की lights धीरे-धीरे पीछे छूटने लगीं।

मैंने blue diary bag से नहीं निकाली। L.O. symbol की photo भी नहीं खोली।

उन दोनों को सुबह तक इंतज़ार कराया जा सकता था।

मेरे दिमाग में उस समय एक अलग तरह का प्रश्न था - कोई code नहीं, कोई secret society नहीं, कोई railway notation नहीं।

बस तीन दिनों की छोटी बातें।

Extra sugar chai.

"तुम्हारी दाहिनी आँख छोटी लगती है।"

"बीच में कुछ लोग याद आते हैं।"

"मैं बोलती हूँ।"

"इस बार message तुम करना।"

"तुम नहीं होती तो क्या करता?"

"यही तो सोचती हूँ कभी-कभी।"

मैंने ceiling की तरफ देखा।

हो सकता है मैं meanings फिर जरूरत से ज्यादा जोड़ रहा था। यह possibility अब मैं ignore नहीं कर सकता था।

और हो सकता है, पहली बार, मैं किसी obvious बात को जरूरत से कम पढ़ रहा था।

उसका answer Jaipur में नहीं मिला।

शायद मिलना जरूरी भी नहीं था।

कुछ रिश्ते लंबे समय तक नाम से पहले वाली अवस्था में रहते हैं। बाहर से दोस्ती। भीतर कुछ ज्यादा। और दोनों लोग अलग-अलग कारणों से उस एक कदम को नहीं उठाते जो definition बदल दे।

मैंने यह विचार आधा ही सोचा और खुद रोक दिया।

यह कहानी Shristi की तरफ से मैं नहीं लिख सकता था।

मैं केवल वही लिख सकता था जो मैंने देखा।

और मैंने यह देखा था:

Bus निकलने तक वह गई नहीं थी।

रात की सड़क अब Jaipur से बाहर जा रही थी।

अगली सुबह Rajasthan का रंग बदलना था। Pink city से desert city तक।

Jaisalmer मेरा इंतज़ार कर रहा था।

CHAPTER TWENTY

रात की स्लीपर बस

THE NIGHT SLEEPER BUS

जयपुर से जैसलमेर

Jaipur to Jaisalmer - Overnight

“रात की सड़कें शहरों को नहीं दिखातीं; वे सिर्फ इतना बताती हैं कि एक दुनिया पीछे छूट रही है और दूसरी अभी अँधेरे में कहीं आगे है।”

बस जयपुर से बाहर निकल चुकी थी, लेकिन मेरे फोन की स्क्रीन पर अभी भी शहर बचा हुआ था।

ऊपर वाली sleeper में मैं आधा लेटा, आधा बैठा था। पर्दा थोड़ा खुला था। नीचे सड़क की रोशनी लंबी धारियों की तरह आती और चली जाती। कभी कोई flyover, कभी पेट्रोल पंप, कभी होटल का चमकता बोर्ड, फिर अचानक कई किलोमीटर सिर्फ अँधेरा।

फोन पर Shristi का आखिरी message खुला था:

“Jaisalmer पहुँचकर message करना। खुद से।”

उस “खुद से” पर मैं दोबारा मुस्कराया।

तीन दिन तक उसने मेरे charger, पानी, समय, रास्ते और कभी-कभी मेरी सामान्य बुद्धि तक की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी। अब शायद उसे शक था कि Jaipur की सीमा पार करते ही मैं अपना अस्तित्व भी किसी seat pocket में भूल सकता हूँ।

मैंने reply नहीं किया। बस phone side में रखा और blanket खींच ली।

पाँच मिनट बाद फिर phone उठा लिया।

Message आया था:

“सो जाना। सुबह वही थका हुआ चेहरा लेकर मत घूमना।”

मैंने लिखा:

“Doctor mode off karo.”

तीन dots तुरंत आए।

“Patient cooperation करे तो सोचूँ।”

मैं हँसा।

फिर phone airplane mode पर डाल दिया।

यह एक छोटी-सी जीत थी। तीन दिन Jaipur में मैं उसके सामने ऐसा एक भी sensible काम नहीं कर पाया था।

* * *

ऊपर वाली दुनिया

LIFE INSIDE A SLEEPER BERTH

भारत की sleeper bus एक अजीब समझौता है। वह आपको बिस्तर देने का दावा करती है, लेकिन साथ में यह नहीं बताती कि बिस्तर highway पर चल भी रहा होगा।

मेरी berth upper single थी। चौड़ाई उतनी कि एक आदमी आराम से लेट सके, बशर्ते वह रात में भूल जाए कि उसके कंधे भी हैं। एक तरफ glass window, दूसरी तरफ curtain. नीचे छोटा metal rail, ऊपर reading light जो इतनी तेज थी कि उसे जलाकर पढ़ने से बेहतर सूर्योदय का इंतजार करना था।

मैंने shoes एक plastic bag में रखकर नीचे corner में दबाए। Backpack सिरहाने रखा। कैमरा अंदर। पानी bottle holder में। Shristi का power bank cable से phone में लगा दिया।

फिर मैं लेटा।

पहला speed breaker आया।

मैंने तुरंत समझ लिया कि pillow को decorative object की तरह नहीं, safety equipment की तरह इस्तेमाल करना होगा।

Bus ऊपर उठी, फिर नीचे बैठी। मेरी कोहनी side panel से टकराई।

नीचे किसी बच्चे की हँसी आई।

मुझे पूरा शक था कि उसने मुझे नहीं देखा था। फिर भी insult personal लगा।

मैंने position बदली। पैर fold किए। फिर सीधे। फिर diagonal. आखिर ऐसा angle मिला जिसमें शरीर और बस दोनों एक-दूसरे से अस्थायी शांति समझौते पर पहुँचे।

पर्दा पूरी तरह बंद किया।

दो मिनट बाद घुटन लगी।

फिर आधा खोला।

यह प्रक्रिया रात में कई बार दोहराई जाने वाली थी।

स्लीपर बस की पहली सच्चाई:
"बिस्तर मिलना और नींद मिलना दो अलग सेवाएँ हैं।"

नीचे aisle में conductor की आवाज़ आती रही। किसी का boarding point confirm हो रहा था। किसी को phone पर समझाया जा रहा था कि बस "बस पाँच minute" में आएगी - यह phrase भारतीय transport में समय नहीं, आशा व्यक्त करता है।

कुछ देर बाद bus ने शहर की आखिरी dense lights भी पीछे छोड़ दीं। बाहर अब highway था।

Truck के लाल tail-lights अँधेरे में दो स्थिर बिंदुओं की तरह सामने रहते, फिर bus lane बदलती और वे पीछे चले जाते। दूसरी तरफ से आने वाले trucks की headlights कुछ seconds के लिए पूरा sleeper compartment सफेद कर देतीं। फिर darkness वापस।

मैंने window से forehead नहीं लगाया। अनुभव से सीख चुका था कि moving vehicle की खिड़की romantic कम, vibration machine ज्यादा होती है।

जयपुर पीछे छूटता है

THE LAST LIGHTS OF THE PINK CITY

किसी शहर से departure हमेशा arrival से ज्यादा private होता है। पहुँचते समय आप signs पढ़ते हैं, maps देखते हैं, hotel ढूँढते हैं। निकलते समय वही शहर memory बनना शुरू कर देता है।

Jaipur मेरे लिए इस यात्रा का पहला शहर था जहाँ monument list से ज्यादा किसी व्यक्ति का चेहरा याद रह गया था। Amer की सुबह, गलत shortcut, extra-sugar chai, Albert Hall की शाम, और वह bus के निकलने तक सड़क पर खड़ी Shristi।

मैंने खुद को इस thought पर ज्यादा देर नहीं रहने दिया।

पिछले कुछ दिनों में मैंने यह सीखा था कि meanings जल्दी तय कर देना अच्छी आदत नहीं। Blue diary ने इसकी tuition बहुत महँगी ली थी।

इसलिए मैंने बस इतना स्वीकार किया:

मुझे Jaipur छोड़ते समय अपेक्षा से थोड़ा ज्यादा खालीपन महसूस हुआ था।

बाकी बात बाद की थी।

Road smooth हुई। Engine की आवाज़ steady rhythm में बदल गई। Sleeper के पर्दों के पीछे लोग धीरे-धीरे quiet हो रहे थे। किसी phone पर धीमी movie की आवाज़। कहीं खर्राटे। कहीं plastic bottle घूमकर floor पर टकराई और हर turn पर नया address खोजने लगी।

मैंने आँखें बंद कीं।

नींद आई भी।

फिर bus ने brake लगाया।

मैं जाग गया।

Phone देखा। सिर्फ चालीस minute हुए थे।

मुझे लगा कम से कम तीन घंटे सो चुका हूँ।

Night bus time को भी stretch कर देती है।

एक अनजान सहयात्री

A VOICE FROM THE LOWER BERTH

करीब आधी रात के बाद मैं पानी लेने नीचे उतरा। Upper sleeper से उतरने की सीढ़ी vertical थी और मेरे हाथ में bottle भी। मैंने पहले पैर नीचे रखा, फिर दूसरा, और ठीक उसी समय bus ने हल्का मोड़ लिया।

मेरे शरीर ने geometry का एक नया अध्याय लिखा।

नीचे वाली berth से आवाज़ आई:

“धीरे भाई साहब. Jaisalmer भागा नहीं जा रहा।”

मैंने नीचे उतरकर देखा। करीब तीस-बत्तीस साल का आदमी, grey sweatshirt, jeans, और सिरहाने एक छोटा backpack. चेहरा जागा हुआ था।

“यह line मैं पहले भी सुन चुका हूँ,” मैंने कहा।

“तो मानते क्यों नहीं?”

Fair question.

उसका नाम हरीश विश्नोई था। Jaipur में कुछ दिनों के काम के बाद वापस पश्चिमी Rajasthan जा रहा था। Solar project के maintenance से जुड़ा काम करता था; उसका घर Jodhpur के आगे एक छोटे town के पास था, लेकिन काम उसे Jaisalmer belt तक लाता रहता था।

“पहली बार?” उसने पूछा।

“Jaisalmer, हाँ।”

“सुबह window खुली रखना।”

“क्यों?”

“पहले landscape बदलेगा. फिर आपको पता चलेगा कि बदल गया है।”

वाक्य थोड़ा poetic था। मैंने उसे देखा।

वह हँसा। “मैं engineer नहीं हूँ. बस route बहुत किया है।”

मैंने कहा, “आजकल engineers से सावधान रहता हूँ।”

“क्यों?”

मैंने blue diary की पूरी कहानी नहीं सुनाई। बस इतना कहा कि एक पुरानी notebook मिली है, शायद retired railway engineer की, और मैं कुछ दिनों से उसकी notes को जरूरत से ज्यादा serious ले रहा था।

हरीश ने सीधा जवाब दिया:

“पुराने लोग note रखते थे. हम लोग screenshot रखते हैं. फर्क इतना ही है।”

मैं हँसा।

यह पूरी mystery का सबसे साधारण और शायद सबसे उपयोगी summary हो सकता था।

* * *

बात काम पर चली गई। मैंने पूछा, “Desert में solar काम आसान लगता होगा?”

उसने तुरंत सिर हिलाया।

“Photo में आसान. Ground पर dust, heat, distance, पानी, maintenance. Panel लगा देना project का end नहीं है।”

उसने बताया कि दूर-दूर फैले installations में रोजमर्रा का काम tourism postcard से बिल्कुल अलग है। गर्मियों में metal छूना मुश्किल। धूल लगातार जमा होती है। Workers के लिए पानी, transport और रहने की व्यवस्था उतनी ही जरूरी जितनी technology.

“Jobs मिलती हैं?” मैंने पूछा।

“मिलती हैं. लेकिन local skill training भी चाहिए. कुछ काम बाहर से लोग करते, कुछ local लड़के सीख रहे. अच्छे project में दोनों का balance हो तो ठीक।”

उसकी बात में political slogan नहीं था। सिर्फ काम का अनुभव।

“Tourism और solar?”

“दोनों पैसा लाते हैं. दोनों pressure भी लाते हैं. Jaisalmer में पानी हमेशा discussion रहेगा।”

मैंने note करने को phone निकाला, फिर रुका।

“लिखो,” उसने कहा। “वरना सुबह भूल जाओगे।”

“मेरे friends भी यही मानते हैं।”

“सही मानते हैं।”

Shristi की constituency बढ़ रही थी।

रात का ढाबा

TEA, MIRCHI AND HEADLIGHTS

करीब रात के उस हिस्से में जब शरीर तय नहीं कर पाता कि dinner चाहिए या breakfast, bus एक highway ढाबे पर रुकी।

Conductor ने aisle में आवाज़ दी:

“पंद्रह minute!”

पूरी bus ने collective suspicion से उसे देखा।

Transport में “पंद्रह minute” एक philosophical concept है।

मैं नीचे उतरा। जमीन पर पाँव रखते ही शरीर ने protest किया। Upper sleeper में दो घंटे रहने के बाद spine भूल गई थी कि आदमी सीधा भी खड़ा हो सकता है।

ढाबे के सामने कई buses और trucks थे। हवा ठंडी थी, लेकिन तवे और कड़ाही के पास गर्मी। Diesel, frying oil, chai, मिट्टी और cigarette smoke - highway की रात की अपनी smell थी।

Counter पर बड़े हरे मिर्ची बड़े रखे थे। Besan की मोटी सुनहरी परत, भीतर पूरा मिर्च, बीच में मसालेदार आलू की filling.

हरीश ने कहा, “लेना है तो chutney कम।”

“मैं Rajasthan में तीन दिन रह चुका हूँ।”

उसने मेरी तरफ वैसे देखा जैसे डॉक्टर patient को वही पुरानी गलती दोहराते देखता है।

“ठीक है।”

मैंने mirchi bada लिया।

पहला bite surprisingly balanced था। बाहर का besan crisp, अंदर आलू soft, मिर्च का स्वाद हरा और थोड़ा smoky. मसाले में धनिया, अजवाइन जैसी खुशबू, साथ मीठी-खट्टी chutney ने तीखेपन को round किया।

मैंने confidence में दूसरी chutney भी डाल ली।

हरीश कुछ नहीं बोला।

दूसरे bite के बाद मिर्च ने अपनी असली नागरिकता दिखाई।

नाक के पास गर्मी। माथे पर पसीना। आँखों में पानी।

हरीश ने chai का glass मेरी तरफ बढ़ाया।

“तीन दिन Jaipur?”

मैंने glass लिया। “Experience transferable नहीं होता।”

उसने हँसते हुए कहा, “लगता है नहीं।”

Chai strong थी, दूध ज्यादा, ऊपर हल्की मलाई। मैंने sugar container देखा और instinctively एक spoon और डाल दिया।

ढाबे वाला मुझे देख रहा था।

“पहले से मीठी है,” उसने कहा।

“अब मेरे हिसाब से होगी।”

उसने सिर हिलाया। शायद उसने रात में मुझसे ज्यादा विचित्र लोग देखे होंगे।

रास्ते का स्वाद: रात की bus यात्रा में mirchi bada restaurant dish नहीं लगता. गरम besan, आलू, तीखी मिर्च और बहुत मीठी chai - ठंडी highway हवा में शरीर को तुरंत जगा देते हैं। स्वाद सिर्फ recipe से नहीं, समय और जगह से बनता है।

Counter के पास एक tray में मोटी, dark-brown मिठाई भी थी। मैंने पूछा। दुकानदार ने नाम बताया, पर truck के horn में आधा सुनाई दिया।

मैंने confidently दूसरा नाम दोहरा दिया।

वह बोला, “वो नहीं. ये दूसरा है।”

मैंने फिर गलत बोला।

हरीश पीछे से हँस रहा था।

दुकानदार ने आखिर plate पर उँगली रखकर कहा, “आप बस खा लो. नाम सुबह सीख लेना।”

मैंने वही किया।

Travel writer के आत्मसम्मान की रात खराब चल रही थी।

* * *

मैं chai finish करके bus की तरफ लौटा। सामने दो लगभग एक जैसी sleeper buses खड़ी थीं। दोनों पर Rajasthan route के नाम। दोनों का रंग लगभग same. दोनों के सामने लोग चढ़ रहे थे।

मैं पहली bus के दरवाज़े तक पहुँचा।

Conductor ने पूछा, “कहाँ?”

“Jaisalmer।”

उसने कहा, “ये Jodhpur।”

मैं रुका।

पीछे से हरीश की आवाज़ आई:

“Experienced traveller!”

Prayagraj वाले Saurabh की आत्मा जैसे Rajasthan तक आ गई थी।

मैंने दूसरी bus पकड़ी।

इस बार number plate दो बार check की।

अँधेरे में बदलता राजस्थान

THE ROAD WEST

ढाबे के बाद bus का mood बदल गया। लोग जल्दी सो गए। Driver ने cabin की lights कम कर दीं। Highway पर traffic भी थोड़ा sparse हुआ।

मैं ऊपर लौटकर curtain खोले लेटा रहा। बाहर full landscape दिखाई नहीं देता था, सिर्फ clues:

कभी road के किनारे लंबा खाली stretch.

कभी thorny bushes headlights में कुछ seconds के लिए चमकतीं.

कभी कोई छोटा कस्बा - बंद shutters, एक tea stall खुला, stray dogs, bus stand पर दो आदमी blankets में.

कभी दूर कोई illuminated petrol pump ऐसे दिखता जैसे अँधेरे में छोटा island.

रात geography को minimal बना देती है। Shape, light और distance बचते हैं। रंग सुबह तक छिपे रहते हैं।

कुछ देर बाद मैंने blue diary निकाली। सिर्फ इसलिए कि Jaisalmer वाला पुराना ticket उसी में था।

Ticket अब फिर अपने page के बीच सुरक्षित था। उसके पीछे वही numbers:

10 - 3 - 7 - 1

मैंने उन्हें देखा और कोई theory नहीं बनाई।

यह progress थी।

Diary में Jaisalmer के आसपास के दो-तीन notes थे। बहुत साधारण:

“station - yellow stone tone?”

“fort - inhabited, not only monument.”

“old rail structure - photograph morning.”

और एक छोटे page पर:

“wind, sand, surface wear.”

बस।

कोई secret door नहीं। कोई coded meeting नहीं।

एक engineer-traveller किसी शहर को अपनी professional आँख से देख रहा था।

मैंने diary बंद की।

इस बार उसे सिरहाने नहीं रखा। Backpack में वापस डाल दिया।

Jaisalmer मुझे diary के through नहीं, window के through देखना था।

नींद के बीच छोटे स्टेशन और कस्बे

HALF-AWAKE RAJASTHAN

रात की लंबी यात्रा में कुछ places आप सच में नहीं देखते। वे सिर्फ आपकी नींद के बीच नाम बनकर आते हैं।

Bus किसी town में रुकी। मैं पूरी तरह नहीं जागा। नीचे दो लोग उतरे, तीन चढ़े। किसी ने luggage compartment बंद किया। फिर engine.

दूसरी बार आँख खुली तो road narrow लग रही थी। Shops दोनों तरफ। एक मंदिर की सफेद रोशनी। दूर मस्जिद की minaret जैसी silhouette. फिर अचानक town खत्म और darkness.

मैंने phone देखा। Battery 94%.

Shristi का power bank अपना काम कर रहा था।

मैंने airplane mode हटाया।

दो messages थे।

पहला करीब एक घंटे पुराना:

"सो गए?"

दूसरा कुछ देर बाद:

"Obviously सो गए. Good."

मैं screen देखता रहा।

फिर time देखा। रात बहुत हो चुकी थी।

Reply लिखने लगा:

"अभी उठा..."

रुका।

Delete किया।

लिखा:

“ज़िंदा हूँ. Bus सही direction में है.”

Send करने से पहले सोचा कि वह शायद सो गई होगी।

Message गया।

Reply तीस seconds में आया:

“मुझे तुमसे यही डर था कि direction अलग से confirm करनी पड़ेगी।”

मैं हँस पड़ा।

फिर लिखा:

“तुम अभी तक जाग रही हो?”

Dots आए।

कुछ देर रहे।

फिर सिर्फ:

“पढ़ रही थी।”

वह medical student थी। यह पूरी तरह believable answer था।

फिर भी पता नहीं क्यों मुझे लगा कि message आने का इंतजार भी शायद पढ़ाई के बीच शामिल था।

मैंने उस thought को वहीं छोड़ दिया।

“सो जाओ doctor,” मैंने लिखा।

उसने reply किया:

“पहले तुम।”

मैंने phone फिर airplane mode पर डाला।

और इस बार सच में सो गया।

सुबह से ठीक पहले

WHEN THE DARKNESS TURNS GREY

सुबह का पहला संकेत सूरज नहीं था।

Bus की खिड़की का काला glass धीरे-धीरे grey होने लगा।

आँख खुली तो कुछ seconds समझ नहीं आया कि मैं horizontal क्यों हूँ और पूरा कमरा vibration क्यों कर रहा है। फिर curtain, highway, Jaipur, Jaisalmer - सब वापस जुड़ गया।

मैंने पर्दा पूरा खोला।

हरीश की बात याद आई:

“पहले landscape बदलेगा. फिर आपको पता चलेगा कि बदल गया है।”

वह सही था।

बाहर जमीन का रंग रात से निकला ही था। पहले dusty grey. फिर हल्का पीला-भूरा। Vegetation sparse. पेड़ छोटे और दूरी पर। झाड़ियाँ नीची। खेतों के बीच खुलापन बढ़ गया था। Horizon अब शहरों की तरह buildings से टूट नहीं रहा था।

Road के दोनों तरफ हवा ज्यादा दिखाई देती थी - क्योंकि उसे रोकने के लिए चीजें कम थीं।

कहीं-कहीं पत्थर की low boundary. कहीं छोटे घर, जिनका रंग आसपास की मिट्टी में घुल जाता। कहीं पानी के tank. कहीं दूर tower.

Sunrise अभी पूरा नहीं हुआ था, लेकिन sky pale orange होने लगा।

मैंने camera निकाला।

पहली photo glass के through ली।

दूसरी.

तीसरी.

फिर camera नीचे रख दिया।

Jaipur में Shristi ने एक बार कहा था:

“हर चीज़ camera को मत दो. कुछ खुद भी रखो।”

उस समय मैंने मजाक किया था। अब line काम आई।

* * *

Bus एक छोटे stop पर धीमी हुई। सड़क किनारे tea stall से धुआँ उठ रहा था। कुछ men shawls में खड़े। एक बच्चा दूध के can के साथ cycle पकड़कर। एक camel cart दूर side road पर धीरे चलती हुई दिखी।

मैंने पहली बार desert Rajasthan को postcard की तरह नहीं, morning routine की तरह देखा।

यहाँ भी लोग school जा रहे थे। Milk जा रहा था। Trucks जा रहे थे। Tea बन रही थी। कोई tyre check कर रहा था। कोई phone charge कर रहा था।

Landscape अलग था। जीवन की basic movements वही।

पोखरण की ओर खुलती सड़क

STONE, SCRUB AND LONG DISTANCE

हरीश नीचे से ऊपर आया और मेरी berth के पास खड़ा हुआ।

“अब समझ आया?”

“Landscape वाली बात?”

“हाँ।”

“पहले खाली लग रहा था. अब details दिख रही हैं।”

“यही desert है. खाली बोलो तो local आदमी नाराज़ होगा।”

उसने बाहर इशारा किया।

“वो shrubs देखो. वो grazing. आगे stone work. Road पर tankers. सब economy है।”

मैंने ज्यादा ध्यान से देखा। सच में खालीपन सिर्फ unfamiliarity था। जहाँ मेरी आँख शुरुआत में “कुछ नहीं” पढ़ रही थी, वहाँ pattern था: पशुओं के रास्ते, छोटे खेत, बिजली की lines, दूर quarry-like activity, roadside repair sheds, छोटे settlements.

कुछ देर बाद दूर wind turbines दिखाई दीं। पहले एक. फिर कई. White towers horizon पर धीमे घूमते blades के साथ।

पुराना desert और नई energy infrastructure एक ही frame में थे।

हरीश ने कहा, “Photo में अच्छा लगता है, maintenance में लंबा drive।”

“तुम हर सुंदर चीज़ के पीछे invoice देखते हो?”

“Job यही है।”

मैंने कहा, “Fair. Railway engineer भी शायद यही करता था. मैं station देखता हूँ, वह drainage देखता होगा।”

“हर profession romance खराब करता है।”

“Doctor?”

“Doctor तो चेहरा देखकर sleep hours गिनता होगा।”

मैंने window की तरफ देखा।

Shristi की आवाज़ याद आ गई:

“सुबह वही थका हुआ चेहरा लेकर मत घूमना।”

मैंने topic बदल दिया।

बस का सुबह वाला नाश्ता

KACHORI, SWEET TEA AND ROAD DUST

सूरज निकलने के बाद bus एक और stop पर रुकी। इस बार लगभग सभी passengers नीचे आए। रात का sleepy silence टूट गया था। लोग faces wash कर रहे थे, tea ले रहे थे, phones पर घर वालों को location बता रहे थे।

एक stall पर छोटी kachori मिल रही थी। Jaipur की pyaz kachori से आकार में छोटी, filling ज्यादा dry. मैंने plate ली। ऊपर हल्की आलू की sabzi डाली गई, फिर हरी chutney और थोड़ा मीठा.

पहला bite लेते ही रात की bus वाली stale mouth feeling गायब हो गई। बाहरी परत crisp लेकिन बहुत मोटी नहीं। अंदर मसालेदार दाल, सौंफ और धनिया की खुशबू। Sabzi में हल्की खटास। Chutney ने गर्मी और freshness दोनों दी।

मैंने दुकानदार से नाम दोहराकर confirm किया। रात की मिठाई वाली humiliation अभी fresh थी।

इस बार सही बोला।

मैंने खुद को mentally एक point दिया।

चाय आई। मैंने extra sugar माँगी।

हरीश बोला, “आप chai पीते हो या dessert?”

“दोनों का budget एक cup में।”

पास खड़ा एक truck driver हँसा।

Chai का glass हाथ में गर्म था। हवा ठंडी। सामने सड़क पर sun बढ़ रहा था। मिट्टी का रंग अब साफ yellow-brown. दूर किसी building की wall उसी tone में।

यही चीज Rajasthan के west में धीरे-धीरे बढ़ती है - architecture और जमीन एक-दूसरे से color उधार लेते लगते हैं।

Road-food rule: रात की यात्रा में बहुत भारी खाना लेने की बजाय गरम, ताजा और छोटे portions बेहतर लगे. पानी sealed bottle से, chai fresh, और तीखी chutney पर narrator की सलाह अब भी unreliable है।

Bus में लौटते समय मैंने अपने shoes देखे।

दोनों मेरे थे।

Jaipur के shoe-stand episode के बाद यह भी achievement लग रही थी।

जैसलमेर की पहली झलक

THE CITY RISES OUT OF THE MORNING

Jaisalmer की पहली झलक किसी dramatic gate से नहीं मिली। पहले traffic थोड़ा बढ़ा। फिर roadside hotels. छोटे workshops. Travel agencies के boards. Desert safari, camel ride, jeep tour, rooms, rooftop restaurant - tourism की vocabulary सड़क पर आने लगी।

फिर yellow stone ज्यादा दिखने लगा। Boundary walls, facades, signboards के frames. सुबह की light में वह रंग कभी honey जैसा, कभी pale gold.

और फिर दूर ऊँचाई पर fort की shape दिखाई दी।

पहले बस एक uneven golden line.

फिर bastions अलग होने लगे।

फिर पूरा mass शहर के ऊपर बैठा हुआ दिखा।

मैंने camera उठाया।

इस बार photo लेने से पहले कुछ seconds सिर्फ देखा।

Living fort.

Diary में यही note था।

लेकिन उस note ने view को explain नहीं किया। सामने जो था, वह एक monument से ज्यादा city-within-city जैसा दिख रहा था। नीचे modern traffic, ऊपर पुरानी walls. दोनों एक ही morning में।

हरीश ने कहा, “बस stand से ज्यादा अच्छा view आगे मिलेगा।”

“मैं अभी पहली बार देख रहा हूँ. Standards बाद में बढ़ाना।”

वह हँसा।

* * *

Bus city में घुसी। Narrower roads. Auto drivers. Guesthouse touts. Backpackers. Local commuters. कुछ लोग traditional dress में, कुछ jeans और hoodies में. Tourist city होने का अर्थ यह नहीं कि locals costume में रहते हैं - यह obvious बात travel writing अक्सर भूल जाती है।

Bus रुकी।

मैं नीचे उतरा।

रात भर के बाद जमीन स्थिर थी, लेकिन शरीर को कुछ seconds विश्वास नहीं हुआ। ऐसा लगा road अभी भी हल्की move कर रही है।

Backpack luggage compartment से निकाला। Dust की thin layer थी।

मैंने हाथ से झाड़ा। Dust ने जाने से इंकार किया।

Jaisalmer ने अपना पहला souvenir मुफ्त दिया था।

सुबह का पहला संदेश

REACHED

मैंने phone airplane mode से निकाला। Network आया।

सबसे ऊपर Shristi का कोई नया message नहीं था।

मुझे पता नहीं क्यों थोड़ा अजीब लगा।

फिर मुझे उसका पिछला message याद आया:

“Jaisalmer पहुँचकर message करना. खुद से।”

मैंने लिखा:

“Reached. सही city. सही bus. Bag भी साथ है।”

Send.

मैंने phone pocket में रखा।

दस seconds बाद vibration.

“Proud of you.”

फिर दूसरा:

“Breakfast करो. फिर घूमना.”

मैंने reply किया:

“Yes, doctor.”

उसने एक emoji भेजा - वही जो वह Moscow में तब भेजती थी जब उसे लगता था मैं deliberately stupid बन रहा हूँ।

मुझे याद आया कि वह emoji मैंने पहली बार लगभग दो साल पहले देखा था।

किस बात पर?

शायद मैंने Moscow में बिना gloves बाहर निकलने की बात कही थी।

या dinner skip किया था।

या उसने message किया था और मैंने छह घंटे बाद reply दिया था।

Exact memory नहीं थी।

उसके पास शायद होती।

मैंने phone बंद किया और auto ढूँढने लगा।

बजट होटल की खोज

BARGAINING AGAINST MYSELF

एक auto driver ने पूछा, “Hotel?”

मैंने shortlist में से एक guesthouse का नाम बताया।

“चलो।”

“कितना?”

उसने number कहा। Road noise में मुझे पूरी तरह सुनाई नहीं दिया। मुझे लगा उसने एक सौ बीस कहा।

मैंने bargaining face बनाया।

“एक सौ पचास?”

वह दो seconds चुप रहा।

“ठीक है।”

मैं auto में बैठ गया।

करीब तीस seconds बाद दिमाग ने conversation replay की।

मुझे शक हुआ उसने शायद एक सौ कहा था।

मैंने पूछा, “आपने पहले कितना बोला था?”

वह mirror में मुस्कराया।

“अब तो डेढ़ सौ तय हो गया।”

मैंने आँखें बंद कीं।

Shristi यहाँ होती तो sentence ready था:

“तुम travel नहीं करते. Situations collect करते हो।”

मैंने खुद ही धीरे से कहा:

“हाँ, हाँ. पता है।”

Driver ने पूछा, “क्या?”

“कुछ नहीं।”

Auto narrow roads से गया। Yellow-stone buildings अब पास थीं। कई facades नए थे, लेकिन stone tone ने उन्हें पुराने cityscape से जोड़ दिया था। दुकानों के बाहर camel-leather products, textiles, silver jewellery, water bottles, safari posters. बीच-बीच में school uniforms वाले बच्चे, दूध वाले, motorcycles, सब्ज़ी cart.

Tourist layer और ordinary city एक-दूसरे पर चढ़े हुए।

Guesthouse simple था। Rooftop से fort का partial view. कमरा छोटा, साफ, fan, attached bathroom, एक wooden chair, और wall पर desert photo.

Receptionist ने पूछा, “Safari booking?”

“पहले room।”

“Camel?”

“पहले shower।”

“Jeep?”

“पहले breakfast।”

उसने हँसकर key दे दी।

जैसलमेर का पहला नाश्ता

HOT KACHORI, GHOTUA AND SWEET TEA

Shower के बाद body ने थोड़ी इंसानी shape वापस ली। Backpack room में lock किया। Camera, phone, wallet, पानी और notebook साथ। Blue diary कमरे में रही।

यह decision जानबूझकर था।

आज सुबह मुझे किसी clue की जरूरत नहीं थी।

Guesthouse वाले ने पास की breakfast shop बताई। मैं पैदल निकला। सड़क पर सूरज अब मजबूत था, लेकिन सुबह की हवा में अभी थोड़ी ठंडक बची थी।

दुकान पर kachori तल रही थी। तेल से निकलते ही उन्हें steel जाली पर रखा जाता, फिर paper plate. मैंने एक ली, साथ आलू की हल्की मसालेदार sabzi.

यह रात के stop वाली kachori से अलग थी। बाहरी परत थोड़ी flaky, अंदर filling ज्यादा aromatic. जीरा, सौंफ, सूखे मसाले. Sabzi thin थी, ताकि kachori उसे soak करे लेकिन तुरंत soggy न हो। ऊपर हरा धनिया।

मैंने पहला bite लिया।

गर्म filling ने tongue जला दी।

मैंने तुरंत मुँह बंद किया और respectable expression बनाए रखा।

Shopkeeper ने पूछा, “गरम है?”

मैंने सिर हिलाया।

“बताया था अभी निकली।”

मैंने कुछ नहीं कहा। Self-inflicted injury पर debate useless होती है।

* * *

Breakfast के बाद मैंने मिठाई की दुकान पर “घोटुआ” देखा। नाम पहले पढ़ा था, लेकिन पहली बार सामने था। गोल, compact laddoo-like मिठाई. Texture बाहर से smooth नहीं; थोड़ा grainy. घी की खुशबू साफ।

दुकानदार ने छोटा piece चखने दिया।

पहले घी, फिर roasted flour जैसी गहराई, फिर sugar. Texture धीरे टूटता, mouth में melt होने से पहले थोड़ा resistance देता. बहुत refined dessert नहीं; dense, rich, travel के लिए dangerously easy to overeat.

मैंने एक पूरा लिया।

फिर chai.

“चीनी?” दुकानदार ने पूछा।

“ज्यादा।”

उसने cup बनाया। मैंने taste किया।

“थोड़ी और।”

वह हँसा। “आप मिठाई के साथ मीठी chai?”

“Balance बाद में।”

उसने spoon डाल दी।

Breakfast के बाद मैंने notebook में लिखा:

Jaisalmer: सुबह का रंग पीला, chai बहुत मीठी, और fort अभी भी दूर से देख रहा है।

किले की ओर पहला कदम

NOT YET INSIDE

मैंने उस सुबह fort के अंदर तुरंत जाने की जल्दी नहीं की। पहले उसके नीचे वाले शहर को थोड़ा चलकर देखना था।

Road धीरे-धीरे ऊपर जाती दिखी। Fort का mass हर turn पर अलग angle से आता। कहीं पूरी wall. कहीं सिर्फ bastions. कहीं buildings उसे cover कर देतीं, फिर अचानक वह फिर सामने।

Tour operators आवाज़ देते। “Safari?” “Sunset?” “Camel?” “Jeep?”

मैं हर बार “बाद में” कहता।

एक ने पूछा, “कब बाद में?”

मैंने कहा, “जब मैं breakfast digest कर लूँ।”

वह हँस पड़ा।

एक छोटी दुकान के सामने पानी लेने रुका। Owner ने पूछा, “Fort?”

“हाँ. लेकिन आज पूरा दिन है।”

“अच्छा. जल्दी मत करना।”

मैंने मुस्कराकर bottle ली।

यह line फिर आ गई थी।

Delhi से Jaisalmer तक शायद भारत का unofficial travel advice यही था:

जल्दी मत करो।

मैंने ऊपर fort की तरफ देखा।

पहली बार मुझे लगा मैं सलाह मान भी सकता हूँ।

* * *

Roadside एक बुजुर्ग man पत्थर की छोटी stool पर बैठे थे। सामने दुकान में postcards और छोटे souvenirs. मैंने एक पुरानी-looking Jaisalmer station photo देखी।

मैं रुक गया।

कुछ दिनों पहले होता तो तुरंत blue diary याद आती, engineer, note, date, connection.

अब भी याद आई।

लेकिन मैंने सिर्फ photo उठाकर architecture देखा।

“पुरानी है?” मैंने पूछा।

दुकानदार बोले, “Reprint है. असली नहीं।”

मैंने वापस रख दी।

कोई clue नहीं बनाया।

यह शायद journey की दूसरी progress थी।

रहस्य कम हुआ तो शहर ज्यादा दिखने लगा।

रात की यात्रा का हिसाब

WHAT THE BUS ACTUALLY GAVE ME

Guesthouse वापस जाते समय मैंने सोचा कि Jaipur से Jaisalmer की रात में आखिर हुआ क्या?

कोई बड़ा adventure नहीं।

Bus खराब नहीं हुई।

किसी ने bag नहीं चुराया।

कोई रहस्यमय आदमी पीछा नहीं कर रहा था।

मैं गलत bus में लगभग चढ़ा - अपनी गलती से। Mirchi ज्यादा खाई - अपनी गलती से। Auto में खुद से bargaining हार गया - फिर अपनी गलती से।

और शायद यही अच्छा था।

Travel adventure हमेशा danger नहीं होता। कभी सिर्फ unfamiliar systems के बीच खुद को manage करना होता है - sleeper की सीढ़ी, highway stop का समय, सही bus पहचानना, सुबह नया शहर, नई भाषा की rhythm, नई smell, नया food.

रास्ता dramatic नहीं था।

लेकिन पूरा था।

Jaipur की pink light से Jaisalmer की yellow morning तक landscape सच में बदल गया था।

और बीच में सिर्फ highway नहीं था - workers, truck drivers, solar fields, small towns, tea stalls, sleeping passengers और एक लंबी रात थी।

Travel का बड़ा हिस्सा वही है जिसे itinerary में एक line मिलती है:

“Overnight bus: Jaipur to Jaisalmer.”

असल में उस एक line के भीतर पूरी रात रहती है।

मैंने room की खिड़की से fort की तरफ देखा। Sun अब ऊपर था। Yellow stone बहुत ज्यादा bright हो चुका था।

Phone vibrate हुआ।

Shristi:

“Breakfast?”

मैंने photo भेजी - chai, खाली kachori plate, घोटुआ का आधा piece.

उसका reply:

“चीनी कितनी?”

मैंने लिखा:

“Respectable amount.”

उसने तुरंत:

“झूठ।”

मैं हँस पड़ा।

इतनी दूर आने के बाद भी Moscow और Jaipur का कोई छोटा हिस्सा phone screen में मेरे साथ था।

मैंने जवाब नहीं दिया। Camera उठाया। पानी भरा। Cap पहनी।

Fort की तरफ निकल गया।

अगला दिन walls के भीतर था।

CHAPTER TWENTY-ONE

किले के भीतर एक शहर

A CITY INSIDE THE FORT

जैसलमेर

Fort, Lanes, Havelis & Local Food - Morning to Evening

“कुछ किले इतिहास को बंद करके रखते हैं। कुछ के भीतर सुबह आज भी चाय की भाप से शुरू होती है।”

जैसलमेर पहुँचकर पहला काम मैंने वही किया जो हर समझदार यात्री करता है - होटल ढूँढा।

और दूसरा काम वही किया जो मैं अक्सर करता हूँ - होटल ढूँढते समय गलत गली में घुस गया।

बस से उतरते वक्त सूरज पूरी तरह ऊपर नहीं आया था। शहर की हवा Jaipur से अलग थी। सूखी। हल्की ठंडी। और उसमें रेत की ऐसी महीन गंध थी जिसे गंध कहना शायद सही शब्द नहीं; वह ज्यादा एक एहसास था - जैसे हवा में नमी कम हो और हर सतह थोड़ी हल्की, थोड़ी खुरदुरी लगे।

सामने yellow-stone रंग की इमारतें थीं। कुछ असली sandstone, कुछ उसी रंग में रंगी हुई। दूर ऊपर पहाड़ी पर किला पहली बार दिखाई दिया। सुबह की रोशनी में वह postcard से कम और किसी विशाल जीवित दीवार जैसा ज्यादा लगा।

मैंने phone निकाला।

Shristi को message किया:

“Jaisalmer. सही bus से पहुँच गया.”

Reply लगभग तुरंत आया:

“Proud of you. अब hotel भी सही ढूँढ लेना.”

मैंने लिखा:

“इतना भरोसा?”

उसने सिर्फ एक laughing emoji भेजा।

मैंने phone pocket में रखा और जिस गली को hotel की तरफ समझा, उसी में चल पड़ा।

दस minute बाद मैं एक बंद workshop, दो goats और एक आदमी के सामने खड़ा था जो दाँत साफ करते हुए मुझे देख रहा था।

मैंने hotel का नाम बताया।

उसने toothbrush मुँह से निकाला और पीछे की तरफ इशारा किया।

“आप उल्टा आ गए।”

सुबह का पहला official verdict मिल चुका था।

* * *

किले की पहली सुबह

THE FORT BEFORE THE CROWD

कमरा मिल गया। बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन window से किले का ऊपर वाला हिस्सा दिखाई देता था। Bed firm. Bathroom साफ. एक छोटी table. दीवार पर fan. नीचे reception के पास पानी refill करने की जगह।

मैंने backpack छोड़ा, face wash किया, camera लिया और निकलने लगा।

फिर वापस आया।

Room key table पर थी।

Lucknow के Room 307 की याद इतनी जल्दी फीकी नहीं पड़नी चाहिए थी।

Key pocket में डाली।

नीली diary बैग में ही छोड़ दी।

आज उसका कोई काम नहीं था।

किले तक पहुँचते हुए शहर धीरे-धीरे खुल रहा था। छोटी दुकानों के shutters ऊपर जा रहे थे। कहीं झाड़ू लग रही थी। दूध के छोटे cans लेकर motorbike निकली। एक tea stall से भाप उठ रही थी। दो विदेशी travellers backpacks के साथ किसी rooftop café का नाम पूछ रहे थे। एक local बच्चा school uniform में था, हाथ में water bottle, और उसके पीछे उसकी माँ जल्दी करने को कह रही थी।

यही पहला difference था।

दूर से fort एक monument था। करीब आते ही उसके दरवाज़े की तरफ जाने वाले लोग सिर्फ tourists नहीं थे। कुछ लोग काम पर जा रहे थे। कुछ घर के सामान के साथ। एक आदमी cylinder जैसी चीज़ pushcart पर ले जा रहा था। एक बुजुर्ग सुबह की पूजा की थैली लिए चढ़ रहे थे।

मैंने notebook में लिखा:

"Living fort का अर्थ ticket counter से समझ नहीं आएगा."

किले की चढ़ाई बहुत लंबी नहीं थी, लेकिन पिछली रात sleeper bus में body जिस तरह मुड़ी-तुड़ी थी, thighs ने जल्दी complaint दर्ज कर दी। Stone ramp पर कदमों की आवाज़ अलग थी। दोनों तरफ ऊँची दीवारें। ऊपर से sunlight अभी पूरी तरह अंदर नहीं आ रही थी। Entrance sequence धीरे-धीरे turn लेता हुआ ऊपर जाता था; हर मोड़ पर बाहर का शहर थोड़ा गायब और भीतर की दुनिया थोड़ी ज्यादा दिखाई देती।

मेरे सामने एक परिवार चल रहा था। बच्चा हर दरवाज़े पर पूछता:

"किला आ गया?"

पिता हर बार कहते:

"अंदर ही हैं।"

बच्चा संतुष्ट नहीं था। शायद उसके दिमाग में fort का मतलब एक final gate था, जिसके बाद कोई board लगे - FORT STARTS HERE.

मुझे उसकी समस्या समझ आ रही थी।

नाश्ता पहले, इतिहास बाद में

BREAKFAST INSIDE THE FORT

किले के भीतर पहली serious चीज़ जो मुझे मिली, वह इतिहास नहीं, प्याज की खुशबू थी।

एक छोटी दुकान पर कचौरी तल रही थी। दुकान इतनी चौड़ी नहीं थी कि चार लोग आराम से खड़े हो सकें, लेकिन उसके सामने आठ लोग थे और बाकी आधे सड़क पर। कड़ाही में गोल कचौरियाँ तेल में धीरे-धीरे फूल रही थीं। किनारे पर स्टील के बर्तन में आलू की पतली सब्ज़ी, दूसरी तरफ हरी और लाल चटनी।

मैं रुक गया।

दुकानदार ने पूछा, “एक?”

मैंने कहा, “पहले एक।”

उसने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे आगे का परिणाम उसे पहले से पता हो।

कचौरी plate में आई। बाहर की परत कुरकुरी थी लेकिन Lucknow वाली खस्ता की तरह परतदार नहीं; यहाँ bite लेते ही एक साफ crack हुआ और अंदर भुने मसाले की तेज खुशबू निकली। प्याज का स्वाद मीठा नहीं, मसाले के साथ गहरा था - सौंफ, धनिया, थोड़ा अमचूर जैसा खट्टापन, और पीछे लाल मिर्च की गर्मी। ऊपर डाली आलू की सब्ज़ी ने dryness तोड़ी। हरी chutney ने fresh sharpness दी।

पहला कौर खत्म होने से पहले दुकानदार ने पूछा:

“दूसरी?”

मैंने plate उसकी तरफ बढ़ा दी।

“आपने पहले से तय कर रखा था?”

“चेहरे से पता चल गया।”

मेरी यात्रा में लोगों को मेरे चेहरे से बहुत कुछ पता चल रहा था। मुझे खुद से कम।

पास में एक बड़ा steel vessel था, जिसमें कुछ गाढ़ा सफेद-पीला सा। मैंने पूछा:

“ये मखानिया... लस्सी?”

दुकानदार ने pronunciation सुधार दी।

मैंने फिर बोला।

उसने फिर सुधारा।

तीसरी बार उसने हाथ उठाकर कहा, “हाँ, वही. पी लो।”

मेरी local-food vocabulary का आत्मसम्मान तीन शहरों से लगातार चोट खा रहा था।

मखनिया लस्सी गिलास में आई तो वह drink से ज्यादा dessert लग रही थी। बहुत गाढ़ी। ऊपर मलाई, थोड़े dry fruits, हल्की केसर जैसी खुशबू। पहले sip में दही का खट्टापन बहुत पीछे था; मिठास और richness सामने। Jaipur की chai में मैं extra sugar माँगता था, लेकिन यहाँ मिठास already मेरी तरफ थी।

मैंने धीरे-धीरे पी।

दुकानदार बोला, “जल्दी मत पीना. पेट बोलेगा।”

मैंने पूछा, “आप सबको warning देते हो?”

“जो दो कचौरी के बाद लस्सी ले, उसको जरूर।”

जैसलमेर का पहला स्वाद: प्याज कचौरी में कुरकुरी सतह, मसालेदार प्याज की filling और खट्टी-तीखी chutney का संतुलन; उसके बाद गाढ़ी मखनिया लस्सी. Desert city का breakfast हल्का नहीं, याद रहने वाला था।

मैंने खाने की photo लेने के लिए camera निकाला ही था कि plate लगभग खाली थी।

यानी आज पहली बार खाना camera से पहले खा गया।

Progress.

किले की गलियाँ

LANES THAT ARE ALSO ADDRESSES

नाश्ते के बाद मैं बिना guide के कुछ देर बस चलना चाहता था।

किले के भीतर की गलियाँ tourist-map पर simple lines लगती हैं। जमीन पर वे कहीं चौड़ी, कहीं अचानक संकरी, कहीं सीढ़ी बनतीं, कहीं किसी घर के दरवाज़े के सामने से इतनी पास गुजरतीं कि आपको अपना camera नीचे करना स्वाभाविक लगे।

पीला sandstone हर जगह एक जैसा नहीं था। कुछ दीवारें नई साफ, कुछ की सतह पर समय और हवा ने texture बनाया था। किसी balcony पर carved jali. कहीं wooden door. कहीं modern signboard उसी पुरानी दीवार पर. कहीं rooftop café का arrow. कहीं tailoring shop. कहीं पूजा की छोटी दुकान.

एक corner पर दो महिलाएँ घर के सामने पानी डालकर झाड़ू कर रही थीं। सामने से tourist group निकला। Guide ऊँची आवाज़ में architecture समझा रहा था। महिलाओं ने काम नहीं रोका।

Living heritage का अर्थ शायद यही है - एक ही wall किसी के लिए इतिहास है और किसी के लिए घर का बाहर वाला हिस्सा।

मैंने एक छोटी दुकान पर पानी लिया। Shopkeeper की उम्र लगभग चालीस होगी। नाम मदन सिंह। उसने पूछा, “कहाँ से?”

मैंने अब rehearsed answer दिया:

“Moscow में काम करता हूँ. दस... मतलब अब थोड़ा ज्यादा दिनों से India घूम रहा हूँ।”

वह हँसा।

“दस दिन बढ़ गए?”

“Jaipur ने plan बिगाड़ दिया।”

“अच्छा बिगाड़ा?”

मैंने bottle का cap खोला।

“हाँ।”

उसने मुझे एक second देखा, फिर topic बदल दिया।

“Fort अंदर रहने वाले family भी बहुत हैं. सुबह जल्दी देखो तो असली rhythm दिखेगा. दस बजे बाद tourist ज्यादा।”

मैंने पूछा, “रहना मुश्किल होता है?”

उसने shoulders उठाए। “घर है तो घर है. फायदा भी, दिक्कत भी. season में भीड़. सामान ऊपर लाना. पानी का ध्यान. लेकिन बाहर flat में जाकर भी मन नहीं लगता सबको।”

“Tourism जरूरी?”

“काम देता है. बस शहर को सिर्फ दुकान मत समझो।”

उसके जवाब में complaint कम, request ज्यादा थी।

मैंने camera नीचे रखा।

उसकी दुकान की photo नहीं ली।

एक गलत मोड़ और सही छत

A WRONG TURN WITH A VIEW

मैंने map खोला। अगला लक्ष्य था palace side तक पहुँचना, फिर ऊपर से city देखना। Blue dot घूम रहा था।

मैंने एक गली चुनी।

तीन minute बाद stairs नीचे जा रही थीं।

मैंने दूसरी तरफ लिया।

फिर एक छोटा courtyard.

फिर dead end.

एक बुजुर्ग चारपाई पर बैठे थे। उन्होंने पूछा:

“कहाँ?”

मैंने destination बताया।

उन्होंने पीछे इशारा किया।

“वहाँ से आए?”

“हाँ।”

“वहीं वापस।”

मैंने कहा, “Shortcut?”

वह मुस्कराए। “आपके लिए long cut हो गया।”

मैं वापस गया।

Phone vibrate हुआ। Shristi का message:

“Fort पहुँच गए?”

मैंने लिखा:

“Fort में हूँ. Fort को भी अभी नहीं पता मैं कहाँ हूँ.”

Reply:

“तुम travel नहीं करते...”

मैंने उसकी line पूरी की:

“...situations collect करता हूँ. पता है.”

कुछ seconds बाद उसने लिखा:

“At least कुछ तो याद रखते हो.”

मैं उस message को पढ़कर आगे बढ़ गया।

उसकी आखिरी line क्यों थोड़ी अलग लगी, समझ नहीं आया।

गलत मोड़ का एक फायदा हुआ। मुझे एक छोटी rooftop tea place मिल गई जहाँ उस समय सिर्फ दो tables occupied थीं। Terrace से नीचे Jaisalmer फैला था - flat rooftops, yellow-brown walls, water tanks, narrow streets, और दूर तक dry landscape. Fort के भीतर से fort दिखाई नहीं देता; आप शहर देखते हैं जिसे वह ऊपर से घेरता है।

मैंने chai order की।

Waiter ने पूछा, “Sugar?”

“ज्यादा।”

“कितनी?”

मैंने कहा, “आप जितनी सोच रहे, उससे एक spoon ज्यादा।”

वह हँसा।

Chai आई। सच में मीठी। गरम cup हाथ में लेकर मैं parapet से थोड़ा पीछे बैठ गया। हवा अब तेज हो रही थी। नीचे city के sounds ऊपर आते हुए soft हो गए थे - horns दूर, voices blended, कभी temple bell.

मैंने Shristi को view की photo भेजी।

उसने reply किया:

“Beautiful.”

फिर दूसरा message:

“तुम photo में क्यों नहीं?”

मैंने लिखा:

“क्योंकि view खराब हो जाएगा.”

Dots आए। गायब हुए। फिर आए।

“Idiot.”

बस इतना।

मैंने phone pocket में रख दिया।

राजमहल और पत्थर की परतें

PALACE WALLS AND OLD SURFACES

किले के palace complex की तरफ बढ़ते हुए crowd बढ़ गया। Groups, guides, cameras, school-age बच्चे, elderly couples. यहाँ fort ज्यादा familiar tourist monument जैसा महसूस होने लगा, लेकिन बाहर की living lanes का context अब मेरे साथ था।

ऊँचे facades के carved windows को देखकर पहली instinct camera की थी। दूसरी instinct बस देखने की।

मैंने दोनों की compromise की - दो photos, फिर camera नीचे।

Yellow sandstone पर sunlight का असर interesting था। सामने से bright gold नहीं; कहीं pale honey, कहीं dusty beige, shadow में brown. Carvings depth के कारण रंग बदलतीं। एक ही wall flat नहीं लगती।

Guide के group के पीछे कुछ minute चला। वह rulers, battles और architecture की dates बता रहा था। मैं intentionally पूरा group join नहीं हुआ; आधा सुनना कभी-कभी dangerous होता है क्योंकि बाद में आप आधा याद रखकर पूरा fact मान लेते हैं।

मैंने official display text जहाँ मिला, वहाँ पढ़ा। बाकी सिर्फ atmosphere note किया।

एक balcony से नीचे शहर देखा। हवा stronger थी। पत्थर के frame के बाहर modern Jaisalmer - vehicles, hotels, newer colonies, telecom towers. भीतर old walls. शहर ने समय को अलग compartments में नहीं रखा था।

एक visitor ने मुझसे photo लेने को कहा। मैंने उसका phone लिया, framing की, दो photos लीं।

उसने मेरा camera देखकर पूछा, “आपका भी ले दूँ?”

मैंने camera दिया।

वह photo लेने लगा।

मैं wall के पास खड़ा हुआ।

उसने कहा, “थोड़ा left।”

मैं left गया।

“और।”

मैं और गया।

पीछे guide की rope barrier थी। Staff ने तुरंत कहा, “वहीं रुकिए।”

मैं freeze हो गया।

Photographer ने कहा, “बस, perfect।”

Photo में मैं अच्छा आया या नहीं, पता नहीं। लेकिन security staff की नजर साफ आई।

मैंने camera वापस लिया और quietly आगे बढ़ गया।

Funny travel memory number पता नहीं कौन-सा।

जैन मंदिरों की शांति

STONE, DETAIL AND RESTRAINT

किले के भीतर Jain temples की तरफ जाते समय गलियाँ फिर छोटी हो गईं। बाहर shops और people. भीतर प्रवेश करते ही sound बदल गया।

ऐसी जगहों पर पहला काम description शुरू करना नहीं, अपना volume कम करना होता है।

मैंने posted rules देखे, जहाँ footwear छोड़ना था छोड़ा, और camera के बारे में जो निर्देश थे वही follow किए। किसी भी religious site में "मैं travel writer हूँ" कोई special permission नहीं होती।

Stone carving का density पहली नजर में almost overwhelming था। Columns, ceilings, small figures, geometric patterns - आँख एक detail पर टिकती तो उसके आसपास दस और दिखाई देते। बाहर fort का sandstone broad walls में था; यहाँ वही material या similar stone सूक्ष्म काम में बदल गया था।

मैंने हाथ पीछे रखे और slowly चला।

एक priest/attendant ने एक ceiling detail की तरफ इशारा किया। मैंने पूछा, "इतना काम देखने का सही तरीका?"

वह मुस्कराया।

"जल्दी मत देखो।"

यह सलाह पूरे देश ने मेरे खिलाफ मिलकर तय की थी।

मैंने कुछ minute एक जगह खड़े होकर सिर्फ ऊपर देखा। Light carved stone पर uneven पड़ रही थी। Deep cuts dark, raised surfaces bright. इसलिए pattern flat नहीं, alive लगता था।

पास एक family बच्चों को धीरे बोलने को कह रही थी। एक बुजुर्ग folded hands के साथ आगे बढ़ रहे थे। कुछ visitors architecture देख रहे थे, कुछ prayer में थे।

मैंने notebook बाहर नहीं निकाली। बाहर आकर लिखा।

यात्रा और श्रद्धा: किसी जीवित धार्मिक स्थल को “heritage object” की तरह देखना अधूरा है। वहाँ architecture के साथ आस्था, नियम और लोगों की निजी शांति भी उसी जगह का हिस्सा हैं।

Footwear area पर वापस आया तो मेरी brown sandals जैसी तीन pairs पड़ी थीं।

मैंने एक pair उठाया।

पैर डालने ही वाला था कि बगल से आवाज़ आई:

“वो मेरे हैं।”

मैंने तुरंत नीचे रखा।

“Sorry.”

वह आदमी हँसा। “हमारे भी same हैं।”

मैंने दूसरा pair देखा।

उसने कहा, “आपका उधर।”

मैंने अपना pair पहचाना - strap पर छोटा scratch था।

Vrindavan से चली shoe confusion की परंपरा Rajasthan तक जीवित थी।

दोपहर की थाली

KER SANGRI, GATTE AND BAJRA

दोपहर तक breakfast की कचौरी और लस्सी आखिर पीछे हट चुकी थी। शरीर ने proper lunch की मांग की।

मैं fort से थोड़ा नीचे शहर की तरफ आया और एक साधारण restaurant चुना जहाँ menu में Rajasthani thali थी। बहुत ornate जगह नहीं। Steel की plates, fan, दीवार पर desert photos, और entrance पर हाथ से लिखा आज का menu.

मैंने पूछा, “Local में क्या लेना?”

Waiter ने एक साथ चार नाम बोले।

मैंने उनमें से दो गलत repeat किए।

वह patiently बोला, “मैं thali लगा देता हूँ।”

यह मेरे लिए बेहतर व्यवस्था थी।

Thali में सबसे पहले मेरी नजर ker sangri पर गई। रंग deep brown-green, texture dry-looking. पहली bite में समझ आया कि desert cuisine पानी की कमी के geography से भी बात करती है। Ker का हल्का खट्टा-कसैला taste, sangri का chewy texture, मसाले और तेल की coating, बीच में अमचूर/खट्टापन. यह gravy-heavy dish नहीं थी; हर bite concentrated था।

Gatte ki sabzi अलग थी - besan के firm pieces, दही-मसाले की gravy में। Gravy tangy, गर्म मसाला controlled, texture soft लेकिन completely mushy नहीं। Bajra roti thick और earthy, हाथ से तोड़ते ही गेहूँ की roti से अलग grainy feel. ऊपर थोड़ा ghee लगाया गया।

साथ में garlic chutney इतनी लाल थी कि Chapter 16 वाली Lucknow chutney ने दूर से warning भेजी होगी।

मैंने थोड़ा लिया।

इस बार सच में थोड़ा।

Experience कभी-कभी transferable होता है।

Chutney sharp थी - garlic upfront, red chilli बाद में, थोड़ा oil, बहुत concentrated. Bajra roti के साथ छोटी मात्रा perfect थी।

Dal भी थी, rice थोड़ा, papad, और आखिर में churma का मीठा हिस्सा। Churma में ghee की गर्म खुशबू, crushed grain का texture और sugar की मिठास थी। मेरी sweet tooth ने तुरंत approval दिया।

Waiter ने पूछा, “और churma?”

मैंने कहा, “हाँ।”

उसने दूसरी spoon रखी।

मैंने कहा, “थोड़ा और।”

वह मुस्कराया।

“आप sweet ज्यादा खाते?”

“Chai से शुरू होता है।”

“Diabetes से खत्म मत करना।”

Medical advice अब strangers भी देने लगे थे।

दोपहर का स्थानीय स्वाद: ker sangri का concentrated खट्टा-मसालेदार स्वाद, gatte की दही वाली gravy, earthy bajra roti, तेज लहसुन chutney और ghee वाला churma - एक ही thali में Rajasthan का dry climate, grain और preservation की culinary logic महसूस होती है।

मैंने Shristi को thali की photo भेजी। इस बार photo खाने से पहले ली थी।

Reply आया:

“Finally. Proper food.”

मैंने लिखा:

“Doctor approved?”

उसने लिखा:

“Churma की तीसरी serving छोड़ दो तो.”

मैंने plate देखी।

तीसरी serving already आ चुकी थी।

मैंने photo नहीं भेजी।

पटवों की हवेली

FACADES LIKE LACE IN STONE

Lunch के बाद शहर की गर्मी visibly बढ़ गई। सड़क का रंग pale और bright. Shade में खड़े होते ही राहत, sunlight में दो minute बाद forehead गर्म।

मैं Patwon Ki Haveli की तरफ पैदल चला। रास्ते में दुकानों पर textiles, mirror-work, leather goods, small puppets, silver-style jewellery, postcards. Vendors बुलाते, लेकिन aggressive feel कम था; शायद दोपहर की गर्मी सबकी bargaining energy खा रही थी।

हवेली का facade सामने आया तो पहली reaction scale नहीं, detail थी। Balconies, jharokhas, carved stone screens - दूर से pattern, पास से अलग-अलग काम। Sandstone को ऐसी पतली visual lace में बदलना craftsmanship का अलग level था।

मैंने कैमरा ऊपर उठाया। Wide shot में पूरा facade नहीं आ रहा था। पीछे गया।

फिर पीछे।

फिर एक scooter वाले ने horn दिया।

मैं सड़क के बीच आ गया था।

Side हुआ।

Travel photography का basic rule: building स्थिर है, traffic नहीं।

एक local guide nearby group को समझा रहा था कि व्यापारी families की wealth architecture में दिखाई देती थी। मैं पूरी factual lecture absorb करने के बजाय surfaces देखता रहा। Windows इतनी ornamental थीं कि ventilation, privacy और status एक ही design में जुड़ते लगते।

अंदर के कुछ rooms में light filtered थी। बाहर harsh sun, भीतर softer. Thick walls, courtyards, shaded openings - desert climate architecture का practical हिस्सा भी था।

मैंने notebook में लिखा:

“सुंदरता सिर्फ decoration नहीं; shade भी design है.”

यह line मुझे पसंद आई।

फिर तुरंत लगा शायद किसी architecture book में पहले से होगी।

मैंने उसके आगे question mark लगा दिया।

बाज़ार और मेरी महान bargaining

HOW TO PAY MORE WHILE NEGOTIATING

हवेली से निकलते हुए एक छोटी shop पर leather notebook cover दिखा। Brown leather, simple stitching, सामने camel motif नहीं - यही मुझे अच्छा लगा। मैंने सोचा blue diary के लिए नहीं, अपनी notebook के लिए ले सकता हूँ।

Shopkeeper ने price बताया।

मैंने कम कहा।

उसने हँसकर ज्यादा कहा।

मैंने फिर कम।

वह बोला, “आपको bargaining आती नहीं।”

मैंने कहा, “क्यों?”

“आप हर बार अपना price खुद बढ़ा रहे।”

मैंने पिछली दो numbers याद कीं।

वह सही था।

मैंने शुरुआत 500 से नीचे की थी, फिर excitement में 550, फिर 600 offer कर चुका था।

Shopkeeper ने हँसते हुए कहा, “आप ऐसे customer रोज आओ।”

मैंने कहा, “Final बोलो।”

उसने reasonable amount बताया। मैंने pay किया।

Change में उसने मुझे coins और notes दिए। मैं बाहर निकल गया।

दो shops बाद उसने आवाज़ दी:

“भाई साहब!”

मैं मुड़ा।

“आपने hundred extra दे दिया था।”

वह note मेरी तरफ बढ़ा रहा था।

मैंने लिया।

“Bargaining बहुत successful रही,” मैंने कहा।

वह इतना हँसा कि पास वाले दुकानदार ने भी पूछा क्या हुआ।

मैंने explanation नहीं दी।

Reputation geographical speed से travel कर रही थी।

Shristi को यह कहानी बताने का मन हुआ।

फिर सोचा नहीं।

उसके पास already पर्याप्त evidence था।

Phone vibrate हुआ।

उसका message:

“आज कोई disaster?”

मैं screen को देखता रहा।

कभी-कभी इंसान का timing insult जैसा लगता है।

मैंने लिखा:

“No comment.”

उसने reply किया:

“मतलब yes.”

एक कारीगर से बातचीत

WORK BEHIND THE SOUVENIRS

बाज़ार के आगे एक छोटी workshop जैसी दुकान में stone carving का काम चल रहा था। बाहर finished decorative pieces थे, अंदर एक आदमी low stool पर बैठकर पत्थर पर fine tool चला रहा था।

मैंने अंदर जाने से पहले पूछा, “देख सकता हूँ?”

उसने सिर हिलाया।

नाम था इमरान खान। उम्र शायद तीस के आसपास। Family कई पीढ़ियों से stone work में थी, उसने बताया।

मैंने पूछा, “Tourist वाला काम ज्यादा?”

“छोटा काम tourist के लिए. बड़ा काम building, restoration, new house, hotel सब में।”

उसके हाथ की movement बहुत controlled थी। Tool हर strike में बहुत थोड़ा material निकालता। बाहर से देखो तो progress slow; कुछ minute बाद pattern clearly उभरने लगा।

“Machine?” मैंने पूछा।

“Machine rough कर देती. Fine हाथ से अच्छा।”

“नई generation सीखती है?”

वह कुछ second चुप रहा।

“सीखती है, लेकिन सब नहीं. Time लगता, पैसा जल्दी नहीं. Mobile में काम जल्दी दिखता है, पत्थर में नहीं।”

उसने हँसकर कहा, “आप video बना लो, उसमें fast कर देना।”

मैं भी हँसा।

मैंने permission लेकर छोटा video लिया - सिर्फ हाथ और stone, चेहरा नहीं।

उसने कहा, “ये ठीक है।”

Travel writing में consent एक बड़ा शब्द नहीं होना चाहिए; छोटी आदत होना चाहिए।

बात Jaisalmer पर आई। उसने कहा tourism काम देता है, लेकिन शहर की identity सिर्फ fort नहीं। “लोग बाहर colonies में भी रहते, schools हैं, offices हैं, army side है, काम अलग-अलग।”

मैंने पूछा, “Visitors क्या miss करते?”

“शाम के बाद normal शहर।”

“मतलब?”

“जब tourist bus निकल गई, तब market में लोग अपने लिए खरीदते हैं. सब souvenir नहीं।”

मैंने तय किया sunset के बाद थोड़ा normal market जरूर देखूँगा।

गड़ीसर की तरफ

WATER IN A DESERT CITY

दोपहर की heat थोड़ा नीचे आने लगी तो मैं Gadisar Lake की तरफ निकला। Fort से नीचे उतरकर city का scale फिर बदल गया। Auto लेना आसान था, लेकिन पूरे दिन बहुत चलने के बाद भी मैंने पहले पैदल शुरू किया।

करीब दस minute बाद फैसला बदल गया।

यह maturity थी, weakness नहीं।

एक auto रोका। Driver ने destination सुना और fare बताया। मैंने negotiate किया।

इस बार मैंने अपनी number नीचे ही रखी।

मैं सीख रहा था।

Lake के आसपास का वातावरण fort की dense lanes से अलग था। खुला sky, water surface, ghats/structures, birds, visitors धीरे चलते हुए. Desert city में पानी का दृश्य psychological भी लगता है - सिर्फ सुंदर नहीं, precious.

मैं किनारे बैठ गया। हवा में थोड़ा ठंडापन था। पानी पर sunlight चमक रही थी। कुछ boats चल रही थीं। Tourist photos, couples, families, vendors.

एक आदमी roasted chana और peanuts बेच रहा था। मैंने छोटा packet लिया।

उसने पूछा, “किले से?”

“हाँ।”

“पूरा देखा?”

मैंने कहा, “पूरा कोई एक दिन में देखता है?”

वह मुस्कराया। “सही जवाब।”

मैंने पूछा, “आप रोज यहाँ?”

“Season में. बाकी कभी दूसरी जगह।”

उसने बताया कि शाम का समय सबसे अच्छा business होता है। लोग बैठते हैं, बच्चों को snack चाहिए, boat से लौटते हैं।

Simple economy. Monument के आसपास छोटे livelihoods का जाल।

मैंने phone निकाला। Shristi का कोई नया message नहीं था।

अजीब तरह से मैंने screen दो बार check की।

फिर खुद पर हँसा।

मैं lake देखने आया था, notification नहीं।

Camera से दो photos लीं। फिर phone pocket में रखा।

कुछ minute बस पानी देखा।

शाम फिर किले पर

GOLDEN LIGHT, ORDINARY ROOFTOPS

Sunset से पहले मैं फिर fort side लौट आया। दिन भर पीला stone देखा था, लेकिन evening light ने वही surfaces बदल दीं। Bright midday beige अब warmer था। Shadows लंबी। Carvings ज्यादा deep दिखाई दे रही थीं।

मैं एक rooftop point पर गया जहाँ से fort walls और नीचे city दोनों दिखाई देते थे। भीड़ थी, लेकिन इतनी नहीं कि जगह न मिले।

लोग sunset का इंतजार कर रहे थे। कुछ camera tripods. कुछ सिर्फ phones. एक बच्चा chips खा रहा था और उसके parents उसे repeatedly frame से हटने को कह रहे थे।

मैं parapet से सुरक्षित दूरी पर बैठ गया।

Sun नीचे गया तो sandstone literally glow नहीं कर रहा था जैसा promotional language कहती है; उससे ज्यादा subtle था। रंग धीरे warm हुआ, फिर कुछ minute बाद muted. आकाश pale orange से grey-blue में. शहर की lights एक-एक करके on.

मैंने photo ली।

फिर Shristi को भेजी।

उसका reply आया:

“ये वाली मुझे पसंद है.”

मैंने पूछा:

“क्यों?”

कुछ देर कोई reply नहीं।

फिर:

“पता नहीं. बस है.”

मैंने screen देखा।

मैंने मज़ाक किया:

“Professional review.”

इस बार dots नहीं आए।

कुछ minute बाद बस:

“हाँ.”

उसका जवाब छोटा था।

मैंने सोचा शायद पढ़ाई में busy होगी।

Phone रख दिया।

पाँच minute बाद मुझे लगा शायद मेरा joke बेकार था।

फिर सोचा - इतना overthink क्यों?

मैंने sunset देखा।

Reader शायद उस समय मुझसे ज्यादा समझदार होता।

रात का असली बाज़ार

AFTER THE DAY-TRIPPERS LEAVE

इमरान की बात याद थी - tourist buses निकलने के बाद normal market देखना।

मैं fort से नीचे आया। कुछ shops still tourists के लिए open, लेकिन दूसरी तरफ grocery, medicine, mobile repair, vegetable stalls, मिठाई की दुकानें, लोग घर का सामान खरीदते हुए।

एक जगह गरम दूध बड़े कड़ाह में उबल रहा था। ऊपर मलाई की मोटी layer. बगल में sweets. मैंने पूछा, “क्या famous?”

दुकानदार ने घोटुआ लड्डू का नाम लिया।

मैंने इस बार pronunciation ध्यान से सुना।

फिर बोला।

वह बोला, “हाँ, सही।”

यह उपलब्धि थी।

लड्डू texture में बहुत smooth नहीं था; grainy, ghee-rich, sweet, cardamom की खुशबू. Bite लेते ही crumble और melt दोनों. बहुत भारी भी. मैंने दूसरा लेने का विचार तीन seconds में cancel किया।

साथ में गरम दूध लिया। ऊपर मलाई की छोटी layer. Sugar पहले से थी। मैंने extra नहीं डाली।

यह character development था।

फिर taste किया।

एक spoon और sugar डाल दी।

Character development postponed.

दुकान के पास दो local young men cricket और किसी job exam पर बात कर रहे थे। मुझे Chapter 16 का Saurabh याद आया। India में city बदलती है, concerns repeat होते हैं।

मैंने conversation join नहीं की। हर बार stranger dialogue collect करना भी artificial होता। कुछ आवाज़ें background में रहनी चाहिए।

मैं धीरे-धीरे hotel की तरफ चला।

आज पूरा दिन monument से ज्यादा surfaces, smells, food और ordinary interruptions में बीता था। यही मुझे चाहिए था।

होटल की छत पर रात

A QUIET END TO A FULL DAY

Hotel लौटकर shoes उतारे तो पैर गर्म थे। पानी पिया। Camera battery charge पर लगाई। कपड़ों से हल्की dust झाड़ी। फिर छत पर चला गया।

रात में fort अलग था। Floodlights/ambient city lights में walls visible, लेकिन दिन की detail गायब. बस silhouette और mass. नीचे streets की आवाज़ कम. कहीं dog bark. दूर bike. एक rooftop से music बहुत धीमा.

मैंने phone देखा।

Shristi का message था:

“Dinner?”

मैंने लिखा:

“घोटुआ laddoo + दूध.”

Reply तुरंत:

“वो dinner नहीं है.”

मैंने लिखा:

“Rajasthan में है.”

उसने लिखा:

“झूठ बोलना बंद करो और कुछ खाओ.”

मैंने नीचे restaurant से simple dal-roti order कर दी।

पाँच minute बाद message भेजा:

“Happy?”

Dots आए।

“थोड़ी.”

मैंने मज़ाक में लिखा:

“इतनी concern क्यों?”

Message send हो गया।

कुछ seconds तक कोई reply नहीं।

फिर एक minute.

फिर दो.

मुझे लगा शायद network.

Finally reply:

“क्योंकि तुम अकेले travel कर रहे हो और basic चीजें भूल जाते हो.”

मैंने पढ़ा।

Fair answer.

मैंने लिखा:

“Good friend.”

इस बार reply आने में और समय लगा।

“हाँ.”

बस।

मैंने उसे good night लिखा।

उसने भी।

Dal-roti आई। मैंने खाई।

फिर छत पर वापस बैठ गया।

मुझे उस छोटे “हाँ” में कुछ अलग लगा था। लेकिन मैं उसे tiredness, पढ़ाई, late night - किसी भी practical explanation में रख सकता था।

और मैंने वही किया।

क्योंकि मैं signals पढ़ने में उतना अच्छा नहीं था जितना railway boards पढ़ने का दावा करता था।

नीली डायरी - सिर्फ दो मिनट

THE NOTEBOOK STAYS SMALL

सोने से पहले backpack खोलते हुए blue diary दिखी।

मैंने उसे बाहर निकाला।

Jaisalmer वाले page पर वही short notes थे:

fort - inhabited.

yellow stone.

wind wear.

old rail structure.

आज के पूरे दिन के बाद पहली line सबसे meaningful थी।

“inhabited.”

Diary owner ने भी शायद fort को सिर्फ battle और king के through नहीं देखा था। उसने notice किया था कि लोग रहते हैं।

मैंने नीचे अपनी handwriting में एक line जोड़ी नहीं। Diary मेरी नहीं थी।

अपनी notebook में लिखा:

“किले को समझने के लिए उसकी दीवारें देखो. उसे याद रखने के लिए उसके भीतर का breakfast.”

फिर diary बंद कर दी।

दो minute से ज्यादा नहीं।

यही सही proportion था।

अगला दिन - शहर से रेगिस्तान

TOMORROW, THE THAR

अगले दिन desert side जाना था। Shared jeep की बात hotel reception पर हो चुकी थी। किसी village route, dunes और sunset तक का rough plan था। मैं tourist camel-photo package नहीं, रास्ते का transition देखना चाहता था - city कहाँ खत्म होती है, scrub कहाँ शुरू, road किस तरह खाली होती है, और पानी की bottle कितनी जल्दी important object बन जाती है।

Reception वाले ने कहा था:

“सुबह पानी extra रखना।”

मैंने दो bottles रखीं।

फिर तीसरी भी।

रघुवीर Singh की Ayodhya-Lucknow bus वाली बात याद आई:

“पानी पहले देखो, सोने की जगह बाद में।”

कुछ सलाह city बदलने के बाद भी साथ चलती हैं।

Alarm लगाया।

तीन नहीं।

चार।

Experience ने मुझे improve नहीं किया था, सिर्फ redundancy सिखाई थी।

Phone side में रखा।

Screen आखिरी बार जली। Shristi का नया message:

“कल desert में network गया तो पहले बता देना. मैं बेवजह wait नहीं करूँगी.”

मैंने बिना ज्यादा सोचे लिखा:

“तुम wait करती हो?”

Send.

कुछ seconds dots.

फिर गायब.

फिर dots.

फिर message:

“सो जाओ.”

मैं हँसा।

“Good night, Joshi.”

उसने लिखा:

“Good night.”

मैंने phone उल्टा रख दिया।

मुझे लगा उसने सवाल avoid किया।

लेकिन क्यों - यह सोचने से पहले नींद आ गई।

CHAPTER TWENTY-TWO

थार के अंदर

INTO THE THAR

जैसलमेर से रेगिस्तान की ओर

Road, Village, Dunes, Local Food & Sunset - Morning to Late Evening

"रेगिस्तान खाली नहीं होता। वह बस शहर की आवाज़ें इतनी दूर कर देता है कि छोटी चीज़ें सुनाई देने लगती हैं।"

सुबह चार alarms में से तीन बेकार गए।

चौथे ने काम किया।

या शायद शरीर ने हार मान ली थी।

मैंने आँख खोली तो कमरे की खिड़की से बाहर जैसलमेर का आसमान हल्का नीला था। किले की दीवारें अभी सुनहरी नहीं हुई थीं; वे धूसर-पीली, लगभग शांत थीं। रात की हवा की थोड़ी ठंडक बची हुई थी।

पहला काम - पानी।

दूसरा - camera battery.

तीसरा - sunscreen.

चौथा - sunscreen कहाँ है?

मैंने backpack पूरा खोल दिया। कपड़े निकले। charger निकला। notebook निकली। एक पुरानी receipt निकली। sunscreen नहीं।

फिर bathroom गया।

वह sink के पास रखा था।

मैंने खुद से कहा, “तुम travel नहीं करते. तुम सामान छिपाकर खुद ढूँढते हो।”

यह line Shristi की हो सकती थी। इसलिए उसे message नहीं किया।

* * *

होटल के बाहर पहली चाय

SWEET TEA BEFORE THE DESERT

Jeep का pickup होटल के बाहर तय था। Driver ने कहा था, “साढ़े सात तक नीचे रहना.” मैंने सात बीस पर ही reception छोड़ दिया। अपने schedule से दस minute पहले होना मेरे लिए unusually responsible behavior था।

सड़क पर दिन धीरे-धीरे खुल रहा था। सामने tea stall पर दूध उबल रहा था। चाय वाले ने long-handled steel spoon से चाय ऊपर उठाकर वापस भगोने में गिराई। अदरक की हल्की खुशबू थी, लेकिन इलायची ज्यादा साफ आ रही थी।

मैंने कहा, “एक चाय. चीनी ज्यादा.”

उसने पूछा, “कितनी ज्यादा?”

यह महत्वपूर्ण सवाल था।

“Normal से एक चम्मच ज्यादा.”

उसने मुझे देखा।

“यहाँ normal ही ज्यादा है.”

मैंने कहा, “तो सही है.”

चाय छोटे glass में आई। दूध गाढ़ा, रंग गहरा beige, ऊपर बहुत पतली मलाई की line. पहला sip लेते ही गर्मी जीभ पर लगी, फिर इलायची और उसके पीछे साफ मिठास। इतनी मीठी कि Moscow के मेरे कुछ दोस्त इसे dessert कहते। मेरे लिए यह breakfast का constitutional right था।

मैंने साथ में एक छोटा mirchi bada भी ले लिया।

गलती यहीं हुई।

दिखने में वह harmless था - besan की golden coating, अंदर मोटी हरी मिर्च और आलू-मसाले की filling. मैंने सोचा पिछली यात्राओं ने मुझे trained कर दिया है।

पहला bite अच्छा था। आलू नरम, हल्का खट्टा, ajwain और coriander की खुशबू। Besan crisp. मिर्च शुरुआत में mild.

फिर उसने अपना असली परिचय दिया।

मैंने तुरंत चाय का sip लिया।

गलती नंबर दो।

गरम मीठी चाय ने मिर्च को बुझाया नहीं; दोनों ने मिलकर mouth में joint venture शुरू कर दिया।

चाय वाला मुस्करा रहा था।

“तीखा?”

मैंने आँख पोंछते हुए कहा, “हवा सूखी है.”

वह बोला, “हवा आँख में नहीं, मिर्च मुँह में गई है.”

मेरी dignity फिर desert जाने से पहले ही उतर चुकी थी।

Phone vibrate हुआ।

Shristi:

“पानी रखा?”

मैंने लिखा:

“तीन bottles.”

Reply:

“Cap?”

मैंने सिर छुआ।

Cap hotel room में थी।

मैंने screen को कुछ seconds देखा।

फिर वापस ऊपर भागा।

Reception वाला मुझे जाते देख बोला, “क्या भूल गए?”

मैंने सीढ़ियों से जवाब दिया, “अपना सिर.”

साझा जीप

A VEHICLE FULL OF STRANGERS

Jeep आई तो वह tourist brochure वाली shiny vehicle नहीं थी। सफेद रंग, किनारों पर desert dust की परत, dashboard पर छोटा लाल धागा और rear-view mirror के पास एक सूखा नींबू-मिर्च का पुराना गुच्छा।

Driver का नाम हिम्मत सिंह था। उम्र चालीस के आसपास। मूँछें इतनी व्यवस्थित कि मेरी पूरी यात्रा की planning उनसे कम disciplined लगती थी।

“आप Moscow वाले?” उसने पूछा।

मैंने चौंककर hotel reception की तरफ देखा।

“इतनी जल्दी खबर?”

“होटल वाले ने बताया. अकेले हो. camera है. देर मत करना.”

मेरी पहचान फिर route से पहले पहुँच चुकी थी।

Jeep में पहले से चार लोग थे। दिल्ली से आए एक married couple - प्रिया और निखिल; Pune का एक architecture student ईशान; और जैसलमेर के पास के गाँव में पढ़ाने वाली सरकारी school teacher कविता, जो रास्ते के एक हिस्से तक हमारे साथ जाने वाली थीं।

पीछे सामान adjust हुआ। मैं window-side corner में बैठा। Camera bag knees पर. पानी नीचे. Cap सिर पर.

हिम्मत सिंह ने engine start किया।

“सब?”

मैंने तुरंत pocket check किया.

Phone.

Wallet.

Camera.

Notebook.

Room key.

Room key.

मैं freeze हुआ.

Reception की key pocket में थी।

मैंने कहा, “एक minute.”

पूरी jeep ने मुझे देखा।

मैं भागकर key लौटाने गया।

वापस आया तो निखिल ने पूछा, “पहला दिन travel कर रहे हो?”

मैंने कहा, “नहीं. यही problem है.”

* * *

शहर से बाहर निकलते हुए landscape धीरे-धीरे बदला। शुरुआत में छोटी hotels, repair shops, fuel pumps, tyre puncture, stone yards, tea stalls. फिर घरों के बीच दूरी बढ़ी। सड़क की दोनों तरफ मिट्टी ज्यादा खुली दिखने लगी।

जैसलमेर को दूर से golden city कहना आसान है। बाहर निकलते ही समझ आता है कि वही yellow tone सिर्फ architecture में नहीं; जमीन, धूल, सूखी घास, stone, दूर की low hills - सब एक ही family के अलग shades हैं।

कहीं scrub bushes थीं। कहीं छोटे thorny trees. कहीं goats का झुंड। कहीं दो camels सड़क से दूर चलते दिखाई दिए।

मैंने camera उठाया।

हिम्मत सिंह ने mirror में देखा।

“अभी से photo? आगे क्या करोगे?”

“Storage काफी है.”

ईशान बोला, “Problem storage की नहीं, selection की होती है.”

मैंने कहा, “Book लिखने के बाद समझ आया.”

निखिल ने पूछा, “Book?”

बस, फिर वही सवालों का round शुरू हुआ। Moscow. Delhi. Mathura. Vrindavan. Varanasi. Ayodhya. Lucknow. Prayagraj. Jaipur. Jaisalmer.

प्रिया ने route सुनकर कहा, “आप छुट्टी पर हो या किसी ने घर से निकाल दिया?”

Jeep में पहला सामूहिक हँसी का दौर पूरा हुआ।

शहर कहाँ खत्म होता है?

THE ROAD BECOMES THE LANDSCAPE

लगभग आधे घंटे बाद पीछे का शहर completely गायब था। अब road सिर्फ destination तक पहुँचने का साधन नहीं रही। वही chapter बन गई।

सड़क की surface कभी smooth, कभी छोटे patches वाली। Tyres के नीचे लगातार low hum. Window से आती हवा dry थी और जैसे-जैसे सूरज ऊपर गया, उसमें warmth बढ़ती गई।

मैंने हाथ बाहर नहीं निकाला। बस glass के पास रखा। Sunlight skin पर तुरंत महसूस होती थी।

कविता ने कहा, “दोपहर तक यही हवा अलग लगेगी.”

“कितनी गर्म?”

“इतनी कि आप cap के लिए वापस जाने पर खुश होंगे.”

मैंने phone निकाला और Shristi को सिर्फ एक line भेजी:

“Cap saved my reputation.”

Reply आया:

“Reputation बची कहाँ है?”

मैं हँसा।

प्रिया ने पूछा, “किसका message?”

“एक दोस्त.”

“ऐसा दोस्त जो cap याद दिलाता है?”

मैंने कहा, “Medical student है. सबको instructions देती है.”

मुझे यह explanation पूरी तरह logical लगी।

प्रिया ने निखिल की तरफ देखा। दोनों ने कुछ नहीं कहा।

मुझे उनका कुछ न कहना थोड़ा suspicious लगा, लेकिन मैंने बाहर देखना ज्यादा safe समझा।

Road के दोनों तरफ कुछ दूरी पर wind-shaped sand patches थे, लेकिन मेरे tourist imagination वाला endless dune sea अभी नहीं आया था। असली desert transition ज्यादा gradual था। Hard ground. Scrub. Sandy stretches. Pastoral movement. Small settlements. Electric poles. कहीं solar panels चमकते हुए।

ईशान ने कहा, “हम desert को अक्सर empty draw करते हैं.”

कविता ने तुरंत जवाब दिया, “क्योंकि जो लोग यहाँ रहते हैं उन्हें drawing में जगह नहीं देते.”

उसका tone sharp नहीं था। बस factual.

मैंने notebook में लिख लिया:

“Empty landscape अक्सर outsider की vocabulary होती है.”

एक छोटा गाँव

WATER BEFORE EVERYTHING ELSE

कविता जिस गाँव तक जा रही थीं, वहाँ हिम्मत सिंह ने jeep रोकी। उसने कहा, “दस minute. पानी भी देख लो.”

मैं उतर गया। Ground सड़क से हटते ही अधिक dusty और uneven था। कुछ घर sandstone और plaster के मिश्रण जैसे। एक-दो newer cement structures. दीवारों पर faded paint. Courtyard में charpai. Goats. एक घर की छत पर black water tank. दूसरी तरफ solar panel.

यह postcard village नहीं था। Modern और traditional चीजें बिना explanation एक साथ थीं।

कविता ने school की दिशा दिखाई। “वहाँ तक जा रही हूँ.”

हमने पूछा, “देख सकते हैं?”

वह मुस्कराई. “School है, attraction नहीं. बाहर तक आ सकते हो. Class disturb नहीं.”

सही correction.

हम बाहर तक गए। Compound छोटा था। बच्चों की आवाज़ अंदर से आ रही थी। दीवार पर painted alphabet और numbers. एक tree की shade में दो cycles.

पास ही एक बुजुर्ग आदमी मिट्टी के बड़े circular structure के किनारे कुछ repair कर रहे थे। हिम्मत सिंह ने उनसे local dialect में बात की और फिर हमें समझाया कि पानी जमा करने की व्यवस्था है।

मैं technical claim लिखने की बजाय सिर्फ देखता रहा। Desert में पानी कोई background utility नहीं था। हर bottle, tank, storage, shade - सब suddenly visually important लगते हैं।

मैंने अपनी तीन bottles याद कीं और थोड़ा embarrassed हुआ कि शहर में मैं half bottle waste करके नई खरीद लेता हूँ।

पास एक छोटी दुकान थी। Biscuits, chips, matchboxes, sachets, cold drinks, soap. Counter पर एक steel matka भी रखा था। दुकानदार ने हमें पानी offer किया। हमने अपनी bottles refill नहीं कीं क्योंकि already full थीं, लेकिन उसने chilled नहीं, room-temperature water पीने की सलाह दी।

निखिल ने पूछा, “यहाँ tourism से फायदा होता है?”

दुकानदार ने shoulders उठाए।

“किसको क्या काम है उस पर. गाड़ी वाले, camp वाले, camel वाले, दुकान वाले - season में काम. फिर season खत्म.”

कविता ने जोड़ा, “और जो बच्चे पढ़कर बाहर जाना चाहते हैं, उनकी कहानी अलग.”

मैंने पूछा, “आप students को बाहर जाने को encourage करती हैं?”

"मैं पढ़ने को encourage करती हूँ. कहाँ जाना है यह बाद में decide करें. हर teacher अगर बोले गाँव में रहो तो wrong. हर teacher बोले शहर भागो तो भी wrong."

मुझे उसके answers पसंद आ रहे थे। उनमें slogan कम, everyday life ज्यादा था।

उसने school gate पर हमसे goodbye कहा।

"Sunset के बाद जल्दी ठंड लगेगी. Day heat देखकर sweater भूलना मत."

मैंने पूछा, "आपको भी कैसे पता मैं चीजें भूलता हूँ?"

वह बोली, "आपकी पूरी jeep को पता चल गया."

बाजरे की रोटी और लहसुन की चटनी

A DESERT LUNCH

दोपहर से थोड़ा पहले हम एक छोटे family-run खाने की जगह रुके। यह large resort नहीं था। सड़क से हटकर कुछ low rooms, shade के लिए fabric canopy, चारपाइयाँ और एक open kitchen जैसा हिस्सा।

हिम्मत सिंह ने कहा, "यहाँ simple खाना मिलेगा. जल्दी नहीं."

मैंने कहा, "यही चाहिए."

मेरे stomach ने भी सहमति दी। Mirchi bada का इतिहास अब दूर हो चुका था।

Plate steel की थी। पहले chaach आया। हल्का नमकीन, roasted cumin की खुशबू, ऊपर थोड़ा coriander. शहर में thick lassi के बाद यह बिल्कुल opposite था - पतला, ठंडा, direct. पहला glass इतनी जल्दी खत्म हुआ कि मुझे खुद notice नहीं हुआ।

फिर बाजरे की रोटी आई। Wheat roti की तरह soft elastic नहीं। मोटी, थोड़ा crumbly, surface पर dark roasted spots. ऊपर हल्का ghee लगाया गया था जो गर्मी से धीरे-धीरे absorb हो रहा था।

साथ ker-sangri की सब्ज़ी, gatte की gravy, लहसुन की लाल chutney, थोड़ा गुड़, onion, papad और dal.

मैंने सबसे पहले लहसुन chutney का बड़ा हिस्सा उठा लिया।

हिम्मत सिंह ने कहा, “थोड़ी.”

मैंने mirchi bada की सुबह याद की।

इस बार मैंने advice मानी। Character development.

Bajra roti का पहला bite अकेले थोड़ा dry लगा, लेकिन dal के साथ उसका texture बदल गया। Grainy, earthy taste; ghee की गर्म richness. Ker-sangri में tangy-spiced depth थी, texture कहीं chewy, कहीं soft. यह वह dish नहीं थी जिसे taste समझने के लिए दो seconds काफी हों। हर bite में अलग element आता।

Gatte की gravy ज्यादा familiar comfort थी - besan के firm pieces, मसालेदार yogurt-like gravy, हल्की खटास. लहसुन chutney sharp, smoky-hot, ऐसी कि थोड़ी मात्रा पूरी plate का स्वाद बदल दे।

और बीच में गुड़.

Mirchi के बाद छोटा मीठा piece. पूरा palate reset.

मैंने कहा, “यह combination किसने बनाया होगा, genius था.”

रसोई से महिला की आवाज़ आई, “हमने नहीं बनाया. पुराना है.”

मैंने हँसकर कहा, “Credit फिर भी आपको.”

Photo लेना याद आया जब plate आधी खत्म हो चुकी थी।

मैंने camera निकाला.

ईशान बोला, “अब क्या photo? Evidence destroy हो चुका.”

मैंने ऊपर से plate arrange करने की कोशिश की। Bajra roti का आधा piece rotate किया। Papad सीधा किया। Bowl आगे रखा.

प्रिया बोली, “खाना है या crime scene reconstruct कर रहे हो?”

मैंने camera नीचे रख दिया।

Food फिर camera से जीत गया।

रेगिस्तान का दोपहर भोजन: बाजरे की रोटी का earthy, थोड़ा crumbly texture अकेले नहीं, dal, ghee और तीखी लहसुन chutney के साथ खुला। Ker-sangri का मसालेदार-खट्टा स्वाद और बीच-बीच में गुड़ का छोटा टुकड़ा plate को heavy होते हुए भी monotonous नहीं होने देता। Chaach सबसे practical हिस्सा था - ठंडा, हल्का और धूप के बीच राहत देने वाला।

खाने के बाद charpai पर दस minute बैठना plan था।

मैं लेट गया।

आँख बंद की।

हिम्मत सिंह की आवाज़ आई:

“चलें?”

मैंने phone देखा.

तीस minute हो चुके थे।

Travel में power nap और accidental coma के बीच thin line होती है।

जीप का रास्ता छोड़ना

WHEN THE ROAD GETS SMALLER

Lunch के बाद main road कुछ समय तक रहा, फिर एक narrower road पर turn लिया। Surface अभी भी बनी हुई थी, लेकिन traffic almost गायब। कभी motorcycle. कभी local jeep. कभी tractor.

दूर horizon अब ज्यादा बड़ा था। Buildings almost नहीं। Sky frame का सबसे बड़ा हिस्सा बन गया।

मैंने पहली बार समझा कि desert photography में आकाश इतना महत्वपूर्ण क्यों लगता है। शहर में buildings horizon काटती हैं। यहाँ sky ground तक आता हुआ लगता था।

हवा में dust थी, लेकिन visibility साफ। दूर के objects distance का भ्रम पैदा करते। कोई tree पास लगता, फिर पाँच minute drive के बाद भी दूर।

हिम्मत सिंह ने कहा, “यहाँ distance आँख से मत नापना.”

मैंने पूछा, “फिर?”

“गाड़ी से.”

Simple.

कुछ समय बाद उसने jeep road से हटाकर harder sandy track पर उतारी। Tyre sound बदल गया। Steering में movement ज्यादा दिखाई दे रही थी। Vehicle हल्का sway करता।

प्रिया ने seat पकड़ ली। निखिल excited. ईशान camera तैयार.

मैंने भी camera उठाया.

पहला bump.

Camera मेरे माथे से almost टकराया.

मैंने नीचे रख दिया.

हिम्मत सिंह mirror में बोला, “पहले बैठना सीखो, फिर cinema बनाना.”

Jeep में दूसरी सामूहिक हँसी।

Track के दोनों तरफ sandy mounds बढ़ने लगे, लेकिन बीच-बीच में bushes और hard patches अब भी थे। यह continuous dune ocean नहीं था। Landscape patchwork था।

एक जगह camel herd दूर दिखाई दिया। उनके लंबे silhouettes ground से अलग लगते। Slow movement. No hurry.

मैंने पूछा, “Wild?”

हिम्मत सिंह ने लगभग offended होकर कहा, “किसी के हैं.”

मेरे urban brain ने फिर landscape को documentary बना दिया था।

ऊँट पर चढ़ने की महान उपलब्धि

THE CAMEL HAS OTHER PLANS

Dunes के पास एक small camel point था। कुछ local handlers visitors को short rides दे रहे थे। मैंने पहले decide किया था कि camel ride जरूरी नहीं। फिर सामने बैठा camel देखा और decision कमजोर हो गया।

Handler का नाम सलीम था। उसने पूछा, “पहली बार?”

मैंने कहा, “ऊँट पर? हाँ.”

“डरना मत.”

जब कोई activity शुरू होने से पहले specifically कहे “डरना मत”, confidence automatically कम हो जाता है।

Camel बैठा हुआ था। मैं saddle पर चढ़ा। यह आसान part था।

सलीम ने कहा, “पीछे झुकना.”

मैंने पूछा, “कितना?”

उसने जवाब देने से पहले camel उठना शुरू कर चुका था।

पहले पीछे का हिस्सा ऊपर गया। मेरा शरीर आगे। फिर front उठा। मेरा शरीर पीछे। कुछ seconds में मुझे gravity, faith और saddle handle तीनों की जरूरत पड़ी।

मेरे मुँह से जो आवाज़ निकली वह भाषा नहीं थी।

नीचे निखिल हँसते-हँसते camera चला रहा था।

मैंने ऊपर से कहा, “Photo delete करना.”

उसने कहा, “Book cover.”

Camel चल पड़ा।

ऊपर से ground अलग दिखती। Height बहुत ज्यादा नहीं, लेकिन motion unfamiliar था। हर step शरीर तक आता। शुरुआत में मैं saddle को unnecessary force से पकड़ रहा था। पाँच minute बाद shoulders relax हुए।

सलीम camel के साथ पैदल चल रहा था। उसने local tourism season की बात की।

“काम कब अच्छा?”

“ठंड में. गर्मी में कम लोग.”

“बाकी समय?”

“जानवर देखना, घर का काम, जो मिले.”

उसने अपने camel का नाम बताया - बादल।

मैंने sky देखा। एक भी cloud नहीं।

“बादल?”

वह हँसा। “नाम में तो हो.”

Desert humor efficient था।

Ride बहुत लंबी नहीं थी। लौटकर camel नीचे बैठा।

सलीम ने कहा, “पीछे.”

मैं इस बार ready था.

Camel ने पहले front नीचे किया।

मैं फिर गलत direction में झुका।

Ready होना और सही होना अलग चीजें हैं।

नीचे उतरकर मैंने बादल की गर्दन पर हाथ नहीं फेरा; पहले ground को धन्यवाद दिया।

रेत पर चलना

TEN STEPS FEEL LIKE TWENTY

अब dunes तक पैदल जाना था। दूरी देखकर मुझे लगा पाँच minute.

हिम्मत सिंह ने कहा, “पंद्रह.”

मैंने मन में सोचा exaggeration.

बारह minute बाद मैं उससे माफी माँगने की स्थिति में था।

Sand पर चलना flat road का walking नहीं। Foot नीचे जाता, heel settle होती, अगला step extra effort मांगता। Shoes के अंदर धीरे-धीरे रेत आने लगी।

मैंने एक point पर shoes उतारने की सोची। ईशान barefoot चल रहा था।

मैंने भी उतारे.

पहले तीन steps बहुत अच्छे। Sand warm, soft.

चौथे step पर surface hotter.

पाँचवें पर मैंने shoes वापस पहन लिए।

ईशान बोला, “Architecture student advantage.”

मैंने पूछा, “क्या?”

“हम site visits में पहले ही suffer करते हैं.”

Dune crest तक पहुँचकर हवा तेज लगी। नीचे से जो surface smooth दिखती थी, ऊपर close देखकर लगातार tiny lines थीं - wind ने बनाई हुई ripples. हर कुछ seconds में very fine sand surface पर slide करती दिखाई देती।

मैं बैठ गया।

पहला instinct camera.

फिर खुद को रोका.

पाँच minute सिर्फ देखा।

Sky बड़ा। Ground shape बदलता हुआ। दूर कुछ people छोटे dots. किसी dune के पीछे vehicle hidden. एक तरफ camel line. दूसरी दिशा much quieter.

Sound surprisingly complex थी। हवा सबसे loud. फिर दूर voices. कहीं bell. कहीं jeep engine low hum. पास sand पर कदम का soft crunch. कपड़ों का flutter.

रेगिस्तान silent नहीं था। बस city की तरह लगातार competing sounds नहीं थीं।

मैंने phone airplane mode पर कर दिया।

फिर याद आया Shristi ने कहा था network जाए तो बता देना।

Airplane mode वापस off.

Message:

“Dunes पहुँच गया. अब network गया तो चिंता मत करना.”

Reply लगभग तुरंत:

“मैं चिंता नहीं करती.”

तीन seconds बाद दूसरा message:

“बस पानी पीते रहना.”

मैं मुस्कराया।

Phone फिर airplane mode.

किसी कारण “मैं चिंता नहीं करती” वाली line ज्यादा देर दिमाग में रही।

दिशा का छोटा भ्रम

EVERY DUNE LOOKS FAMILIAR

Sunset में अभी समय था। हम लोग अलग-अलग आसपास घूमने लगे। Himmat Singh ने clear instruction दिया:

“Jeep उस side. बड़ा खेजड़ी का पेड़ याद रखना.”

मैंने पेड़ देखा। Distinctive.

Easy.

मैं camera लेकर दूसरी dune की तरफ चला। वहाँ से एक और angle. फिर नीचे उतरकर तीसरी. फिर एक low ridge.

दस minute बाद पीछे देखा।

तीन पेड़ दिख रहे थे।

सभी मुझे वही distinctive पेड़ लगे।

मैंने compass app खोलने की कोशिश की। Phone airplane mode पर था, जैसे compass को network चाहिए होता। फिर खुद पर हँसा।

Actual problem orientation थी, technology नहीं।

मैंने footprints देखे। हवा ने कुछ edges soften कर दी थीं।

एक second के लिए adventure novel वाला music दिमाग में शुरू हो सकता था। लेकिन दूर से निखिल की आवाज़ आई:

“Moscow!”

मैंने हाथ उठाया.

वह सिर्फ एक dune पीछे था।

मैं खोया नहीं था।

मैं dramatic होने से लगभग एक minute दूर था।

वापस पहुँचा तो हिम्मत सिंह बोला, “पेड़ याद था?”

मैंने कहा, “पेड़ बहुत थे.”

“यहाँ तीन हैं.”

“यही तो problem.”

उसने सिर हिलाया।

“शहर वाला आदमी desert में numbers बढ़ा देता है.”

मुझे Lucknow की diary theory याद आई और मैं ज्यादा हँसा जितना बाकी लोग समझ पाए।

चाय, रेत और इंतज़ार

THE HOUR BEFORE SUNSET

Sunset से पहले की एक hour सबसे अच्छी निकली। कोई बड़ा event नहीं। बस light धीरे-धीरे बदलती रही।

एक temporary tea setup पर kettle थी। हमने chai ली। यहाँ glass छोटा, chai strong और sweet. मैंने extra sugar माँगने की जरूरत नहीं समझी।

Tea के साथ छोटे mathri-like snacks थे। Dry, crisp, ajwain की खुशबू. Sand में बैठकर ऐसा snack practical था - gravy नहीं, plate नहीं, जल्दी खराब नहीं।

मैंने cup sand पर रखा और camera से photo लेने लगा।

हवा का छोटा gust आया।

Cup गिरा नहीं, लेकिन थोड़ा tilt हुआ और tea sand में spill.

Tea seller ने बिना expression बदलें कहा, “Photo अच्छा आया?”

मैंने camera screen देखा.

Photo mediocre.

“नहीं.”

“तो चाय भी गई.”

उसने दूसरा half cup दे दिया। मैंने पैसे देने चाहे। उसने कहा, “इतना ही था, रहने दो.”

मैंने फिर भी payment किया।

Travel में kindness हमेशा बड़ा gesture नहीं होती। कभी आधा cup chai होती है।

पास बैठा elderly tourist अपने grandson को sand से छोटा fort बनाना सिखा रहा था। बच्चा हर tower के बाद हाथ से खुद गिरा देता। Grandfather फिर बनाते।

मैंने पूछा, “क्यों गिराता है?”

बुजुर्ग बोले, “बनाने से ज्यादा मज़ा गिराने में है.”

History का compressed version.

सूरज नीचे जाता है

SUNSET WITHOUT A FILTER

Sunset शुरू होने का कोई official moment नहीं होता। पहले बस light warmer लगती है। फिर shadows लंबी। फिर sky का blue थोड़ा soft. फिर अचानक सब लोग एक direction में देखने लगते हैं और आपको पता चलता है कि main event शुरू हो गया।

मैं dune crest पर बैठा था। Shoes में sand. Cap अब bag में. हवा बालों को उस hairstyle में ले जा रही थी जिस पर कोई national policy सच में नहीं हो सकती।

Sun disk sharp था। शहर की तरह buildings या pollution layer के पीछे fragmented नहीं। Horizon के ऊपर साफ, orange-white circle.

Sand का रंग भी बदलता गया। दोपहर का pale yellow अब warm gold. Shadow side grey-brown. Ripple lines ज्यादा visible. हर footprint longer shadow छोड़ रहा था।

Camel silhouettes दूर black cut-outs जैसे। कुछ लोग phones ऊपर किए। कुछ बैठे। कुछ बच्चों ने sunset की तरफ attention ही नहीं दिया और sand slide करते रहे।

मैंने camera से तीन photos लीं।

फिर बंद कर दिया।

यह conscious practice अब सीख रहा था। Photo लेना memory का substitute नहीं होना चाहिए।

Sun horizon के करीब गया। Light suddenly softer. हवा का तापमान भी जैसे कुछ degree कम महसूस हुआ।

और फिर sun का lower edge ground को touch करता हुआ लगा।

कुछ minute.

बस.

Day का इतना बड़ा object इतनी quietly गायब हो गया।

लोग clap नहीं कर रहे थे। कोई announcement नहीं।

बस कुछ voices धीमी।

मुझे यही अच्छा लगा।

Varanasi की Aarti में sunset के बाद fire ने space भर दिया था। यहाँ sun के जाने के बाद space खाली नहीं हुआ; sky ने काम संभाल लिया।

मैंने phone airplane mode से निकाला। Network weak था, लेकिन message चला गया। मैंने Shristi को sunset photo भेजी।

उसने लिखा:

“बहुत सुंदर.”

फिर:

“तुम्हारी कोई photo?”

मैंने लिखा:

“Camera मेरा है.”

कुछ देर बाद reply:

“किसी से कह देते.”

मैंने हँसकर निखिल से एक photo लेने को कहा।

उसने लगभग दस लीं।

एक में आँख बंद। एक में cap उड़ती हुई। एक में पीछे camel exactly मेरे सिर से निकलता दिख रहा था।

आखिर एक ठीक मिली।

मैंने Shristi को भेज दी।

Reply आने में थोड़ा समय लगा।

फिर सिर्फ:

“हाँ. ये रख लेना.”

मैंने पूछा:

“इतनी अच्छी?”

उसने लिखा:

“Background अच्छा है.”

मैंने उसका मज़ाक समझकर laughing emoji भेज दिया।

अगर उस line में कुछ और था, मैं फिर miss कर गया।

सूरज के बाद की ठंड

THE DESERT CHANGES FAST

कविता की warning सही निकली। Sun जाते ही हवा का character बदल गया। अभी तक वही wind गर्म skin पर राहत थी। कुछ ही देर में sleeves जरूरी लगीं।

मैंने light jacket निकाली।

निखिल ने कहा, “इतनी जल्दी?”

दस minute बाद उसने भी jacket पहन ली।

मैंने revenge नहीं लिया। बस देखा।

उसने कहा, “कुछ बोलना मत.”

“मैं civilized हूँ.”

प्रिया ने कहा, “सुबह key भूलने वाला civilized?”

Reputation फिर वापस नहीं आई।

Dunes से नीचे लौटते समय light rapidly कम हुई। Ground की details गायब होने लगीं। जो ridges sunset में सुंदर shapes थीं, twilight में navigation problem बन सकती थीं। हम group में रहे।

Sand shoes में और भरती गई। हर दस step पर लगता था socks के अंदर छोटा desert carry कर रहा हूँ।

Jeep तक पहुँचे तो मैंने shoe उतारकर उल्टा किया। Sand की छोटी stream निकली।

हिम्मत सिंह बोला, “इतनी रेत मत ले जाओ. हमारे पास कम पड़ जाएगी.”

रात का खाना और लोकधुन

DINNER UNDER A DARKER SKY

Return से पहले एक small desert camp area में dinner रखा गया था। मैं बड़े staged spectacle से थोड़ा cautious था, लेकिन यह जगह manageable थी। कुछ round बैठने की जगह, lantern-type lights, एक तरफ kitchen, दूसरी तरफ musicians के लिए low platform.

हमारे group के अलावा कुछ families और foreign travellers थे।

दो local musicians बैठे। एक bowed string instrument, दूसरी तरफ dholak-like percussion. मैं instrument identification में confident नहीं था, इसलिए notebook में वही लिखा जो देखा और सुना - एक लंबी खिंचती आवाज़, फिर rhythm, फिर आवाज़ में local folk melody.

मैंने phone recording नहीं की। बस कुछ देर सुना।

Tourism context clear था; performers काम कर रहे थे। Romanticize करना आसान है, लेकिन यह भी livelihood था। Performance खत्म होने पर tip box पास आया। मैंने दिया।

Dinner buffet simple था। Bajra roti फिर थी, लेकिन इस बार thinner. Panchmel-style dal, aloo-pyaz सब्ज़ी, ker-sangri, rice, papad, salad, chutneys और churma.

मैंने plate बनाते समय सुबह की lessons apply कीं। थोड़ा-थोड़ा.

फिर churma देखा.

थोड़ा ज्यादा.

Dal में अलग-अलग pulses की texture थी। Thick but not creamy. Ghee की aroma ऊपर. Bajra roti smoky. Ker-sangri lunch से थोड़ी ज्यादा dry और spicy. Papad crisp. Garlic chutney फिर dangerous, लेकिन अब respect established था।

Churma sweet, grainy और ghee-rich. Spoon mouth में जाते ही texture crumble हुआ; cardamom जैसी हल्की खुशबू, nuts के छोटे pieces. मैं extra sugar वाला आदमी था, इसलिए obviously मुझे पसंद आया।

प्रिया ने पूछा, “इतना sweet?”

मैंने कहा, “Dessert में moderation insult है.”

निखिल बोला, “Medical student दोस्त क्या कहती है?”

मैंने spoon रोक दिया।

“उसे मत बताना.”

तीनों हँसे।

मैंने Shristi को dinner की photo भेजने का विचार छोड़ दिया।

Self-preservation भी travel skill है।

रात का स्वाद: दिन की गर्मी के बाद गरम dal, बाजरे की रोटी और ghee की खुशबू ज्यादा comforting लगी। Churma की मिठास desert night की ठंडी हवा में surprisingly सही बैठी। Local food सिर्फ "must try" list नहीं रहा; मौसम के साथ उसका अर्थ बदलता दिखाई दिया।

तारों के नीचे पाँच मिनट

A SKY WITH LESS COMPETITION

Dinner के बाद jeep की तरफ जाने से पहले lights से थोड़ा दूर खड़ा हुआ।

यह complete astronomical darkness नहीं थी। Camps की lights थीं, vehicles थीं, दूर दूसरी activity भी। फिर भी Jaipur या Jaisalmer city की तुलना में sky much darker.

Stars ज्यादा दिखाई दे रहे थे।

मैं constellations का expert नहीं। दो-तीन familiar patterns पहचानने की कोशिश की और जल्दी छोड़ दी।

हर pattern को नाम देना जरूरी नहीं।

यही lesson blue diary ने उल्टे रास्ते से सिखाया था।

कुछ dots सिर्फ dots भी हो सकते हैं।

मैंने पाँच minute बिना camera खड़ा रहा।

Wind अब colder. Sand की smell नहीं, dry earth की feeling. कहीं दूर dog bark. Music की last notes बहुत faint.

फिर हिम्मत सिंह ने आवाज़ दी:

“Moscow! चलना है.”

मेरा नाम दिन भर में oficialmente बदल चुका था।

रात की जीप

BACK TOWARD JAISALMER

Return journey में वही road अलग लगी। दिन में जो दूर-दूर landscape था, रात में headlights के बाहर गायब। अब world दो bright cones जितना था।

Jeep के अंदर बातचीत कम। Lunch, sun, walking, dinner - सबने energy कम कर दी थी। प्रिया window पर सिर टिकाकर सो गईं। ईशान photos review कर रहा था। निखिल ने earphones लगाए।

मैं बाहर देख रहा था। कभी reflective road marker. कभी अचानक animal crossing का shadow. कभी छोटा settlement, दो-three bulbs. फिर darkness.

हिम्मत सिंह radio बहुत low volume पर चला रहा था। पुराने Hindi song की melody. Road hum के साथ mix.

मैंने पूछा, “रोज desert जाते हो?”

“Season में almost.”

“बोर नहीं?”

“आप रोज office जाते हो?”

“हाँ.”

“बोर?”

“कभी.”

“बस.”

मैंने question वापस ले लिया।

Traveller अक्सर local life को permanent adventure मान लेता है। किसी और के लिए वही route job है, fuel cost है, tyre है, payment है, season है।

कुछ देर बाद उसने खुद बात आगे बढ़ाई।

“लेकिन sunset रोज थोड़ा अलग.”

मैंने कहा, “Office में यह सुविधा नहीं.”

वह हँसा।

जैसलमेर की रोशनी वापस

THE CITY RETURNS SLOWLY

पहले दूर light cluster दिखाई दिया। फिर fuel pump. फिर roadside shops. फिर motorcycles. फिर hotel boards.

City का return भी departure की तरह gradual था। लेकिन अब urban noise comforting लगी।

किले की lit outline दूर दिखाई दी। दिन में जिस fort को अंदर से देखा था, अब jeep window से फिर monument बन गया।

होटल पर उतरते समय मैंने Himmat Singh को payment और tip दिया। उसने पूछा, “कल?”

“रात की train.”

“फिर आज सोना नहीं?”

“थोड़ा.”

उसने सिर हिलाया।

“आपको आराम से दुश्मनी है.”

मैंने हँसकर कहा, “यह line पहले भी सुन चुका हूँ.”

India की travel advice भी chain franchise की तरह repeat हो रही थी।

Room में पहुँचा। Shoes उतारे।

Sand.

Socks उतारे.

और sand.

Jeans fold की.

Sand.

Bathroom floor पर पाँच minute बाद ऐसा लगा मैं miniature dune बना रहा हूँ।

मैंने shower लिया। Hair से भी gritty feeling गई।

फिर towel लेकर bed पर बैठा।

Phone खोला।

Shristi के तीन messages थे.

“वापस?”

“Network गया?”

“या फिर phone कहीं रेत में दबा दिया?”

मैंने लिखा:

“Hotel. Alive. Phone भी.”

Reply:

“Good.”

फिर:

“आज की best चीज?”

मैंने सोचा.

Sunset?

Bajra roti?

Camel?

Village?

Stars?

आखिर लिखा:

“शहर से बाहर जाते-जाते शहर का गायब होना.”

कुछ देर बाद उसने लिखा:

“तुम हमेशा answer simple नहीं दे सकते?”

मैंने लिखा:

“Churma.”

उसने laughing emoji भेजा।

फिर एक line:

“वापस Moscow आकर भी ऐसे ही घूमते रहना. गायब मत हो जाना.”

मैंने बिना ज्यादा सोचे जवाब दिया:

“Office में रोज दिखूँगा.”

Dots आए.

फिर गायब.

फिर उसने लिखा:

“हाँ. वही.”

उसके दो शब्द थोड़े सपाट लगे।

मैंने सोचा शायद रात हो गई है। वह tired होगी।

और हमेशा की तरह practical explanation चुन लिया।

नीली डायरी आज बंद रही

NO CLUE NEEDED

Backpack pack करते समय blue diary हाथ में आई।

मैंने उसे खोला नहीं।

इतने दिनों में पहली बार यह decision effortless था।

आज मुझे किसी old engineer की note की जरूरत नहीं थी यह validate करने के लिए कि desert interesting है।

मैंने diary कपड़ों के बीच रख दी।

उसका railway story आगे कभी खुलेगा।

आज का दिन मेरा था।

Camera memory card देखा। Hundreds photos. उनमें sunset की एक ठीक frame, Himmat Singh की jeep, village road, lunch plate का आधा reconstructed crime scene, बादल camel और मेरी वह photo जिसमें background सच में अच्छा था।

मैंने Shristi वाली photo फिर खोली।

उसने लिखा था:

“ये रख लेना.”

मैंने photo favorite mark कर दी।

बस इसलिए कि अच्छी थी।

कम से कम मैंने खुद को यही reason दिया।

रात साढ़े बारह की ओर

PACKING FOR THE RETURN TRAIN

Clock तेजी से आगे बढ़ रही थी। Train रात बहुत देर की थी - technically अगला दिन शुरू होने के आसपास। मुझे Jaisalmer से वापस Jaipur की तरफ जाना था।

मैंने कपड़े बदले। Backpack पूरा बंद किया। इस बार room key पहले reception को देने का plan बनाया।

फिर check list:

Passport.

Wallet.

Phone.

Charger.

Camera.

Diary.

Ticket.

Water.

Cap.

Sand - unavoidable.

Room से निकलते समय मैं door पर रुका। Table देखा। Bathroom देखा। Charging socket देखा। Bed के नीचे देखा।

कुछ नहीं छूटा।

मैंने door बंद किया।

दो steps चला।

फिर वापस आया।

Door locked था.

Key मेरे हाथ में.

Success.

Reception वाला बोला, “आज नहीं भूले?”

मैंने key उसकी तरफ बढ़ाई।

“आज character development हुआ है.”

उसने कुछ नहीं समझा, लेकिन हँस दिया।

बाहर रात की हवा ठंडी थी। दिन की heat अब memory. Street पर कुछ restaurants बंद हो रहे थे। एक chai stall अभी खुला. Auto drivers passengers खोज रहे थे। दूर fort की wall light में steady.

मैंने backpack shoulder पर डाला।

उसके weight में आज थोड़ा extra sand जरूर था।

Station की तरफ जाने वाली सवारी रोकी।

Driver ने पूछा, “कहाँ?”

मैंने कहा, “Railway station.”

फिर पीछे मुड़कर एक बार किले की तरफ देखा।

कल सुबह मैं फिर Jaipur की direction में होता।

Desert पीछे छूटता, rail line वापस story संभालती।

और मुझे तब नहीं पता था कि दूसरी बार Jaipur पहुँचने पर शहर पहले जैसा होगा - लेकिन मेरे लिए वैसा नहीं रहेगा।

CHAPTER TWENTY-THREE

रात साढ़े बारह की ट्रेन

THE HALF-PAST-MIDNIGHT TRAIN

जैसलमेर से जयपुर

Desert Night, Sleeper Coach, Strangers & the Return East

“रात की ट्रेन में शहर नहीं बदलता दिखाई देता। सुबह आँख खुलती है और खिड़की के बाहर दुनिया पहले ही बदल चुकी होती है।”

रेत पर सूरज डूबते समय हर आदमी कुछ देर के लिए photographer बन जाता है।

जिसके पास camera नहीं था, उसके हाथ में phone था। जिसके phone की battery खत्म थी, वह दूसरे की screen में sunset देख रहा था। और मैं, जिसने पूरे दिन camera संभालकर रखा था, आखिरी दस minute में lens cap ढूँढ रहा था।

वह मेरी jeans की पीछे वाली pocket में थी।

मैंने उसे निकाला और खुद से कहा, “ठीक है. आज कम से कम cap खोई नहीं.”

पास खड़े निखिल ने पूछा, “सुबह वाली cap या camera वाली?”

मैंने कहा, “मेरे जीवन में caps बहुत हैं, व्यवस्था कम.”

रेत की ठंडी होती सतह पर हवा तेज होने लगी थी। दिन की गर्मी जैसे अचानक पीछे हट रही थी। कुछ देर पहले जिस sand पर बैठना मुश्किल था, अब वही पैरों के नीचे ठंडी लगने लगी। दूर camels वापस लौट रहे थे। उनकी लंबी silhouettes dusk में धीरे-धीरे छोटी होती जा रही थीं।

हमारी shared jeep campsite की तरफ लौटने लगी। मैं पीछे की सीट पर था। Window से आखिरी रोशनी के साथ dunes पीछे खिसक रहे थे।

Phone vibrate हुआ।

Shristi का message था:

“Train kitne baje hai?”

मैंने लिखा:

“Around 12:30. Abhi desert se वापस जा रहा हूँ.”

उसका reply तुरंत आया:

“Hotel पहुँचकर सो मत जाना.”

मैंने लिखा:

“इतना irresponsible नहीं हूँ.”

तीन dots कुछ seconds दिखे।

फिर:

“कल room key अंदर छोड़ने वाले ने ये लिखा है?”

मैंने phone बंद कर दिया।

कुछ arguments जीतने के लिए नहीं होते।

* * *

रेगिस्तान से शहर वापस

THE ROAD BACK TO JAISALMER

Jeep में लौटते समय बातचीत कम थी। दिन भर साथ रहे लोग अब अपने-अपने शरीर की थकान में वापस जा रहे थे। प्रिया सिर seat पर टिकाकर बाहर देख रही थी। ईशान camera में photos scroll कर रहा था। हिम्मत सिंह road पर उतनी ही steady नजर रखे था जितनी सुबह।

अँधेरा बढ़ा तो desert road की दुनिया headlight के cone में सिमट गई। सामने asphalt की पट्टी, दोनों तरफ scrub की झलक, कभी कोई truck, कभी दूर किसी settlement की दो-तीन lights.

दिन में landscape विशाल लगता था। रात में वही जगह आवाज़ से पहचानी जा रही थी - tyres का hum, engine, हवा, और कभी-कभी loose bottle का floor पर roll करना।

वह bottle मेरी थी।

पहले मोड़ पर वह मेरे पैर से निकलकर प्रिया की तरफ गई।

“Sorry.”

दूसरे मोड़ पर वापस आई।

निखिल ने उसे उठाकर मेरे हाथ में दिया। “इसको भी seat belt चाहिए.”

मैंने bottle bag में डाल दी।

दिन भर desert में पानी की importance पर इतना विचार करने के बाद अपनी bottle को jeep में bowling ball बनाना philosophical inconsistency थी।

करीब रास्ते के आधे हिस्से में हम एक छोटे tea stop पर रुके। दुकान कोई tourist cafe नहीं थी। Tin की छत, एक bulb, सामने दो benches, पीछे kettle और दूध का भगोना। हवा अब साफ ठंडी थी।

मैंने chai माँगी।

“चीनी?” दुकानदार ने पूछा।

“ज्यादा.”

हिम्मत सिंह ने हँसकर कहा, “सुबह भी यही.”

मैंने जवाब दिया, “कुछ values बदलती नहीं.”

Tea strong थी, दूध कम, चीनी मेरे हिसाब से सही। साथ में उसने नमकीन का छोटा bowl रख दिया। Roasted peanuts, sev और थोड़ा मसाला। दिन भर के heavy खाने के बाद simple salty crunch अच्छा लगा।

दुकान के पीछे sky ऐसा था जो शहर में कभी नहीं दिखता। पूरा dark, किनारे पर stars की छोटी line. मैंने camera निकाला।

ईशान बोला, “Tripod?”

मैंने कहा, “नहीं.”

“तो हाथ stable?”

मैंने camera वापस रख दिया।

कुछ photos न लेना भी maturity होती है।

जैसलमेर के outskirts करीब आए तो lights dense होने लगीं। पहले fuel pump. फिर repair shops. फिर hotels के illuminated signs. Golden sandstone darkness में black नहीं हुआ था; streetlights के नीचे वह warm brown दिख रहा था।

Fort दूर से रोशन था। दिन में वह शहर के ऊपर उठता हुआ पत्थर था; रात में वह जैसे हवा में तैरता हुआ wall of light लग रहा था।

Jeep होटल के सामने रुकी। हम सबने एक-दूसरे से जल्दी-जल्दी goodbye कहा। सुबह strangers थे। रात तक इतने परिचित हो गए थे कि किसी को “फिर मिलेंगे” कहना natural लगा, भले शायद कभी न मिलें।

Travel का एक छोटा cruelty यही है - intimacy जल्दी बनती है, permanence rarely.

होटल में सिर्फ पैंतालीस मिनट

SHOWER, BAG, PANIC

Room में पहुँचकर पहला काम shoes उतारना था। दूसरा, sand झाड़ना। तीसरा, यह समझना कि sand सिर्फ shoes में नहीं थी। Socks, trouser cuff, camera bag, cap, और somehow notebook के बीच भी दो छोटे grains.

रेगिस्तान souvenir permission लेकर नहीं देता।

मैंने जल्दी shower लिया। पानी बहुत गरम नहीं था, लेकिन पूरे दिन की dust उतरते ही body का temperature जैसे reset हुआ। Mirror में चेहरा red-brown दिख रहा था। Sunscreen ने कुछ काम किया था; ego ने उससे कम।

Bag pack करना theoretically आसान था क्योंकि सामान वही था। Practically हर बार ऐसा लगता था जैसे कपड़े रात में multiply हो गए हों।

एक shirt fold की। फिर याद आया नीचे वाली pocket में charger है। Charger निकाला। फिर power bank नहीं मिला। पूरा bag उलटा। Power bank bed पर था।

मैंने खुद को aloud कहा, “तुम्हारे साथ कोई चोरी नहीं करता. चीजें खुद तुमसे छिपती हैं.”

Blue diary side table पर थी।

कई chapters पहले मैं train पकड़ने से पहले उसे तीन बार check करता। अब मैंने बस उठाकर backpack के बीच रख दी।

उसका old Jaisalmer-Jaipur ticket भी वापस उसी में था। जो चीज कुछ दिन पहले mystery का center लग रही थी, अब एक पुराने traveller की ordinary journey का छोटा paper बन चुकी थी।

यह change मुझे अच्छा लगा।

हर चीज को रहस्य बने रहना जरूरी नहीं।

Phone फिर vibrate हुआ।

Shristi:

“Reached hotel?”

मैंने लिखा:

“Yes. Packing.”

Reply:

“Dinner?”

मैंने screen देखा।

दोपहर का बाजरा, dal, gatte, शाम की chai - hunger बहुत नहीं थी।

मैंने लिखा:

“Station pe kuch kha lunga.”

कुछ देर reply नहीं आया।

फिर:

“‘Kuch’ मत खाना. Proper खाना.”

मैंने smile किया।

Moscow में भी वह इसी तरह बोलती थी। खाने को लेकर उसका tone suggestion और prescription के बीच रहता था। उस समय मुझे लगता था medical students सबके साथ ऐसे ही होंगे।

आज भी यही explanation सबसे convenient था।

मैंने backpack बंद किया। Room को एक बार देखा। Bed. Charger socket. Bathroom. Window. Table.

फिर दोबारा देखा।

Passport.

Wallet.

Phone.

Camera.

Diary.

Ticket.

Water.

Room key.

इस बार key हाथ में थी।

मैंने खुद को mentally applause दिया।

रात का जैसलमेर स्टेशन

A STATION BETWEEN TWO DAYS

Hotel से station तक auto लिया। Driver young था और phone पर route map चल रहा था, जबकि रास्ता शायद उसे बिना map भी पता था।

मैंने कहा, “Station.”

उसने पूछा, “Train अभी?”

“साढ़े बारह के आसपास.”

“जल्दी हो.”

“आज responsible हूँ.”

उसने mirror में मुझे देखा, context न होने की वजह से वह line बेकार गई।

Station बाहर से quiet लगा, लेकिन अंदर आते ही समझ आया कि रात की railway अलग rhythm पर चलती है। दिन वाले vendors कम थे, families ज्यादा compact थीं। लोग bags के बीच बैठे, बच्चे आधे सोए, blankets folded, phones charging पर।

Announcement की आवाज़ empty roof में ज्यादा echo कर रही थी।

Platform की fluorescent light desert night को almost hospital-white बना रही थी। बाहर sky deep black, platform पर हर चीज harsh visible.

मैंने पहले coach position board देखा। फिर ticket. फिर board. फिर phone.

पास खड़े आदमी ने पूछा, “कौन-सा coach?”

मैंने बताया।

उसने opposite direction में इशारा किया।

मैंने confidently कहा, “मुझे लगा उधर.”

वह बोला, “लगने से train नहीं रुकती.”

मैंने backpack उठाया और direction बदल दी।

इतने शहरों के बाद भी platform पर मेरा internal compass democratic था - हर direction को chance देता था।

Food stall आधा बंद हो रहा था। मैंने पूछा, “खाने में?”

उसने steel container खोला। आलू-प्याज़ की सूखी सब्जी, rotis, dahi. Simple.

मैंने plate ली। Roti थोड़ी ठंडी थी लेकिन soft. Sabzi में प्याज़ की sweetness, cumin, हल्दी और chili. तेल ज्यादा नहीं। Side में thick dahi ने स्वाद को शांत किया। पूरे दिन regional dishes के बाद यह खाना glamorous नहीं था, लेकिन body को इसी की जरूरत थी।

मैंने slowly खाया।

फिर counter पर छोटे round sweets दिखे।

“क्या है?”

“घोटुआ.”

मैंने एक लिया।

Texture बहुत soft और dense था - जैसे बेसन और ghee को इतना महीन कर दिया गया हो कि दाने almost disappear. मिठास सीधी थी, इलायची की हल्की खुशबू, ऊपर कुछ nut fragments. छोटा piece था लेकिन heavy enough कि दूसरा लेने का विचार तुरंत cancel हो गया।

मैंने chai भी ली।

“चीनी?”

“ज्यादा.”

दुकानदार ने बिना judgement के डाल दी। यह आदमी professional था।

रात का स्टेशन खाना: दिन के elaborate desert lunch के बाद आलू-प्याज़ की साधारण सब्जी, रोटी और दही ज्यादा सही लगे। अंत में एक छोटा घोटुआ लड्डू - बहुत मुलायम, ghee-rich और साफ मीठा - Jaisalmer से निकलने से पहले dessert की तरह नहीं, शहर की आखिरी taste-memory की तरह रहा।

मैंने plate खत्म की और bench पर बैठ गया।

Train अभी नहीं आई थी।

रात के 11:40 के आसपास station एक strange waiting room था - आज खत्म हो चुका था, कल शुरू नहीं हुआ था।

मैंने phone खोला।

Shristi का message:

“खाया?”

मैंने plate की photo भेजी।

उसने reply किया:

“Good.”

फिर एक और:

“Train में चढ़कर text करना.”

मैंने लिखा:

“Madam attendance ले रही हैं?”

Reply नहीं आया।

मैंने phone pocket में रख दिया।

प्लेटफॉर्म के लोग

WHO TRAVELS AFTER MIDNIGHT?

मेरे सामने एक family बैठी थी - लगभग पचास साल का आदमी, उसकी पत्नी और college-age बेटी। उनके पास दो medium suitcases और एक cloth bag था जिसे माँ हर पाँच minute में हाथ से check करती।

कुछ देर बाद आदमी ने पूछा, “जयपुर?”

“हाँ.”

“घूमकर वापस?”

“हाँ. फिर आगे Gujarat.”

उनका नाम महेंद्र चौधरी था। जैसलमेर district से थे, Jaipur में छोटा hotel-supply business करते थे। Family कुछ दिन गाँव आई थी, अब वापस जा रही थी।

उन्होंने पूछा, “Desert देखा?”

“आज पूरा दिन.”

“कैसा लगा?”

मैंने कहा, “खाली नहीं.”

वह मुस्कराए। “अच्छा answer.”

उनकी बेटी, तन्वी, phone से नजर उठाकर बोली, “Papa हर tourist से यही पूछते हैं.”

महेंद्र बोले, “क्योंकि सब कहते हैं बहुत empty है.”

“तो?”

“हमारे लिए खाली कहाँ? गाँव, road, काम, रिश्तेदार, पानी, school - सब है. Tourist dune देखता है.”

यह line सुबह की teacher कविता की बात से मिल रही थी। एक ही दिन में दो locals ने outsider की एक ही vocabulary correct की थी।

मैंने पूछा, “Tourism से life बहुत बदलती है?”

महेंद्र ने कहा, “Season पर depend. कुछ लोग direct कमाते हैं. कुछ indirect. Hotel linen, food supply, taxi repair, water tanker, guide, handicraft. लेकिन सब tourism नहीं है. Army, सरकारी jobs, stone, transport - बाकी काम भी.”

तन्वी ने कहा, “और students का काम है बाहर पढ़ना और फिर parents को explain करना कि हर नौकरी government वाली नहीं होती.”

उसकी माँ हँसी। “आपकी नौकरी अभी लगी नहीं.”

“इसीलिए explain कर रही हूँ.”

Family का छोटा debate शुरू हुआ। Private job बनाम सरकारी job. Jaipur में rent. Competitive exams. बेटी का digital design course. पिता का concern कि stable income हो. माँ का concern कि खाना time पर खाए.

मैं सुनता रहा।

सौरभ तिवारी की Prayagraj वाली conversation याद आई। शहर बदल गए थे, pressure की vocabulary नहीं।

एक vendor ने पानी बेचा। महेंद्र ने पूछा, “आप अकेले travel करते रहते?”

“Mostly.”

तन्वी ने पूछा, “Boring नहीं?”

“कभी.”

“फिर?”

मैंने platform की तरफ देखा।

“फिर कोई stranger बात कर लेता है.”

महेंद्र बोले, “और book का chapter बन जाता.”

मैं हँसा। “अब लोग मुझे जल्दी समझने लगे हैं.”

करीब साढ़े बारह

THE TRAIN ARRIVES

दूर से headlight दिखाई दी तो platform का posture बदल गया।

जो लोग bench पर फैलकर बैठे थे, straight हुए। Bags उठे। Blankets fold हुईं। बच्चों को जगाया गया। लोग coach position के हिसाब से आगे-पीछे होने लगे।

Train धीरे station में आई। Metal wheels की लंबी आवाज़, brake की smell, windows के पीछे sleepy faces.

मैंने अपना coach देखा।

फिर दोबारा देखा।

फिर पाया कि वह next coach था।

मैं दौड़ा नहीं। Backpack के साथ दौड़ना dignity और knee joints दोनों के खिलाफ था। तेज चला।

Door पर दो लोग उतर रहे थे, तीन चढ़ रहे थे, एक आदमी अंदर से “पहले उतरने दो” कह रहा था और कोई नहीं सुन रहा था।

मैंने side ली। Family को चढ़ने दिया। फिर खुद गया।

Coach की smell familiar थी - metal, bedding, human travel, dust, और washroom से आने वाला हल्का disinfectant.

Seat number check किया।

Upper berth.

मैंने ऊपर देखा।

पंखा।

Lucknow-Prayagraj वाली morning का scene याद आया जब सिर जाली से टकराया था।

मैंने backpack पहले ऊपर रखा।

वह fan से नहीं टकराया।

मैंने खुद चढ़ते समय इतना सावधान होकर सिर झुकाया कि सामने metal support से shoulder टकरा गया।

नीचे बैठे महेंद्र ने कहा, “सिर बचा लिया.”

मैंने shoulder दबाते हुए कहा, “Railway हमेशा दूसरा option रखता है.”

Bag को chain से secure किया। Shoes नीचे रखे। Small pouch साथ। Water bottle corner में.

Phone निकाला।

12:38.

मैंने Shristi को लिखा:

“On train.”

Reply लगभग तुरंत आया:

“Seat?”

मैंने लिखा:

“Upper.”

उसका जवाब:

“Fan se सिर मत मारना.”

मैंने shoulder की तरफ देखा।

फिर लिखा:

“इस बार सिर safe.”

वह शायद इस जवाब से satisfied थी।

मैंने नहीं बताया कि body ने alternate damage ले लिया।

चलती रात

THE DESERT AFTER THE WINDOW GOES DARK

Train station से निकली तो कुछ minute तक city lights window के साथ चलीं। फिर अचानक gaps बढ़े। Last yellow lamps, फिर darkness.

मैं नीचे वाली seat पर कुछ देर बैठा रहा क्योंकि सब अभी bedding arrange कर रहे थे। Mahendra family सामने के berths पर थी। ऊपर की दूसरी berth पर एक आदमी पहले से blanket में disappear हो चुका था। Side lower पर लगभग तीस साल का युवक laptop bag लेकर बैठा था।

उसका नाम अर्जुन था। Jaipur में event-lighting company में काम करता था, Jaisalmer में एक destination wedding setup से लौट रहा था।

उसने कहा, “आप tourist?”

“हाँ.”

“Wedding नहीं?”

“Budget देखकर wedding वाले मुझे gate से बाहर कर देंगे.”

वह हँसा।

बात destination weddings से शुरू होकर desert economy तक पहुँची। अर्जुन ने बताया कि कुछ महीने काम बहुत ज्यादा होता है, कुछ महीने कम। Hotels, decorators, drivers, folk performers, electricians, temporary staff - एक बड़े event के पीछे बहुत लोग होते हैं जिन्हें guest कभी नहीं देखता।

“Photo में palace दिखता है,” उसने कहा, “लेकिन रात तीन बजे cable खोलने वाला नहीं दिखता.”

मैंने कहा, “Travel में भी यही है. Tourist fort देखता है, सुबह cleaning करने वाला नहीं.”

“हर काम का backstage होता.”

यह line अच्छी थी।

हमने कुछ देर Jaipur की बात की। उसने पूछा, “पहले गए?”

“अभी तीन दिन वहीं था.”

“फिर वापस?”

“हाँ. बस थोड़ा.”

“कोई काम?”

मैंने कहा, “Train connection.”

फिर बिना वजह phone screen की तरफ देखा।

Arjun ने कोई comment नहीं किया।

मुझे अच्छा लगा।

Coach धीरे settle होने लगा। Lights dim. Curtains नहीं, सिर्फ berths और bodies की geometry. कोई slippers arrange कर रहा था। किसी ने chain लगाई। किसी बच्चे ने पानी माँगा। दूर से TTE की आवाज़ आई।

रात की train में privacy walls से नहीं, mutual exhaustion से आती है। सब एक-दूसरे के बहुत पास होते हैं, लेकिन कुछ देर बाद हर आदमी अपनी छोटी sleep-world में चला जाता है।

नीली डायरी का सबसे साधारण पन्ना

NOT A CLUE, JUST A JOURNEY

सोने से पहले मैंने backpack से blue diary निकाली। Habit अब भी थी, लेकिन urgency नहीं।

Old Jaisalmer-Jaipur ticket उसी page में रखा था। मैंने उसे बाहर निकाला। Faded paper, numbers, dates, route. पहले मैंने उसमें code देखा था। अब मैं एक retired railway engineer की possible यात्रा देख रहा था।

उसी page के नीचे pencil की बहुत हल्की line थी जिसे मैं शायद पहले dramatic interpretation के कारण ignore करता रहा था:

“JSM - stone facades / fort drainage / return JP.”

बस।

इतना practical कि almost boring.

और इसलिए believable.

शायद वह यहाँ fort की पत्थर वाली बनावट देख रहा था। शायद drainage note किसी निरीक्षण या personal heritage interest का हिस्सा था। शायद return Jaipur सिर्फ next connection था।

मैंने ticket वापस रखा।

10 3 7 1 भी उसी के पीछे था। अब मैंने उसे decode करने की कोशिश नहीं की।

कुछ numbers को कुछ समय तक number रहने देना चाहिए।

Diary बंद करते समय मुझे Varanasi का अपना Masonic detour याद आया। मैं खुद अपने background की वजह से उस notebook पर patterns चढ़ाता रहा था। Chapter 16 में वह गलतफहमी साफ हो चुकी थी। अब diary को railway, architecture, temples और travel notes की तरह पढ़ना ज्यादा natural था।

उस रात मैंने एक बात consciously तय की:

Diary यात्रा के साथ चलेगी. यात्रा diary के पीछे नहीं चलेगी.

मैंने उसे bag में रख दिया।

और उस chapter के लिए वही पर्याप्त था।

एक बजे के बाद

SLEEPER CLASS GEOMETRY

Upper berth पर चढ़ा। Shoes नीचे. Pouch सिर के पास. Phone charging पर.

Blanket पतली थी, लेकिन desert evening की हवा के बाद coach का temperature comfortable लगा। Train का repetitive movement body को धीरे-धीरे sleepy बना रहा था।

मैंने alarm नहीं लगाया। Arrival सुबह इतनी जल्दी नहीं थी कि panic जरूरी हो।

फिर भी दो alarms लगाए।

Character development की भी सीमा होती है।

Phone screen एक बार फिर चमकी।

Shristi:

“अब सो जाओ.”

मैंने time देखा। 1:07.

मैंने लिखा:

“तुम अभी तक जाग रही?”

कुछ देर answer नहीं आया।

फिर:

“पढ़ रही थी.”

मैंने naturally मान लिया कि medical books होंगी। Moscow में वह रात देर तक पढ़ती थी। Exams, practicals, notes, anatomy, pathology - मुझे exact subject कभी याद नहीं रहते थे और उसे यह बात annoy करती थी।

मैंने लिखा:

“Good night, doctor.”

उसने reply किया:

“अभी doctor नहीं.”

फिर कुछ seconds बाद एक और message:

“Good night. Jaipur पहुँचकर बताना.”

मैंने phone उल्टा रख दिया।

नीचे train की आवाज़ चल रही थी।

मुझे नींद जल्दी आ गई।

* * *

रात में छोटे स्टेशन

PLATFORMS SEEN HALF-ASLEEP

पहली बार आँख किसी station की रोशनी से खुली। Time नहीं देखा। Window के बाहर yellow board कुछ seconds दिखा और पीछे चला गया। Platform पर तीन लोग, एक tea cart, दो dogs और fluorescent light के नीचे moths.

Train रुकी हुई थी।

नीचे से आवाज़ आई:

“चाय... चाय...”

मेरे शरीर ने sleep और chai के बीच vote कराया।

Sleep जीत गया।

दूसरी बार किसी passenger के phone की ringtone से आँख खुली। वह आदमी पूरी coach को सुनाने के बाद phone उठाकर whisper करने लगा।

“हाँ... train में हूँ...”

यह जानकारी ringtone के volume से पहले ही clear थी।

मैंने करवट बदली। Upper berth पर करवट बदलना एक small engineering project था। एक तरफ wall, दूसरी तरफ हवा, knees की limited permission.

कुछ minute बाद फिर sleep.

तीसरी बार सुबह से थोड़ा पहले जागा। Coach dark-grey था। Night पूरी गई नहीं थी, dawn अभी आई नहीं थी। नीचे किसी ने bottle खोली। Metal ladder की आवाज़। Washroom door. दूर से track का rhythm.

मैं नीचे उतरा।

इस बार fan बचाया।

और ladder की आखिरी step miss कर दी।

पैर floor पर थोड़ा जोर से पड़ा।

महेंद्र की पत्नी की आँख खुली।

मैंने whisper किया, “Sorry.”

उन्होंने कहा, “कोई बात नहीं.”

फिर शायद नींद में ही जोड़ा, “धीरे.”

यह शब्द पूरी यात्रा का unofficial motto बन चुका था।

सुबह की पहली खिड़की

RAJASTHAN CHANGES SHADE

मैं side window के पास बैठ गया। Glass के बाहर darkness अब charcoal grey थी। Horizon पर बहुत पतली pale line. कुछ trees silhouettes की तरह। Sand dunes अब नहीं थे। Ground flatter और कहीं-कहीं खेतों की boundaries दिखाई देने लगीं।

रात ने transition hide कर दिया था।

यही overnight train का magic है। आप geography को बदलते हुए नहीं देखते। सिर्फ result मिलता है।

धीरे-धीरे villages दिखाई देने लगे। Flat-roof houses. Water tanks. Fields. Electric poles. Road crossings. कभी दूर temple spire. कहीं smoke की पतली line.

Desert का open horizon अब cultivated land और settlements से break हो रहा था।

Train किसी छोटे station पर रुकी। इस बार मैं नीचे नहीं उतरा। Experience ने finally training दी थी।

Vendor window तक आया।

“चाय!”

मैंने glass लिया।

“चीनी?”

उसने कहा, “बनी हुई है.”

मैंने sip लिया।

कम थी।

मैंने अपने bag से छोटा sugar sachet निकाला जो hotel café से कब का पड़ा था।

महेंद्र, जो अब जाग गए थे, मुझे देखते रहे।

“इतनी?”

“हाँ.”

“Doctor ने मना नहीं किया?”

मैंने कहा, “Doctor अभी बनी नहीं है.”

उन्होंने मेरी तरफ देखा।

“कौन?”

मैंने तुरंत बाहर देखा। “एक दोस्त.”

Travel में कभी-कभी conversation से बचने का सबसे अच्छा तरीका landscape होता है।

Chai sweet होने के बाद सही लगी। Strong tannin, milk कम, ऊपर steam. Window से आती morning air के साथ उसका warmth useful थी।

Tanvi भी जाग गई। उसने पूछा, “आप Jaipur में कहाँ रहोगे?”

मैंने hotel का area बताया।

“फिर फिर से घूमोगे?”

“शायद.”

Mahendra बोले, “तीन दिन घूम चुके.”

मैंने कहा, “शहर खत्म नहीं हुआ.”

Tanvi ने हँसकर कहा, “या company अच्छी थी.”

मैंने chai का sip लिया।

उसके parents दोनों window की तरफ देखने लगे।

मुझे लगा family में sarcasm genetic है।

चलती ट्रेन का नाश्ता

KACHORI, FENNEL AND HOT TEA

सूरज निकलने के बाद coach पूरी तरह morning mode में आ गया। Blankets fold. Toothbrush लेकर लोग washroom की line में। Bags नीचे। बच्चों की आवाज़। Phone calls.

एक बड़े station पर vendors चढ़े। Kachori, poha, bread-omelette, chai, water.

मैंने kachori ली।

Paper plate में दो pieces, साथ आलू की gravy और थोड़ी green chutney. Kachori का shell सुबह के बावजूद crisp था। अंदर दाल का मसाला, saunf की साफ खुशबू, hing की हल्की edge. Gravy पतली, गरम, लाल मिर्च moderate. Green chutney ने freshness दी।

पहला bite लेते समय मैंने camera निकाला।

Tanvi ने कहा, “Cold food writer?”

मैं freeze हुआ।

“तुम्हें कैसे पता?”

Mahendra बोले, “कल रात आपने बताया था book लिखते हो. बाकी guess.”

मैंने photo जल्दी ली और kachori खा ली।

अब मेरी reputation strangers में भी standardized हो रही थी।

एक bite थोड़ा ज्यादा गरम था। मैंने mouth बंद रखते हुए तुरंत chai उठाई। Chai भी गरम।

दो hot चीजों का combination mathematically गलत है, लेकिन hunger mathematics नहीं पढ़ती।

मैंने water लिया।

Tanvi मुस्करा रही थी।

मैंने कहा, “आपके family में हर आदमी commentary करता?”

उसने कहा, “Free service.”

रेल का नाश्ता: गरम दाल कचौरी की crisp परत के भीतर saunf और hing की खुशबू सबसे ज्यादा याद रही। पतली आलू की gravy ने उसे soft किया, green chutney ने मसाले के बीच freshness दी। ऐसी चीजें fine dining नहीं, railway timing के हिसाब से बनी comfort food लगती हैं - जल्दी खाओ, chai लो और बाहर बदलते landscape को देखते रहो।

काम के लिए शहर

WHY PEOPLE RETURN TO JAIPUR

Breakfast के बाद महेंद्र से फिर बात हुई। रात की casual conversation अब morning detail में बदल गई।

उन्होंने बताया कि Jaipur उनके लिए tourist city से पहले market था। Hotels को bed linen, kitchen items और कुछ basic supplies पहुँचाने का काम। Jaisalmer से family roots, Jaipur में business.

“दो शहर?” मैंने पूछा।

“हाँ. आदमी एक जगह का नहीं रहता हमेशा.”

यह बात मेरे लिए obvious होनी चाहिए थी। Moscow में job, India में roots, दस शहरों की यात्रा. फिर भी किसी दूसरे से सुनकर अलग लगी।

“घर कहाँ लगता?”

उन्होंने थोड़ी देर सोचा।

“जहाँ family हो. बाकी address.”

उनकी पत्नी ने तुरंत कहा, “और जहाँ सामान ज्यादा पड़ा हो.”

हम हँसे।

Arjun भी नीचे आ गया। Event-lighting वाला backpack लेकर ready था। उसने Jaipur में season के काम, late-night setups और tourist economy की दूसरी side बताई।

“आप fort देखो,” उसने कहा, “हम wire देखते.”

“मैं भी कभी-कभी wire देखता हूँ. फोटो खराब करता है.”

“हमारे लिए वही पैसा देता.”

Perspective का simplest lesson यही था। जिस चीज को traveller frame से हटाना चाहता है, किसी local के लिए वही livelihood हो सकती है।

Train outer Jaipur की तरफ बढ़ रही थी। Landscape अब अधिक built-up. Warehouses. Roads. Housing blocks. Industrial sheds. फिर denser neighborhoods.

मैंने तीन दिन पहले की arrival याद की। तब city नया था। अब कुछ shapes familiar लगने लगे।

यह strange satisfaction थी - किसी जगह को दूसरी बार देखना उसे थोड़ा अपना बना देता है, भले आप वहाँ रहते न हों।

जयपुर करीब है

A MESSAGE BEFORE ARRIVAL

Phone network stable हुआ तो messages आने लगे।

Shristi का सबसे ऊपर था:

“उठे?”

Time देखा। Message लगभग एक घंटे पुराना था।

मैंने लिखा:

“हाँ. Jaipur close.”

उसने तुरंत लिखा:

“Hotel same?”

मैंने yes किया।

फिर:

“Check-in करके बताना.”

मैंने पूछा:

“क्यों?”

कुछ seconds कोई answer नहीं।

फिर:

“क्योंकि तुम बोलोगे ‘थोड़ा सोता हूँ’ और शाम तक गायब.”

मैंने लिखा:

“Possible.”

Reply:

“Not allowed.”

मैंने हँसकर phone pocket में रख दिया।

Tanvi ने पूछा, “फिर वही doctor?”

मैंने कहा, “Medical student.”

“Difference?”

“वह खुद correction करती है.”

“Jaipur वाली?”

मैंने उसकी तरफ देखा। “तुम investigation क्यों कर रही?”

“Train boring हो रही.”

मैंने window की तरफ इशारा किया। “Landscape देखो.”

उसने कहा, “आप देखो.”

मैंने landscape देखना चुना।

फिर वही शहर, अलग सुबह

JAIPUR, THE SECOND ARRIVAL

Train Jaipur पहुँची तो platform पहले से ज्यादा familiar लगा। वही noise, announcements, chai, porters, passengers - लेकिन मेरे भीतर novelty कम थी।

Mahendra family से goodbye हुआ। उन्होंने business card देने की कोशिश की। मैंने लिया और notebook में रखा। Arjun ने बस handshake किया।

Tanvi ने कहा, “Doctor को wait मत कराना.”

मैंने कहा, “Medical student.”

वह हँसती हुई चली गई।

मैं backpack लेकर exit की तरफ चला।

दो minute बाद पाया कि मैं wrong side के exit की तरफ हूँ।

मैं रुका। Map खोला। Blue dot घूमी।

Jaipur मुझे दूसरी बार welcome कर रहा था और मैंने दूसरी बार भी सही exit से शुरुआत नहीं की। Consistency important होती है।

एक porter से पूछा। उसने पीछे इशारा किया।

“उधर.”

मैं वापस मुड़ा।

Phone vibrate:

“Reached?”

मैंने लिखा:

“हाँ.”

फिर एक second सोचा और सच लिख दिया:

“Wrong exit.”

Reply आया:

“Of course.”

फिर:

“तुम travel नहीं करते...”

मैंने बाकी line खुद लिखी:

“...situations collect karta hoon.”

उसने सिर्फ एक laughing emoji भेजा।

उस छोटे private joke ने morning को unexpectedly warm बना दिया।

Auto में बैठते ही मैंने hotel का address दिखाया। Driver ने पूछा, “पहली बार?”

मैंने कहा, “दूसरी.”

उसने traffic में auto घुमाते हुए कहा, “फिर तो रास्ता पता होगा.”

मैंने जवाब नहीं दिया।

कुछ truths strangers को बताना जरूरी नहीं।

होटल की लॉबी और बीस मिनट

NO TIME TO DISAPPEAR

Hotel वही budget place था जहाँ मैं पहले ठहरा था। Reception वाले ने मुझे देखकर तुरंत पहचान लिया।

“फिर आ गए?”

“हाँ.”

“Jaisalmer?”

“हो गया.”

“Room वही type.”

मैंने form भरा। Backpack room में रखा। Shoes उतारने का मन था, लेकिन phone buzz हुआ।

Shristi:

“Check-in?”

मैंने लिखा:

“Done.”

उसने लिखा:

“20 min.”

मैंने पूछा:

“किसलिए?”

Answer:

“नीचे आ जाना.”

मैं screen को देखता रहा।

फिर bed की तरफ देखा।

Sleep और curiosity के बीच vote हुआ।

इस बार curiosity जीत गई।

मैंने face wash किया, fresh shirt निकाली और shoes फिर पहन लिए।

Mirror के सामने hair ठीक करने की कोशिश की। Desert और train ने democratic result दिया था - कोई side control में नहीं।

मैंने पानी पिया। Phone, wallet, camera.

Blue diary?

मैंने उसे backpack में ही छोड़ दिया।

आज की morning उसके लिए नहीं थी।

Reception से बाहर आया तो Jaipur की सड़क already bright थी। Autos, bikes, school vans, delivery riders, chai stalls, traffic.

मैंने clock देखा।

उन्नीस minute.

दूर से एक familiar bike मुड़ी।

Helmet के visor के पीछे भी मैं Shristi को पहचान गया।

वह hotel के सामने रुकी, engine बंद किया और helmet निकाला।

“सोए नहीं?”

मैंने कहा, “आपने अनुमति नहीं दी.”

उसने मुझे सिर से पैर तक एक बार देखा - शायद check कर रही थी कि desert से वापस पूरा आया हूँ या कुछ हिस्सा रेत में छोड़ आया।

फिर बस बोली:

“चलो. पहले chai.”

मैंने पूछा, “कहाँ?”

“जहाँ तुम्हें extra sugar माँगने पर कोई judge न करे.”

मैं bike के पीछे बैठा।

तीन दिन पहले Jaipur मेरे लिए नया शहर था।

अब वही सड़कें दूसरी तरह शुरू हो रही थीं।

इस बार मेरे पास map नहीं था।

और शायद पहली बार उसकी जरूरत भी नहीं थी।

* * *

रात की ट्रेन ने क्या बदला?

A RETURN IS NOT THE SAME AS AN ARRIVAL

Jaisalmer से Jaipur की वह रात किसी बड़े रहस्य के कारण यादगार नहीं रही। कोई stranger 2:17 पर नहीं आया। कोई ticket गायब नहीं हुआ। कोई hidden symbol नहीं मिला।

और शायद इसी वजह से वह यात्रा जरूरी थी।

कई दिन से मैं समझ रहा था कि travel की intensity हमेशा घटना से आती है। उस रात intensity साधारण चीजों में थी - platform की late chai, family का argument, upper berth की geometry, आधी नींद में गुजरते stations, सुबह की kachori, और एक message जो पूछता रहा कि मैं train में चढ़ा या नहीं।

हम जब पहली बार किसी शहर पहुँचते हैं तो monuments ढूँढते हैं। दूसरी बार लौटते हैं तो लोग याद आते हैं।

Jaipur अब मेरे लिए Hawa Mahal, Amer, bazaar या Albert Hall का नाम भर नहीं था।

उसमें एक bike की आवाज़ भी जुड़ गई थी।

एक extra-sugar chai.

एक private joke.

और बहुत-सी बातें जिनका meaning उस समय मैंने उतना नहीं समझा जितना शायद reader समझ ले।

लेकिन मैं तब reader नहीं था।

मैं सिर्फ traveller था।

और traveller की सबसे पुरानी कमजोरी यही है - वह सामने का रास्ता देखता है, बगल में चल रही चीजें कभी-कभी बाद में समझता है।

CHAPTER TWENTY-FOUR

दूसरी बार जयपुर

JAIPUR, THE SECOND TIME

जयपुर - वापसी का एक दिन

A Bike, Everyday Streets, Local Food & an Unfinished Goodbye

“पहली बार किसी शहर में हम जगहें देखते हैं। दूसरी बार लौटें, तो अक्सर पता चलता है कि याद शहर की नहीं, किसी आदमी की हो रही थी।”

दूर से आती bike को पहचानने के लिए उसका रंग याद होना जरूरी नहीं था।

मैंने पहले आवाज़ सुनी। फिर helmet. फिर वह familiar तरीका जिसमें Shristi traffic से निकलते हुए आखिरी दस meter पर speed अपने-आप कम कर देती थी, जैसे hotel के सामने brake नहीं, punctuation लगाना हो।

वह सामने रुकी। Engine बंद किया। Helmet निकाला। बालों की कुछ लटें माथे पर आ गई थीं। उसने उन्हें पीछे किया और मेरी तरफ देखा।

“सोए नहीं?”

“आपने अनुमति नहीं दी।”

“Good.”

“इतनी खुशी?”

“मैंने सुबह आठ बजे घर से निकलकर यहाँ आने के लिए traffic झेला है. अगर तुम room में सो रहे होते तो reception से उठवाती।”

उसने यह बात मज़ाक में कही। कम से कम tone मज़ाक वाली थी।

मैंने पूछा, “आज तुम्हारी class नहीं?”

“Moscow में class होती है. Jaipur में छुट्टी पर हूँ.”

“घर का plan?”

“था.”

“था?”

उसने helmet मुझे पकड़ा दिया। “बहुत सवाल हो गए. पहले chai.”

मैंने helmet लिया। उसके हाथ में दूसरा था।

तभी मुझे समझ आया कि वह मेरे लिए extra helmet लेकर आई थी।

मैंने कुछ नहीं कहा।

शायद कहना चाहिए था।

तब नहीं कहा।

* * *

पहली चाय, दूसरी वापसी

THE TEA SHE REMEMBERED

Bike पर बैठते ही backpack का एक strap footrest के पास अटक गया। मैं उसे ठीक करने लगा। Shristi ने पीछे देखे बिना कहा, “बैठ गए?”

“Almost.”

“Almost बैठना नया concept है?”

“Strap.”

वह मुड़ी, दो second में strap उठाकर bag के ऊपर रख दिया।

“तुम्हारे साथ simple काम भी project बन जाता है.”

“Travel writer हूँ.”

“नहीं.” उसने engine start किया. “तुम situations collect करते हो.”

वही line.

Jaipur के तीन दिनों में वह हमारे बीच private joke बन चुकी थी। अब वापस सुनकर लगा जैसे शहर ने अपना password माँगा और उसने दे दिया।

हम tourist centre की तरफ नहीं गए। उसने bike residential streets, morning shops और office traffic के बीच से निकाली। कहीं दूध की दुकान, कहीं school van, कहीं सब्ज़ी के ठेले, कहीं scooters की इतनी line कि सड़क parking और movement के बीच negotiation लग रही थी।

पहली यात्रा में मैंने Jaipur को forts, facades, bazaars और monuments से देखा था। आज वह मुझे deliberately उस रास्ते से ले जा रही थी जहाँ कोई postcard नहीं बनता।

"कहाँ?" मैंने पूछा।

"Chai."

"यह तो पता है."

"फिर चुप बैठो."

एक छोटी corner दुकान पर bike रुकी। Tin shade, दो steel tables, एक बड़ा भगोना, सामने biscuits के jars. पास के office और coaching वाले लोग खड़े होकर chai पी रहे थे।

Shristi ने मुझे बैठने को कहा और counter पर गई। मैंने phone निकाला ही था कि उसने दूर से कहा, "Photo बाद में."

"मैंने camera निकाला भी नहीं."

"तुम्हारा हाथ phone पर गया था."

उसकी observation uncomfortable level पर accurate थी।

दो glass chai आए। मेरे glass की पहली sip लेते ही मुझे taste में familiar excess मिला। दूध strong, tea leaves थोड़ी कड़क, ऊपर thin malai की line, और चीनी इतनी कि normal आदमी शायद आधी कराता।

मैंने पूछा, "Extra sugar?"

“हाँ.”

“तुमने पूछा भी नहीं.”

“क्यों पूछती?”

“अगर taste बदल गया हो?”

वह मुझे देखती रही। “तुम्हारा?”

“हाँ.”

“दो साल में?”

“Possible.”

उसने अपना glass उठाया। “कुछ चीजें इतनी जल्दी नहीं बदलती.”

मैंने chai पी। उस line को भी chai वाली line समझा।

तब मुझे सच में यही लगा।

Counter पर नमक और चीनी के छोटे paper sachets रखे थे। मैंने एक सफेद packet उठाया।

Shristi ने मेरा हाथ रोक दिया।

“ये salt है.”

मैंने packet देखा। सच में salt.

“मैं extra sugar डालने वाला था.”

“तुम्हारी chai already medical case है.”

“Medical student होने का फायदा उठा रही हो.”

“मैं दोस्त होने का नुकसान झेल रही हूँ.”

वह हँसी। मैं भी।

पर उसने मेरी chai में खुद एक और sugar sachet डाल दिया।

सुबह की Jaipur chai: tourist café की polished cup नहीं - छोटा glass, कड़क पत्ती, ज्यादा दूध, ऊपर हल्की मलाई और मेरे मामले में सामान्य से काफी ज्यादा चीनी। Taste refined नहीं था; जागने के लिए perfect था। दुकान के आसपास office staff, students और delivery riders का आना-जाना उस सुबह को monument से ज्यादा city बना रहा था।

वह जयपुर जो काम पर जा रहा था

THE CITY ON A WORKDAY

Chai के बाद उसने पूछा, “आज क्या देखना है?”

मैंने कहा, “तुम बताओ.”

“तीन दिन में इतना घुमा चुकी हूँ.”

“आज tourist नहीं बनना.”

“तो?”

“बस Jaipur.”

उसने पहली बार उस सुबह बिना मज़ाक के मुस्कराया। “ठीक.”

हम bike से निकले। Main roads पर traffic बढ़ चुका था। Bus stops पर लोग, coaching boards, uniforms में students, office bags, helmet के नीचे dupatta बाँधे महिलाएँ, delivery boxes वाले riders, construction sites, pharmacy, hardware, mobile repair, clinics.

Shristi बीच-बीच में areas के नाम बताती, लेकिन आज उसकी commentary tourist guide जैसी नहीं थी।

“यहाँ मेरी school friend रहती थी.”

“इस road पर मैं पहली बार अकेले scooter लेकर निकली थी.”

“इस दुकान से papa कभी-कभी sweets लाते हैं.”

“यहाँ पहले इतना traffic नहीं था.”

City history suddenly dates और dynasties से नहीं, उसके sentences से बन रही थी।

एक signal पर हम रुके। सामने तीन schoolgirls एक scooter पर थीं - officially दो की जगह तीन, practically India. Side में fruit cart. ऊपर metro/road structure की छाया. पीछे horn.

मैंने कहा, “Moscow में तुम्हें Jaipur की सबसे ज्यादा कौन-सी चीज याद आती?”

उसने तुरंत जवाब नहीं दिया।

Signal green हुआ। वह आगे बढ़ी।

कुछ देर बाद बोली, “Noise.”

“Noise?”

“हाँ. वहाँ silence अच्छा लगता है. फिर कभी-कभी ज्यादा अच्छा लगने लगता है. तब यहाँ का बेकार horn भी याद आता.”

“Food?”

“वो obvious है.”

“Family?”

“वो भी.”

“और?”

वह road पर देखती रही।

“कुछ लोग.”

मैंने पूछा, “Indian group?”

उसने थोड़ी देर बाद कहा, “हाँ. Indian group.”

उसका जवाब छोटा था।

मैंने समझा conversation खत्म।

शायद वह चाहती थी कि मैं एक सवाल और पूछूँ।

मैंने नहीं पूछा।

* * *

एक market lane में उसने bike park की। यहाँ textiles, household सामान, stationery, cheap accessories, steel utensils और everyday clothes की दुकानें थीं। कोई tourist performance नहीं। Bargaining फिर भी थी।

मैंने एक छोटा cloth pouch देखा, जो tickets और loose papers रखने के काम आ सकता था। Blue diary के अंदर पुराना ticket बार-बार loose होता था। मैंने price पूछा।

Shopkeeper ने amount बताया।

मैंने confidence से कम बोला।

उसने तुरंत मान लिया।

मैंने पैसे दे दिए।

Shristi बाहर आते ही बोली, “तुमने bargain किया?”

“हाँ. बहुत अच्छा.”

“उसने first offer पर मान लिया?”

“हाँ.”

वह रुक गई। “मतलब तुम और कम बोल सकते थे.”

मैंने pouch देखा। “मैंने जीत लिया था.”

“तुम्हें जीतने दिया गया.”

“Difference philosophical है.”

“Difference पैसे का है.”

उसने shop की तरफ देखा और वापस गई।

मैंने पूछा, “क्या कर रही?”

दो minute बाद वह लौटी। उसके हाथ में उसी pouch की एक छोटी matching strap थी।

“यह उसने free दे दी.”

“कैसे?”

“Normal बात करके.”

“मैंने भी normal की.”

“तुम bargaining speech दे रहे थे.”

मैंने pouch backpack में रखा।

उसने strap खुद अंदर रख दी, जैसे उसे भरोसा नहीं कि मैं बाद में खोऊँगा नहीं।

“Moscow में भी तुम्हारा card holder टूट गया था,” उसने कहा.

मैंने उसकी तरफ देखा। “तुम्हें वो याद है?”

“तुमने तीन हफ्ते rubber band से चलाया था.”

“बहुत practical solution था.”

“बहुत embarrassing solution था.”

“तुमने notice क्यों किया था?”

वह एक second के लिए चुप हुई।

फिर बोली, “क्योंकि हर बार coffee pay करते time वही circus करते थे.”

मैं हँसा।

उसने भी हँस दिया।

Answer मिल गया था। या कम से कम मुझे लगा मिल गया।

नाश्ता जो दोबारा खाना था

PYAAZ KACHORI, AGAIN

करीब दस बजे उसने पूछा, “Hungry?”

“Always.”

“तुम desert से आए हो या hostel से?”

“दोनों में food security important है.”

उसने एक पुराने snack shop के सामने bike रोकी। दुकान के बाहर लोग खड़े होकर खा रहे थे। अंदर कड़ाही में kachori तैर रही थीं। Oil की smell, fried onion filling और मसाले की गर्म खुशबू सड़क तक आ रही थी।

मैंने पूछा, “फिर pyaaz kachori?”

“Jaipur दूसरी बार आए हो. Taste भी second time.”

“Scientific?”

“Medical curriculum में नहीं है.”

Kachori हाथ में आते ही मैंने इस बार photo नहीं ली।

Shristi ने देखा। “Improvement.”

“Food पहले camera खाता है वाला phase खत्म.”

“इतनी जल्दी नहीं.”

मैंने पहला bite लिया। Outer shell मोटी नहीं, पर firm crisp. अंदर onion filling sweet और spicy दोनों - धीमी caramelized प्याज़ की मिठास, लाल मिर्च, धनिया, हल्का amchur, और गर्म तेल की वजह से मसाला nose तक आता। Chutney दो तरह की - हरी तीखी और brown मीठी-खट्टी. दोनों साथ डालने पर filling का भारीपन balance हुआ।

मैंने दूसरा bite थोड़ा जल्दी लिया। अंदर की filling मेरी उम्मीद से ज्यादा गरम थी।

मैंने mouth बंद करके हवा खींचने की कोशिश की।

Shristi ने तुरंत पानी आगे किया। “फिर?”

मैंने पानी लिया। “Temperature deceptive था.”

“तुम हर hot food को personal betrayal की तरह क्यों लेते हो?”

“बाहर से शांत थी.”

“Kachori है, relationship नहीं.”

वह line बोलकर खुद चुप हो गई।

मैं हँसने वाला था, लेकिन उसके चेहरे का expression बदल गया था।

बहुत थोड़ा।

मैंने पूछा, “क्या हुआ?”

“कुछ नहीं.”

“Mirchi?”

“नहीं.”

उसने chutney plate में फैलानी शुरू कर दी।

मैंने सोचा शायद joke उसे खुद awkward लगा।

फिर मैंने दूसरी kachori order कर दी।

कभी-कभी मेरी emotional intelligence stomach के पीछे queue में खड़ी रहती थी।

Chai आई। मैंने extra sugar माँगी। Shopkeeper ने दो spoon डालीं। Shristi ने third spoon की तरफ देखा।

“बस,” उसने shopkeeper से कहा।

मैंने protest किया, “मेरी chai.”

“तुम्हारी pancreas भी.”

“तुम अभी doctor नहीं हो.”

“इसलिए warning free है.”

मैंने chai पी। Sweet enough थी।

उसने मेरी तरफ देखा जैसे किसी small victory का satisfaction हो।

पुराने शहर की दूसरी चाल

NO CHECKLIST THIS TIME

हम फिर पुराने Jaipur की तरफ आए, लेकिन इस बार Hawa Mahal के सामने रुकने का कोई plan नहीं था। वह already देखा जा चुका था। City Palace, Jantar Mantar, bazaars - तीन दिन में सब memories बन चुके थे।

आज हम side lanes में चले।

कुछ दुकानें सुबह खुल रही थीं। कहीं packaging, कहीं delivery, कहीं workers shutters साफ कर रहे थे। Fabric bundles handcart पर. Jewelry repair की narrow desk. एक आदमी पुराने fan की winding कर रहा था. एक bicycle पर cardboard boxes का ऐसा tower कि rider खुद आधा छिप गया था।

Pink facades के नीचे रोज़ का logistics चल रहा था।

मैंने camera निकाला, लेकिन लोगों के faces की जगह details लेने लगा - painted doorway, iron latch, छज्जे की shadow, cart के ऊपर बंधी rope, chai glass के पीछे old wall.

Shristi ने पूछा, “आज monuments कम?”

“तीन दिन तुम्हारी वजह से बहुत देख लिए.”

“मेरी वजह से?”

“Guide free थी.”

“Free?”

“हाँ.”

वह रुक गई। “Petrol किसका?”

“तुम्हारा.”

“Parking?”

“तुम्हारा.”

“Route?”

“तुम्हारा.”

“और chai?”

“Mostly तुम्हारी choice.”

“तो free किस angle से?”

“मैंने guide fee नहीं दी.”

उसने मेरे shoulder पर हल्का punch मारा। “Moscow वापस आकर bill दूँगी.”

“Pay कर दूँगा.”

“हर चीज pay नहीं होती.”

उसकी आवाज़ धीमी थी।

मैंने पूछा, “क्या?”

“कुछ नहीं. चलो.”

वह आगे चल दी।

मैंने शायद पहली बार उस दिन महसूस किया कि कुछ sentences उसके पास पूरे आते हैं और मेरे सामने आधे हो जाते हैं।

लेकिन उस feeling को मैंने नाम नहीं दिया।

एक गलत मोड़, फिर वही मज़ाक

THE SHORTCUT THAT WASN'T

दोपहर की धूप तेज होने लगी। हम bike तक लौट रहे थे कि मैंने एक lane की तरफ इशारा किया।

“उधर से parking जल्दी आएगी.”

Shristi ने पूछा, “Sure?”

“हाँ.”

“Map देखा?”

“तीन दिन Jaipur घूम चुका हूँ.”

उसने हाथ पीछे बाँधे। “ठीक है. Lead.”

मैं confidently lane में घुसा। दस minute बाद हम एक छोटी मंदिर वाली गली में थे जहाँ से आगे scooter तो निकल सकता था, parking नहीं।

मैंने कहा, “यहाँ से right.”

एक स्थानीय दुकानदार ने कहा, “Parking left पीछे.”

Shristi ने मेरी तरफ देखा।

मैंने कहा, “Alternative route.”

“तुम्हारे alternative routes हमेशा destination से दूर क्यों जाते?”

“Exploration.”

वह हँसी। “तुम travel नहीं करते...”

मैंने पूरा किया, “Situations collect करता हूँ.”

“Good. कम से कम lesson याद है.”

वापस जाते समय एक narrow turn पर सामने से tourist group आया। Guide के पीछे सब एक जैसी caps पहने थे। मैं side देने के लिए रुका, फिर किसी photo frame की तरफ देखते हुए अनजाने में group के साथ चल पड़ा।

करीब तीस seconds बाद पीछे से Shristi की आवाज़ आई, “Excuse me, आपका group इधर है.”

मैंने पीछे देखा।

वह पाँच meter दूर खड़ी थी।

Tourist guide ने पूछा, “Sir हमारे साथ?”

“नहीं. गलती से.”

Group में दो लोग हँस पड़े।

मैं वापस आया।

Shristi ने कहा, “मैं तुम्हें तीन दिन से घुमा रही हूँ और तुम thirty seconds में नई company के साथ चले गए.”

“Architecture distract कर रहा था.”

“Of course.”

उसने tone मज़ाक वाला रखा, पर last word थोड़ा flatter था।

मैंने कहा, “Jealous guide?”

वह तुरंत बोली, “Please.”

और आगे चल दी।

मैं हँसा। वह नहीं हँसी।

दो minute बाद उसने किसी दुकान की बात शुरू कर दी और सब normal हो गया।

मैंने उस छोटे silence को भी seriously नहीं लिया।

दोपहर का असली खाना

GATTE, ROTI AND CHAAS

Lunch के लिए उसने कहा, “आज fancy नहीं.”

“मैं कब fancy माँगता?”

“जब menu photo अच्छा हो.”

“Character assassination.”

हम एक साधारण family restaurant में गए जहाँ air-conditioning थी लेकिन décor modest. Steel water jug, plain tables, wall पर menu. Nearby tables पर families और office लोग।

Shristi ने बिना बहुत discussion के order किया - gatte ki sabzi, missi roti, थोड़ी ker-sangri, plain rice, chaas.

“तुम हर बार order decide करोगी?” मैंने पूछा.

“तुम menu पढ़ते-पढ़ते railway connection miss कर दोगे.”

“Exaggeration.”

“Mathura से अभी तक evidence मेरे साथ है.”

Gatte की gravy thick थी, दही और मसाले की वजह से हल्की tangy. Besan के cylinders firm लेकिन dry नहीं; काटते ही अंदर मसाले की गर्म smell. Gravy में लाल मिर्च का रंग था, पर heat controlled. Missi roti के किनारे crisp, centre soft; besan और गेहूँ का nutty taste. Ker-sangri का flavour अलग - थोड़ा earthy, थोड़ा tangy, मसालेदार, texture chewy. Chaas thin, cold, ऊपर roasted cumin और black salt की हल्की smell.

पहले दो दिनों के rich dal-baati-churma के मुकाबले यह meal ज्यादा everyday लगा। Regional taste बना रहा, लेकिन शरीर पर बोझ कम।

Shristi धीरे खा रही थी। मैंने पूछा, “तुम Moscow में Indian food कितना बनाती?”

“कम.”

“क्यों?”

“Time.”

“Hostel?”

“कभी hostel, कभी shared flat. तुम जानते हो.”

“हाँ.”

“तुम्हें कुछ याद भी रहता है?”

उसका tone हल्का था, लेकिन सवाल अचानक personal लगा।

मैंने कहा, “बहुत.”

“Example?”

मैंने सोचकर कहा, “तुम black coffee नहीं पीती.”

“मैं coffee ही rarely पीती हूँ.”

“देखा, याद है.”

“और?”

मैंने सोचा। “तुम exam के पहले phone silent कर देती.”

वह मुस्कराई। “और?”

मैंने फिर सोचा।

“तुम snow में gloves भूलती रहती.”

इस बार उसकी smile बड़ी हुई। “एक बार भूली थी.”

“मुझे बार-बार याद है.”

वह कुछ seconds मुझे देखती रही।

“ठीक है,” उसने कहा. “पास.”

“Exam था?”

“तुम्हारे लिए हर conversation exam क्यों हो जाती?”

“Moscow medical student effect.”

हमने खाना जारी रखा।

कुछ देर बाद उसने casually पूछा, “मेरे बारे में first time क्या notice किया था?”

मैंने water glass रखा।

यह सवाल मुझे याद नहीं था कि किसी ने पहले पूछा हो।

“Moscow में?”

“हाँ.”

“तुम Hindi बहुत fast बोलती थी.”

वह blank face से मुझे देखती रही।

“बस?”

“और... तुम हर Indian gathering में जल्दी निकल जाती थी.”

“बस?”

“तुम क्या answer expect कर रही?”

उसने chaas का glass उठाया। “कुछ नहीं.”

फिर smile की। “तुमसे यही expect करना चाहिए था.”

मैं भी हँसा, क्योंकि मुझे लगा joke है।

वह थोड़ी देर window की तरफ देखती रही।

दोपहर की थाली: Jaipur/Rajasthan को सिर्फ भारी festive food से याद करना अधूरा है। Gatte ki sabzi की दही वाली tangy gravy, missi roti का besan-heavy nutty स्वाद, ker-sangri की chewy-earthy texture और ठंडी jeera chaas - यह meal tourist spectacle से ज्यादा रोज़मर्रा का regional comfort लगा।

छाँव में दो साल

MOSCOW, IN SMALL FLASHBACKS

Lunch के बाद धूप इतनी तेज थी कि तुरंत bike चलाने का मन नहीं हुआ। हम पास के एक shaded public space/park side में बैठ गए। Trees की छाया, दूर traffic, bench पर दो बुज़ुर्ग, jogging track पर धीमे लोग, कहीं बच्चों की आवाज़।

यह Jaipur का सबसे quiet moment था जो मैंने Shristi के साथ बिताया।

उसने पूछा, “Moscow कब वापस?”

“Trip खत्म होते ही.”

“Office next day?”

“Maybe one day rest.”

“फिर वही routine.”

“हाँ.”

वह shoes की lace से dust हटाने लगी।

“तुम वहाँ बहुत गायब रहते हो.”

“काम.”

“मुझे पता है.”

“और winter में घर.”

“वो भी पता है.”

“फिर?”

उसने मेरी तरफ देखा, जैसे जवाब बहुत obvious हो।

“कुछ नहीं.”

मैंने बात हल्की करने के लिए कहा, “तुम भी तो exams में disappear.”

“मैं वापस message करती हूँ.”

“मैं नहीं?”

“करते हो.”

“तो?”

“तीन दिन बाद.”

“Busy.”

वह मुस्कराई। “हाँ. बहुत busy.”

उस smile में complaint थी या मज़ाक - तब तय नहीं कर पाया।

कुछ देर चुप्पी रही।

मुझे Moscow की पहली winter याद आई जब Indian friends के छोटे group में Shristi से properly बात हुई थी। शायद दो-ढाई साल पहले। Outside temperature minus में था। हम किसी Indian grocery के पास chai जैसी चीज ढूँढ रहे थे। उसने मेरे cup में sugar डालते देखा था और कहा था:

“इतनी?”

मैंने कहा था, “हाँ.”

उसने सिर हिलाया था। “Long-term problem.”

आज Jaipur में उसने बिना पूछे वही extra sugar order की थी।

Memory का यह हिस्सा मुझे साफ याद था।

लेकिन मैंने उससे नहीं कहा।

दूसरी memory किसी metro platform की थी। वह exam से लौट रही थी, tired. मैंने पूछा था खाना खाया? उसने कहा था नहीं. फिर हम दो stops आगे जाकर Indian place पर जल्दी खाना खा आए थे. मेरे लिए वह random evening थी।

आज उसने suddenly पूछा, “तुम्हें वो metro वाली रात याद है?”

मैंने कहा, “जब तुम्हारा exam था?”

उसकी आँखें चमकीं। “याद है?”

“हाँ. तुमने बहुत खराब soup order किया था.”

उसकी चमक एक second में बदली। “Soup?”

“हाँ.”

“तुम्हें बस soup याद है?”

“और तुम्हारा exam.”

वह हँसी, लेकिन हल्के disappointment के साथ। “Great.”

मैंने पूछा, “और क्या याद होना चाहिए?”

“कुछ नहीं.”

फिर वही दो शब्द।

इस बार मैंने notice किया कि वह जब “कुछ नहीं” कहती, अक्सर उसके पहले कुछ होता था।

मैंने पूछा नहीं।

एक छोटा-सा उपहार जो उपहार नहीं था

NOT A GIFT, APPARENTLY

Park से उठते समय वह बोली, “एक जगह चलना है.”

“फिर secret plan?”

“तुम बस चलो.”

हम एक stationery/bookshop जैसी दुकान पर रुके। अंदर notebooks, pens, postcards, maps, small travel accessories. मैं books देखने लगा। वह counter पर कुछ पूछ रही थी।

कुछ देर बाद उसने एक छोटा black elastic notebook band मेरे हाथ में दिया।

“ये क्या?”

“तुम्हारी नीली diary के pages खुलते रहते हैं.”

मैंने उसे देखा।

“तुमने notice किया?”

“Amer वाले दिन bag से आधी बाहर थी.”

“मैं संभाल लेता.”

“हाँ. जैसे tickets संभालते हो.”

वह smile कर रही थी।

मैंने band लिया। Simple था, cheap. कोई dramatic gift नहीं।

“कितने का?”

“मत पूछो.”

“Pay कर देता हूँ.”

उसकी smile गायब हुई।

बहुत हल्की, लेकिन साफ।

“हर चीज़ का हिसाब रखना जरूरी है?”

मैंने कहा, “नहीं, मेरा मतलब...”

वह तुरंत normal tone में बोली, “Relax. Fifty rupees की चीज है. तुम्हारे travel budget को bankrupt नहीं करूँगी.”

मैंने हँसकर band pocket में रखा।

लेकिन इस बार मुझे लगा मैंने कुछ गलत कहा।

क्या, यह नहीं समझा।

Shop से बाहर निकलकर उसने helmet पहना। मैंने भी।

Bike start करने से पहले उसने पूछा, “Diary अभी hotel में?”

“हाँ.”

“अच्छा.”

“क्यों?”

“आज कम से कम किसी और कहानी के पीछे नहीं भाग रहे.”

“मैं कब भागा?”

Visor के पीछे उसकी आँखें हँसीं। “पूरी यात्रा.”

उसने bike आगे बढ़ा दी।

दोपहर से शाम

A CITY WITHOUT A PLAN

अगले कुछ घंटे किसी itinerary के बिना निकले। यही शायद पूरे Jaipur arc का सबसे अच्छा हिस्सा था।

हम कभी bike पर, कभी पैदल। कहीं roadside juice. कहीं local bookstore. कहीं उसने अपने पुराने college coaching route का corner दिखाया. कहीं एक traffic jam में पाँच minute खड़े रहे. कहीं roadside mechanic ने bike की हवा check की और पैसे लेने से मना कर दिया क्योंकि काम दो second का था.

मैं हर बार phone map निकालता, वह कहती, “रखो.”

“अगर खो गए?”

“मैं हूँ.”

वह यह line इतनी casually कहती कि उसमें कोई बड़ा meaning डालना गलत लगता।

फिर भी मुझे याद रही।

एक juice stall पर हमने mausambi juice लिया। Freshly pressed, हल्का pulp, ऊपर black salt. मैंने पहला sip लिया और कहा, “Sweet कम.”

Shristi ने अपना glass आगे बढ़ाया। “मेरा ज्यादा sweet है.”

“कैसे?”

“इसमें salt कम.”

“Exchange?”

उसने बिना hesitation glass बदल दिया।

मैंने दो sip बाद पूछा, “तुम्हें मेरा वाला ठीक लग रहा?”

“हाँ.”

“झूठ.”

“Drink.”

मैंने पी लिया।

छोटी चीजें थीं। इतनी छोटी कि उन्हें romantic कहना over-reading होता। शायद reader over-read करे। मैं नहीं कर रहा था।

थोड़ा आगे एक ice-cream/kulfi cart था। मैंने matka kulfi ली। Thick milk flavour, इलायची, ऊपर pistachio fragments. Surface firm, अंदर धीरे melt होती creamy texture. Heat के बाद पहला spoon almost instant relief.

मैं photo लेने लगा।

Shristi ने कहा, “फिर cold food writer.”

“यह already cold है.”

वह दो second चुप रही, फिर हँस पड़ी। “ठीक. यह वाला तुम्हारे favour में गया.”

मैंने जीत का gesture किया।

उसने मेरी kulfi से एक spoon ले लिया।

“Permission?”

“Guide fee.”

“Free guide?”

“अब समझ आया?”

हम दोनों हँसे।

जब मैंने रात की ट्रेन बताई

THE PLAN SHE ALREADY KNEW

शाम की तरफ हम एक quieter road पर bike रोककर chai लेने बैठे। Sun lower था. हवा थोड़ी soft. पूरा दिन body में settle होने लगा था।

मैंने phone पर ticket check किया।

Shristi ने पूछा, “आज ही?”

“हाँ. रात की train.”

“Ahmedabad?”

“हाँ.”

“Time?”

मैंने बताया।

वह सिर हिलाकर chai देखने लगी।

“क्या?” मैंने पूछा.

“कुछ नहीं.”

“फिर वही.”

“क्या?”

“तुम आज तीन बार ‘कुछ नहीं’ बोल चुकी.”

वह मेरी तरफ देखी। “Count भी कर रहे?”

“Travel notes.”

“Obviously.”

कुछ देर बाद उसने कहा, “एक दिन और रुक जाते.”

यह पहली बार था जब उसने सीधे कहा।

मैंने ticket screen दिखाकर कहा, “Route बिगड़ जाएगा.”

“Route.”

“हाँ.”

“Ten days वाला?”

“Already stretch हो गया.”

“तो एक और दिन से क्या?”

मैंने हँसकर कहा, “Book का title बदलना पड़ेगा.”

वह नहीं हँसी।

बस cup की rim पर उँगली फिराती रही।

“ठीक है,” उसने कहा.

उसका tone इतना normal था कि अगर मैं ध्यान न देता तो कुछ नहीं लगता।

इस बार मैंने ध्यान दिया।

“तुम चाहती थी रुकूँ?”

उसने तुरंत मेरी तरफ देखा।

एक second.

दो.

फिर मुस्कराई। “Jaipur बाकी है.”

“तुमने तो कहा तीन दिन में काफी घुमा चुकी.”

“City खत्म थोड़ी होती.”

मैंने सिर हिलाया। “Next time.”

“हाँ,” उसने कहा. “Next time.”

उस phrase में भरोसा था या frustration, मुझे नहीं पता।

मैंने topic बदल दिया। “Moscow वापस पहुँचकर coffee.”

“तुम message करोगे?”

“Of course.”

“कितने दिन बाद?”

“तुम count रखोगी?”

“शायद.”

“एक-दो.”

“तीन.”

“Fine. तीन से पहले.”

उसने पहली बार फिर हल्की मुस्कान दी। “देखते हैं.”

मैंने chai finish की।

वह मेरे खाली glass को देखती रही।

“चीनी ठीक थी?”

“थोड़ी कम.”

“तुम impossible हो.”

“ये तुम्हें Moscow से पता है.”

“हाँ,” उसने धीमे कहा. “काफी पहले से.”

होटल लौटना

PACKING FOR GUJARAT

Hotel वापस पहुँचते समय evening traffic dense था। Shristi ने मुझे entrance पर उतारा।

“कितना time?”

“एक घंटा.”

“मैं आती हूँ station.”

मैंने तुरंत कहा, “अरे जरूरत नहीं. घर जाओ. पूरा दिन घूमी हो.”

उसका चेहरा बहुत थोड़े समय के लिए बदला।

“ठीक,” उसने कहा.

मैंने सोचा बात खत्म।

फिर helmet पहनते हुए उसने पूछा, “Sure?”

“हाँ. मैं चला जाऊँगा.”

“मुझे पता है तुम चले जाओगे.”

Line simple थी। फिर भी कुछ अजीब लगा।

मैंने कहा, “Then?”

वह visor नीचे करते हुए बोली, “कुछ नहीं. Pack करो.”

Bike निकल गई।

मैं lobby में खड़ा कुछ seconds उसे जाता देखता रहा।

Reception वाला बोला, “Sir checkout?”

मैं अंदर आ गया।

Room में blue diary table पर रखी थी। मैंने Shristi वाला elastic band निकाला और diary के चारों तरफ लगाया। Fit perfect था। Loose pages अब दब गए।

मैंने smile किया।

फिर उस cloth pouch में पुराने tickets रखे। Jaisalmer-Jaipur ticket, bus slips, कुछ receipts. एक छोटी व्यवस्था आखिर बन गई थी।

मैंने सोचा उसे photo भेजूँ।

फिर लगा station पहुँचकर दिखाऊँगा.

फिर याद आया मैंने उसे आने से मना कर दिया।

“ठीक है,” मैंने खुद से कहा. “Moscow में.”

Bag pack किया। Shirt बदली। Phone charge. Camera battery. Passport. Wallet.

Room key pocket में डाली।

Door बंद करने से पहले दो बार check किया।

इस बार key अंदर नहीं छोड़ी।

Progress.

Reception पर bill settle किया। बाहर auto लिया। Driver से station कहा।

Auto चलने लगा तो phone vibrate हुआ।

Shristi:

“निकले?”

मैंने लिखा:

“हाँ. Auto.”

उसने सिर्फ:

“Okay.”

बस.

उसका “Okay” उसके usual messages से छोटा लगा।

मैंने सोचा शायद घर पहुँच गई और busy है।

स्टेशन पर वह फिर थी

SHE CAME ANYWAY

Jaipur station के बाहर auto रुका। मैं उतरा, backpack कंधे पर डाला और payment कर रहा था कि सामने parked bikes की line के पास कोई हाथ हिलाता दिखा।

Shristi.

मैं literally दो second उसे देखता रहा।

“तुम?”

“नहीं, hologram.”

“मैंने कहा था आने की जरूरत नहीं.”

“मैंने सुना था.”

“फिर?”

“मैंने माना नहीं.”

उसके हाथ में छोटा paper bag था। उसने मुझे दिया।

“क्या?”

“Train में.”

“Food?”

“हाँ.”

“मैं station पर ले लेता.”

वह कुछ seconds चुप रही।

फिर बोली, “मुझे पता है.”

यह sentence बहुत simple था और somehow सबसे भारी।

मैंने bag खोला। अंदर दो small packed parathas/rolls, थोड़ा achar अलग, एक sweet, और water bottle.

“इतना क्यों?”

“रात की train है.”

“मैं बच्चा नहीं.”

“Evidence mixed है.”

मैं हँसा। वह भी। Tension थोड़ा टूटा।

हम entrance की तरफ चले। Platform access के पहले वह रुक गई।

“मैं अंदर नहीं आ रही.”

“क्यों?”

“Parking.”

“और?”

“और goodbye platform पर ज्यादा dramatic होता है.”

“हम dramatic नहीं हैं.”

उसने मेरी तरफ देखा। “Exactly.”

कुछ seconds silence.

Station के बाहर auto horns, announcements की दूर आवाज़, luggage wheels, people crossing.

मैंने कहा, “Moscow में मिलते.”

“हाँ.”

“जल्दी.”

“तुम जल्दी का मतलब जानते हो?”

“इस बार तीन दिन से पहले message.”

“देखते हैं.”

मैंने backpack adjust किया।

उसने अचानक strap पकड़कर ऊपर किया। “फिर उल्टा.”

“क्या?”

“ये loose है.”

उसने buckle खींचकर tight किया। हमारे बीच distance एक second के लिए बहुत कम रह गया।

वह पीछे हटी।

“अब.”

“Thanks.”

“Welcome.”

मैंने कहा, “आज अच्छा था.”

वह मुस्कराई। “आज?”

“तीनों दिन. और आज.”

“Good recovery.”

“मैं sincere था.”

“मुझे पता है.”

उसकी आवाज़ soft थी।

फिर उसने पूछा, “एक बात बोलूँ?”

“हाँ.”

वह कुछ कहने लगी। होंठ खुले, फिर बंद।

“क्या?”

उसने सिर हिलाया। “कुछ नहीं.”

मैं हँसा। “Fourth time.”

उसने भी हँसने की कोशिश की, लेकिन आँखें नहीं हँसीं।

“जाओ. Train miss करोगे.”

“अभी time है.”

“तुम्हारे लिए नहीं.”

यह fair था।

मैंने हाथ बढ़ाया। उसने handshake की बजाय एक second के लिए मुझे hug किया।

बहुत छोटा।

इतना छोटा कि अगर कोई scene लिख रहा हो तो शायद उसे बढ़ाना चाहे।

असल जिंदगी ने नहीं बढ़ाया।

वह तुरंत पीछे हुई।

“Take care.”

“You too.”

“खाना खा लेना.”

“हाँ doctor.”

उसने आँखें घुमाईं। “Medical student.”

“Difference?”

“तुम्हें पता है.”

मैं हँसा।

मैं entrance की तरफ मुड़ा। दस कदम बाद पीछे देखा।

वह वहीं थी।

Phone हाथ में नहीं। Bike की तरफ नहीं गई थी। बस खड़ी थी।

मैंने हाथ हिलाया। उसने भी।

फिर मैं अंदर चला गया।

प्लेटफॉर्म पर देर से समझ आने वाली बातें

THE THINGS I DID NOT NAME

Platform पर पहुँचकर पहला काम coach position देखना था। दूसरा, पानी check करना। तीसरा, food bag खोलकर फिर बंद करना क्योंकि अभी भूख नहीं थी।

मैं bench पर बैठ गया।

Phone vibrate हुआ।

Shristi:

“Platform?”

मैंने लिखा:

“Yes.”

Reply:

“Good.”

फिर:

“Band diary pe laga lena.”

मैंने blue diary निकाली। Band already लगा था। मैंने photo भेजी।

कुछ seconds बाद:

“Finally.”

फिर एक छोटा heart नहीं आया। कोई dramatic line नहीं। कोई “miss you” नहीं।

बस:

“Safe travel.”

मैंने लिखा:

“Thanks for Jaipur.”

Typing dots काफी देर तक दिखे।

फिर गायब।

फिर दोबारा।

आखिर message आया:

“Anytime.”

मैंने phone रख दिया।

उस समय मैंने इस exchange में कुछ extraordinary नहीं देखा। दो पुराने दोस्त। एक शहर। कुछ दिन साथ. Goodbye.

लेकिन memory की एक अजीब आदत है - वह बाद में pauses को बड़ा कर देती है। कौन-सा शब्द देर से आया, कौन-सी बात अधूरी रह गई, कौन-सा सवाल मज़ाक में निकल गया.

उस रात platform पर मैं इतना analytical नहीं था।

मैं बस थका हुआ traveller था, Gujarat जाने वाली अगली train का इंतज़ार कर रहा था।

फिर भी एक बात साफ थी:

Jaipur की पहली arrival में मैंने city का map खोला था।

दूसरी departure में मैंने map नहीं खोला।

मेरे पास रास्ता था।

और शायद कुछ ऐसा भी, जिसका रास्ता अभी तय नहीं था।

रात का खाना - उसके हाथ का नहीं, उसकी योजना का

THE PAPER BAG

Train आने से पहले भूख लगी। मैंने Shristi का paper bag खोला।

अंदर दो soft paratha rolls थे। Filling simple - आलू, थोड़ा paneer, हरी chutney की thin layer, onion बहुत कम ताकि travel में smell न फैले. अलग छोटी packet में achar. एक छोटा piece milk sweet.

मैंने पहला bite लिया। Roti soft थी, filling mildly spiced. कोई restaurant-level complexity नहीं। Travel food की सबसे बड़ी quality यही थी कि वह easily खाया जा सके, गिराए बिना, plate के बिना, और बाद में stomach protest न करे।

उसने clearly सोचकर pack किया था।

मैंने phone उठाया:

“Food good.”

Reply तुरंत:

“Obviously.”

मैंने लिखा:

“Tumne banaya?”

कुछ seconds बाद:

“Mummy ne help ki.”

फिर:

“Mostly.”

मैंने हँसकर लिखा:

“Thank aunty.”

इस बार reply देर से आया:

“Kar dungi.”

मुझे बाद में ख्याल आया - वह hotel से जाने के बाद घर गई होगी, food pack कराया/किया, फिर bike लेकर station वापस आई।

मैंने उस calculation को वहीं रोक दिया।

क्योंकि तब तक train की announcement हो चुकी थी।

और मेरी आदत थी - emotion से पहले platform number देखना।

यात्रा का सबसे अच्छा packed food: वह हमेशा सबसे exotic dish नहीं होती। Soft paratha roll, हल्का आलू-paneer filling, थोड़ी chutney और अलग achar - रात की train के लिए practical, clean और comforting. Taste में मसाला कम था; memory में बहुत ज्यादा रह गया।

अगली ट्रेन

WEST TOWARD GUJARAT

Train platform पर आई। इस बार मैंने सही coach direction पहली कोशिश में पकड़ ली। इसे achievement मानना मेरी journey के standards के हिसाब से valid था।

Coach में चढ़ा। Seat ढूँढी। Backpack रखा। Water bottle side. Shoes. Phone charger.

Window के बाहर Jaipur platform था।

कुछ दिन पहले यही शहर unknown था। अब departure के समय उसके साथ specific sounds जुड़ गए थे - bike indicator, Shristi की dry laugh, chai glass की खनक, “situations collect करते हो”, और वह चौथा “कुछ नहीं” जो शायद सच में कुछ था।

Train चलने से पहले phone पर आखिरी message आया:

“Train चली?”

मैंने लिखा:

“Abhi.”

उसने:

“Okay. सो जाना.”

मैंने:

“Yes doctor.”

Reply:

“Medical student.”

मैं मुस्कराया।

Train ने jerk लिया। Platform slowly पीछे जाने लगा। Lights खिसकीं। Jaipur रात में dissolve होने लगा।

मैंने window से बाहर देखा।

यह goodbye नहीं लगा। शायद इसलिए कि Moscow में हम फिर मिलने वाले थे।

शायद इसलिए भी कि कुछ रिश्ते departure को ending बनने ही नहीं देते।

वे बस location बदलते हैं।

मैंने blue diary खोली नहीं।

आज नहीं।

उसके ऊपर Shristi का black elastic band लगा था।

मैंने उसे bag में रखा और Gujarat की तरफ जाती रात को देखा।

अगला शहर Ahmedabad था।

अगली कहानी फिर travel की थी।

Jaipur पीछे रह गया था।

लेकिन कुछ लोग शहर के साथ पीछे नहीं रहते।

CHAPTER TWENTY-FIVE

आश्रम एक्सप्रेस

ASHRAM EXPRESS

जयपुर से अहमदाबाद

A Night Train from Rajasthan into Gujarat

“राज्य की सीमा नक्शे पर एक रेखा होती है। रेल की खिड़की से वह भाषा, नाश्ते, मिट्टी और सुबह की रोशनी में धीरे-धीरे बदलती है।”

ट्रेन चलने के कुछ मिनट बाद तक मैं खिड़की से पीछे जाते Jaipur को देखता रहा।

Platform की सफेद रोशनी पहले तेज़ पट्टी बनी, फिर छोटे टुकड़ों में टूटी, फिर अँधेरे में घुल गई। बाहर शहर था; अंदर coach अपनी रात की व्यवस्था बना रहा था। कोई bag seat के नीचे धकेल रहा था, कोई sheet खोल रहा था, कोई phone पर आखिरी बार घर बता रहा था कि train चल गई है।

मेरे phone पर भी वही आखिरी message था:

"Okay. सो जाना."

नीचे:

"Medical student."

मैं मुस्कराया और phone pocket में रख दिया।

Jaipur chapter खत्म हो चुका था। कम से कम geography के हिसाब से।

Emotion geography से थोड़ा धीमा चलता है।

* * *

कोच में बसने की कला

SETTLING INTO THE NIGHT

मेरी berth side-lower थी। पिछली कई journeys के बाद यह luxury लग रही थी। कोई middle-berth geometry नहीं, कोई ऊपर चढ़ते समय पंखे से सिर टकराने की संभावना कम, और window अपने पास।

मैंने backpack seat के नीचे रखा, chain लगाई, water bottle side में, camera pouch ऊपर, shoes व्यवस्थित।

फिर पाँच मिनट बाद महसूस हुआ कि ticket वाला छोटा pouch backpack के अंदर रह गया है।

Chain खोली। Bag निकाला। Zip खोली। Pouch निकाला। Bag वापस धकेला। Chain लगाई।

फिर phone charger याद आया।

Chain दोबारा खुली।

सामने बैठे लगभग पचपन साल के आदमी मुझे देख रहे थे। तीसरी बार bag निकालते समय उन्होंने पूछा, “पहली बार यात्रा कर रहे?”

मैंने कहा, “बहुत बार.”

उन्होंने सिर हिलाया। “लग नहीं रहा.”

मेरी reputation अब नए राज्यों में भी independent travel कर रही थी।

उनका नाम प्रफुल्ल शाह था। Ahmedabad के रहने वाले। Jaipur में मशीन-पार्ट्स के काम से आए थे और अब घर लौट रहे थे। उनके साथ उनकी पत्नी हेमा थीं, जिन्होंने seat पर बैठते ही एक cotton bag से घर का खाना निकालना शुरू कर दिया था।

ऊपर वाली berth एक engineering student की थी - निखिल, जो Ajmer से आगे चढ़ने वाला था। सामने lower berth पर एक young salesman इमरान बैठा था, जिसकी नौकरी उसे Rajasthan और Gujarat के बीच लगातार घुमाती थी।

अलग उम्र, अलग काम, अलग शहर। अगले कुछ घंटों के लिए एक rectangle में बंद छोटी society.

प्रफुल्ल भाई ने पूछा, “Ahmedabad first time?”

“हाँ.”

“कितना time?”

“कम.”

“सब traveller यही बोलता है.”

“मेरे case में बहुत कम.”

उन्होंने route सुना - Delhi, Mathura, Vrindavan, Varanasi, Ayodhya, Lucknow, Prayagraj, Jaipur, Jaisalmer, फिर वापस Jaipur और अब Gujarat.

वह कुछ seconds चुप रहे।

“आप घूम रहे हो या train की attendance लगा रहे?”

मैं हँसा। “यह line पहले किसी ने transfer वाली बोली थी.”

“सही बोली.”

Night-train rule: berth मिलने के बाद दस मिनट में जो चीज चाहिए वह पहले निकाल लो - charger, पानी, ticket, चश्मा, दवा. वरना रात भर backpack को cupboard की तरह खोलना पड़ता है, और दूसरे यात्री आपके organisation skills पर research शुरू कर देते हैं।

Shristi का paper bag

DINNER BEFORE AJMER

भूख लौट आई थी। मैंने Shristi का paper bag फिर खोला। एक paratha roll बचा था और छोटा sweet piece.

हेमा बेन ने तुरंत पूछा, “घर से?”

मैंने कहा, “दोस्त ने pack किया.”

उन्होंने roll की तरफ देखा। “अच्छा दोस्त.”

मैंने casually सिर हिलाया। “हाँ.”

उनकी आँखों में वह expression आया जो aunties के पास जन्म से installed होता है - बिना सवाल पूछे तीन सवाल पूछ देना।

मैंने खाने पर ध्यान दिया।

Paratha रात तक भी soft था। भीतर आलू और paneer का हल्का filling, chutney की पतली परत, मसाला इतना कम कि train में पानी की bottle पर dependency न बढ़े। ठंडा होकर भी अच्छा लग रहा था। शायद taste में food से थोड़ा context भी mix हो गया था।

मैंने sweet का छोटा टुकड़ा खाया। Milk-based, हल्का इलायची, ऊपर सूखे मेवे का छोटा fragment.

हेमा बेन ने पूछा, “बस इतना?”

“Enough.”

उन्होंने अपने bag से steel dabba निकाला।

“Thepla?”

“अभी?”

“Train में अभी नहीं तो कब?”

यह argument Indian Railways में constitutional status रखता है।

उन्होंने एक thepla मेरी plate पर रख दिया। पतला, soft लेकिन dry enough कि हाथ oily न हों। गेहूँ के आटे में methi की earthy खुशबू, हल्दी की हल्की गर्मी, mirch बहुत controlled. साथ में छोटा spoon chhundo - मीठा आम, जिसमें sugar की चमक और मसाले का हल्का edge था।

पहला bite लेते ही Rajasthan के rich ghee और heavy meals के बाद स्वाद का mood बदल गया। Thepla loud नहीं था। Travel food की तरह practical था - fold करो, pickle/chhundo लगाओ, खाओ, आगे बढ़ो।

मैंने कहा, “ये train के लिए perfect है.”

हेमा बेन बोलीं, “इसीलिए लोग घर से दस लेकर निकलते हैं.”

प्रफुल्ल भाई ने बीच में कहा, “दस? आपने बीस रखे हैं.”

“आपके लिए नहीं.”

उनकी शादी को शायद decades हो चुके थे, लेकिन food inventory पर jurisdiction अभी भी disputed था।

मैंने phone से एक photo लेने की कोशिश की।

हेमा बेन ने कहा, “पहले खाओ. ठंडा होगा.”

मैंने camera नीचे रख दिया।

मुझे Shristi की आवाज़ याद आई: “Photo बाद में.”

एक ही advice अलग-अलग states में मिल रही थी। शायद मैं सच में problem था।

अजमेर की रात

AJMER UNDER PLATFORM LIGHTS

रात थोड़ी आगे बढ़ी तो coach की खिड़की के बाहर शहर की रोशनी फिर घनी होने लगी। Train धीमी हुई। Track के किनारे warehouses, छोटे houses, signals, yard की lights. फिर platform.

Ajmer.

यह stop इतना लंबा था कि कई लोग नीचे उतर गए। मैं भी bottle भरने और chai लेने उतर गया।

प्रफुल्ल भाई ने कहा, “दूर मत जाना.”

मैंने कहा, “अब experienced हूँ.”

उन्होंने मेरी तरफ वैसे ही देखा जैसे Saurabh ने Prayagraj वाली train में देखा था।

“यही डर है.”

Platform पर रात का अपना तापमान था। दिन की गर्मी पीछे हट चुकी थी। हवा में rail dust, chai, frying oil और metal की मिली-जुली smell. Vendors अब भी active थे। किसी cart पर kachori, कहीं packaged snacks, कहीं गरम दूध, कहीं चाय के छोटे cups.

मैंने chai ली और पूछ लिया, “ये कौन-सी kachori?”

दुकानदार ने नाम बताया। मैंने गलत दोहराया।

उसने फिर बताया।

मैंने फिर गलत.

वह हँसा। “खाने में pronunciation नहीं लगता.”

“Good policy.”

Kachori छोटी लेकिन भारी थी। बाहर की परत crisp, भीतर दाल और मसाले का dense filling. गरम तेल की खुशबू अभी भी थी, लेकिन bite में अजवाइन और सूखे मसाले ज्यादा साफ आए। Side की chutney मीठी-खट्टी थी, ऊपर से थोड़ी तीखी. रात के platform पर यह snack hunger से ज्यादा जागने का कारण था।

मैंने photo लेने के लिए cup एक ledge पर रखा। Kachori का angle ठीक किया। Phone निकाला।

Photo लिया।

फिर chai ढूँढी।

Ledge पर दो cups थे।

मैंने एक उठाया।

बगल वाले आदमी ने कहा, “वो मेरा है.”

मैंने तुरंत रखा। “Sorry.”

उसने दूसरा cup मेरी तरफ इशारा किया। “आपका ये.”

मैंने अपनी chai ली।

Travel photography का hidden cost अब hygiene तक पहुँच गया था।

Coach में वापस आया तो हेमा बेन ने पूछा, “Train miss नहीं की?”

“नहीं.”

प्रफुल्ल भाई बोले, “Chai किसकी पी?”

मैंने उन्हें देखा। “आपने देखा?”

“Window से.”

पूरा compartment हँस पड़ा।

रात गहरी होती है

RAJASTHAN AFTER MIDNIGHT

Ajmer के बाद coach धीरे-धीरे शांत हो गया। Curtains, blankets, low voices, chargers की छोटी lights. बाहर landscape लगभग गायब था। कभी दूर किसी कस्बे की रोशनी, कभी highway की moving headlights, कभी station का अचानक उजाला.

मैं side-lower पर लेटा लेकिन नींद तुरंत नहीं आई। कई दिनों की यात्रा में body tired थी, पर mind अब भी Jaipur के आखिरी hours rewind कर रहा था।

Extra helmet.

Extra sugar.

“कुछ चीजें इतनी जल्दी नहीं बदलती.”

Station पर वह छोटा hug.

Typing dots.

“Anytime.”

मैंने खुद पर हँसने जैसा कुछ महसूस किया। इतनी सारी जगहों में clues ढूँढते हुए मैं लोगों की सीधी बात भी complicated कर देता था, और complicated बात को कभी-कभी simple समझकर छोड़ देता था।

यह observation उस समय भी पूरी तरह clear नहीं थी। बस एक discomfort था, जैसे कोई sentence अधूरा पढ़ा हो।

Phone vibrate हुआ।

Shristi:

“सो गए?”

मैंने time देखा। रात काफी हो चुकी थी।

मैंने लिखा:

“Nahi. Ajmer cross.”

Reply:

“Maine bola tha सो जाना.”

मैंने:

“Tum bhi nahi soyi.”

Typing dots आए।

गायब।

फिर:

“Mujhe kal late uthna hai.”

मैंने लिखा:

“Lucky.”

उसने:

“Good night, traveller.”

मैंने:

“Good night, doctor.”

दो seconds बाद:

“Medical student 🙄”

मैं हँसा और phone उल्टा रख दिया।

ऊपर berth से इमरान की आवाज़ आई, “भाई, girlfriend?”

मैंने बिना सोचे कहा, “Friend.”

ऊपर कुछ seconds silence.

फिर वह बोला, “ठीक है.”

उस “ठीक है” में विश्वास कम था।

मैंने आँखें बंद कर लीं।

एक पुराने यात्री की नीली डायरी

THE NOTEBOOK STAYS QUIET

नींद से पहले मैंने backpack से blue diary निकाल ली। Habit थी, compulsion नहीं। अब उसे खोलते समय pulse नहीं बढ़ती थी। Freemasonry वाला पूरा अनुमान Lucknow-Prayagraj के रास्ते ही टूट चुका था। “Br.” का मतलब Bridge निकला था, symbols engineering marks, और बहुत-सी locations बस एक retired railway engineer की यात्रा और heritage notes.

यह relief था। Mystery जितनी छोटी हुई, आदमी उतना बड़ा होने लगा।

अब diary में कोई shadowy society नहीं दिखती थी। एक व्यक्ति दिखता था जो station की छत, old bridge की masonry, colony का bungalow, temple का shikhara, bazaar का facade, light की direction और पुराने शहर की layers नोट करता था।

मैंने Gujarat वाले pages खोजे।

एक जगह faded handwriting:

“Ahmedabad - station facade - old city - pol houses - morning light.”

नीचे rough rectangle और arches का छोटा sketch.

बस.

कोई code नहीं। कोई instruction नहीं।

मैंने diary बंद कर दी।

मुझे पहली बार अच्छा लगा कि उसने मुझे कुछ नहीं बुलाया। Ahmedabad मेरी अपनी route पर था। Diary के engineer ने शायद decades पहले वही शहर अलग आँखों से देखा था। यह connection enough था।

हर connection को mystery बनाना जरूरी नहीं। कभी-कभी दो travellers बस अलग समय में एक ही station पर उतरते हैं।

बीच रात का मारवाड़

BEAWAR, MARWAR AND DARK WINDOWS

किसी छोटे झटके से नींद खुली। Coach में mostly darkness थी। बाहर station board तेज़ी से निकला। मैं नाम पूरा नहीं पढ़ पाया। Phone देखा। रात गहरी.

Train अब Rajasthan के उस हिस्से से गुजर रही थी जहाँ दिन में hills, dry scrub और stone colors दिखते; रात में सब एक ही black surface बन जाता है। केवल दूर settlements की yellow lights और कभी railway crossing पर इंतज़ार करते trucks.

मैं washroom गया। लौटते समय अपनी berth से एक coach आगे निकल गया। सब curtains और sleeping bodies एक जैसे लगे। मैंने confident walk जारी रखा।

फिर एक berth पर sleeping man के पैर देखकर लगा - यह प्रफुल्ल भाई के पैर नहीं हैं। यह sentence बहुत strange है, लेकिन रात की train में navigation ऐसे ही होता है।

मैं वापस मुड़ा।

Door के पास TTE जैसा एक आदमी खड़ा था। उसने पूछा, “कहाँ?”

मैंने coach number बताया।

उसने पीछे इशारा किया। “उधर.”

“मुझे पता था.”

वह बोला, “तभी तो आगे जा रहे थे.”

मैंने कोई defence नहीं दिया।

अपनी berth पर लौटा। ऊपर से इमरान की sleepy आवाज़ आई, “Bathroom Gujarat में था?”

“गलत direction.”

“Experienced traveller.”

यह phrase भी अब national property बन चुका था।

अबू रोड की ठंडी हवा

A PAUSE NEAR THE ARAVALLIS

दूसरी बार आँख Abu Road के आसपास खुली। इस बार station का नाम साफ दिखा। Train कुछ देर रुकी। कई passengers उतरे, कुछ चढ़े। Platform की हवा Jaipur और Ajmer से noticeably ठंडी लगी।

मैंने shawl नहीं निकाली, लेकिन jacket की zip ऊपर कर ली।

प्रफुल्ल भाई भी जाग गए थे।

“Chai?” उन्होंने पूछा।

यह सवाल रात के तीन बजे भी friendship activate कर देता है।

हम नीचे उतरे।

Platform पर steam उठती chai मिली। मैंने usual ज्यादा चीनी वाली मांगी। Vendor ने दो spoon डाले। मैंने कहा, “एक और थोड़ा.”

प्रफुल्ल भाई ने मेरी तरफ देखा। “आप chai पीते हो या dessert?”

“Personal choice.”

“Medical advice?”

मुझे Shristi याद आई। “Medical student disagree करेगी.”

उन्होंने cup लिया। “वही friend?”

“हाँ.”

उन्होंने कुछ नहीं कहा। बस मुस्कराए। Married men भी apparently aunties वाला software install कर लेते हैं।

Chai गाढ़ी थी, दूध strong, पत्ती कड़क. Extra sugar ने bitterness almost पूरी cover कर दी। ठंडी हवा में cup दोनों हाथों से पकड़ना taste का हिस्सा था। पास किसी stall पर bun, biscuit, packaged namkeen. रात के इस समय elaborate food नहीं; शरीर को बस गरम liquid और कुछ calories चाहिए।

Platform के beyond darkness थी। मैंने पूछा, "यहाँ से Gujarat कितना?"

प्रफुल्ल भाई बोले, "अब ज्यादा नहीं. सुबह तक language बदलने लगेगी."

"Landscape?"

"वो भी. लेकिन border पर कोई curtain नहीं गिरता. धीरे समझ आएगा."

यही बात मुझे पसंद आई। State change railway announcement नहीं करता। पहले किसी passenger का accent बदलेगा, फिर station board पर script का balance, फिर breakfast का नाम, फिर field pattern, फिर दुकानों के boards.

Map line बाद में याद आती है।

Train चलने की तैयारी हुई। हम चढ़ गए। Door से एक क्षण बाहर देखा। Platform पीछे गया, cool air अंदर आई, फिर door बंद.

Rajasthan की आखिरी गहरी रात थी।

सुबह से पहले की बातचीत

WORK, BUSINESS AND MOVING WEST

अब नींद हल्की थी। प्रफुल्ल भाई भी पूरी तरह नहीं सोए। Side seat पर बैठकर हमने धीरे बात की ताकि बाकी लोग न जागें।

मैंने उनके business के बारे में पूछा। Machine parts supply, small industrial units, orders, payments, transport delays, quality issues. उनके लिए Jaipur और Ahmedabad tourist points नहीं थे; customer और supplier locations थे।

“Travel पसंद?” मैंने पूछा।

“काम का travel और घूमना अलग है.”

“कैसे?”

“आप Hawa Mahal देखो. मैं industrial area देखता हूँ. आप local food ढूँढो. मैं meeting के बाद जो मिला खा लेता हूँ.”

मैंने कहा, “मैं भी कई बार जो मिला खाता हूँ.”

उन्होंने हँसकर कहा, “आप photo लेते हो पहले.”

Ajmer platform incident ने मुझे permanently disqualified कर दिया था।

उन्होंने बताया कि उनके पिता generation में business family-run था। उनके बेटे की interest technology में ज्यादा है, traditional business में कम।

“Problem?”

“पहले लगा. फिर सोचा हमने अपने पिता की बात पूरी मानी थी क्या?”

उन्होंने window के बाहर देखा।

“हर generation दूसरे को continuity बोलती है और खुद change करती है.”

यह line notebook-worthy थी। मैंने लिख ली।

बात jobs पर आई। Small-town youth, engineering degrees, city migration, family businesses, salaried work. वह किसी political conclusion तक नहीं गई। Practical थी। कौन risk ले सकता है, किसके पास family capital है, कौन stable salary चाहता है, किसे hometown छोड़ना पड़ता है.

“आप Moscow क्यों?” उन्होंने पूछा।

मैंने job, opportunity और circumstances का छोटा version बताया।

“वापस?”

“देखते हैं.”

“घर कहाँ?”

मैंने जवाब दिया।

उन्होंने कहा, “फिर आप भी migration वाले हो. बस international.”

सही था। शब्द बड़ा लगने से अनुभव अलग नहीं हो जाता। Work के लिए घर से दूर रहना scale बदलता है, basic feeling नहीं।

सुबह की पहली गुजराती आवाज़ें

PALANPUR BEFORE SUNRISE

किसी समय dark window grey होने लगी। यह sunrise नहीं था, बस darkness की पकड़ ढीली पड़ रही थी। Station आया। Board पर Palanpur.

Coach में activity वापस शुरू हुई। ऊपर की berths से लोग उतरने लगे। Bottles, slippers, folded blankets, toothbrush pouches. Night train फिर bedroom से transport बन रही थी।

Platform पर vendors की आवाज़ों में बदलाव था। Hindi के साथ Gujarati sounds ज्यादा clear. मैं हर शब्द समझ नहीं रहा था, लेकिन rhythm अलग थी।

एक vendor tray में farsan packets लेकर आया। दूसरे के पास chai. तीसरे ने कुछ ऐसा पुकारा जिसे मैंने “ganthia” सुना।

मैंने पूछा, “गांठिया?”

वह बोला, “गांठिया.”

मैंने फिर अलग pronunciation किया।

हेमा बेन हँस पड़ीं। “पहले खाओ, बाद में बोलना सीखना.”

यह Ajmer वाले दुकानदार की policy का Gujarati version था।

Packet खुला। लंबे, हल्के पीले, besan के fried strips. Texture crisp लेकिन sev जैसा brittle नहीं; थोड़ा airy, थोड़ा dense. Salt और ajwain/pepper का subtle flavour. साथ छोटी packet में fried green chilli.

मैंने chilli का छोटा bite लिया।

गलती.

तीखापन तुरंत नहीं आया। पहले salt, फिर हल्की bitterness, फिर अचानक heat.

हेमा बेन ने कहा, “पूरी मत खाना.”

मैंने आँखों में पानी रोकते हुए कहा, “मैं taste कर रहा था.”

प्रफुल्ल भाई बोले, “चेहरा research paper जैसा हो गया.”

मैंने chai का sip लिया। गलत उपाय. गरम chai ने आग को और स्पष्ट किया।

हेमा बेन ने अपने bag से छोटा piece गुड़ दिया।

“ये लो.”

मैंने बिना ego के लिया। यात्रा ने humility बहुत practical तरीके से सिखाई थी।

सुबह का पहला Gujarati snack: गांठिया का स्वाद बहुत loud मसाले से नहीं, besan की गर्म खुशबू, नमक और crisp texture से आता है। Fried chilli साथ में आकर्षक दिखती है; उसकी मात्रा अपने आत्मविश्वास से नहीं, अपनी सहनशक्ति से तय करें।

खिड़की के बाहर बदलती जमीन

WHEN RAJASTHAN BECOMES GUJARAT

Sunrise अब horizon के पास हल्का orange बना रहा था। खिड़की के बाहर details वापस आने लगीं। Dry scrub के बीच खेतों की patches ज्यादा व्यवस्थित दिखीं। कहीं irrigation channels, कहीं low farmhouses, कहीं dairy animals, कहीं सुबह की smoke.

मैं geography expert नहीं था, इसलिए हर field को crop name देने की गलती नहीं की। बस pattern देखा। Rajasthan के कई stretches में जो openness और stone-dry tones थे, यहाँ धीरे-धीरे cultivated blocks, settlement density और roadside activity बढ़ती लगी।

Telephone poles और electric lines के बीच sunrise आता रहा। किसी village road पर milk cans के साथ motorbike. एक crossing पर school bus. छोटे temple spires. दूर industrial shed. फिर खेत.

Train की सबसे अच्छी चीज यह थी कि state change को ceremony नहीं चाहिए।

किसी ने coach में announcement नहीं की: अब आप Gujarat में हैं.

फिर भी breakfast बदल चुका था। भाषा बदल रही थी। station boards पर familiar letters के साथ नई script patterns ज्यादा दिखाई दे रहे थे। Compartment में phone calls का tone बदल गया था।

और हेमा बेन अब घर पहुँचने की तैयारी में थीं।

उन्होंने दूसरा dabba खोला।

“Breakfast proper.”

मैंने कहा, “अभी गांठिया.”

“वो snack.”

Indian families और nutrition definitions के बीच debate असंभव थी।

इस बार थेpla के साथ dry bateta shaak. आलू छोटे cubes में, हल्दी से पीले, mustard seeds, curry leaves, थोड़ी mirch, हल्का lemon. Oil कम, texture dry ताकि travel में leak न हो। साथ homemade pickle और chhundo.

Thepla की methi smell सुबह में ज्यादा fresh लगी। आलू soft लेकिन mushy नहीं। Mustard seed bite में tiny sharpness देता। Chhundo sweet था, जिससे savory और spicy के बीच contrast बनता।

मैंने पूछा, “इतना खाना लेकर आप दो लोग निकले थे?”

प्रफुल्ल भाई बोले, “मैं भी यही पूछता हूँ.”

हेमा बेन ने कहा, “रास्ते में लोग मिलते हैं.”

मैं उनकी plate पर third person था। शायद इसीलिए extra food था।

Travel में hospitality कभी planned guest list नहीं पूछती।

मेहसाणा की तरफ

MORNING GETS BUSIER

जैसे-जैसे सुबह बढ़ी, stations ज्यादा awake लगे। Platform पर commuters, newspaper bundles, tea stalls, office-bound passengers. Train अब night-long distance machine से morning connection बन रही थी।

निखिल, जो रात में ऊपर सोया था, अब नीचे बैठा laptop bag pack कर रहा था। Ahmedabad में engineering-related internship. उसने पूछा मैं क्या लिख रहा हूँ।

“Travel notes.”

“Blog?”

“Book शायद.”

“इतना Hindi?”

मैंने notebook दिखाई। “कोशिश.”

वह बोला, “Good. वरना travel books में India बहुत बार English में ही travel करता है.”

Line interesting थी। मैंने पूछा, “तुम क्या पढ़ते हो?”

उसने engineering और competitive exams का familiar combination बताया। Private sector भी, सरकारी exams भी, जो opportunity मिले.

मैंने हँसकर कहा, “Prayagraj में एक student मिला था. उसका भी यही जवाब था - जो निकल जाए वही अपनी.”

निखिल ने कहा, “देश भर में common syllabus.”

हमने education, internships, skill gap और शहर बदलने पर बात की। कोई grand conclusion नहीं। उसकी चिंता simple थी: degree खत्म होने से पहले practical काम सीखना. Family चाहती थी stable job. वह शायद startup try करना चाहता था. फिर खुद ही बोला, “पहले salary आ जाए, फिर dream.”

प्रफुल्ल भाई सुन रहे थे। उन्होंने कहा, “Salary dream को मारती नहीं. कभी-कभी fund करती है.”

निखिल ने मुस्कराकर कहा, “Uncle, ये line मैं घर पर बोलूँगा.”

“Royalty लगेगी.”

मैंने कहा, “आपकी lines की royalty list लंबी हो रही.”

Compartment फिर कुछ देर हँसा।

Window के बाहर industrial sheds बढ़ने लगे। Tracks parallel हुए। Freight wagons. Warehouses. Settlement denser. Ahmedabad का influence धीरे-धीरे landscape में आने लगा था, city board से पहले।

चाय में चीनी और एक पुरानी आदत

A SMALL MORNING MESSAGE

मैंने फिर chai ली। Vendor ने पूछा, “Sugar?”

मैंने कहा, “ज्यादा.”

उसने standard cup दिया। मैंने sip लिया। मेरे standards के हिसाब से sugar कम थी।

मैंने packet माँगा। एक डाला। फिर दूसरा.

निखिल ने कहा, “इतनी?”

“हाँ.”

प्रफुल्ल भाई ने कहा, “Medical student को मत बताना.”

मैं हँसा।

Phone उसी समय vibrate हुआ।

Shristi:

“उठ गए?”

मैंने chai की photo भेजी।

Reply:

“Sugar कितनी?”

मैंने लिखा:

“Normal.”

तीन seconds बाद:

“झूठ.”

मैं हँस पड़ा।

निखिल ने पूछा, “क्या?”

“कुछ नहीं.”

यह phrase contagious था।

मैंने लिखा:

“Gujarat entering. Thepla done.”

उसने:

“Tumhe thepla mila aur mujhe photo bhi nahi?”

मैंने plate का बचा हुआ हिस्सा photo किया।

Reply:

“Terrible photo.”

मैंने:

“Food writer.”

उसने:

“Cold food writer.”

मैं कुछ seconds screen देखता रहा। Saurabh ने Prayagraj train में यही joke किया था, लेकिन Shristi को मैंने शायद कभी detail में बताया होगा। या photo habit से वह खुद समझ गई थी।

मुझे याद नहीं आया। उसे याद था।

मैंने बस हँसता emoji भेजा।

फिर window की तरफ देख लिया।

कभी-कभी इंसान signal miss नहीं करता। वह उसे signal मानता ही नहीं।

साबरमती के पास

THE CITY BEGINS BEFORE THE STATION

अब बाहर पूरी सुबह थी। Train की speed कम होने लगी। Dense tracks, sidings, industrial edges, apartment blocks, पुराने low-rise areas, road bridges, walls पर paint, morning traffic.

प्रफुल्ल भाई ने कहा, “Ahmedabad.”

कोई dramatic skyline नहीं था। City धीरे-धीरे coach के बाहर जमा हो रही थी।

Railway settlements, sheds, signals. दूर flyover. कहीं temple dome, कहीं concrete blocks. Morning haze में colors muted थे।

मेरी नीली diary bag में थी। उसके Gujarat page पर “station facade - old city - pol houses - morning light” लिखा था।

मैंने उसे नहीं निकाला।

आज पहले अपनी आँख से देखना था। बाद में compare करेंगे।

Coach में departure ritual शुरू हो चुका था। Bedding fold. Bottles check. Phone charger निकालो. Shoes पहन लो. सीट के नीचे हाथ डालकर confirm करो कि कुछ रह नहीं गया।

मैंने backpack निकाला। Chain खोली। Camera, diary, pouch, charger, bottle.

सब था।

फिर मैंने seat के नीचे देखा। एक सफेद sugar sachet पड़ा था।

मैंने उठा लिया।

प्रफुल्ल भाई बोले, “आपका ही होगा.”

“Evidence circumstantial है.”

“तीन extra sugar के बाद बहुत strong evidence है.”

मैंने sachet pocket में रख लिया।

हेमा बेन ने आखिरी दो thepla foil में wrap करके मेरी तरफ बढ़ाए।

“City घूमते भूख लगेगी.”

“इतना खिला दिया already.”

“वो रात थी. ये सुबह के बाद.”

मैंने accept कर लिया। Hospitality से बहस करना disrespect जैसा लगने लगा था।

मैंने दोनों को धन्यवाद कहा।

प्रफुल्ल भाई ने अपना card देना चाहा। मैंने लिया, लेकिन कहा, “Book छपी तो भेजूँगा.”

वह बोले, “पहले दस दिन complete करो.”

मैंने हँसकर कहा, “Timeline थोड़ा creative हो चुका है.”

उन्होंने कहा, “India में train और travel plan दोनों creative होते हैं.”

अहमदाबाद - पहली साँस

ARRIVAL

Train platform पर आकर रुकी। Door खुलते ही बाहर की हवा रात से अलग थी - warmer, dry, और पूरी तरह morning वाली।

Platform पर passengers का flow तुरंत तेज हुआ। कोई auto की तरफ, कोई family को phone, कोई porter बुला रहा, कोई chai. स्टेशन की announcements के बीच Gujarati और Hindi दोनों सुनाई दे रहे थे।

मैं नीचे उतरा। Backpack कंधे पर आया। शरीर ने उसका वजन तुरंत याद किया।

प्रफुल्ल भाई और हेमा बेन दूसरी direction में चले गए। आखिरी बार हाथ हिलाया। Nikhil अपने internship वाले दोस्त को phone कर रहा था। Imran ने shoulder bag उठाया और crowd में गायब हो गया।

एक रात का neighbourhood dismantle हो गया।

Indian train की friendships अक्सर address के बिना खत्म होती हैं। फिर भी कुछ sentences लंबे चलते हैं।

मैं platform पर दो minute रुका। जल्दी बाहर निकलने की जरूरत नहीं थी। रात भर Rajasthan पीछे गया था। अब Gujarat सामने था।

एक stall से chai की smell आई। साथ में fried farsan. कहीं कोई “fafda” बोल रहा था। मेरा stomach, जो अभी thepla खाकर बैठा था, फिर interested हो गया।

मैंने खुद से कहा - पहले hotel.

Stomach ने कहा - यह sentence पहले भी सुना है।

Phone पर Shristi का message आया:

“Reached?”

मैंने लिखा:

“Yes. Ahmedabad.”

Reply:

“Good.”

फिर:

“Bag check kar lena उतरते time.”

मैंने backpack देखा।

“Already.”

उसने:

“Proud.”

मैंने phone pocket में रखा।

Station exit की तरफ बढ़ा। बाहर दिन पूरी तरह खुल रहा था। Auto drivers, buses, local traffic, hotel boards, tea stalls, commuters. हवा में fried gram flour, diesel और morning dust की smell थी।

Ashram Express पीछे platform पर खड़ी थी।

मेरे लिए वह अब बस train नहीं थी। वह एक रात थी जिसमें Jaipur धीरे-धीरे Rajasthan बना, Rajasthan रात बना, रात Abu Road की ठंडी chai बनी, फिर Palanpur की गांठिया, thepla, Gujarati आवाज़ें और सुबह की नई जमीन.

मैंने station building की तरफ एक बार देखा।

Blue diary के engineer ने शायद इसी शहर को decades पहले अपनी भाषा में लिखा था।

मैं अपनी लिखने वाला था।

पहला काम?

Hotel नहीं.

मैंने बाहर आते ही fafda-jalebi की smell पकड़ ली।

कुछ decisions map से नहीं होते।

कुछ नाक से होते हैं।

CHAPTER TWENTY-SIX

सूर्योदय से पहले अहमदाबाद

AHMEDABAD BEFORE SUNRISE

अहमदाबाद

Day Ten - Morning to Night

“किसी शहर को समझने के लिए उसकी सबसे प्रसिद्ध इमारत से पहले उसकी पहली चाय, पहली गली और पहला गलत मोड़ याद रह जाता है।”

Ahmedabad Junction से बाहर निकलते समय सूरज पूरी तरह निकला नहीं था, लेकिन शहर जाग चुका था।

Station के सामने auto, taxi, local buses, दोपहिया, सामान खींचते लोग और चाय की छोटी दुकानों ने सुबह को पहले ही traffic में बदल दिया था। हवा में रात की हल्की ठंडक बची थी, पर उसमें तले हुए बेसन, diesel और धूल की मिली-जुली गंध घुल चुकी थी।

मैंने backpack कंधे पर ठीक किया। पिछली रात Ashram Express में हेमा बेन ने दिए दो thepla अभी bag में थे। Logic कह रहा था कि breakfast की जरूरत नहीं है।

फिर बाईं तरफ से गरम तेल में कुछ टूटने की आवाज़ आई।

उसके साथ jalebi की मीठी खुशबू।

Logic ने resignation दे दिया।

* * *

फाफड़ा-जलेबी की पहली प्लेट

BREAKFAST WINS BEFORE THE HOTEL

Station से थोड़ी दूरी पर एक दुकान के सामने पहले से भीड़ थी। कोई office जाने से पहले खड़ा था, कोई family के लिए parcel बनवा रहा था, कोई scooter पर बैठा-बैठा खा रहा था। Counter के पीछे आदमी की गति देखकर साफ था कि सुबह का यह rush नया नहीं था।

लंबे, पतले, हल्के मुड़े हुए fafda एक steel tray में रखे थे। उनकी सतह पर छोटे बुलबुले और तलने की महीन दरारें थीं। बगल में पीले रंग की kadhi जैसी chutney, कच्चे papaya का sambharo और तली हुई हरी मिर्च। दूसरी तरफ jalebi का रंग सुबह की धुंधली रोशनी में भी अलग चमक रहा था।

मैंने पूछा, “एक plate fafda-jalebi.”

दुकानदार ने पूछा, “Mirchi?”

Lucknow की लाल chutney और Palanpur की fried chilli अभी memory में थीं। मुझे सावधान होना चाहिए था।

मैंने कहा, “थोड़ी.”

उसने दो रख दीं।

भारत में “थोड़ी” का standard unit अभी तक तय नहीं हुआ था।

Fafda हाथ में उठाते ही वह उम्मीद से हल्का लगा। पहला bite लेते ही crisp layer दाँत के नीचे टूटकर छोटे टुकड़ों में बिखरी। Besan का स्वाद साफ था - हल्का नमकीन, अजवाइन और pepper जैसी गर्माहट, तेल की मौजूदगी मगर भारीपन नहीं। ऊपर से papaya sambharo लिया तो texture बदल गया। कच्चे पपीते की पतली strips में हल्की मिठास, mustard की खुशबू और acidity. फिर पीली chutney - smooth, गर्म, थोड़ी मीठी, थोड़ी खट्टी।

और फिर jalebi.

गरम syrup भीतर तक भरा था। बाहर crisp, अंदर sticky sweetness. Fafda की नमकीन dryness के बाद jalebi का sugar इतना सीधा लगा जैसे किसी ने breakfast में dessert का दरवाज़ा बिना warning खोल दिया हो।

मैंने दूसरी jalebi ली।

पास खड़े बुजुर्ग ने देखा और कहा, “पहली बार?”

मैंने पूछा, “इतना साफ?”

“आप fafda को बहुत ध्यान से देख रहे.”

यह वही बीमारी थी जो हर शहर में मुझे tourist साबित कर देती थी - local food को microscope की तरह देखना।

Chai आई। मैंने एक sip लिया। Sweet थी, पर मेरे standard से नहीं।

मैंने कहा, “थोड़ी चीनी और?”

चायवाले ने एक spoon डाली।

मैंने cup देखा।

“एक और.”

उसने दूसरी डाली।

मैंने कुछ नहीं कहा।

उसने खुद पूछा, “और?”

मैंने सम्मान बचाने के लिए कहा, “बस.”

उसके चेहरे पर राहत थी। शायद वह सोच रहा था कि अगला step chai नहीं, chashni होगा।

Phone vibrate हुआ।

Shristi:

“Breakfast?”

मैंने plate की photo भेजी। इस बार खाने से पहले नहीं - आधी plate खत्म होने के बाद।

Reply:

“Finally. Khana camera se pehle.”

फिर:

“Chai me kitni sugar?”

मैंने लिखा:

“Respectable amount.”

उसने:

“Matlab dangerous.”

मैं हँसा। पास खड़े आदमी ने सोचा शायद jalebi बहुत अच्छी है।

वह भी गलत नहीं था।

Food memory: Ahmedabad की पहली plate ने Gujarat को एक साथ तीन textures में खोला - fafda की crisp dryness, sambharo की हल्की crunch और गरम jalebi की sticky sweetness. Local breakfast केवल dish नहीं, contrast था।

कमरा नहीं, पहले सामान

A BUDGET HOTEL NEGOTIATION

Breakfast के बाद hotel ढूँढना था। मैंने station के आसपास दो budget options save किए थे। पहला बाहर से ठीक लगा, अंदर reception पर rate देखकर कम ठीक लगा।

मैंने phone पर saved amount दिखाया। Receptionist ने कहा, “आज अलग rate.”

मैंने पूछा, “आज room भी अलग है?”

उसने मेरी तरफ देखा। “Room वही.”

Negotiation शुरू हुई।

मैंने कम amount कहा। उसने ज्यादा। मैंने थोड़ा बढ़ाया। उसने taxes याद दिलाए। मैंने early checkout याद दिलाया।

आखिर हम उस figure पर पहुँचे जहाँ दोनों पक्षों ने pretend किया कि जीत गए।

लेकिन room तुरंत तैयार नहीं था।

“Bag रख सकते?” मैंने पूछा।

“हाँ.”

यही काफी था।

Backpack reception के पीछे locked storage में गया। मैंने camera, wallet, phone, पानी और notebook छोटे sling bag में रखा। Blue diary हाथ में आई, फिर मैंने दो seconds उसे देखा।

उसके Ahmedabad page पर कुछ शब्द थे:

“old city - wood - bird tower - morning light.”

बस।

कोई code नहीं। कोई instruction नहीं। एक retired railway engineer की नजर, जो station से बाहर निकलकर भी structure देखती रही होगी।

मैंने diary वापस main bag में रख दी।

आज उसका Ahmedabad मैं अपनी आँख से देखना चाहता था।

Receptionist ने पूछा, “कहाँ घूमना?”

“Old city.”

“Auto ले लो.”

“Walk?”

उसने मुझे ऊपर से नीचे देखा।

“Bag छोड़कर भी hero बनना है?”

मैंने हँसकर auto बुला लिया।

लगता था practical advice देने वाले लोग हर शहर में organized network चला रहे थे।

पुराने शहर की तरफ

INTO THE POLS

Auto station की भीड़ से निकलकर पुराने Ahmedabad की तरफ बढ़ा। सुबह के traffic में cycle वाले, scooters, delivery vehicles, school vans और pedestrians अलग-अलग गति से एक ही सड़क साझा कर रहे थे।

Driver का नाम नरेश था। उसने mirror में पूछा, “कहाँ से?”

मैंने कहा, “Moscow.”

वह कुछ seconds चुप रहा।

“Tourist?”

“Indian. वहाँ job.”

“अच्छा. तो Gujarati खाना चलेगा?”

“Breakfast हो गया.”

“क्या?”

“Fafda-jalebi.”

“बस?”

मैंने कहा, “अभी सुबह है.”

वह हँसा। “Gujarat में food schedule अलग है.”

जैसे-जैसे हम पुराने हिस्से में पहुँचे, सड़क का scale बदला। चौड़ी road से छोटे junction, फिर ऐसे रास्ते जहाँ buildings सड़क के ज्यादा पास महसूस होने लगीं। कुछ façades नए tiles और signboards से ढके थे, कुछ पर पुरानी लकड़ी की balconies, brackets और carved frames बची थीं।

नरेश ने एक जगह उतारते हुए कहा, “आगे पैदल मज़ा आएगा.”

यह sentence मैंने Banaras में भी सुना था। वहाँ इसका hidden meaning था: आगे vehicle नहीं जाएगा। यहाँ भी लगभग वही।

Old city की pols में घुसते ही मुझे पहली चीज़ width नहीं, shade महसूस हुई। बाहर की सड़क पर सुबह की धूप फैल चुकी थी, लेकिन संकरी lanes में buildings की ऊँचाई और proximity ने रोशनी को पतली पट्टियों में बाँट दिया था।

कहीं लकड़ी का भारी दरवाज़ा, कहीं रंगा हुआ छोटा entrance, कहीं ऊपर projecting balcony, कहीं जालीदार window. कुछ façades पर इतनी detail थी कि दूर से photo लेने का मन करे, लेकिन lane इतनी narrow कि पूरा frame लेने के लिए पीछे हटो तो किसी scooter के रास्ते में आ जाओ।

मैंने यही किया।

पीछे हटते हुए एक दूधवाले की cycle से लगभग टकराया।

उसने brake लगाई।

“Photo बाद में, side पहले.”

मैंने माफी माँगी।

Cold food writer अब traffic hazard भी बन चुका था।

एक मोड़ पर छोटा चबूतरा दिखा - ऊँचा स्तंभ जैसा structure, ऊपर पक्षियों के लिए बैठने और दाना रखने की जगह। पास बैठे बुजुर्ग ने मुझे ऊपर देखते देखा।

“चबूतरा.”

“Birds?”

“हाँ.”

उन्होंने बताया कि पुराने मोहल्लों में पक्षियों को दाना-पानी देना रोजमर्रा की संस्कृति का हिस्सा रहा है। उनकी बात में lecture नहीं था। वह उस चीज़ के बारे में बता रहे थे जो उनके लिए सड़क के lamp-post जितनी normal थी।

मुझे diary की line याद आई - bird tower.

Engineer ने भी शायद इसी तरह ऊपर देखा होगा।

बस फर्क इतना कि उसने measurement लिखा होगा। मैंने लगभग दूधवाले को गिरा दिया।

* * *

एक pol के अंदर मैंने map खोला। Blue dot ने confidence से बताया कि मैं सही दिशा में हूँ। पाँच मिनट बाद मैं उसी चबूतरा के सामने वापस खड़ा था।

वही बुजुर्ग अब मुझे पहचान गए।

“घूम लिए?”

मैंने कहा, “हाँ.”

उन्होंने पूछा, “कहाँ?”

मैंने चबूतरा की तरफ देखा।

“यहीं.”

वह हँस पड़े।

“Phone से नहीं, आदमी से पूछो.”

Banaras navigation philosophy Gujarat तक पहुँच चुकी थी।

मंदिर की सुबह

A QUIETER COURTYARD

पुराने शहर की हलचल के बीच मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही sound का balance बदल गया। बाहर scooters, horns और shop shutters की आवाज़ थी; भीतर footsteps और धीमी बातचीत ज्यादा सुनाई देने लगी।

मैंने shoes व्यवस्थित जगह पर छोड़े।

इस बार उन्हें भूलने का कोई intention नहीं था। Vrindavan की reputation अभी भी पीछे चल रही थी।

एक volunteer ने bag rules बताए। मैंने follow किए। Camera को लेकर कोई unnecessary argument नहीं। Sacred place पर travel writer का काम access negotiate करना नहीं, नियम मानना है।

Courtyard में सुबह की रोशनी धीरे-धीरे façades पर चढ़ रही थी। Carved elements, painted surfaces और लोगों की movement एक ही दृश्य में थे। कुछ परिवार darshan के लिए आए थे, कुछ बुजुर्ग side में बैठे, दो बच्चे एक-दूसरे को चुप रहने का signal दे रहे थे और खुद सबसे ज्यादा आवाज़ कर रहे थे।

मैंने कुछ देर बिना notebook निकाले देखा।

दस दिन की यात्रा में मैंने एक बात सीखी थी: हर धार्मिक जगह पर लिखना जरूरी नहीं। कभी-कभी हाथ खाली रखना ही respect है।

बाहर निकलते समय shoes stand पर पाँच pair लगभग एक जैसे दिखे।

मैंने एक sandal उठाई।

फिर नीचे देखा।

मेरी नहीं।

Volunteer ने कहा, “आपकी black वाली पीछे.”

मैंने पूछा, “आपको कैसे याद?”

“आपने रखते time तीन बार देखा था.”

मैंने sandal वापस रख दी।

Travel competence का public record हर शहर में maintain हो रहा था।

एक architecture student

WOOD, HEAT AND CHANGING HOUSES

मंदिर से बाहर निकलकर मैं फिर pols की तरफ गया। एक पुराने façade के सामने एक युवक sketch बना रहा था। Backpack, rolled sheets और हाथ में pencil. मैंने सोचा tourist होगा।

वह local architecture student निकला। नाम - देवांश पटेल।

मैंने पूछा, “Assignment?”

“हाँ. Documentation.”

“Old houses?”

“Old houses, ventilation, façade, street width, community spaces - सब.”

मैंने हँसकर कहा, “मेरी diary में भी कोई यही करता था.”

उसने diary माँगी नहीं। अच्छा लगा। हर stranger को mystery में घसीटना जरूरी नहीं था।

हम कुछ देर साथ चले। उसने दिखाया कि कई पुराने घर बाहर से narrow दिखते हैं लेकिन भीतर courtyard और depth अलग हो सकती है। Wooden façade सिर्फ decoration नहीं; shade, openings और climate response का हिस्सा भी है। उसने यह भी कहा कि maintenance मुश्किल है, families बदलती हैं, property use बदलता है और हर पुरानी building को romantic बनाकर देखना आसान है जबकि उसमें रहना हमेशा आसान नहीं।

“Tourist को क्या दिखता?” मैंने पूछा।

“Carving.”

“Resident को?”

“Repair bill.”

मैं हँसा।

एक line में heritage debate खत्म।

हमारी बात jobs पर चली गई। Devansh internship ढूँढ रहा था। Ahmedabad छोड़ना चाहता भी था, नहीं भी।

“Bangalore या Mumbai में काम ज्यादा मिलेगा,” उसने कहा, “लेकिन यहाँ family, language, food, सब है.”

“तो?”

“पहले offer आने दो. Philosophy बाद में.”

यह जवाब मुझे पसंद आया। Young India के पास अक्सर grand identity question से पहले very practical salary question होता है।

मैंने पूछा, “Heritage में career?”

“Interest है. पैसे कम हैं.”

उसने यह line बिना bitterness के कही। बस equation थी।

एक corner पर उसने मुझे रास्ता बताया और चला गया। हमने contact exchange नहीं किया।

दस दिन की यात्रा में कई लोगों की यही जगह थी - कुछ मिनट, दो-तीन useful sentences, फिर अलग direction.

हर meaningful conversation को friendship में बदलना जरूरी नहीं।

किसी शहर को सूँघकर पढ़ना

MARKETS BEFORE NOON

दोपहर करीब आने लगी थी। Old city की दुकानों ने full rhythm पकड़ लिया था। मसाले, कपड़ा, dry fruits, metal utensils, पूजा-सामान, mobile covers, मिठाई, farsan - categories बदलती रहीं लेकिन crowd का flow लगातार था।

एक दुकान पर बड़े glass jars में sev, gathiya, dalmoth, चवाना और अलग-अलग farsan भरे थे। मैंने सिर्फ देखने के लिए रुकना चाहा। Shopkeeper ने तुरंत tasting शुरू कर दी।

“ये लो.”

“अभी breakfast भारी था.”

“Taste में calories नहीं count.”

यह science नई थी।

पहले sev khamani चखी। Soft crushed khaman पर sev की crunchy layer, ऊपर अनार के कुछ दाने, coriander और हल्की मीठी-खट्टी chutney. Texture एक bite में तीन बार बदल रहा था। फिर nylon sev - इतनी पतली कि उँगलियों में दबाते ही टूट जाए। फिर spicy mixture.

मैंने एक item का नाम दोहराने की कोशिश की। गलत बोला।

Shopkeeper ने सही किया।

मैंने फिर गलत।

उसने packet पर लिखकर दिखाया।

मैंने कहा, “अब याद रहेगा.”

उसने कहा, “कल भूल जाओगे.”

Confidence impressive था। शायद सही भी।

मैंने छोटा packet खरीदा। Bargaining की आदत से पूछा, “थोड़ा कम?”

उसने fixed printed price की तरफ इशारा किया।

मैंने कहा, “Habit.”

“Jaipur से आए?”

मैं चौंका।

“कैसे?”

“Bargain से.”

मैंने packet full price पर लिया। Rajasthan मेरे व्यवहार में रह गया था।

गुजराती थाली से हार

THE LUNCH THAT KEPT REFILLING ITSELF

दोपहर तक hunger proper form में लौट आई। मैंने एक साधारण Gujarati thali वाले भोजनालय में जगह ली। Table पर steel plate आई जिसमें कई छोटे कटोरे पहले से बने थे।

मैंने सोचा - manageable.

यह मेरा पहला गलत अनुमान था।

एक server ने rotli रखी। दूसरे ने dal. तीसरे ने kadhi. फिर दो shaak, थोड़ा farsan, pickle, salad, rice, papad. मैंने अभी arrangement समझा ही था कि पहला server वापस आया।

“Rotli?”

“पहली अभी है.”

वह आगे चला गया।

तीन मिनट बाद फिर आया।

“Rotli?”

मैंने plate देखी। पहली खत्म हो चुकी थी।

मुझे पता नहीं चला कब।

मैंने दूसरी ले ली।

Dal ने मुझे सबसे पहले surprise किया। मेरी North Indian expectation मसालेदार, नमकीन dal की थी। यहाँ मिठास साफ थी, लेकिन dessert वाली नहीं। गुड़ या sugar की gentle sweetness, खटास और मसाले के साथ balance में। Kadhi और हल्की, yogurt की tang के साथ sweet note. एक shaak में potato और vegetables का soft texture था; दूसरे में मसाला थोड़ा deeper. Farsan ने plate को fried/steamed contrast दिया।

Rotli पतली और soft. Rice के साथ dal का स्वाद फिर बदल गया। Chaas ठंडी, हल्की नमकीन, जीरा और coriander की खुशबू के साथ. बाहर की heat के बाद वह glass सबसे practical चीज लगी।

Server फिर आया।

“Dal?”

“थोड़ी.”

उसने कटोरी भर दी।

“ये थोड़ी?”

वह मुस्कराया। “हाँ.”

Gujarat में “थोड़ी” की समस्या breakfast से जारी थी।

कुछ देर बाद sweet आया। मैंने पूछा, “ये last?”

Server ने कहा, “Khichdi बाकी.”

मैंने अपनी plate को ऐसे देखा जैसे वह betrayal कर रही हो।

पास वाली table पर family आराम से खा रही थी। मेरे संघर्ष में सिर्फ मुझे drama दिख रहा था।

Khichdi आई - soft, comforting, ghee की हल्की खुशबू के साथ. Kadhi के साथ मिलाकर खाया तो lunch का tone suddenly simpler हो गया। Rich assortment के बाद यह almost home-food ending थी।

मैंने plate की photo लेने की कोशिश की थी, लेकिन शुरुआत में नहीं ली। आधी plate के बाद याद आया। तब तक bowls की boundaries टूट चुकी थीं, dal rice से मिल चुकी, chutney plate पर travel कर चुकी और rotli का आधा हिस्सा गायब।

Photo भेजने लायक नहीं थी।

फिर भी Shristi को भेजी।

Reply आया:

“Crime scene.”

मैंने लिखा:

“Authentic.”

उसने:

“Tum photo lene se pehle kha gaye?”

मैंने:

“Growth.”

कुछ seconds बाद:

“Proud. Again.”

मैंने message पढ़ा और phone उल्टा रख दिया।

क्यों, यह मैंने खुद से नहीं पूछा।

Gujarati thali: इसका मज़ा किसी एक dish में नहीं, पूरे balance में है - मीठा, खट्टा, नमकीन, मसालेदार, soft, crisp, hot, cool. और refill की speed traveller की planning से तेज़ होती है।

दोपहर की गर्मी और साबरमती

THE CITY OPENS OUT

Lunch के बाद old city की narrow shade से बाहर निकलते ही गर्मी ने पूरा आकार दिखाया। Sun अब सीधे ऊपर था। सुबह की गलियों में जो comfort था, open road पर वह खत्म हो गया।

मैंने पानी खरीदा। पहला sip लिया और retired Subedar Raghubir Singh की बात याद आई - जहाँ जाओ, पानी पहले देखो।

इतने chapters बाद advice finally automatic हो रही थी।

मैं Sabarmati की तरफ बढ़ा। Road के साथ शहर का scale फिर बदलता गया। Old façades की जगह wider roads, institutional buildings, apartments, newer commercial fronts. Ahmedabad एक single visual language नहीं था। यह कई periods को एक साथ carry कर रहा था।

River के पास हवा थोड़ी खुली लगी। पानी का broad strip और दोनों तरफ का urban edge old city की compressed lanes के बाद शरीर को अलग space देता था।

मैं कुछ देर railings के पास खड़ा रहा। Joggers, families, students, कुछ लोग बस shade में बैठे। किसी के लिए यह sightseeing थी, किसी के लिए daily route.

हर city में river का character अलग था। Mathura की Yamuna, Varanasi की Ganga, Ayodhya की Saryu, Prayagraj का Sangam - वहाँ river धार्मिक memory का बड़ा हिस्सा थी। Ahmedabad में Sabarmati के सामने मुझे शहर और river का modern urban relation ज्यादा दिखाई दे रहा था।

Comparison competition नहीं था। बस अलग grammar.

मैंने camera निकाला। इस बार frame set करते हुए bottle railing पर रख दी। दो photos लिए। तीसरा angle लिया। फिर आगे चल पड़ा।

करीब पचास meter बाद हाथ खाली लगा।

Bottle.

मैं वापस गया। वहीं थी।

एक teenager ने मुझे उठाते देखा और कहा, “Sir, photo में रह गई थी?”

मैंने कहा, “हाँ. Composition का हिस्सा.”

उसने मुस्कराकर सिर हिलाया। उसे विश्वास नहीं हुआ। मुझे भी नहीं।

साबरमती आश्रम के पास एक ठहराव

HISTORY WITHOUT A SIDE QUEST

दिन में समय सीमित था, फिर भी मैंने Sabarmati Ashram की तरफ छोटा पड़ाव रखा। यह वह जगह थी जहाँ history को conspiracy की जरूरत नहीं थी। Public memory अपने आप काफी भारी थी।

मैंने परिसर में धीमे चला। Simple spaces, photographs, letters और freedom movement से जुड़ी स्मृतियाँ किसी dramatic lighting के बिना भी प्रभाव डालती थीं।

पिछले दिनों हर पुरानी चीज़ में कोई hidden layer ढूँढने की मेरी आदत ने दिमाग में जरूरत से ज्यादा जगह ले ली थी। यहाँ आकर मुझे उसका उल्टा महसूस हुआ।

कभी-कभी जो खुले record में है, वही पर्याप्त है।

मैंने उस thought को आगे नहीं बढ़ाया।

आज Ahmedabad को किसी secret society की जरूरत नहीं थी।

एक school group आया। Teacher बच्चों को धीरे चलने को कह रही थी और बच्चे naturally ठीक उसका उल्टा कर रहे थे। एक लड़का display पढ़ने के बजाय बाहर squirrel देख रहा था।

मैं मुस्कराया। History और childhood attention span का पुराना संघर्ष।

मैंने notebook में सिर्फ एक line लिखी:

"हर इतिहास को छिपा हुआ बनाना जरूरी नहीं।"

फिर notebook बंद कर दी।

दोपहर बाद की चाय

KHAMAN, CHAI AND A TEXTILE MAN

दोपहर ढलने लगी तो फिर भूख नहीं, curiosity जागी। एक छोटी farsan shop पर fresh khaman कट रहा था। बड़े yellow slab से square pieces, ऊपर mustard seeds, coriander और grated coconut की हल्की layer. Side में green chilli.

मैंने half plate ली।

Khaman इतना soft था कि fork की जरूरत नहीं। उँगली से हल्का दबाते ही sponge की तरह वापस उठता। स्वाद में हल्की sweetness, lemon-like acidity और tempering की mustard aroma. ऊपर sev डालने पर texture crisp हो गया।

मैंने chai भी ली।

दुकानदार ने पूछा, “Sugar?”

मैंने कहा, “ज्यादा.”

उसने बिना judgement के दो spoon डाल दीं।

मैंने सोचा Gujarat मुझे समझने लगा है।

बगल में खड़े एक आदमी ने conversation शुरू की। नाम था मनोजभाई, textile trading से जुड़े। Surat का नाम naturally आया, क्योंकि उनका काम वहाँ भी जाता था।

मैंने कहा, “पहले plan में Surat था.”

“अब?”

“Skip. सीधे Jalgaon.”

उन्होंने कहा, “ठीक. हर city checklist नहीं.”

यह line मुझे पसंद आई। Travel plan बदलना failure नहीं था। कभी-कभी route छोटा करना ही journey को बचाता है।

हमारी बात व्यापार पर चली। उन्होंने बताया कि family business में नया generation technology, online orders और accounting बदल रहा है, जबकि older generation relationships और trust को ज्यादा weight देता है।

“कौन सही?” मैंने पूछा।

“Payment time पर आए तो दोनों सही.”

मैं हँसा।

Practical philosophy number पता नहीं कौन-सी।

उन्होंने पूछा, “Moscow में Gujarati लोग?”

“हैं. Indians everywhere.”

“Food?”

“मिल जाता.”

“Fafda?”

मैंने कहा, “आज के बाद standard high है.”

वह संतुष्ट दिखे।

होटल का कमरा और नीली डायरी

TEN QUIET MINUTES

शाम से पहले hotel वापस पहुँचा। Room अब तैयार था। छोटा bed, fan, bucket, एक window जिससे सामने की building का side wall दिखता था।

Luxury consistent थी।

मैंने shoes उतारे, AC चलाया और bed पर बैठते ही पाँच मिनट के लिए लेटने का फैसला किया।

Alarm लगाया - बीस मिनट।

आँख खुली तो पैंतीस मिनट हो चुके थे।

मैंने phone देखा। Alarm बंद था।

फिर वही mystery.

Suspect - मैं।

Backpack से blue diary निकाली। Ahmedabad वाले pages अब ज्यादा ordinary लग रहे थे।

“old city - wood - bird tower - morning light.”

एक corner पर छोटे अक्षरों में:

“station से बाहर निकलकर शहर पैदल पढ़ना.”

मैं हँसा।

अगर engineer सच में इतना चलता था, तो उसके knees retirement तक किस condition में रहे होंगे?

एक और line:

“Jalgaon - अंतिम नोट देखना.”

मैं कुछ seconds रुका।

पहले होता तो “अंतिम नोट” को dramatic clue बना देता। अब नहीं।

शायद उसकी यात्रा का आखिरी field entry. शायद file reference. शायद बस notebook का अगला section.

मैंने page बंद कर दिया।

कल नहीं - आज रात ही final rail journey शुरू होने वाली थी। Jalgaon अब map का आखिरी city था।

Blue diary की कहानी भी शायद वहीं किसी simple जगह पर खत्म होनी थी।

मुझे अब उससे डर नहीं था कि answer साधारण निकलेगा।

असल में साधारण answer ज्यादा पसंद आने लगा था।

शाम का पुराना शहर

WHEN THE LIGHT TURNS WARM

मैं फिर बाहर निकला। सुबह का Ahmedabad काम पर जा रहा था; शाम का Ahmedabad घर लौटते लोगों, shopping, snacks और सड़क की रोशनी में बदल रहा था।

Old city की तरफ लौटते हुए façades का color tone बदल गया। Morning की flat light अब warmer थी। Wooden windows की shadows लंबी होने लगीं। दुकानों के bulbs जल गए। कुछ shutters बंद होने लगे, दूसरी दुकानों का rush बढ़ गया।

मैंने बिना map के चलने की कोशिश की।

यह confidence गलत था।

दस मिनट बाद मैं एक ऐसी lane में पहुँचा जहाँ मुझे कुछ भी familiar नहीं लगा।

एक paan shop वाले से पूछा, “Manek Chowk?”

उसने direction बताया।

मैं चला।

पाँच मिनट बाद फिर पूछा।

दूसरे आदमी ने opposite direction दिखाई।

मैंने कहा, “अभी उधर से आया.”

वह बोला, “तो गलत आए.”

Argument समाप्त।

आखिर सही area मिला। शाम धीरे-धीरे खाने की तरफ जा रही थी। अलग-अलग stalls set हो रहे थे। Griddles गरम, butter की blocks, bread, pav, vegetables, cheese, kulfi, juices - traditional और modern street-food एक साथ।

मैंने तय किया कि हर चीज try करने की मूर्खता नहीं करूँगा।

यह maturity थी।

फिर मैंने तीन चीजें order कर दीं।

Maturity की उम्र लगभग चालीस seconds रही।

पहले छोटा portion dalwada जैसा fried snack - बाहर dark crisp, अंदर lentil की coarse softness, coriander और chilli की warmth. साथ raw onion और fried chilli. इस बार chilli देखकर मैंने respect दिखाया।

दूसरा handvo का छोटा slice. बाहर seared crust, भीतर moist grain-lentil texture, sesame और tempering की खुशबू. यह breakfast भी हो सकता था, snack भी, meal का हिस्सा भी।

तीसरा kulfi - क्योंकि दिन की सारी savoury research को किसी conclusion की जरूरत थी।

Dense, slow-melting, milk का concentrated स्वाद, इलायची और nuts. Jalebi जैसी aggressive sweetness नहीं; ठंडी, भारी, धीरे खुलती हुई।

मैं handvo की photo लेने लगा। Angle. Light. दूसरा angle.

Vendor ने कहा, “Sir, खा लो.”

मैंने कहा, “बस.”

Phone vibrate हुआ।

Shristi:

“Ab kya thanda kar rahe ho?”

मैं screen देखकर रुक गया।

मैंने आसपास देखा, जैसे वह कहीं से देख रही हो।

फिर याद आया मैंने कुछ minutes पहले food-stall की photo भेजी थी।

मैंने लिखा:

“Handvo.”

उसने:

“Eat. Photo बाद में.”

मैंने handvo खा लिया।

Vendor ने शायद इसे अपनी सलाह की जीत माना।

एक छोटा-सा फोन कॉल

MOSCOW FEELS CLOSER FROM GUJARAT

Street-food area से थोड़ा दूर निकलकर मैं quieter road पर आया। Phone फिर vibrate हुआ। इस बार message नहीं, call.

Shristi.

मैंने उठाया।

“हाँ Doctor?”

“Doctor अभी नहीं.”

“Medical student.”

“Better.”

Background में उसके घर की आवाज़ें थीं। शायद TV, कहीं utensils, कोई family member दूर से बोल रहा था। Jaipur अब कई सौ kilometers पीछे था, लेकिन आवाज़ वही familiar Moscow वाली लगी।

उसने पूछा, “Day कैसा था?”

मैंने Ahmedabad का summary दिया - fafda, pols, architecture student, thali, Sabarmati, khaman, wrong turns.

“Wrong turn कितने?”

“Officially दो.”

“Unofficially?”

“Data unavailable.”

वह हँसी।

कुछ seconds बाद उसने पूछा, “आज ही निकल रहे हो?”

“हाँ. Jalgaon.”

“फिर journey finish?”

“लगभग.”

दूसरी तरफ छोटा pause आया।

“और फिर Moscow.”

“हाँ.”

“Good.”

उसने यह word थोड़ा जल्दी कहा।

मैंने पूछा, “Good?”

“मतलब... आराम करोगे. दस दिन में तीस दिन घूम लिए.”

“Fair.”

वह कुछ और कहना चाहती थी शायद। आवाज़ शुरू हुई, फिर रुकी।

“क्या?” मैंने पूछा।

“कुछ नहीं.”

मैं मुस्कराया। “तुम Jaipur में भी बहुत ‘कुछ नहीं’ बोल रही थी.”

दूसरी तरफ silence.

फिर उसने हल्के tone में कहा, “और तुम बहुत कुछ समझ नहीं रहे थे.”

मैंने सोचा वह directions की बात कर रही है।

“हाँ, navigation खराब है मेरा.”

एक second.

दो seconds.

फिर वह हँसी, लेकिन पहले जैसी नहीं।

“हाँ. Navigation.”

मैंने उस समय बात आगे नहीं बढ़ाई।

उसकी तरफ कुछ seconds तक सिर्फ सड़क का शोर सुनाई दिया। फिर उसने किसी और बात का ज़िक्र कर दिया।

Call खत्म होने से पहले उसने कहा, “Train में चढ़कर message करना.”

“तुम सो जाना. Late होगा.”

“Message कर देना.”

“Okay.”

“Promise नहीं बोलना. तुम भूल जाओगे.”

“नहीं भूलूँगा.”

“देखते हैं.”

Call कट गया।

मैं कुछ seconds phone हाथ में लिए खड़ा रहा।

फिर road cross करने के लिए horn ने philosophy खत्म कर दी।

स्टेशन की तरफ आखिरी ऑटो

THE CITY BECOMES A DEPARTURE

Hotel लौटकर मैंने quick shower लिया, bag बंद किया और room एक बार check किया।

Bed.

Bathroom.

Charging socket.

Table.

कुछ नहीं छूटा।

मैं दरवाज़ा बंद करके नीचे आया। Reception पर key दी।

फिर अचानक charger याद आया।

मैं freeze हुआ।

Receptionist ने मेरी तरफ देखा।

“Room में?”

मैंने सिर हिलाया।

वह मुस्कराया। “Hero?”

मैं वापस ऊपर गया।

Travel character arc अभी incomplete था।

दूसरी बार नीचे आया तो auto लिया। Ahmedabad रात में अलग था। दिन की heat कम, traffic lights sharper, shops के signboards bright. कहीं dinner rush, कहीं families, कहीं late office commuters. Railway station की तरफ जाते हुए दिन के सारे दृश्य छोटे fragments की तरह लौटे।

Fafda का पहला crack.

Pol की shadow.

Wooden balcony.

Chabutra.

Gujarati thali की refill.

Sabarmati की खुली हवा.

Khaman की softness.

और Shristi का एक sentence:

"और तुम बहुत कुछ समझ नहीं रहे थे."

मैंने फिर वही conclusion निकाला - navigation.

उस sentence का दूसरा अर्थ मेरे दिमाग तक तब भी नहीं पहुँचा।

Station के बाहर auto रुका। मैंने fare दिया। Driver ने change लौटाया। मैंने जल्दी में notes count किए और आगे बढ़ गया।

Driver ने पीछे से आवाज़ दी।

"भाई!"

मैं मुड़ा।

उसने दस रुपये का note दिखाया।

“ज्यादा दे दिया.”

मैं वापस गया।

“Jaipur में bargaining, Ahmedabad में extra payment,” मैंने कहा।

वह हँसा। “Travel complete.”

प्लेटफॉर्म पर आखिरी शहर से पहले

ONE CITY LEFT

Platform पर पहुँचकर पहली बार route को पूरा पीछे से गिना।

Delhi.

Mathura.

Vrindavan.

Varanasi.

Ayodhya.

Lucknow.

Prayagraj.

Jaipur.

Jaisalmer.

Ahmedabad.

और अब - Jalgaon.

ग्यारहवाँ शहर।

Surat अब route में नहीं था। पहले plan का हिस्सा था, फिर नहीं रहा। मुझे उस change पर कोई regret नहीं था। यात्रा का उद्देश्य map पर maximum dots लगाना नहीं था। दस दिनों की planning वैसे भी बहुत पहले अपनी original shape खो चुकी थी।

एक chai stall से आखिरी Ahmedabad chai ली। मैंने बिना पूछे कहा, “Extra sugar.”

विक्रेता ने एक spoon ज्यादा डाल दी।

मैंने taste किया।

“थोड़ी और.”

उसने मुझे देखा।

मैं मुस्कराया।

कुछ चीजें journey के end तक बदलनी नहीं चाहिए।

Announcement हुई। Train आने वाली थी।

मैंने backpack shoulder पर डाला। Blue diary अंदर थी। उसके एक page पर Jalgaon के सामने लिखा था:

“अंतिम नोट देखना.”

मैंने उसे अभी नहीं खोला।

Final chapter के लिए कोई dramatic promise नहीं था।

बस एक आखिरी train थी।

एक आखिरी city.

और शायद एक पुराने railway engineer की notebook को सही जगह बंद करने का समय।

Phone vibrate हुआ।

Shristi:

“Train?”

मैंने platform की photo भेजी।

“Waiting.”

उसका reply तुरंत आया:

“Good. Ab bhoolna mat ki koi wait bhi karta hai.”

मैंने line पढ़ी।

मुझे लगा वह train update की बात कर रही है।

मैंने लिखा:

“Message kar dunga chadhke.”

तीन dots कुछ देर दिखे।

फिर गायब।

कोई message नहीं आया।

दूर signal के बाद headlight दिखाई दी।

Track में vibration आया।

लोग bags उठाने लगे।

मैंने phone pocket में रखा।

Ahmedabad धीरे-धीरे departure बन रहा था।

मेरी दस दिनों की यात्रा की आखिरी रेल platform में प्रवेश कर रही थी।

CHAPTER TWENTY-SEVEN

आख़िरी रेल, घर की सड़क

THE LAST TRAIN, THE ROAD HOME

अहमदाबाद → जलगाँव → असोदा

Final Day and the Morning After

“दस दिन तक हर शहर में मैंने पूछा - किधर जाना है? आख़िरी शहर में रास्ता मुझे पहले से पता था। बस यह नहीं पता था कि दो साल बाद वह वैसा ही मिलेगा या नहीं।”

सुबह करीब नौ बजे ट्रेन जलगाँव की तरफ धीमी हुई।

मैं खिड़की के पास बैठा था।

पिछले दस दिनों में किसी नए शहर के पास पहुँचते ही मेरा एक छोटा-सा नियम बन गया था। फोन निकालो। नक्शा देखो। स्टेशन से होटल कितनी दूर है। कहाँ ऑटो मिलेगा। कौन-सा निकास लेना है। कहाँ नाश्ता करना है। और सबसे जरूरी - यह देखो कि बैकपैक में पासपोर्ट अभी भी उसी जेब में है या मैंने फिर किसी नई जगह रख दिया है।

आज फोन जेब में ही रहा।

बाहर का दृश्य किसी पर्यटक पुस्तिका जैसा नहीं था। लेकिन मुझे पहचान में आ रहा था। कुछ सड़कें। कुछ इमारतों की दिशा। धूप का वही सूखा तेजपन। रेल की पटरी के आसपास की वही साधारण दुनिया।

और फिर खिड़की के बाहर पीला बोर्ड आया।

जलगाँव

मैं कुछ सेकंड उसे देखता रहा। इतने दिनों में मैंने बहुत स्टेशन बोर्डों की तस्वीरें ली थीं। यह वाला नहीं लिया। शायद इसलिए कि कुछ चीजों की तस्वीर तब ली जाती है जब डर हो कि वे भूल जाएँगी। इस नाम को भूलने का सवाल नहीं था।

ट्रेन रुकी। मैंने बैकपैक कंधे पर डाला। पैर प्लेटफॉर्म पर रखा।

दो साल बाद। घर।

लेकिन घरवालों को अभी पता नहीं था कि मैं घर आ चुका हूँ।

* * *

पहले पोहा-रसा

POHA-RASSA BEFORE HOME

सामान्य आदमी क्या करता? दो साल बाद घर आया। स्टेशन से सीधे घर। माँ-पिता को surprise। सवाल। चाय।

मैं सामान्य आदमी नहीं निकला।

स्टेशन से बाहर निकलकर मैं पहले खाने गया। कारण बहुत साफ था - **पोहा-रसा**।

मैंने पिछले दस दिनों में खाने को यात्रा का हिस्सा बना लिया था। मथुरा में कचौड़ी। वाराणसी में कचौड़ी-जलेबी। लखनऊ में खस्ता, कबाब और चाय। जयपुर में प्याज़ कचौड़ी। जैसलमेर में दाल-बाती और रेगिस्तानी खाना। अहमदाबाद में फाफड़ा-जलेबी।

लेकिन उन सबको खाते समय मैं थोड़ा traveller था। स्वाद समझता। खुशबू याद रखता। बनावट लिखता। किसके साथ परोसा गया - नोट करता।

जलगाँव के पोहा-रसा के सामने मैंने notebook ही नहीं निकाली।

स्टील की प्लेट सामने आई। नरम, गरम पोहा। ऊपर प्याज़, धनिया और सेव। बगल से डाला गया गरम रसा। उसकी भाप में मसाला पहले नाक तक पहुँचा।

पहला spoon लिया। पोहा की softness के बीच सेव की हल्की कुरकुराहट। प्याज़ की sharpness। रसा का गरम, मसालेदार स्वाद। यह कोई extraordinary gourmet discovery नहीं थी। उससे बेहतर presentation दुनिया में हजार जगह होगा। लेकिन taste के कुछ हिस्से जीभ नहीं पहचानती - memory पहचानती है।

मैंने दूसरी spoon जल्दी ली।

“रसा?” दुकानदार ने पूछा।

“थोड़ा और।”

उसने इतना डाला कि मुझे लगा शायद हमारे definitions अलग हैं।

फिर चाय।

“चीनी?”

“ज्यादा।”

एक spoon। मैंने cup की तरफ देखा। वह समझ गया। दूसरी spoon।

“बस?”

मैंने दो seconds सोचा। “थोड़ी।”

उसने तीसरी तरफ हाथ बढ़ाया और फिर खुद रोक लिया।

"इतना काफी है।"

मैं हँसा। "आप doctor हो?"

"नहीं।"

"फिर tension मत लो।"

यह medical advice मुझे पसंद आया।

* * *

स्टेशन से घर तक

THE CITY HAD NOT WAITED FOR ME

स्टेशन के बाहर निकलकर मैं कुछ देर वैसे ही चला। घर अभी भी नहीं। मैं जलगाँव को जल्दी से देख लेना चाहता था। ऐसा नहीं कि शहर भागने वाला था। दो साल तक मेरे बिना ठीक चला था। लेकिन शायद मैं confirm करना चाहता था कि मेरे दिमाग में बचा Jalgaon और सामने वाला Jalgaon अभी भी एक ही शहर हैं।

कुछ दुकानों के बोर्ड बदल गए थे। कहीं नया निर्माण। कहीं पहले की खुली जगह अब भरी हुई। Traffic familiar था, लेकिन उस familiarity में भी दो साल का फर्क छिपा था।

एक जगह पुराना bus-stand side का रास्ता सामने आया। मुझे वहाँ की वरन-बट्टी की खुशबू याद आई। पेट ने अभी poha-rassa का हिसाब बंद नहीं किया था, इसलिए मैंने खुद को रोका।

मैंने खुद से कहा - बस। अब घर। वरना माँ को पता चला कि दो साल बाद लौटकर मैं पहले शहर का survey कर रहा था, तो घर पहुँचने से पहले ही मेरा अगला international plan cancel हो जाएगा।

* * *

दरवाज़े पर दो साल

THE SURPRISE

Bell बजाई। अंदर से footsteps। दरवाज़ा खुला।

माँ सामने थीं।

उन्होंने मुझे देखा। पहले कोई reaction नहीं। जैसे brain को सामने का दृश्य समझने में एक extra second लगा।

“तू?”

मैं हँसा। “हाँ।”

“कधी आला?”

“अभी।”

“अभी मतलब?”

“Train से।”

“India कब आया?”

यह सवाल problem था। मैंने backpack नीचे रखा।

“थोड़े दिन...”

“कितने दिन?”

मैंने बहुत casually कहा, “दस के आसपास।”

उनका चेहरा बदल गया।

“दस दिन से India में है?”

“हाँ।”

“और फोन?”

“Surprise देना था।”

“Surprise?”

अब मुझे महसूस हुआ कि शब्द का चुनाव कमजोर था।

तभी अंदर से पिता की आवाज आई।

“कौन?”

माँ ने पीछे देखे बिना कहा, “आपका बेटा।”

पिता बाहर आए। मेरी तरफ देखा। उनकी खुशी माँ की तरह चेहरे पर तेज नहीं आई। उनका तरीका अलग था। एक नजर। फिर backpack। फिर मेरा चेहरा।

“कब आया?”

“अभी।”

“Train?”

“नौ बजे।”

“सीधे आया?”

मैंने सच बोला। “नहीं।”

“कहाँ गया?”

“Poha-rassa खाने।”

तीन seconds silence।

पिता बोले, “दो साल बाद घर आया और पहले पोहा खाने गया?”

मैंने correction किया, “Poha-rassa।”

माँ ने कहा, “उससे बहुत फर्क पड़ गया।”

मैं हँस पड़ा। पिता ने backpack उठाया।

“रहने दो, मैं लेता हूँ।”

“रहने दे।”

बस। वही उनका तरीका था। बड़े dialogue नहीं। Bag ले लिया और मुझे अंदर जाने दिया।

* * *

घर के सवाल

THE FAMILY AUDIT

घर के अंदर कुछ furniture बदला था। एक नया appliance। किसी चीज की position बदल गई। दीवार पर photo वही। Kitchen की आवाज वही। घर की smell वही।

Moscow के मेरे कमरे की याद आई। वहाँ चीजें मेरी थीं। यहाँ चीजें अपनी थीं। दोनों में फर्क होता है।

Tea आई। Sweet। मुझे पूछना नहीं पड़ा। माँ को पता था।

"अब पूरी कहानी बता।"

मैंने route शुरू किया। Delhi। Mathura। Vrindavan। Varanasi। Ayodhya। Lucknow। Prayagraj। Jaipur। Jaisalmer। फिर Jaipur। Ahmedabad।

माँ ने हाथ रोक दिया। "दस दिन में?"

"हाँ।"

"सोया कब?"

इस सवाल का जवाब मेरे पास खुद नहीं था।

पिता बोले, "इसका program देखकर लग रहा है सोना optional था।"

मैंने कहा, "Train में सोया।"

"Train में लोग travel करते हैं।"

"मैंने दोनों किया।"

माँ का अगला सवाल predictable था। "खाना ठीक खाया?"

यह mothers का universal audit था। आप दुनिया घूमकर आओ। पहला serious question digestion पर।

मैंने कहा, "हाँ। बहुत खाया।"

यह answer उन्हें satisfactory लगा।

* * *

Pune से enquiry

MY SISTER FINDS OUT

मेरी बहन Pune में job करती थी। उसे भी कुछ नहीं पता था।

मैंने video call लगाया। उसने screen उठाई।

“काय?”

मैंने camera अपना चेहरा दिखाया। “Guess।”

“क्या?”

“कहाँ हूँ?”

“Ahmedabad?”

मैंने camera घुमाकर hall दिखाया। माँ। पिता। घर।

Silence.

“WHAT? तू Jalgaon में है?”

“हाँ।”

“कब?”

“अभी।”

“मुझे बताया क्यों नहीं?”

“किसी को नहीं बताया।”

“यह excuse नहीं है।”

मैंने कहा, “सबको equal treatment दिया।”

“तू रुक। मैं Pune से आकर बताती हूँ।”

पिता हँसे। फिर उसने पूछा, “कितने दिन?”

कुछ बातें और हुईं। फिर अचानक उसने पूछा, “और Shristi?”

मैं एक second चुप हुआ। “क्या Shristi?”

उसकी smile suspicious थी। “कुछ नहीं।”

मैंने topic बदल दिया। कुछ सवाल family WhatsApp group तक नहीं पहुँचने चाहिए।

* * *

अगली सुबह - मेरी bike

THE BIKE WAS STILL THERE

सुबह मेरी आँख alarm से नहीं खुली। घर की आवाजों से खुली। Kitchen। बाहर किसी गाड़ी का horn। पानी। माँ की आवाज।

चाय मिली। मीठी। उतनी ही जितनी मुझे पसंद थी। माँ ने पूछा भी नहीं।

मैं नीचे आया। और वहाँ वह खड़ी थी।

मेरी bike.

दो साल बाद। उस पर हल्की धूल। कुछ छोटे scratches जिन्हें शायद मैं भूल गया था। लेकिन वही।

मैंने handle पकड़ा। Train, bus, auto, e-rickshaw, jeep, sleeper bus, camel - दस दिनों में बहुत चीजों पर बैठा था। लेकिन यह मेरी थी।

पिता पीछे से आए। “चलती है।”

मैंने पूछा, “Battery?”

“देखभाल होती है।”

उस एक वाक्य में भी पिता वाला प्यार था। उन्होंने bike को सिर्फ खड़ा नहीं रहने दिया था।

मैंने key लगाई। Ignition। Engine ने पहले थोड़ा protest किया, फिर आवाज आई। मैं मुस्करा दिया।

पिता ने helmet दिया। “पहले petrol देख।”

“है।”

“Phone charged?”

“हाँ।”

“पानी?”

माँ ऊपर से bottle लेकर आ गईं। मैंने कहा, “मैं Jalgaon ही जा रहा हूँ।”

माँ बोलीं, “Jalgaon में प्यास नहीं लगती?”

मैंने bottle रख ली।

* * *

Colony - पहला checkpoint

THE UNCLE INTERVIEW PANEL

Bike बाहर निकाली ही थी कि आवाज आई - “अरे!”

Khole Kaka.

Brake.

“कधी आला?”

“काल।”

“काल?!”

उन्होंने इतनी आवाज में कहा कि Chirmade Kaka भी बाहर आ गए। अब interview panel complete था।

“Russia मधून?”

“हो.”

“काम?”

"ठीक."

"किती दिवस?"

जवाब। फिर Khole Kaka ने मुझे देखा।

"लग्नाचं काय?"

मैंने helmet की strap ठीक करनी शुरू कर दी।

Chirmade Kaka हँसे। "Helmet tight करून उपयोग नाही."

मैंने कहा, "Immigration पर इतने सवाल नहीं पूछे।"

Khole Kaka बोले, "ते लोकांना तुझी काळजी नाही."

Fair point.

Bike धीरे colony से निकाली। और पहली बार मुझे अपने शहर में रास्ता गलत लगा। जहाँ पहले खुली जगह थी, वहाँ घर बन चुका था। Proper gate. Compound wall. Parked scooter.

एक shortcut जिसे मैं naturally लेना चाहता था अब shortcut नहीं था। दो साल तक मैंने Jalgaon को अपने दिमाग में frozen रखा। Jalgaon ने खुद को freeze नहीं किया था।

दूसरे शहर में रास्ता बदल जाए तो map गलत लगता है। अपने शहर में रास्ता बदल जाए तो memory गलत लगती है।

* * *

Tower Chowk

A CITY I DIDN'T NEED TO INTRODUCE

Bike Tower Chowk की तरफ निकाली। Traffic बढ़ा। Horn। Scooters। Autos। Pedestrians। एक आदमी road cross करते समय ऐसी शांति से चला जैसे traffic बाकी सबका personal problem हो।

मैंने brake हल्का दबाया। कुछ चीजें बिल्कुल नहीं बदली थीं।

Tower Chowk के आसपास दुकानों के boards पढ़े। कई परिचित। कई नए। एक दुकान जो मुझे एक जगह याद थी अब दूसरी तरफ shift. एक corner ज्यादा packed. एक building का रंग बदल चुका था।

मैं बार-बार slow हो रहा था। पीछे वाले ने horn दिया। वह शायद सोच रहा था tourist आया है। Technically गलत भी नहीं था। मैं अपने hometown में tourist की speed से चल रहा था।

* * *

Phule Market

THE MARKET MEMORY

फुले मार्केट के आसपास bike park की। अंदर पैदल गया। अब sensory memory काम करने लगी।

सब्जियों की smell. फल. Plastic sheets. कपड़े. धूल. धनिया. कच्चा प्याज़. मसाला. Bargaining. Side से आवाज - “भाऊ, बाजू!”

मैं side हुआ। एक आदमी बड़ा सामान लेकर निकल गया।

फिर केले की कतार। Jalgaon और banana का रिश्ता बाहर वाले को statistics में समझाया जा सकता है। अंदर वाले को नहीं। उसने truck देखे हैं। खेती देखी है। बाजार में bunches देखे हैं। घर में केले सामान्य फल की तरह देखे हैं।

मैंने एक केला खरीदा। एक ही।

दुकानदार बोला, “एक?”

मैंने कहा, “अभी बहुत खाना बाकी है।”

उसे context नहीं पता था। मुझे था। आज मैंने city exploration को food marathon बना दिया था।

* * *

KCE और M.J. College की तरफ

COLLEGE ROADS AND OLD RHYTHMS

Tower Chowk और market की भीड़ के बाद मैंने bike KCE side मोड़ दी। M.J. College का नाम पढ़ते ही अलग memory आई।

College campuses किसी शहर की सिर्फ buildings नहीं होते। वे age markers होते हैं। किस उम्र में यहाँ से गुजरते थे। किसके साथ। किस वजह से। किस दुकान पर रुकते थे। कहाँ crowd रहता था। कौन-सा रास्ता shortcut था।

KCE और M.J. College side में young crowd था। Bikes. Backpacks. Groups. Tea. Phones. किसी की class. किसी की attendance. किसी का पूरा academic future एक samosa और chai के बीच discuss हो रहा होगा।

मैंने bike slow की। दो साल पहले शायद मैं इस road को इतनी attention नहीं देता। आज हर ordinary चीज important लग रही थी। यही travel की सबसे अजीब side effect थी। दूर जाकर आदमी familiar चीजों को भी देखना सीखता है।

Amar Ragda - M.J. College side

A PLATE I DIDN'T NEED TO DISCOVER

KCE/M.J. side आने का दूसरा कारण academic नहीं था।

Amar Ragda.

मैंने bike रोक दी। Plate सामने आई। गरम ragda. ऊपर chutneys. प्याज़. सेव. मसाला.

एक spoon में मीठा। दूसरे में तीखा। तीसरे में खट्टा। ऊपर सेव की crunch.

मैं camera निकालने लगा। Photo one. Angle बदलो. Photo two. Plate थोड़ा rotate.

पीछे से कोई बोला, “भाऊ, थंड होईल.”

मैंने camera नीचे किया। दस दिन में एक भी lesson properly नहीं सीखा था। मैंने जल्दी spoon लिया। बहुत गरम। जीभ जली। Camera बच गया। Dignity नहीं।

Phone vibrate हुआ।

Shristi: “Home tour शुरू?”

मैंने ragda की photo भेजी। उसका reply आया - “You reached home and somehow you're still eating outside.”

मैंने लिखा, “Cultural research.”

तुरंत - “तुम travel नहीं करते. तुम खाने और situations collect करते हो.”

मैं screen देखकर हँसा। वही line. Jaipur से चली आई थी।

मैंने लिखा, “Bike भी मिल गई.”

कुछ seconds बाद - “Photo?”

मैंने bike की photo भेजी। उसने सिर्फ लिखा - “I remember this one.”

मैं screen पर कुछ seconds रुका। मुझे याद नहीं था कि मैंने Moscow में उसे अपनी bike की photo कब दिखाई थी। लेकिन उसे याद था। मैंने ज्यादा नहीं सोचा। Phone pocket में रखा।

* * *

Mehrun की तरफ

HEAT, WATER AND A FAMILIAR CITY EDGE

दोपहर की धूप तेज हो रही थी। मैं Mehrun side निकल गया। City की भीड़ से थोड़ा अलग खुलापन मिला।

Bike चलाते हुए हवा गर्म थी। Jalgaon की heat में कोई politeness नहीं होती। Sun सीधे काम करता है। Helmet के अंदर माथा गर्म। Signal पर रुकना punishment. चलती bike पर हवा राहत.

मैंने पानी की bottle निकाली। माँ की जीत।

Mehrun की तरफ कुछ देर रुककर आसपास देखा। Families. Young people. Bikes. किसी के हाथ में food packet. किसी का evening plan शायद यहीं से शुरू होता होगा।

Moscow की lakes और riverfronts याद आए। फिर खुद पर हँसी आई। हर जगह compare करना भी foreign-returned disease है। Mehrun को Mehrun रहने देना चाहिए।

* * *

Akashvani Chowk से Ganesh Colony

EDUCATION, TRAFFIC AND TEA STALLS

फिर Akashvani Chowk की तरफ। Traffic का pattern फिर बदला। Ganesh Colony side जाते समय KCE के engineering/college area को दूसरी तरफ से देखा।

नई दुकानें। Students. Coaching और education वाला city rhythm.

Jalgaon के बारे में बाहर का आदमी agriculture पहले सुनता है। अंदर रहो तो education भी city की geography बनाता है। College के आसपास tea stalls अलग city बनाते हैं। Photocopy. Stationery. Snacks. Bikes. Exam discussions. Friendships. Breakups. Attendance. Placement.

और बीच में एक आदमी जो दो साल बाद लौटकर सबको travel-writing material की तरह देख रहा था। मैंने खुद को रोका। हर student कहानी नहीं है। कभी-कभी student सिर्फ lecture के लिए late होता है।

* * *

Pandemic Chowk की chaat

INDORE-STYLE, JALGAON MEMORY

शाम की तरफ मैं उस chowk की तरफ गया जहाँ Indore-style chaat वाली जगह याद थी। मैंने bike park की। Counter के सामने familiar chaos.

Steel bowls. Sev. Onion. Masala. Chutney. Lemon.

एक plate order की। पहले bite में तीखा और खट्टा साथ आया। फिर sweetness. ऊपर की crunchy layer. नीचे soft filling.

मैंने दुकानदार से कहा, “थोड़ा कम तीखा।”

उसने कहा, “पहले ही बता देते।”

मैंने पूछा, “अब?”

“अब खाओ।”

Customer service brutally honest थी।

* * *

पुराना Bus Stand - वरन-बट्टी

KHANDESH ON A STEEL PLATE

अब भूख फिर वापस। यह scientifically संभव था या नहीं, मैं नहीं जानता। लेकिन Bus Stand के पास varan-batti की smell आई और मेरे सारे scientific objections खत्म।

इस बार पूरा plate.

गरम batti हाथ से तोड़ी। उसके अंदर varan गया। थोड़ा ghee. Side में तीखी chutney और thecha.

पहला bite dry-soft. फिर dal की गर्मी. फिर ghee. फिर chilli.

Khandeshi food polite नहीं होता। वह पहले taste देता है, फिर character test.

मेरी आँख में पानी आया। सामने वाले आदमी ने पूछा, “तिखट?”

मैंने तुरंत कहा, “नाही.”

उसने मेरी आँखें देखीं। हम दोनों हँस पड़े।

भरीत-भाकरी

SMOKE, BAJRA AND THECHA

Bus stand side से निकलते समय एक दूसरी जगह roasted brinjal की smell आई। Bharit.

मैं already full था। फिर भी थोड़ा लिया। यह मेरी यात्रा की recurring weakness थी।

Khandeshi bharit में smoky baingan की खुशबू पहले bite से पहले ही fire का अंदाजा दे देती है। साथ में bhakri. Raw onion. Thecha.

Simple combination. लेकिन मिट्टी, smoke और chilli का ऐसा flavor जिसे fancy presentation की जरूरत नहीं।

मैंने half portion खत्म किया। बाकी pack कराया। Mother के सामने यह packet evidence था कि मैंने बाहर फिर खाया। Evidence destroy करना food waste होता। मैं risk लेकर घर ले जाने वाला था।

* * *

Street Chinese

THE OTHER LOCAL FOOD

लेकिन अभी घर नहीं। शाम हो चुकी थी। एक familiar Chinese stall सामने। लाल board. Bright light. Hot wok. लहसुन की smell. Soy. Chilli. Vinegar. Spring onion.

और वह street-Chinese aroma जिसका Chinese culinary history से relation scholars तय करें; Jalgaon की evening memory से relation unquestionable था।

मैंने कहा, “Half Schezwan noodles.”

फिर side में Manchurian fry हो रहा था।

“Manchurian भी।”

“Half?”

“Full।”

यह confidence गलत था। Plate देखकर समझ आया।

Noodles spicy, garlic-heavy. Cabbage की crunch बची हुई. Schezwan sauce tongue पर तुरंत hit. Manchurian balls बाहर से हल्के crisp, अंदर soft, ऊपर thick spicy gravy.

पहले पाँच मिनट मैं बहुत खुश था। दसवें minute पर पेट ने कहा - अब बंद कर। मैंने ignore किया। पंद्रहवें minute पर पेट ने legal notice भेजा। मैंने खाना pack कराया।

Phone फिर vibrate.

Shristi: “घर पर dinner?”

मैंने Chinese की photo भेजी।

Typing… फिर - “Aunty तुम्हें घर में आने देंगी?”

मैंने लिखा, “देखते हैं.”

उसने laughing emoji भेजा। फिर एक दूसरी line - “वैसे… अच्छा लग रहा होगा न, इतने time बाद?”

मैंने screen देखी। यह उसके बाकी jokes से अलग था।

मैंने लिखा, “हाँ. थोड़ा strange भी.”

कुछ देर बाद उसका reply आया - “I know.”

बस दो words.

मुझे याद आया - वह भी Moscow में Indian student थी। उसने भी शायद घर लौटने और फिर वापस जाने की feeling कई बार महसूस की थी। कुछ बातें explain करने की जरूरत नहीं पड़ती।

*　*　*

Prabhat की pav bhaji

ONE MORE STOP THAT WASN'T NECESSARY

Normal आदमी यहाँ रुक जाता। मैं नहीं रुका।

Prabhat की pav bhaji सामने आई तो आज का पूरा food schedule officially collapse हो गया।

Tawa पर bhaji. Butter. Tomato. Masala. Pav को butter में press किया गया। Edge crisp. Inside soft.

मैंने first bite लिया। Taste परिचित था। कोई dramatic childhood flashback नहीं। बस एक simple thought - हाँ, यही taste याद था।

मैंने फोटो पिता को भेजी। Reply आया - “घर कहाँ है याद है?”

मैंने तुरंत phone pocket में डाल दिया।

*　*　*

Asoda

ROOTS DON'T NEED A GUIDE

दोपहर से शाम के बीच मैंने Asoda की तरफ bike मोड़ी। Jalgaon मेरा hometown था। लेकिन Asoda उस hometown के भीतर roots का दूसरा नाम था।

Road पर शहर का density कम हुआ। इमारतों के बीच distance बढ़ी। हवा थोड़ी खुली लगी। यह जगह मेरे लिए “देखने” की नहीं थी। पहचानने की थी।

कौन-सा मोड़ वैसा है। कहाँ नया घर बन गया। किस तरफ पहले खुला हिस्सा ज्यादा था। कहाँ की जमीन अब construction में चली गई। Memory बार-बार current landscape से टकरा रही थी।

कुछ चीजें बिल्कुल वही। कुछ पूरी तरह अलग।

गाँव में पहचान की speed internet से तेज होती है। Bike थोड़ी आगे गई। एक आदमी ने देखा। फिर दो। फिर किसी ने नाम पुकारा।

“अरे, आला?”

अब वही सवालों की दूसरी पारी।

“कधी?”

“रशियातून?”

“किती दिवस?”

“आई-बाबा कसे?”

“बहीण पुण्यातच?”

फिर वही ultimate question कहीं से आया - “लग्न?”

मैंने bike की तरफ देखा। वह कम-से-कम सवाल नहीं पूछती थी।

एक पुरानी जगह पर मैं रुक गया। जिस open space की तस्वीर मेरे दिमाग में थी, उसका हिस्सा अब घरों से भर चुका था।

बचपन में जिन distances को बड़ा समझते हैं, adulthood में वे अक्सर छोटी निकलती हैं। लेकिन memories का scale नहीं बदलता। एक गली वास्तव में बीस meter की हो सकती है। याद में वह पूरी दुनिया होती है।

* * *

Mhamurabad की तरफ - Mhalsa Devi

A DARSHAN THAT WAS NOT TOURISM

उसके बाद Mhalsa Devi के दर्शन की तरफ निकला। Road पर urban density पीछे छूटती गई। Bike की speed steady. आसपास का landscape खुला।

Darshan वाले places पर मैंने पूरी यात्रा में कोशिश की थी कि उन्हें sightseeing checklist न बनाऊँ। यहाँ तो सवाल ही नहीं था। यह tourist stop नहीं था। यह अपना था।

मंदिर के पास पहुँचकर engine बंद किया। अचानक silence ज्यादा सुनाई दिया। घंटी। लोगों की धीमी आवाजें। धूप। गरम पत्थर। अगरबत्ती की smell.

मैंने दर्शन किए। Mathura याद आया। Vrindavan. Kashi Vishwanath. Ayodhya. Govind Dev Ji.

इतनी यात्रा के बाद भी यहाँ खड़े होने की feeling अलग थी। क्योंकि बाकी जगह मैं पहुँचा था। इस जगह का रास्ता पहले से मेरे परिवार और मेरी memory में मौजूद था।

* * *

वापस जलगाँव

THE CITY AT NIGHT

Jalgaon वापस आते-आते lights जल चुकी थीं। Traffic. Street food. Medical stores. Small shops. Bikes. Families. कुछ college students. कुछ लोग काम से घर।

मेरी bike उसी road पर चल रही थी जिसे कभी routine समझकर देखा ही नहीं। अब वही routine interesting लग रहा था।

Travel शायद यही करता है। दुनिया दिखाता है। फिर घर की सामान्य चीजें भी नई कर देता है।

घर के बाहर bike park की। पिता gate के पास थे।

“कितना घूम आया?”

मैंने helmet निकाला। “Tower Chowk, Phule Market, KCE side, M.J., Mehrun, Bus Stand, Asoda…”

उन्होंने बीच में रोका। “एक दिन में?”

“Habit.”

उन्होंने मेरे हाथ में food packets देखे। “और ये?”

“Research.”

पिता ने सिर हिलाया। “तेरी research fridge भर देगी।”

माँ ने kitchen से पूछा, “खाना?”

मैंने अपने पेट की स्थिति assess की। Poha-rassa. Ragda. Chaat. Varan-batti. Bharit. Chinese. Pav bhaji.

मैंने कहा, “थोड़ी देर में।”

माँ दरवाजे तक आईं। उनकी नजर packets पर गई।

“बाहर खाया?”

मैंने झूठ बोलने की कोशिश भी नहीं की। “थोड़ा।”

“थोड़ा?”

मैंने conversation समाप्त करने के लिए पानी पीना शुरू कर दिया।

* * *

रात - Shristi का message

A THREAD THAT HAD FOLLOWED ME HOME

कमरे में आया। Phone table पर रखा। Bike की key. Wallet. Camera. Notebook. Blue diary.

Shristi का message आया था।

“So, hometown traveller. Favourite place today?”

मैंने जवाब लिखने से पहले सोचा। Tower Chowk? Phule Market? KCE? Asoda? Mhalsa Devi? Food? घर?

मैंने लिखा, “कहना मुश्किल है.”

उसने लिखा, “Rare. तुम्हारे पास usually हर चीज़ पर opinion होता है.”

मैं हँसकर लिखा, “अपने शहर पर थोड़ा मुश्किल है.”

कुछ देर typing नहीं। फिर उसका message - “Maybe because you don't just see it. You belong to it.”

मैं screen पर रुका। Shristi कभी-कभी ऐसे sentence भेज देती थी जिन्हें मैं normal conversation में जवाब नहीं दे पाता था।

मैंने सिर्फ लिखा, “शायद.”

उसका reply - “Goodnight. Extra sugar वाली chai कल भी पीना.”

मैं मुस्कराया। दो साल पहले Moscow में उसे यह detail कब याद हुई थी, मुझे आज भी याद नहीं। उसे थी।

* * *

नीली diary

THE MYSTERY LOSES ITS URGENCY

मैंने phone side में रखा। Blue diary खोली। पहला दिन याद आया। Seat 41. Numbers. Kashi. Old ticket. Architecture. Railway notes. मेरी गलत Masonic theory. Bridge को Brother पढ़ना. Random lines में pattern देखना.

और धीरे-धीरे सामने आया एक retired railway engineer. Stations. Bridges. Old buildings. Temples. Cities.

उस आदमी ने जगहें collect की थीं। शायद मैं भी पिछले दस दिनों से वही कर रहा था। फर्क सिर्फ इतना था - उसके पास वर्षों की नौकरी थी। मेरे पास दस दिनों की छुट्टी।

Diary में अभी भी unanswered चीजें थीं। कुछ names. कुछ dates. कुछ references. पहले मैं सोचता था हर unanswered line का answer चाहिए। अब नहीं।

मैंने diary बंद की। किसी mystery का खत्म होना हमेशा solution नहीं होता। कभी-कभी आपकी curiosity खत्म नहीं होती - बस उसका pressure खत्म हो जाता है।

* * *

घर की रात

ORDINARY WAS ENOUGH

नीचे से पिता की आवाज आई - “कल क्या program?”

मैंने जवाब दिया, “कुछ नहीं।”

कुछ seconds silence.

फिर पिता बोले, “सच?”

मैं हँसा। “शायद.”

नीचे से माँ ने कहा, “इसका शायद मतलब सुबह पता चलेगा.”

मुझे लगा मेरे parents ने दस दिन की यात्रा की सबसे accurate summary दे दी।

मैं balcony में गया। Jalgaon की रात सामने थी। यह picturesque नहीं थी। कोई fort नहीं। कोई Ganga नहीं। कोई desert dunes नहीं। कोई royal façade नहीं।

Ordinary roads. घर. Motorcycles. दूर traffic. कहीं pressure cooker की आवाज. किसी balcony में लोग. किसी घर में television.

और मेरे लिए यही इस पूरी यात्रा का सबसे difficult scene था लिखना। क्योंकि traveller unfamiliar चीज को बहुत आसानी से describe कर देता है। घर के लिए vocabulary कम पड़ती है।

Moscow से निकलते समय मैं सोच रहा था - दस दिन। ग्यारह शहर। एक route. कुछ trains. कुछ buses. कुछ temples. कुछ food. कुछ strangers. और फिर घर।

अब मुझे समझ आया - route का आखिरी point map पर Jalgaon था। लेकिन यात्रा का आखिरी point शायद वह moment था जब घर का दरवाजा खुला और माँ ने पूछा - “तू?”

बाकी सब उसके बाद footnote था।

मैंने balcony का door बंद किया। Blue diary table पर रखी। Bike की key उसके पास।

एक पुरानी railway engineer की अधूरी यात्रा। और मेरी अपनी पुरानी bike.

दो अलग यात्राओं की दो चीजें। एक मुझे रास्ते में मिली थी। एक घर पर मेरा इंतजार कर रही थी।

मैंने light बंद की।

नीचे से माँ की आवाज आई - "सोने का है?"

"हाँ।"

"Alarm मत लगा. घर में है."

मैं हँस पड़ा। दस दिनों में पहली बार - शायद सच में alarm की जरूरत नहीं थी।

दस दिन तक मैं हर शहर में पहुँचा था।

जलगाँव में पहली बार लगा -

मैं पहुँचा नहीं था।
मैं वापस आया था।

EPILOGUE - अगला टिकट

E P I L O G U E

अगला टिकट

THE NEXT TICKET

“कुछ यात्राएँ घर पर खत्म होती हैं। कुछ वहीं से अगली यात्रा का कारण बनती हैं।”

* * *

जलगाँव लौटने के कुछ दिन बाद भी मेरा बैकपैक पूरी तरह खाली नहीं हुआ था।

कपड़े बाहर आ चुके थे। कैमरा मेज़ पर था। चार्जर अपनी जगह पहुँच गया था। टिकट, छोटी रसीदें और रास्ते में जमा हुई बेकार-सी दिखने वाली चीजें एक डिब्बे में चली गई थीं।

लेकिन नीली डायरी अभी भी मेज़ पर थी।

मैंने उसे अलमारी में नहीं रखा था। शायद इसलिए कि दस दिनों तक वह मेरे साथ इतनी जगह घूम चुकी थी कि अचानक उसे किसी shelf पर रख देना थोड़ा अजीब लगता।

एक शाम मैंने उसके कुछ पन्ने फिर पलटे। अब उनमें कोई रहस्य नहीं बचा था। कम-से-कम वैसा नहीं जैसा मैंने शुरुआत में बना लिया था।

कुछ संख्याएँ सच में सिर्फ संख्याएँ थीं। कुछ निशान railway measurements और drawings. Br. का अर्थ मैंने अपनी तरफ से Brother समझ लिया था; कहीं वह Bridge था, कहीं किसी नाम का abbreviation, और कहीं शायद कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं।

कुछ connections मैंने खुद बनाए थे क्योंकि मैं उन्हें बनाना चाहता था।

हर pattern के पीछे कोई रहस्य नहीं होता।

लेकिन दुनिया हमेशा उतनी सीधी भी नहीं होती जितनी railway timetable पर खींची एक line दिखाई देती है।

मैंने diary बंद कर दी। फिर laptop खोला। Screen पर एक map था। और पहली बार मैंने अगली यात्रा के बारे में गंभीरता से सोचा।

* * *

एक बात जो इस किताब की शुरुआत में पूरी नहीं बताई गई

THE PART I HAD LEFT UNSAID

इस यात्रा में जब भी कोई पूछता - “कहाँ से आए?” - मैं अक्सर कहता, “मॉस्को से।”

यह गलत नहीं था। लेकिन पूरा सच भी नहीं था।

मॉस्को उस समय मेरे काम से जुड़ा एक अस्थायी पड़ाव था। मैं वहाँ कुछ काम के सिलसिले में था, और वहीं से Delhi की flight पकड़ी थी।

असल में मैं अब **Germany में रहता था।**

इसलिए इस किताब की यात्रा Moscow से शुरू जरूर हुई, लेकिन विदेश में मेरा स्थायी जीवन Germany में था। पहली यात्रा के लिए यह फर्क ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं था। Train में मिलने वाले किसी stranger को मेरे permanent address से क्या फर्क पड़ता?

लेकिन अगली यात्रा में यही फर्क पूरी कहानी बदलने वाला था। क्योंकि अगली बार Germany लौटना सिर्फ destination तक पहुँचना नहीं होगा।

मैं उसे **जमीन के रास्ते, जितना संभव हो उतना rough route लेकर**, करना चाहता था।

* * *

अगली यात्रा

A ROUGHER MAP

Notebook के पहले पन्ने पर route सीधी line में नहीं बन रहा था। उसमें कई प्रश्नचिह्न थे। कई borders. कई ऐसी जगहें जहाँ map देखना आसान था लेकिन वहाँ पहुँचना आसान नहीं।

मेरे दिमाग में मोटा-सा रास्ता था -

INDIA → AFGHANISTAN → SYRIA → ISRAEL / WEST ASIA → RUSSIA → MOSCOW → WARSAW → GERMANY

यह किसी confirmed itinerary की तरह नहीं था। बस एक विचार। एक dangerous idea.

पिछली यात्रा में सबसे बड़ी परेशानी कभी phone battery थी, कभी गलत platform, कभी hotel की booking, कभी रात की bus, कभी भूख। अगली यात्रा में inconvenience और danger के बीच का फर्क कहीं ज्यादा गंभीर होने वाला था।

किसी border का बंद होना सिर्फ schedule खराब नहीं करेगा। किसी देश की political situation सिर्फ newspaper headline नहीं होगी। किसी checkpoint पर खड़ा आदमी मेरी journey का side character नहीं होगा। और किसी शहर में दिखाई देने वाली security सिर्फ background scenery नहीं होगी।

Headlines के पीछे की दुनिया

THE WORLD BEHIND THE WORDS

Afghanistan का नाम सुनते ही दुनिया के बहुत से लोगों के दिमाग में terrorism आता है। Syria का नाम सुनते ही civil war. Israel का नाम सुनते ही conflict. Russia का नाम geopolitics से जुड़ जाता है। Europe की तरफ बढ़ते हुए borders, migration, security और identity नए रूप लेते हैं।

लेकिन कोई देश सिर्फ headline नहीं होता।

वहाँ लोग breakfast करते हैं। काम पर जाते हैं। बच्चों को school भेजते हैं। Taxi चलाते हैं। Market लगाते हैं। शादी करते हैं। Football देखते हैं। धर्म मानते हैं। धर्म से दूर रहते हैं। सरकार से नाराज़ होते हैं। किसी दूसरे देश जाने का सपना देखते हैं।

और कभी-कभी बस चाहते हैं कि अगली रात बिना किसी बुरी खबर के निकल जाए।

अगर अगली यात्रा हुई, तो मैं यही देखना चाहता था।

Terrorism के बारे में television क्या बताता है, उससे ज्यादा यह कि उसके बाद ordinary society कैसे जीती है।

War खत्म होने के बाद शहर वास्तव में कब normal होता है?
क्या peace treaty के साथ डर भी खत्म होता है?
एक border के दोनों तरफ रहने वाले लोग एक-दूसरे को वैसे ही देखते हैं जैसे governments देखती हैं?
Religion आदमी के लिए faith कब है और politics कब बन जाता है?
Migration choice कब है और मजबूरी कब?

ये सवाल मेरी पिछली यात्रा के सवालों से अलग थे। और कहीं ज्यादा भारी।

यह adventure tourism नहीं होगा

DANGER IS NOT THE SOUVENIR

Dangerous जगह का नाम itinerary में लिख देना बहुत आसान है। वहाँ रहने वाले लोगों की जिंदगी को “adventure” कहना उससे भी आसान।

लेकिन अगर मैं कभी ऐसे रास्ते पर गया, तो एक rule साफ रहेगा -

किसी और के युद्ध को अपनी excitement नहीं बनाना।

मैं ruined building के सामने खड़े होकर hero वाली photograph लेने नहीं जाना चाहता। किसी refugee की कहानी सिर्फ dramatic chapter बनाने के लिए नहीं सुनना चाहता। किसी terror attack की जगह को sightseeing point की तरह नहीं देखना चाहता।

यात्रा का उद्देश्य danger collect करना नहीं होगा। उद्देश्य होगा - यह समझना कि बड़ी global घटनाएँ आखिर ordinary आदमी तक पहुँचती कैसे हैं।

किसी sanction का असर supermarket में क्या होता है। किसी border closure का असर driver पर क्या होता है। किसी war का असर school पर क्या होता है। किसी bombing के बाद cafe कब दोबारा खुलता है। किसी terrorist attack के बाद लोगों को strangers से डरना कितने समय तक रहता है। और कोई शहर कितनी बार टूटने के बाद भी खुद को शहर ही बनाए रखता है।

रास्ते का दूसरा अर्थ

WHEN TRANSPORT BECOMES POLITICS

पहली किताब में railway मेरा सबसे बड़ा connection थी। Station से station. एक शहर से दूसरा. Sleeper coach. Platform chai. State bus. Shared auto. Boat. Desert road.

अगली यात्रा में transport सिर्फ movement नहीं होगा। वह politics भी होगा।

कहीं train चलेगी। कहीं road. कहीं शायद एक route technically मौजूद होगा लेकिन practically नहीं। कहीं visa आपको जाने देगा, geography नहीं। कहीं geography जाने देगी, politics नहीं।

कहीं passport सिर्फ identification होगा। कहीं passport privilege बन जाएगा। कहीं nationality conversation शुरू करेगी। कहीं खत्म।

मैंने map zoom out किया। India छोटा हुआ। Afghanistan दिखा। West Asia. Russia. Eastern Europe. Germany.

Screen पर distances साफ थे। एक line खींचो और सब connected लगता है। असल दुनिया में lines इतनी obedient नहीं होतीं।

Mountains होंगे। Deserts. Military checkpoints. Airspace restrictions. Closed borders. Language barriers. Old empires की memories. New conflicts.

और उन सबके बीच वही चीज जो मुझे इस पहली यात्रा में सबसे ज्यादा interesting लगी थी - **लोग।**

Moscow फिर आएगा

THE CITY RETURNS

मॉस्को अगली यात्रा में सिर्फ starting point नहीं होगा। वह रास्ते के बीच में वापस आएगा।

पहली किताब की शुरुआत वहीं से हुई थी। अगली में शायद वह एक अलग अर्थ के साथ सामने आए। पहली बार मैं वहाँ से India की तरफ निकल रहा था। अगली बार शायद Asia और conflict zones से निकलकर Moscow पहुँचूँ।

वही city. लेकिन traveller अलग।

फिर Moscow से west. उस समय जो practical और legal route संभव हो, उसके हिसाब से आगे। फिर **Warsaw.** और आखिर में Germany.

जहाँ इस बार कहानी खत्म नहीं - बस यात्रा खत्म होगी।

पहली यात्रा और अगली यात्रा

WHAT CHANGES, WHAT REMAINS

पहली यात्रा में मैंने monuments देखे। अगली में शायद borders ज्यादा याद रहें।

पहली में temples थे। अगली में mosques, churches, synagogues और शायद ऐसी जगहें भी जहाँ religion सबसे ज्यादा politics के बीच दिखाई देगा।

पहली में railway conversations थीं। अगली में border conversations हो सकती हैं।

पहली में food regional identity का हिस्सा था। अगली में food survival, migration और memory की कहानी भी बताएगा।

एक Afghan dish किसी family के लिए घर की याद हो सकती है। Syrian bread किसी दूसरे देश में refugee community की पहचान। Israeli या Palestinian kitchen इतिहास से ज्यादा complicated कहानी बता सकता है। Russian food winter और distance की कहानी। Polish food Europe पहुँच जाने की।

और Germany का पहला meal - शायद सिर्फ यह बताए कि route सच में पूरा हो गया।

खतरा कहानी नहीं है

DANGER IS NOT THE STORY

मैंने notebook में एक line लिखी:

Danger is not the story. People living beside it are.

फिर दूसरी:

Never confuse access with understanding.

किसी जगह पहुँच जाना उसका truth समझ लेना नहीं है। दस दिनों की India journey ने यही सिखाया था।

मैं Mathura गया था - Mathura समझ नहीं लिया। Kashi देखा - Kashi खत्म नहीं हो गई। Jaisalmer के dunes पर खड़ा हुआ - desert मेरा नहीं हो गया।

वैसे ही Afghanistan जाना Afghanistan समझ लेना नहीं होगा। Syria पार करना Syria पर authority नहीं देगा। Israel देखना पूरे conflict का answer नहीं देगा।

Travel writing में सबसे dangerous चीज कभी border नहीं होती। कभी-कभी certainty होती है।

नीली diary का आखिरी काम

THE LAST USE OF THE BLUE DIARY

मैंने फिर मेज़ पर रखी blue diary देखी। वह अब investigation का object नहीं थी। वह एक reminder थी।

उस retired railway engineer ने शायद वर्षों तक stations, bridges, temples और buildings note किए थे। उसके कई notes incomplete थे। फिर भी वह लिखता रहा।

शायद उसे भी पता था - किसी journey को पूरा document करना impossible है।

आप कुछ देखते हैं। कुछ miss करते हैं। कुछ गलत समझते हैं। कुछ साल बाद समझ आता है कि जिस clue को बड़ा माना था वह random था। और जिस ordinary conversation को उस समय importance नहीं दी - वही सबसे ज्यादा याद रहती है।

मैंने diary shelf पर रख दी। इस बार सच में। उसकी कहानी खत्म।

नई notebook

A BLANK FIRST PAGE

Desk पर नई notebook थी। पहला page blank.

मैंने ऊपर लिखा -

INDIA TO GERMANY

Possible route

India
Afghanistan
Syria
Israel / West Asia
Russia
Moscow
Warsaw
Germany

फिर काफी खाली जगह छोड़ी। क्योंकि शायद आधे नाम बदल जाएंगे। Route बदल जाएगा। कुछ borders impossible होंगे। कुछ countries skip करनी पड़ेंगी। कुछ journeys plane से करनी पड़ेंगी। और शायद पूरा plan कभी होगा ही नहीं।

यह possibility भी सच थी।

लेकिन नीचे मैंने एक आखिरी line लिखी:

No forced heroics. No fake bravery. Come back alive with the story.

Notebook बंद की।

*   *   *

खिड़की के बाहर Jalgaon की रात थी। कुछ दिनों पहले तक मैं दस शहरों की दूरी अपने शरीर में लेकर घूम रहा था। अब सामने फिर एक map था।

पहली यात्रा ने मुझे सिखाया था कि रास्ता जितना लंबा हो, आदमी उतना hero नहीं बनता। बस उसे अपने बारे में थोड़ी ज्यादा जानकारी मिलती है।

अगला रास्ता ज्यादा rough होगा। शायद ज्यादा dangerous भी। और उसका scale India की domestic trains से बहुत बड़ा होगा।

Terrorism. War. Borders. Religion. Migration. Global politics. Russia और Europe.

इन शब्दों को headlines से निकालकर जमीन पर देखने की कोशिश।

लेकिन शायद आखिर में कहानी फिर उन्हीं छोटी चीजों पर आकर टिकेगी - एक cup chai, किसी stranger का सवाल, एक shared meal, एक border officer की थकी हुई आँखें, किसी driver का joke, किसी बच्चे का school bag, और एक आदमी जो फिर अपने backpack के साथ पूछ रहा होगा -

“आगे का रास्ता किधर है?”

पहली यात्रा का जवाब था -

जलगाँव।

अगली का जवाब होगा -

Germany.

लेकिन इस बार destination से ज्यादा मुश्किल होगा रास्ता।

और शायद इसी वजह से -

अगली कहानी यहीं से शुरू होती है।

— समाप्त —

Sources and Bibliography
स्रोत एवं संदर्भ

— ◇ —

इस पुस्तक का मूल आधार लेखक की यात्रा, व्यक्तिगत अवलोकन, रास्ते में हुई बातचीत, यात्रा-नोट्स और स्मृतियाँ हैं। ऐतिहासिक, धार्मिक, स्थापत्य तथा स्थान-संबंधी संदर्भों को लिखते समय जहाँ आवश्यक था, सरकारी पर्यटन स्रोतों, सार्वजनिक संस्थागत अभिलेखों और उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री का सहारा लिया गया। संवादों और स्थानीय विचारों को उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

सामान्य एवं पर्यटन संदर्भ

Ministry of Tourism, Government of India. Official destination information, national tourism material and general travel references.

Department of Tourism, Government of Uttar Pradesh. Mathura, Vrindavan, Varanasi, Ayodhya, Lucknow और Prayagraj से जुड़े स्थान, विरासत और पर्यटन संदर्भ।

Department of Tourism, Government of Rajasthan. Jaipur, Amer, Jaisalmer, Thar region, forts, museums और Rajasthan heritage references.

Gujarat Tourism, Government of Gujarat. Ahmedabad, heritage-city references, local culture and tourism information.

यात्रा एवं रेलवे

Indian Railways. Public passenger information, stations, railway travel practices और सार्वजनिक railway-heritage material.

धार्मिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ

Krishna Janmabhoomi, Dwarkadhish Temple, Banke Bihari Temple, Kashi Vishwanath, Maa Annapurna, Hanuman Garhi, Ram Janmabhoomi tradition, Sangam तथा अन्य स्थलों के वर्णन में धार्मिक परंपरा, सार्वजनिक स्थल-सूचना और लेखक के प्रत्यक्ष अनुभव को अलग-अलग रखा गया है।

जहाँ इतिहास, आस्था और वर्तमान कानूनी प्रश्न आपस में मिलते हैं, वहाँ पुस्तक उन्हें एक तथ्य मानने के बजाय **आस्था, ऐतिहासिक दावा, कानूनी स्थिति और व्यक्तिगत राय** के अलग स्तरों पर देखने का प्रयास करती है।

स्थानीय संस्कृति और भोजन

Mathura की कचौड़ी और पेड़ा, Banaras की कचौड़ी-जलेबी और चाट, Lucknow का भोजन, Jaipur की प्याज़ कचौड़ी और राजस्थानी व्यंजन, Jaisalmer का मरुस्थलीय भोजन, Ahmedabad का Gujarati भोजन तथा Jalgaon-Khandesh के poha-rassa, varan-batti, bharit-bhakri, ragda और street food के वर्णन मुख्यतः लेखक के प्रत्यक्ष स्वाद-अनुभव और स्थानीय बातचीत पर आधारित हैं।

लेखक के निजी स्रोत

यात्रा के दौरान लिखी गई notebooks; railway और bus tickets; स्थानीय receipts और छोटे travel records; photographs; route notes; और post-journey personal memory.

टिप्पणी: यह पुस्तक academic history या formal guidebook नहीं है। यह एक यात्रा-वृत्तांत है। जहाँ तथ्यात्मक इतिहास का उल्लेख किया गया है, वहाँ यथासंभव सार्वजनिक स्रोतों का सहारा लिया गया है; जहाँ संवाद, अनुभूति या व्याख्या है, वह यात्रा के अनुभव का हिस्सा है।